सम्पादक

मुनि मधुकर

प्रकाशक :

जैन विश्व भारती

लाडनूं (राजस्थान)

अर्थ सौजन्य

जयाचार्य निर्वाण शताब्दी समिति

प्रबन्ध-सम्पादक

श्रीचन्द रामपुरिया

प्रथम संस्करण . १९८३

मूल्य : अस्सी रुपये

मुद्रक :

एस० नारायण एण्ड संस,

७११७/१८, पहाड़ी धीरज,

दिल्ली-६

प्रकाशकीय

यह ग्रन्थ श्रीमद जयाचार्य विरचित निम्न १० कृतियो का सग्रह है

१—लिखता री जोड

२—गणपति सिखावण

३—शिक्षा री चोपी

४—उपदेश री चोपी

५—टहुका

६—मर्यादा मोच्छव री ढाला

७—गण विशुद्धिकरण हाजरी

८—परपरा री जोड

९—लघुरास

१०—टालोकरा की ढाल

इन कृतियो का विस्तृत परिचय सम्पादकीय मे दिया जा रहा है अत उनके विषय मे यहाँ कुछ लिखने की आवश्यकता नही रह जाती।

श्रीमदजयाचार्य का जन्म नाम जीतमलजी था। आपने अपनी कृतियो म अपना उपनाम 'जय' रखा इसलिए आप जयाचार्य के नाम स प्रख्यात हुए। आप जन श्वेताम्बर तेरापथ धमसघ के चतुथ आचाय थे। आप की जन्म भूमि मारवाड का रायट ग्राम था। आपका ज म स० १८६० की आश्विन शुक्ला १४ की रात्रि मे कक लग्न हुआ था। आप ओसवाल थे। गोत्र से गोलछा थे। आपके पिता श्री का नाम आईदानजी गोलछा और मातु श्री का नाम कल्लूजी था। आप तीन भाई थे। बडे भाइयो क नाम क्रमश सरूपचन्दजी और भीमराजजी थे।

आपके ज्येष्ठ भ्राता सरूपचन्दजी ने स० १८६९ की पौष शुक्ला ९ क दिन साधु जीवन ग्रहण किया। आपने उसी वष माघ कृष्णा ७ क दिन प्रव्रज्या ग्रहण की। दूसर बडे भाई भीमराजजी की दीक्षा आपक बाद फाल्गुन कृष्णा ११ के दिन सम्पन्न हुई और उसी दिन माता कल्लूजी ने भी दीक्षा ग्रहण की। इस तरह स० १८६९ पौष शुक्ला ९ एव फाल्गुन कृष्णा १२ की पौने दो माह की अवधि में माता सहित तीनो भाई द्वितीय आचाय श्री भारमलजी क शासन-काल मे दीक्षित हुए।

साधु जीवन ग्रहण करत समय जयाचाय नौ वष के थे। दीक्षा क बाद आप शिक्षा क लिए मुनि हेमराजजी को सौंपे गये। वे ही आपक विद्या गुरु रहे।

आगे जाकर आप एक महान् अध्यात्मिक योगी, विश्रुत इतिहास-सृजक, विचक्षण साहित्य-स्रष्टा एवं सहज प्रतिभा-सम्पन्न कवि सिद्ध हुए।

सं० १६०८ माघ कृष्णा १४ के दिन तृतीय आचार्य ऋषिराय का छोटी रावलिया गांव मे देहान्त हुआ। आप चतुर्थ आचार्य हुए।

आचार्य ऋषिराय के देवलोक होने का समाचार माघ शुक्ला ८ के दिन वीदासर पहुचा, जहा आप विराज रहे थे। सं० १६०८ माघ शुक्ला १५ प्रातः काल पुष्य नक्षत्र के समय आप पदासीन हुए। पट्टोत्सव वडे हर्ष के साथ मनाया गया। आचार्य ऋषिराय ने ६७ साधुओ एव १४३ साध्वियों को धरोहर छोड़ी।

आपने जैन श्वेताम्वर तेरापथ धर्मसंघ के चतुर्थ आचार्य पद को ३० वर्षो तक सुशोभित किया। आपका स्वर्गवास स० १६३८ की भाद्र कृष्ण १२ के दिन जयपुर मे हुआ। स० २०३८ भाद्र कृष्ण ११ के दिन आपको निर्वाण प्राप्त हुए १०० वर्ष पूरे हुए।

श्रीमज्जयाचार्य ने अपने जीवन-काल मे लगभग साढ़े तीन लाख पद्य-परिणाम साहित्य की रचना की। जैन वाङ्मय के पंचम अग 'भगवई' का आपका राजस्थानी पद्यानुवाद 'भगवती जोड' राजस्थानी साहित्य का सवसे वडा ग्रन्थ माना जाता है। यह ५०१ विविध रागनियो मे गेय गीतिकाओ मे निवद्ध है। श्रीमद् जयाचार्य की साहित्यिक रुचि वहुविध थी। तेरापथ धर्म सघ के सस्थापक आदि आचार्य श्रीमद् भिक्षु के वाद आपकी साहित्य-साधना वेजोड है। आप महान् तत्वज्ञानी थे। जन्मजात कुशल इतिहास-लेखक थे। सजीव सस्मरणात्मक जीवन-चरित्र लिखने की आपकी प्रवीणता अनोखी थी। आप वडे कुशल सघव्यवस्थापक और दूरदर्शी आचार्य थे। आपकी कृतियो का सौष्ठव, गाभीर्य एव सगीतमयता—ये सव मनोमुग्धकारी है।

प्रस्तुत ग्रन्थ 'जय वाङ्मय' के ६वे ग्रन्थ के रूप मे प्रकाशित हो रहा है। यह ग्रन्थ जैन श्वेताम्वर तेरापथ धर्मसघ की मर्यादा एव व्यवस्था विपयक श्रीमद् जयाचार्य की सर्व कृतियो का संग्रह है। इस मे समाविष्ट कृतियाँ प्रथम वार ही प्रकाश मे आ रही है, अतः यह संग्रह अपने आप मे अपूर्व है।

नई दिल्ली

—श्रीचन्द रामपुरिया

२६ नवम्बर, १६८३

सम्पादकीय

आज से करीब ३३ वर्ष पूर्व जयपुर में लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने तेरापंथ धर्म संघ की व्यवस्था का परिचय पाकर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी से कहा था—'महान् आश्चर्य है कि जिस समाजवादी व्यवस्था को हम देश में लाना चाहते हैं वह आपके श्रमण संघ में दो सौ वर्षों से चल रही है। इस व्यवस्था का इतिहास भी बड़ा अनूठा है। इतिहास साक्षी है कि सामाजिक स्तर पर ऐसी व्यवस्था कभी नहीं रही जिसमें जीवनोपयोगी सभी साधन सब को समान रूप से उपलब्ध हुए हों और सब का पारस्परिक स्तर समान रहा हो, यद्यपि इस प्रकार की परिकल्पना तो अनेक बार होती रही है। अतीत में महान् दार्शनिक प्लेटो ने समाजवादी व्यवस्था का प्रतिपादन करते हुए अपनी 'रिपब्लिक' पुस्तक में ऐसे समाज की रूपरेखा प्रस्तुत की थी, लेकिन यह व्यवस्था अधिकार सम्पन्न वर्ग के लिए ही थी। उसमें दासों के लिए शूद्र जैसा ही स्थान था। वे उस व्यवस्था से अछूते ही थे।

इससे पूर्व प्रिंस क्रापाटकिन आदि कुछ विचारकों ने सामाजिक स्तर पर कई बातें रखी थी, किन्तु वे भी यथार्थ की अपेक्षा कल्पना पर ही आधारित थी अतः सामाजिक जीवन का माध्यम नहीं बन सकी थी।

हां, जर्मन में मार्क्स ने जरूर एक योजना प्रस्तुत की थी जिसे वैज्ञानिक समाजवाद का नाम दिया गया, किन्तु वह भी वहां पर फलीभूत नहीं हो सकी।

यह भी एक आकस्मिक संयोग था कि ठीक इसी समय भारत के राजस्थान प्रान्त में समाजवादी व्यवस्था का सामूहिक प्रयोग श्रीमद् जयाचार्य ने अपने तेरापंथ संघ में प्रारम्भ किया।

अब से २२८ वर्ष पूर्व वि० सं० १८१७ में आचार्य भिक्षु ने धार्मिक जगत में एक नई क्रान्ति की थी। उस क्रान्ति के संवाहक के रूप में प्रारम्भ में १३ साधु तथा १३ ही श्रावक थे। इसी संख्या के आधार पर किसी श्रावक के द्वारा इसका तेरापंथ नामकरण श्रवण कर आचार्य भिक्षु ने इसका अर्थ किया — हे प्रभो ! यह तेरापंथ'— प्रभो ! यह तुम्हारा पथ है, हम तो इसके पथिक हैं। और इसी चिन्तन के आधार पर उनके चरण मंजिल की ओर बढ़ चले। धीरे धीरे विविधमुखी विरोधों के बावजूद परिस्थितियां बदली और संगठन वर्द्धिगत होने लगा। तब दूरदर्शी आचार्य भिक्षु के मस्तिष्क में एक विचार कौंधा।

उन्होने संगठन को अनुशासित एव व्यवस्थित बनाने के लिए सर्वप्रथम सं० १८३२ मृगसर कृष्णा २ के दिन एक लिखित लिखा। लिखित क्यो लिखा, इसका स्पष्टीकरण करते हुए उन्होने कहा—"मैंने यह उपक्रम शिष्यादिक के ममत्व परिहार के लिए, सयम-विशुद्धि के लिए तथा सभी अनुशासन एव न्यायमार्ग पर चलते चलें, इस-लिए किया है।"

उस लिखित को तत्कालीन साधुओ को एकत्र कर सुनाया। सभी साधुओ ने सहर्ष इस पर सहमति प्रदान करते हुए अपने-अपने हस्ताक्षर कर दिए। वह हस्ताक्षरांकित पत्र आज भी हमारे सघीय पुस्तकागार मे सुरक्षित है।

इस प्रकार सामूहिक सहमति प्राप्त होने पर आपने उसे लिखित-'सविधान' का रूप दे दिया। उसके बाद समय-समय पर अनेक लिखित बने। सबसे अन्तिम लिखित स० १८५९ का है। वही तेरापथ का मौलिक सविधान है। उसके आधार पर प्रति वर्ष मर्यादा महोत्सव मनाया जाता है। उसकी कुछ धाराए ये है :—

१. समस्त सघ एक आचार्य की आज्ञा मे रहे।
२. सभी साधु-साध्वियाँ विहार, चातुर्मास, आदि आचार्य की आज्ञा मे करें।
३ दीक्षा आचार्य के नाम पर हो, कोई अपना शिष्य-शिष्या न बनायें।
४. आचार्य योग्य व्यक्ति को ही दीक्षित करे। दीक्षित करने पर भी अयोग्य निकले तो उसे गण से अलग कर दे। दीक्षार्थी को नवपदार्थ का प्रारम्भिक ज्ञान अवश्य कराया जाये।
५ वर्तमान आचार्य अपने गुरु-भाई या शिष्य को उत्तराधिकारी नियुक्त करे तो समस्त संघ उसकी आज्ञा को सहर्ष शिरोधार्य करे।
६ संयोगवश एक या अधिक साधु संघ से पृथक् हो जाये तो उन्हे साधु न सरधा जाये और उनसे सम्पर्क न रखा जाये।
७ कर्मवश कोई संघ से पृथक् हो जाये तो संघ के साधु-साध्वियो के अंशमात्र भी अवर्णवाद न बोले।
८. किसी भी साधु-साध्वी के प्रति शंका पैदा हो, उस ढंग से न बोले।
९. श्रद्धा, आचार या सिद्धान्त से सम्बन्धित कोई नया प्रश्न उठे तो आचार्य तथा बहुश्रुत साधु मिलकर विचार-पूर्वक उसका समाधान करें। अगर समाधान न बैठे तो उसे केवलीगम्य कर दे, पर अशमात्र भी खीचतान न करें।

सगठन की दृष्टि से इतना सुदृढ सविधान आचार्य भिक्षु की अलौकिक देन है। यह सविधान उन्होने उस वातावरण मे दिया था जब सम-सामयिक सम्प्रदायो मे एक

ही सघ मे अनेक आचाय हो जाते थे और आचाय के अधीनस्थ साधु भी अपने अलग अलग शिष्य बनाते थे। वैसी स्थिति मे चालू प्रवाह का मोड देकर उन्होने जो कार्य किया, वह इतिहास मे अन्यत्र दुलभ ह। छोटे से समूह म प्रारम्भ किया हुआ वह प्रयोग आज ७०० साधु साध्वियो मे भी उसी प्रकार चल रहा है।

इस प्रयोग के ठीक एक शताब्दी वाद जयाचाय ने इसे और अधिक विस्तार दिया। सविधान के अनुसार व्यक्तिगत शिष्य बनाने की प्रथा तो अपने आप समाप्त हो गई थी किन्तु व्यक्तिगत पुस्तको की परम्परा चालू थी। अत किसी के पास आवश्यकता से अधिक पुस्तकें थी तो किसी के पास बिल्कुल ही नही। जयाचाय के मन में यह बात अखरती थी अत एक दिन आपने अग्रणी साधु साध्वियो के सामने एक प्रश्न रखा—आप लोगो के साथ रहने वाले साधु साध्विया किसकी निश्रा मे हैं?

सभी ने एक स्वर मे उत्तर दिया—आचाय श्री की निश्रा म। तब आपने दूसरा प्रश्न किया—पुस्तकें किसकी निश्रा मे हैं? सबन उत्तर दिया वे तो जिसके पास हैं, उसी की निश्रा मे हैं। जयाचाय—तब आप अपनी निश्रा की पुस्तकें दूसरे साधु-साध्वियो से कैसे उठवाते हैं? अब से जो व्यक्तिगत पुस्तकें रखेगा, वह उनका भार स्वय उठाएगा। अपने साथ वाले साधु साध्वियो से नही। जयाचाय की इस आकस्मिक घोषणा से सभी अग्रणी स्तब्ध हो गये। कुछ व्यक्तियो ने विनय पूवक पूछा—गुरुदेव! अकेले हम इतनी पुस्तकें कैसे उठायेंगे? आप आज्ञा दें, वसे करें। तब जयाचाय ने कहा—तो फिर सघ को समर्पित क्यो नही कर देते? सघ अपने आप उसकी व्यवस्था करेगा।

उसी दिन से अनेक अग्रगण्य साधुओ ने अपनी अपनी पुस्तकें लाकर जयाचाय को तथा साध्वियो न महासती सरदाराजी को सौंप दी। जयाचाय ने उन सभी पुस्तको को ग्रहण कर अपेक्षानुसार समपको को देकर शेष पुस्तकें अन्य सिंघाड़ो मे वितरित कर दी और एक मर्यादा बना दी कि अब सभी पुस्तकें सघ की होगी। अत चातुर्मास के बाद जब आचाय के दर्शन करें, तब उन्हे वापिस सौंपना होगा। इसका फलित यह हुआ कि सामूहिक रूप से काम आने वाली सभी वस्तुओ पर व्यक्तिगत स्वामित्व नहीं रहा।

दूसरा कदम था—श्रम सविभाग के सम्बन्ध में। प्रारम्भ से यह परम्परा चली आ रही थी कि कुछ सामूहिक काय दीक्षा पर्याय मे छोटे साधुओ को ही करने होते थे, भले ही वे वृद्ध क्यों न हो!

जयाचाय ने उसको बदलकर उसके स्थान पर सभी सदस्यो के लिए श्रम करना अनिवाय कर दिया।

इस प्रकार स्थान, आहार एव धर्मोपकरण आदि किसी वस्तु पर किसी का व्यक्तिगत स्वामित्व नही रहा, और एक धर्म सम्प्रदाय मे अनायास ही एक ऐसी व्यवस्था का प्रादुर्भाव हो गया, जिसे समाजवाद के समकक्ष रखा जा सकता है।

समाजवादी व्यवस्था का प्रथम सूत्र है कि जीवन के साधनो पर किसी का व्यक्तिगत स्वामित्व नही होना चाहिए। वे समष्टिक है, उसी के रहें, उसके अग रूप मे समान रूप से आवश्यकतानुसार सब के काम आए। कोई किसी से सम्पन्न या विपन्न नही रहे। तेरापथ साधु सघ मे आज लगभग सात सौ साधु-साध्विया है, उनमे किसी का भी आवश्यक धर्मोपकरण, आहार एवं आवास पर कोई स्वामित्व नही है। वे अणगार है, उनका अपना कोई आवास नही है। जहा भी जाते हैं, किसी का आवास माग कर उसकी अनुमति से अपने नियत समय तक रहते है। उसमे स्थान कम या अधिक जितना है उनका समान रूप से सविभाग कर ठहरते है, उठते हैं, सोते हैं। आवश्यकतानुसार वस्त्र याचित करते है। उसका भी सविभाग होता है। किसी के पास प्रमाण से अधिक वस्त्र नही हो सकता और दूसरे से कम भी नही। आहार भी गृहस्थो के यहा से माधुकरी वृत्ति से थोडा- थोडा अनेक घरो से याचित करते हैं ताकि किसी पर भार न पडे। प्राप्त आहार का सविभाग होता है।

भगवान महावीर ने कहा—'असविभागी न हु तस्स मोक्खो'—असविभागी को मोक्ष नही मिलता। सविभाग के इस नियम का तेरापथ मे दृढता से पालन होता है।

तेरापथ के साधु-साध्वी देश भर मे विहरण एवं चातुर्मास प्रवास करते है। हर दल के साथ वस्त्र, पात्र, पुस्तक आदि धर्मोपकरण होते है जो उसकी जीवनचर्या के लिए आवश्यक होते है, लेकिन किसी का उन पर अधिकार नही होता। वे सघ के अधिकार मे होते है। चातुर्मास एव विहारोपरान्त आचार्य के उपपात मे आने पर दल का अग्रणी सहवर्ती साधुओ को उनके साथ के समस्त धर्मोपकरणो को तथा स्वयं को भी आचार्य के चरणो मे समर्पित कर कहता है—"गुरुदेव ! ये आपके साधु-साध्विया, ये धर्मोपकरण, पुस्तकें, पात्र-वस्त्रादि और मैं स्वय को आपके चरणो मे उपस्थित करता हू। अब आप जैसी आज्ञा देगे, वैसा ही करूगा।" यह समर्पण किसी व्यक्ति या व्यक्तियो का दूसरे व्यक्ति के आगे नही, व्यष्टि का समष्टि को है।

दल के अग्रणी का भी अपने सहवर्ती सन्तो पर कोई स्वामित्व नही। सब साधु-साध्विया एक आचार्य के शिष्य हैं, परस्पर गुरुभाई हैं। कोई किसी को अपना शिष्य नही बना सकता। आचार्य को ही दीक्षा प्रदान करने का सर्वाधिकार है। आचार्य की आज्ञा से आवश्यकतानुसार कोई भी साधु-साध्वी दीक्षा दे सकते है। लेकिन शिष्य रूप मे

नही अपने ही एक कनिष्ठ गुरु भाई के रूप मे। धम सघ के सदस्य के रूप मे सबको समान अधिकार है। सत्ता का स्रोत आचाय है, उसकी आज्ञा प्रधान है। उसके द्वारा नियुक्त अग्रणी उसी की सत्ता का सवाहक होता है। सघ मे किसी का किसी पर अधिकार नहीं है। सब अन्तत एकमेव आचाय को, धम सघ को ही समर्पित हैं। अपनी व्यक्तिगत सत्ता का सम्पूण विसजन समाजवादी व्यवस्था की अनिवाय शत है जिसका श्रेष्ठतम रूप तेरापथ धम सघ म मिलता है।

विषमता का एक स्रोत पद होता है। तेरापथ म काय का सम्यक् विभाजन है, उत्तर दायित्व का वितरण है, किन्तु पदो की व्यवस्था नही है। आचाय स्वय ही अपने उत्तराधि कारी का मनोनीत करता है जो उसके बाद अपना पद ग्रहण करता है। पद लिए कोई उम्मीदवार नही हो सकता। धम सघ की व्यवस्था इतनी समतामूलक है कि विशेषा धिकार एव पद का यहा अस्तित्व ही नही है। सेवा क लिए यहा भरपूर स्थान है, सत्ता के लिए किंचित भी नही। सेवा सबके लिए अनिवाय है। रुग्ण एव ग्लान साधु साध्वियो की सेवा का दायित्व सब पर है, उसम किसी को किसी भी आधार पर मुक्ति नही ह। सेवा एव परिचया का दायित्व साधु साध्विया सहष ग्रहण करते हैं। वद्ध, अक्षम एव रुग्ण साधु साध्वियो के लिए स्वास्थ्य लाभ एव सेवा का केन्द्र है जहा उनकी परिचर्या नियमित रूप से होती है। किसी भी सामाजिक व्यवस्था म रुग्ण एव अक्षम व्यक्तियो के लिए इतनी सुचारु एव व्यापक व्यवस्था मिलनी दुलभ ही होगी।

इन सभी व्यवस्थाओ को जमाने मे जयाचाय की क्रान्तदर्शी मेधा का महान योगदान है। आपने आचाय श्री भिक्षु द्वारा निर्मित मर्यादाओ को व्यवहारिक रूप देन के लिए समय समय पर अनेक आयामो को मूत रूप दिया है। प्रस्तुत ग्रन्थ म मर्यादा और व्यवस्था से सम्बन्धित आपकी ऐसी ही १० कृतिया सकलित की गई हैं।

१ लिखता री जोड
२ गणपति सिखावण
३ शिक्षा री चौपी
४ उपदेश री चौपी
५ टहुका
६ मर्यादा मोच्छव री ढाला
७ गण विशुद्धिकरण हाजरी
८ परपरा री जोड
९ लघु रास
१० टालाकरा री ढाल।

इन कृतियो का सक्षिप्त परिचय इस प्रकार है —

१. लिखतां री जोड़

तेरापथ के प्रथमाचार्य श्रीमद् भिक्षु स्वामी ने अपनी पैनी दृष्टि से संघ सुरक्षा के लिए समय-समय पर अनेक मर्यादाओं का निर्माण किया और सम्बन्धित व्यक्तियों को सुनाकर उनकी मौखिक ही नही, लिखित सहमति भी प्राप्त की। इसलिए राजस्थानी भाषा मे इन मर्यादाओं को 'लिखित' नाम से अभिहित किया गया। श्रीमज्जयाचार्य ने उन लिखितों की सुरक्षा तथा वे सघ के सदस्यों की स्मृति मे सहज रूप से रह सकें इस दृष्टि से उन्हे पद्य-बद्ध कर दिया। इस कृति मे स्वामीजी के १० लिखितों का पद्यानुवाद है, जिसमे दो लिखित व्यक्तिगत है, एक मुनि अखैराम जी के लिए तथा दूसरा साध्वी फत्तूजी के लिए। शेष आठ मे कई साध्वियो के लिए, कई साधुओं के लिए तथा कई साधु-साध्विया दोनो के लिए हैं, जिन्हे १६ गीतिकाओ के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैं—इस ग्रन्थ मे ढालो का क्रम लिखितो की रचना सवत् के क्रम से था। तदनुसार व्यक्तिगत लिखित पहले आते थे। पर लिखितो की सामूहिकता और मौलिकता को ध्यान मे रखते हुए सपादन के समय उस क्रम मे कुछ परिवर्तन किया गया है। इसका सक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

ढाल प्रथम—इसमे ३६ पद्य है। इसकी रचना स० १६११ ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष मे बुधवार के दिन हुई है। स्थान का उल्लेख नही है। इसमे मुनि भारमलजी (द्वितीयाचार्य) के सं० १६३२ मृगसर कृष्णा ७ के दिन उत्तराधिकार पत्र के रूप मे लिखे गए नियुक्ति पत्र का अनुवाद है। साधु-साध्वियो के लिये सामूहिक रूप से लिखा गया स्वामीजी का यह प्रथम लिखित है। तत्कालीन सभी साधुओं की सहमति से इसे लिखा गया है।[1] यह लिखित हमारे सगठन का प्रथम मौलिक संविधान है। इसके माध्यम से सयम साधना मे बाधक तत्त्वों के निरसन की व्यवस्था, विनय-मूल धर्म की प्रतिष्ठा तथा सभी को न्याय मिल सके, ऐसे उपायो का दिग्दर्शन है।[2]

---

१ ऋष भीखण सर्व साधा भणी, पूछी धर अहलाद।
सर्व साधु साधवियां तणी, बाधी वर मरजाद॥
(ढाल १, गाथा १६)

२ तिण नूं ममत शिखादिक तणो, मिटावण तणो उपाय।
चारित्र चोखो पालण तणो, उपाय कियो सुखदाय॥
विनय मूल ए धर्म नैं, न्याय मार्ग चालण रो उपाय॥
(ढाल १, गा० १२, १३)

ढाल २—३१ गाथाओ वाली इस ढाल की रचना स १९१४ कार्तिक क० ११ बीदासर मे हुई है। इसमे सभी साध्वियो के लिए स० १८३४ ज्येष्ठ शुक्ला ९ के दिन किये गए लिखित का अनुवाद है[1]। यह पारस्परिक व्यवहार मे होने वाली त्रुटियो के निरसन के लिये अच्छे पथ प्रदशन का सा काम करती है।

ढाल ३—२३ गाथाओ वाली इस ढाल की रचना स० १९१४ फा कृ० १३ बीदासर मे हुई है। इसमे सवत १८४१ चत्र कृष्णा १३ के दिन साधुओ के लिये बनाए गये लिखित का अनुवाद है। इसमे दोषो के प्रतिकार के विभिन्न सूत्रो की ओर इगित किया गया है।

ढाल ४ ५—११ और ३५ गाथाओ वाली इन दोनो ढालो की रचना एक ही दिन में स १९१४ फा शुक्ला १ बीदासर मे हुई है। इसमे स० १८४५ जे शुक्ला १ के दिन लिखे गए लिखित का अनुवाद है। सघ का कोई साधु अस्वस्थ या अचक्षु हो जाए वैसी स्थिति मे प्रत्येक सदस्य का कतव्य हो जाता है कि वह उसकी अग्लान भाव स सेवा करे, उसका वैराग्य और समाधि बढे वैसा काय करे। उसे अक्षम और रुग्ण समझ कर सलेखणा (अत समय की तपस्या) करने की भी प्रेरणा न दे। विहार के समय उसका वजन ले तथा अन्य अपेक्षाओ को पूरा करे ताकि किसी भी स्थिति मे साधुत्व के प्रति उसके परिणामो मे उच्चावच भाव न आए।[2]

ढाल ६ ७—छठी ढाल मे ४४ पद हैं। इसकी रचना स० १८१४ कार्तिक शुक्ला १४ बीदासर मे हुई है। ७ वी ढाल मे ३५ पद्य हैं, इसकी रचना १९१४ पोष शुक्ला ४ को चूरु मे हुई है। दोनो ढालो मे स० १८५० मा कृ १० के दिन साधुओं के लिये किए गए लिखित का अनुवाद है।

ढाल ८ से ११—८वी ढाल से ११वी ढाल की रचना स १९१४ मे क्रमश चत्र कृष्णा ६, वैसाख कृष्णा ३ वै कृष्णा ४ तथा व कृष्णा ७ के दिन सुजानगढ मे हुई।

---

१ सवत अठार चातीस म समणी नो सुखकार
भिक्षु लिखत कियो भलो निसुणो सहु नर नार॥ (ढाल० २। गा०१)

२ कारणिक नाणो आस्यादिक गरढ गिलाणो जद और साध अगिलाणा।
वियावच करणो हित ल्याई॥
उण नैं सलेखणा केरी ताकीदी नहिं देणी छै निज तन मन न धरी।
बध वैराग करणो तिण रीत सुमागो, अति आणो हरख अथागो॥
वियावच करणो हित ल्याई॥
रोगिया हावै ता तावा उण रो बोझ उपाडणो उणरा चढ़ता परिणामो।
रहे ज्य करणा उण म जाणो सुध चरणो तसु छेह दे ना परहरणो॥
पवर ए रीत सुगण भाई॥
ढाल ४, गा०२, ३ ५)

इनमे साध्वियो के लिये सं १८५२ का कृ १४ के दिन बनाए गए लिखित का० अनुवाद है। इसमे साधुत्व के प्रति आस्था, पारस्परिक विश्वास, साधु-साध्वियों के गांव मे रहने की स्थिति मे व्यवस्था तथा ढीठ प्रकृति वाली आर्याओ के लिये बनाई गई विशेष मर्यादाओ का विवेचन है। इन ढालो मे क्रमश. १८,१९,२४ और ३६ पद्य हैं।

ढाल १२ से १६—इन पाचो ढालो मे स० १८५९ मे बनाए गए लिखित का अनुवाद है। इनका रचना-काल, स्थान तथा पद्य सख्या इस प्रकार है :

१२—	१९१४	वै० कृ०	१०	सुजानगढ़	। पद्य –१४
१३—	,,	वै० कृ०	१४	,,	। पद्य—१७
१४—	,,	,, ,,	,,	,,	। पद्य—१३
१५—	,,	वै० शु०	४	लाडनू	। पद्य—२२
१६—	,,	जेठ कृ०	८	,,	। पद्य—३७
१७—	,,	मा० शु०	६	रतनगढ	। पद्य—३५

इसमे आचार्य श्री भिक्षु द्वारा स० १८२९ फा० शु० १२ 'बूसी' गाव मे मुनि अखेरामजी (लोहावट) के लिए व्यक्तिगत रूप मे किए गए लिखित का अनुवाद है।

मुनि अखेराम जी दीक्षित होने के कुछ वर्षो बाद कई कारणो से संघ से अलग हो गये, पर कई दिनो बाद विचारो मे परिवर्तन होने से पुन. सघ मे आने के लिए प्रयास करने लगे। आचार्य भिक्षु उन्हे पूरा विश्वास होने के बाद ही वापस लेना चाहते थे। अत उक्त लिखित की रचना हुई। मुनि अखेरामजी ने सभी उल्लिखित शर्तो को हस्ताक्षर पूर्वक स्वीकृत किया था तब उन्हे सघ मे सम्मिलित किया गया।

ढाल १८—इसमे ६८ पद्य हैं। इसकी रचना १९१४ फा० कृ० ८ बीदासर मे हुई। फत्तूजी आदि ४ साध्विया अन्य सम्प्रदाय से भैक्षव गण मे आने के लिए तैयार हुई। दीक्षित करने से पूर्व स्वामीजी ने उनकी कसौटी करने की दृष्टि से आचार-विचार से सम्बन्धित विशेष शिक्षाएँ प्रदान की और कुछ बन्दोबस्त किए। यह स०१८३३ मिगसर कृष्णा २ के दिन लिखे गए उस लिखित का अनुवाद है।

ढाल१९—इसमे ३० पद्य है। इसमे उक्त सभी लिखितो का सक्षिप्तीकरण-निचोड़ प्रस्तुत किया गया है।

२. गणपति सिखावण

गणपति सिखावण कृति कलेवर को दृष्टि से छोटी होते हुए भी भावो की दृष्टि से आलौकिक और अद्वितीय है। इसकी रचना मुख्य रूप से युवाचार्य श्री मघ-

राजजी को माध्यम बनाकर की गई है किन्तु अनागत सभी आचार्यों के लिए भी वह दिशा दर्शक है ऐसा स्पष्ट उल्लेख है—

"पद युवराज शिष्य मघराज भणी ए शिक्षा सारी।
वले अनागत गणपति हुवै, तसु एहिज सीख उचारी॥"

इसमे आचार्य को अपने कर्तव्य के प्रति सजग करते हुए संघ सम्बन्धी छोटी से छोटी प्रवृत्ति पर भी विशेष ध्यान रखने की प्रेरणा दी है और गणवृद्धि की दृष्टि से ऐसे अनेक तथ्यो की ओर इंगित किया गया है जो बडे मनोवैज्ञानिक और मनन करने योग्य हैं। इन तथ्यो के पीछे जयाचार्य के अनुभव बोल रहे हैं। इसकी रचना सं० १९२० चूरु चातुर्मास मे हुई है। इसमें ८७ पद्य हैं।

३ शिक्षा की चौपी

संघ की व्यवस्थाओं को सुचारु रूप से संचालित करने की दृष्टि से श्रीमज्जयाचार्य ने समय समय पर विभिन्न विषयों पर महत्त्वपूर्ण शिक्षाए प्रदान की हैं। इसमें सगीत के माध्यम से मनोवैज्ञानिक एव तार्किक पद्धति से जिस प्रकार अनेक तत्त्वों को हृदयगम कराने का प्रयास किया गया है, वह अपने ढंग का अनूठा एव नई स्फूर्ति भरने वाला है। कई स्थानों का पठन समय तो ऐसा लगता है मानो हम कोई चलचित्र देख रहे हैं। 'घोडानो प्रकृति और 'चोखी प्रकृति' शीर्षक ढालों मे सुविनीत और अविनीत व्यक्ति की प्रकृति का सूक्ष्म चित्रण इसका जीता-जागता उदाहरण है। इसी प्रकार चवदहवीं ढाल मे गुरु शिष्य सवाद के रूप मे कुछ जीवन व्यवहारोपयोगी प्रश्नो को उभार कर जिस प्रकार समाधान प्रस्तुत किया गया है उसे पढकर हृदय गदगद हुए बिना नहीं रहता।

सुविनीत और अविनीत के अन्तर को स्पष्ट करते हुए कुछ पद्य लिखे गए हैं वे नई उपमाओं से उपमित होकर इतने सरस बन गए हैं कि उन्हें पढने मे सूक्तियों का सा आनन्द आता है। नमूने के तौर पर हैं तीन पद्य प्रस्तुत हैं—

काच भाजन अविनीतडा कह्यो चोटा खम नांम।
सहै चोटा तो वनीत ही, कं हीरा कं हेम॥
(ढाल १६ गा० ७)

काच के बर्तन पर कोई चोट लगाए तो वह सहन नहीं कर सकता, फूट जाता है। किन्तु स्वर्ण और हीरा चोटें खाकर दुगुना चमक के साथ सामने आता है। इसी प्रकार सद्गुरु की शिक्षा रूपी चोट से अविनीत दुःख पाता है और सुविनीत मुसकराता है।

अवनीत गाला मण नों, नष्ट गत तत्काल।
सुबिनीत गाली गार नों, ज्यू धर्म ज्यू लाल॥
(ढाल १६ गा० ८)

मोम का गोला अग्नि का ताप लगते ही पिघल जाता है किन्तु मिट्टी के गोले को जितना अधिक ताप लगता है उतना ही मजबूत होता है। यही स्थिति अविनीत और सुविनीत की है।

अविनीत वृक्ष एरडियो, अस्थिर ते करै कोप।
सुविनीत कल्पतरु समो विनय नो वगतर रोप ॥
(ढाल १६ गा० १६)

अविनीत एरड वृक्ष की तरह थोड़ा सा हवा का झोका लगते ही अस्थिर हो जाता है किन्तु विनयी सुविनीत कल्पवृक्ष की तरह अडिग एव मनमोहक होता है।

इसमे ३२ ढाले है जिनमे ७१५ पद्य हैं। इसकी पहली ढाल की रचना स० १६१२ मृ० कृ० १० तथा २३ वी ढाल की रचना स० १६३७ फा० शु० ४ की है। कुछ ढालो मे रचना-समय का उल्लेख नही हैं। इस कृति की रचना एक साथ न होकर आवश्यकतानुसार समय-समय पर हुई है। वाद मे सब को संकलित कर एक रूप दिया गया है।

इस कृति का सक्षिप्त विपय-क्रम इस प्रकार है—

ढाल १ अनुशासन की आरावना क्यो और कैसे ?
" २ क्षुद्र प्रकृति वाले व्यक्ति का चित्रण
" ३ अच्छी प्रकृति वाले व्यक्ति का चित्रण
" ४ आचार्य के प्रति शिष्यो का कर्तव्य
" ५ सुविनीत कौन ?
" ६ मर्यादा-विवेक
" ७ साध्वियो को शिक्षा
" ८ साधुओ को शिक्षा
" ९ चारित्र रत्न की निर्मलता के लिए कुछ सूत्र
" १० अविनीत-सुविनीत परीक्षण
" ११ मर्यादा विवरण
" १२ परिचय (स्नेह राग) परिहरण शिक्षा
" १३ टालोकर (वहिभू॔त व्यक्ति) को शिक्षा
" १४ गुरु-शिष्य सवाद
" १५ सामूहिक शिक्षा मर्यादाओ के सन्दर्भ मे
" १६ मुख, प्रकृति-परिवर्तन से
" १७ दलवन्दी के दुष्परिणाम
" १८, १६ सुविनीत प्रशसा
" २० सविभाग के गुण-दोप

,, २२ भिक्षु गण नन्दन-वन

,, २३ टालोकर प्रकृति चित्रण

, २४, २५ सघ स्तवना

,, २६ सघ मे रहते हुए दोषो का प्रायश्चित्त कैसे और कितना ?

,, २७ उच्चता की परख

, २८ दुष्कर्मों का दुष्परिणाम

,, २९ ईर्ष्या परिहारिणी शिक्षा

,, ३० गुण प्रशसा

,, ३१ साधक प्रशसा

,, ३२, ३३ सयम शिक्षा

४ उपदेश री चौपो

इस कृति मे उपदेशात्मक विविध विषयो पर १५ ढालें हैं, जिनके २८३ पद्य हैं। अन्त मे गीता के १२ व अध्याय के कुछ श्लोकों का अनुवाद है। कई ढालो के अत मे नाम तथा रचना सवत, स्थान आदि का उल्लेख नही है। इसम कुछ पद्य इतने मार्मिक हैं कि सीधी चोट करते हैं। प्रमादी व्यक्ति को चेतावनी के कुछ पद्यो का हार्द इस प्रकार है—

बडा आश्चय है कि रोग, जरा और मरण जसे तीन तीन भीषण शत्रु तुम्हारे पीछे चले आ रहे हैं। यह तो इनसे छुटकारा पाने के लिए पलायन का अवसर है, फिर भी अरे मूर्ख ! तुम सोए पडे हो ?

० चाद और सूरज दो बैल हैं, दिन और रात्रि घडमाल हैं। जलरूपी आयु कम होता जा रहा है। यह मृत्यु एक विकराल रहट है।[1]

ढाल दूसरी म—सुमति और कुमति का पार्थक्य दिखलाने की दृष्टि से देवरानी और जेठानी का रूपक अपने ढग का एक नया उपक्रम है।[2]

सुपात्र और कुपात्र के नीर क्षीर विवेक सम्बन्धी कुछ पद्यो का निष्कर्ष इस प्रकार है—

---

१ ० तीन वैरि लारे लग्या रोग जरा मरण जान।
इण त्रासण र अवसरे क्यू सूतो मूढ अयाण॥
० बलद जेम चन्द सूर छै दिवस रात्रि घडमाल।
जल आयु ओछा कर, ए काल रेंट विकराल॥

२ उपदेश री चौपी, ढाल २, गा० १५

७. गणविशुद्धिकरण हाजरी

स्वामी भीखणजी ने अपने जीवन-काल मे जो मर्यादाए वनाई थी, उनको जयाचार्य ने विभिन्न वर्गो मे सकलित कर उनका विस्तृत भाष्य करते हुए एक शिक्षात्मक ग्रन्थ वना दिया। सघ-विशुद्धि की दृष्टि से उसका वडा महत्त्व था। अतः सभी साधु साध्वियो की हाजरी (उपस्थिति) मे वह सुनाया जाने लगा। इसीलिए उसका नाम पड़ गया 'गणविशुद्धिकरण हाजरी'। वाद मे सक्षिप्त रूप मे मात्र 'हाजरी' नाम ही रह गया। वे हाजरिया २८ हैं। उनमे स्वामीजी द्वारा लिखित मर्यादाओ के अ श यथा-प्रकरण उद्धृत किए गए हैं। इस दृष्टि से उन्हे शिक्षा और मर्यादाओ का सुन्दर सम्मिश्रण कहा जा सकता है।

सघ मे साधु साध्वियो को किस प्रकार रहना चाहिए, सघ और सघपति के साथ उनका कैसा सम्वन्ध होना चाहिए, शासन-हितैषियो को टालोकरो का ससग वयो वर्जित करना चाहिए आदि सघीय जीवन की अनेक आवश्यक सूचनाओ तथा शिक्षाओ से गृहस्थो को भी परिचित रखना आवश्यक होता है। हाजरियो द्वारा यह कार्य सुचारु रूप से सहज ही सम्पन्न किया जा सकता है।

हाजरी का प्रारम्भ सवत् १९१० पो० कृ० ९ शनिवार के दिन वड़ी रावलिया (राज०) मे हुआ था और उस समय प्रतिदिन के क्रम से ये सभी हाजरिया एक महीने मे सुनाई जाती थी। इनका ग्रन्थाग्र ३२८७ है।

८. परम्परा को जोड़

किसी भी व्यवस्था को लम्वे काल तक व्यवस्थित रखने के लिए विधि-विधानो की अत्यन्त अपेक्षा रहती है। उनके विना सामुदायिक जीवन मे पग-पग पर अव्यवस्था का खतरा वना रहता है। इस खतरे से वचने के लिए ही भगवान महावीर से लेकर अव तक अनेक नियमो की सरचना हुई है। छेद सूत्र को इसी कोटि मे ले सकते है। सामयिक परिस्थितियो के सदभ में कई नए प्रश्न भी उठ खडे होते है, जिनके सम्वन्ध में आगम मौन है। वैसी स्थिति मे स्पष्ट उल्लेख न होने से उन्हे सुलझाने के लिए पूर्व परम्परा की ओर झाकना पड़ता है।

प्रस्तुत कृति ऐसे ही अनेक प्रश्नो का समुचित समाधान प्रस्तुत करती है। इसका सक्षिप्त विषयानुक्रम इस प्रकार है। कृति के प्रारम्भ में जीत व्यवहार अर्थात् आचार्य द्वारा निर्णीत परम्परा को पुष्ट करते हुए स्थानाक व्यवहार तथा भगवती-सूत्र के प्रकरणो को उद्धृत कर स्पष्ट किया है।

बुद्धिमान आचार्य पांच व्यवहारों के आधार पर शुद्ध नीति से जो निर्देश देते हैं उसके अनुसार प्रवृत्ति करने वाला श्रमण आराधक होता है।

ढाल १ नित्यपिंड आहार कैसी स्थिति में कब लिया जा सकता है?
एक घर में अनेक बार गोचरी की जा सकती है।

ढाल २ शास्त्रीय अनेक बातों का सप्रमाण स्पष्टीकरण।

ढाल ३ टालोकर रूपचन्दजी और अमरामजी द्वारा उठाए गए १५६ बोलों में से कुछ बोलों का स्पष्टीकरण।

ढाल ४ तथा ५ गोचरी संबंधी कल्पाकल्प व्यवस्थाओं का निराकरण।

ढाल ६ दायक (दाता) और देय (वस्तु) का शुद्धाशुद्धि विवेक।

ढाल ७ साधु कौन कौन सी वस्तु अपने हाथों से ले सकता है और कौन कौन सी नहीं ले सकता? आदि आदि।

रचना संवत तथा पद्य परिमाण।

ढाल १ सं० १९१४ वै० कृ० ६ लाडनूं
२ सं० १९१५ मृ० कृ० ८
,, ३ सं० १९१५ म० शु० ३
४ सं० १९१५ फा० कृ० ३ लाडनूं
५ ६ सं० १९१६ मा० कृ० ८, लाडनूं
, ७ लाडनूं

इन सातों ढालों में ३३ दोहे ३८१ गाथा तथा २२ पद्य परिमाण वार्तिका है। इसका समग्र ग्रन्थाग्र ४३६ है।

६ लघुरास

जयाचार्य की कृतियों में लघुरास का अपना स्वतन्त्र महत्त्व है। तत्कालीन ६ बहिर्भूत साधुओं (१ चतुर्भुजजी २ कपूरजी ३ जीवोजी ४ सतोजी, ५ छोगजी ६ किस्तूरजी) से सम्बन्धित विभिन्न तथ्यों का सुन्दर विश्लेषण इसी कृति में हुआ है। कुछ तथ्य तो इतने समीचीन चित्रित हुए हैं कि आज भी उनकी पुनरावृत्ति तदनुरूप देखी जाती है। इस रास की मुख्य ढाल एक ही है। बीच में आचार्य भिक्षु और मुनि हेमराज जी की ढालों का अन्तरढाल के रूप में उद्धृत किया गया है। इस रास में १४४० पद्य हैं। प्रारम्भिक १२२६ पद्यों की रचना वि० सं० १९२३ वैशाख शुक्ला ८ के दिन हुई है। स्थान का नाम नहीं दिया गया है।

जयाचार्य ने अपने सहज शब्दों में संघ से बहिर्भूत व्यक्तियों की विचारधारा का जो चित्र खींचा है, वह वास्तव में ही अनूठा और मनोवैज्ञानिक है। बहिर्भूत साधु पग-पग

पर स्खलित होता है। उसकी मानसिक और वाचिक वृत्तियां कितनी अस्थिर होती है ? समय-समय पर वह किस प्रकार आत्मवञ्चना और वागविडम्बना करता है ? अपने स्वार्थों की अप्राप्ति मे अधीर होकर वह जिस प्रकार सघ और शास्ता पर झूठे दोषा-रोपण करता है ? छिपे छिपे सघ के साधुओ मे मनोभेद पैदा करने के लिए वह कितनी कुटिल प्रवचनाएं रचता है ? आदि समग्र तथ्यो का सूक्ष्मतापूर्वक यथार्थ विश्लेषण प्रस्तुत कृति मे किया गया है।

१० टालोकरों की ढाल

आचार्य श्री भिक्षु ने सघ के साधु-साध्वियो के लिए जहा व्यवस्था की है, वहा उन्होने संघ मे बहिष्कृत या बहिर्भूत व्यक्तियो के लिए भी कई मर्यादाए और कुछ मौलिक सुझाव प्रस्तुत किए हैं। साधारणतया देखा जाता है कि गण से बहिष्कृत व्यक्ति अपने दोषो को न देखकर संघ मे ही दोष निकालने का प्रयास करता है। पर क्या नींव के बिना भी कभी मकान खड़ा रह सकता है ? बातूल आते समय कितना तेज आता है पर उसकी यह स्थिति कितनी देर रहती है, यह सभी जानते हैं।

प्रस्तुत कृति में टालोकरो से सम्बन्धित मर्यादाओ का विश्लेषण तथा उनके द्वारा होने वाली हरकतो का चित्रण है। यद्यपि इस कृति में किसी व्यक्ति का नाम नहीं लिया गया है किन्तु इतिहास के अवलोकन से जो इसके नायक सिद्ध होते है वे हैं—तेरापथ के तृतीय आचार्य रायचन्द जी के पास स १८८० मे दीक्षित होने वाले जयपुर के मुनि श्री फतेचन्दजी। ये जाति के सरावगी थे। स्त्री को छोड कर वैराग्य भाव से दीक्षा ग्रहण की थी, किन्तु छिद्रान्वेषी प्रकृति के होने के कारण थोड़े दिनो के बाद ही संघ के अन्दर दलबन्दी सी करते हुए छुप-छुप कर गण के साधुओ के अवर्णवाद बोलने लगे और मतभेद डालने लगे। पर यह बात कब तक छिपी रह सकती थी ? पता लगने पर पूछा गया तो इन्होने शंकाएं रखी। उनके समाधान के साथ प्रायश्चित्त दिया गया। पुन वैसा करने का प्रत्याख्यान करते हुए एक लिखित भी लिखा। किन्तु अपनी प्रकृति नहीं बदल सके और सं १८९० मे अलग हो गए और तीन दिन तक बहुत अवगुण बोले। संघ मे ३२ दोष निकाले। इन्ही सारे प्रसगो की इस ढाल मे विस्तृत चर्चा और स्पष्टीकरण है। इसकी १ ढाल है जिसमे १५ दोहे, ३ सोरठे तथा १८० गाथाए है तथा ९ पद्य परिमाण वार्तिका है। कुल मिला कर इसके २०७ पद्य है। स १९३३ चै शु० २ के दिन इसकी सम्पूर्ति हुई।

उपसहार

इस प्रकार इन अलग-अलग कृतियो मे तेरापथ सघ में अनुशासन और व्यवस्था सम्बन्धी अनेक आवश्यक बातो का सुन्दर समावेश हुआ। ये कृतिया क्रमबद्ध नही लिखी गई हैं, अत कई स्थलो पर पाठका को पुनरावृत्ति का भी आभास होता है। पर यह तात्कालिक नई-नई व्यवस्थाओ को जमाने की दृष्टि से अत्यन्त आवश्यक था। श्रीमज्ज याचार्य ने अपनी सूझबूझ और दूरदर्शिता से दुगम पथ को भी सरल एव सावजनिक बना दिया। उस पथ को सजाने, सवारने मे इन कृतियो का महत्त्वपूण यागदान रहा है।

श्रीमदजयाचाय के शताब्दी समारोह के पुण्य प्रसग पर उनके बहुमुखी विशाल राजस्थानी साहित्य का परम श्रद्धेय आस्थाकेन्द्र युगप्रधान आचाय श्री तुलसी एव महामहिम युवाचाय श्री महाप्रज्ञ के निर्देशन म सागापाग सम्पादन होने जा रहा है। मुझे भी इस ग्रन्थ के माध्यम से उस काय म सम्पृक्त होकर श्रीमज्जयाचाय के चरणो मे श्रद्धाजलि अर्पित करने का सहज मौका मिला। इसके लिए अपने आपको कृताथ मानता हू।

अपनी बात

इस ग्रन्थ के सम्पादन मे सबसे महत्त्वपूण काय पाठ निर्धारण का था। यद्यपि मुनि श्री नवरत्नमलजी की देख रेख म अत्यन्त परिश्रम-पूवक इसमे समाविष्ट कृतिया की पाडुलिपिया पहले ही तयार हो चुकी थी, फिर भी मूल प्रतिलिपियो से उनका मिलान और शकास्पद स्थलो का पाठय निर्धारण काय दुरूह और श्रम साध्य था। विविधमुखी प्रवृत्तियो मे अत्यन्त व्यस्त होते हुए भी श्रद्धेय गुरुदेव ने उसके लिए मुझे मुक्त समय प्रदान किया, इससे मेरा काय काफी सुगम हो गया। आचायप्रवर के प्रति अपनी भाव भरी श्रद्धा समर्पित करता हुआ यह कामना करता हू कि मेरे हर क्षेत्र मे इसी तरह आपका वरद सान्निध्य प्राप्त होता रहे और मैं अपनी मजिल की ओर बढता रहू।

जयशताब्दी समारोह (अनुशासन वष) के सन्दभ मे प्रकाशित होने वाली यह कृति जन-जन म अनुशासन, मयादा एव सगठन के प्रति जागरूकता पदा करे इसी शुभाशसा के साथ अपनी लेखिनी का विराम देता हू।

—मुनि मधुकर

१५ जून १६८२
कटालिया (भिक्षुनगर), राजस्थान।

अनुक्रम

लिखता री जोड

'लिखत स० १८३२ री जोड

ढाल . १

दूहा

१ असल धम महावीर ना, निमल माग निकलंक।
'जमल नान अरु चरण युग, कमल जेम निर्पंक ॥
२ शरण स्वाम शासण सुजस, धरण दुवर शिव धाम ॥
वरण अमर वधु वसुधरा, तरण भवादधि ताम ॥
३ अग अनग भुचग अति, वच वर रुचिर विसाल।
अवलोकी आगम अनघ मुनि भिक्षु गुणमाल ॥
४ सवत् अठदस मय सतर, समचित कर सुविचार।
निरवद दान दया निमल, वर वारू व्रत धार।
५ विविध सुविध मर्याद सुध, स्थापन कर स्थिर भाव।
भिक्खू प्रगटया भरत मे, साप्रत तरणी नाव ॥

'गणपति गुणाकर शोभता।
मुणिन्द मारा[1] धिन-धिन भिक्खू स्वाम हो ॥ ध्रुपद ॥

६ रूप भीखण सब साधा भणी। पूछी धर अह्लाद हो।
सब साधु साधविया तणी। बाधी वर मरजाद हो ॥
७ ते साधा नै पूछ नै, साधा कना थी कहिवाय।
आगल ते लिखिय अछ, मयादा सुखदाय ॥
८ सब साधु न साधवी, भारमल जी री आण।
विहार चामासो करणो तिको, करणो आण प्रमाण ॥
९ दिख्या देणी ते इण विधै भारमल जी र नाम।
सब साधु साधविया तणी, मरजादा अभिराम ॥
१० चेलारी न कपडा तणी, साताकारिया खेत्रा नी ताहि।
आदि देइ बहु वस्तु नी, ममत करी मन माहि ॥

---
१ विगत देखें—परिशिष्ट १
२ युगल।
३ सय सीहल नप कहे चद न।

२६ च्यार तीर्थ मे गिणवा नही, चतुरविध सघ रा निंदक असार।
वादे पूजै एहवा भणी, ते पिण आज्ञा वार॥
२७ काम पडे चरचा बोल रो, किण नै छोडणो मेलणो तोल।
करणो बुधिवत नै पूछ नै, इमहिज सरधा रो बोल॥
२८ जे कोइ याद आवै वलै, ते पिण लिखणो तास।
ते पिण सब कबूल ही, करणो आण हुलास॥
२९ सब साधा रा परिणाम जोय नै, रजावध कर बाध।
या कना सू पिण कहिवाय नै, बाधी 'ए' मरजाद॥
३० परिणाम जिण रा माहिला, चोखा ह्वै जो ताम।
ते मतो[1] इण माहै घालज्यो, सरमा-सरमी रो नही काम॥
३१ मूढै और मन मे और ही, इम तो साधु न करवो छ नाय।
वलि इण लिखत मे खूचणो, काढणो नही छ काय।
३२ पछै कोइ और रो और ही, बोलणो नही छै ताम।
अनता सिद्धा री साख सू, ए पचखाण अमाम॥
३३ सवत अठारै बत्तीस मे, मगसर विद सातम सार।
लिखतु ए ऋप भिक्खन तणो, हेठे साधा रा अक्षर उदार॥
३४ साख एक थिरपाल नी, लिखतू वले वीरभाण।
ऊपर लिखियो ते सही, इम हिज हरनाथ पिछाण॥
३५ इम ही सुखराम लिख्यो सही, लिखतू तिलोकचद जाण।
ऊपर लिखियो ते सही, लिखतू इम ही चद्रभाण॥
३६ अखेराम अणदा तणा, इम हिज अक्षर जोय।
आप-आप रा हाथ सू, अक्षर लिखिया सोय॥
३७ वप बत्तीसे स्वाम जी, बाधी ए मरजाद।
जोड करी मैं तेहनी, जय-जश हरप समाध॥
३८ अक्षर भिक्खू स्वाम ना, ए लिखत लिख्यो निज हाथ।
जोड करी ते देख नै, गणपति जय साख्यात॥
३९ सवत उगणीसै ग्यारे समे, जेठ शुक्ल बुध ताय।
भिक्षु भारीमाल ऋपराय थी, जय-जश हरप सवाय॥

---

१ राशी।

ढाल : २

दूहा

१ संवत् अठार चोतीस मे, समणी नो सुखकार ।
भिक्षु लिखत कियो भलो, निसुणो सहु नर-नार ॥

[1]स्वाम भिक्षु वच हिय धरणा, स्वाम भिक्षु वच हिय धरणां ।
सुगुरु आण मर्याद अराध्या, भवदधि सें तरणा ॥ ध्रुपद ॥

२ सर्व आरजियां रे लज्जा, एक लिखत कीधो ते निसुणो अजा भणी, अज्जा—
क्रोध वस तूकारो देवै, पंच-पच दिन पच विगै रा त्याग तिके लेवै ।
जिता तूकारा जे काढे, जिता पच-पच दिवस विगै रा त्याग सिरैचाढै ।
वयण इसड़ा नहि उच्चरणा, सुगुरु आण मर्याद० ॥

३ वलै बोले जो ते अजिया, तू झूठा बोली एहवा वच भाखे तज लजिया ।
जिता दिन पच-पच जाणी, पच विगै रा त्याग तास बोली ए अलखाणी ।
डड आया मोसो बोलै, जितरा पंच-पच दिन त्याग विगै रा दंड तोले ।
सुगण जन दूपण से डरणा, सुगुरु आण मर्याद० ॥

४ टोला ना सत आरजिया नी, ग्रहस्थ आगै करै उतरती निंद्या दुखखाणी ।
तास धणी अजोग जाणेणी, एक मास ना त्याग विगै पाचू नही देणी ।
करै निंद्या जितरी विरिया, जितरा मास विगै पाचू रा त्याग अनुसरिया ।
इसा अवगुण न परहरणा, सुगुरु आण मर्याद० ॥

५ वात अजियारी माहो माहि, उण रो 'परतो' वच[2] उण आगै कहै जु दुखदाइ ।
उण रो वलि मन भागै जेहवो, वचन कहीनै मन भागै तो दड इसो देवो ।
पनर दिन पच विगै के रा, ए पचखाण अछै तिण रे निंदै तसु अधिकेरा ।
दोप छोड्या शिवपद वरणा, सुगुरु आण मर्याद० ॥

---

१. लय सुगुरु की सीख हिये धरणा । २ हीनता-सूचक वचन ।

६ माहो मा कहै इसी वाणी, तू सूसा[1] री भागल एहवो वचन वदै ताणी।
तास दिन पनरै लग त्यागो, जिती वार कहै जिता पनर दिन त्याग तणा मागो।
आसू काढै जितरी वेलो, दश दिन त्याग विग रो के दिन पनर माहि वेलो।
अमल चित अगीकार करणा, सुगुरु आण मर्याद० ॥

७ इत्यादि वच करडा काठा, कहै तसु प्राछित यथाजोग है मिटै लखण माठा।
कह्या ए विगय तणा त्यागो, इच्छा उण री हुवै जदी पाली टालै दागो।
साधा सेती मिलिया पहिला, त्याग विगै रा तास पालणा मन शुद्ध कर महिला[2]।
इसी विध अवगुण अपहरणा, सुगुरु आण मर्याद० ॥

८ विगय नही टालै धर रागो, अपर अजा नै यू नही कहिणो तू पालईज त्यागो।
साधा सू मिलिया कहिवेसी, साधा री इच्छा आव त अपर दड देसी।
ते पिण द्रव[3] क्षेत्र काल परखो, साधा री इच्छा आवै तो विगै त्याग अधिको—
करासी ते पिण कर निरणा, सुगुरु आण मर्याद० ॥

९ आरजिया रे माहा माहि, साधु-साधविया न नहि कल्प नही शोभै क्या ही।
लोका ने अणगमती लागै, जातादिक रो जेह खूचणो सुण्या द्वेप जाग।
इसी भापा पिण जो कैव, मुनि इच्छा आवै जितरा दिन विगय त्याग देव।
तक पिण कबूल ही करणा, सुगुरु आण मर्याद० ॥

१० जिका आरजिया न ज्या ही, और आरजिया साथै मेल्या ना कहिणा नाही।
आण लोपी न नही जाव, पच विग रा त्याग न जावै जितरा दिन पाव।
और वली दड जठा वार, अविनय अवगुण दूर करी गुरु आणा शिर धार।
वयण सतगुर ना अनुसरणा सुगुरु आण मर्याद० ॥

११ साधा रा मेल्या विण अज्जा, और तणी अज्जा अय साथै जाये तज लज्जा।
जिता दिन रहै तास पासो, पच विग रा त्याग तिता दिन अवगुण दुख रासो।
अपर वलि प्राछित है भारी, ते ता दड जठा वार है आणा अधिकारी।
आण लोप्या स दुख भरणा, सुगुरु आण मर्याद० ॥

१२ आरजिया जिण साथ मली, अथवा माहा माही आरजिया चोमासे भेली।
तया भेली नेपे कालो, तसु दोप हुव तो साधु मिलिया कहिणो ततकालो।
कदा न कहै तसु पख वतिया, उतरो ही प्राछित उण न छ सुणज्यो सहु सतिया।
सखर आणा ना ल्यो सरणा, सुगुर आण मर्याद० ॥

---

१ प्रतिज्ञा।
२ अन्तरग।
३ द्रव्य।

१३ पछै बहु दिन आडा घाली, साचो अथवा झूठ कहै तो उवा जाणै वाली।
तथा जाणै जिन आणंदी, छद्मस्थ तणे व्यवहार बहु दिन सूं कहै ते मंदी।
राग अरु द्वेष वसै भाखै, निज स्वारथ न कहै नै स्वारथ नही पूगा आखै।
तास परतीत नही करणा, सुगुरु आण मर्याद० ॥

१४ वली ग्रहस्थ्या माहि खारे, जणाय आमना एक एक री आसता उतारे।
तिका आर्या महादुखकारी, तिण में तो अवगुण वोहलाइज छै अति ही भारी।
फतूजी नै माहै लीधा, लिखत तिको सहु समणी नै कबूल छै सीधा।
तसु विरला जाणै निरणा, सुगुरु आण मर्याद० ॥

१५ वलै बहु बोल अनेकांरी, करडी मर्यादा बाधै ते कबूल छै ज्या री।
त्याग ना कहिवा रा त्या ही, कर्म जोग किण ही सूं ए आचार पलै नाही।
मांहो मा स्वभाव अण मिलती, तसु साधु काढै गण वारै तथा क्रोध वस थी।
अलग हो छाडै गण सरणा, सुगुरु आण मर्याद० ॥

१६ दूर हुवै गण थी अपछंदी, ते तो झूठ अनेक वदै कर्मा वस मति मंदी।
आल कूडा-कूडा देवे, अथवा भेषधारया मे जावै कलुष भाव वेवै।
कियो संसार अनत आरै, कपट अनेक प्रकार केलवै चरित्र नैं हारे।
तास संगत सेती डरणा, सुगुरु आण मर्याद० ॥

१७ टालोकर कर्म-वसै झोले, विविध झूठ ते तो बोलेइज का नही पिण बोले।
इसी जे निलज[1] भेष भंडी, तसु वात भेषधारी भारी कर्मा मानै खंडी।
जीव उत्तम तो नही माने, टालोकर नै दूर तजी नै आप हुवै कानै[2]।
इसी विध मिटै जनम-मरणा, सुगुरु आण मर्याद० ॥

१८ टोला सूं छूट हुवै कानै, वात मानै तसु मूरख कहीजे चोर कह्या त्या ने।
आल दे अनेक अनेको, सूंस करण नै त्या री होवे कर्म कुमत रेखो।
तो ही उत्तम तो नही माने, इत्यादिक घणां छै अवगुण जग निंदे ज्या ने।
इसा तो काम नही करणा, सुगुरु आण मर्याद० ॥

१९ एतावत गण ए गुणखाणो, ए थी टल्या पछै अवगुण बोलण रा पचखाणो।
अनंता सिद्ध साख त्यागो, ए लिखत सहु आरजिया नै वचायो सुध मागो।
प्रथम तसु पासै कहिवाइ, मर्यादा बाधी ए सखरी सुगुणा सुखदाइ।
अधिक हियै हरष थकी धरणा, सुगुरु आण मर्याद० ॥

---

१. बेशर्म। २. अलग।

२० लिख्या लिखत रै परमाणै, सघली आर्य्यां नै चालणो शिर धारी आणै।
अनता सिद्धा री साखे, सघला रे पचखाण अछै तन-मन सू अभिलाखे।
हुवै जिण रा शुद्ध परिणामो, मतो घालज्यो लिखत प्रमाणे जो चालो तामो।
सरमासरमी रो नही छै कामो, जावजीव रो काम अछै आणा ए अभिरामो।
सवत् अठार चोतीसै, जेठ सुधी नवमी तिथि नीकी वच विसवावीसै।
उमग घर नै ए आदरणा, सुगुरु आण मर्याद० ॥

२१ लिखतू सुजाण तज दभा, लिखतू मटू लिखतू कुसला लिखतू कसू भा।
लिखतू जीउ लिखतू नदू, लिखतू गुमाना लिखतू फतू लिखतू अखूइ।
लिखतू अजवा लिखतू चदू, आप-आप तणा कर सू लिखिया अक्षर सुखकदू।
लिखत भिक्खू कर नो देखी, जोड करी है जय-जश गणपति सपति हित पेखी।
विमल चित सू हिवडै धरणा, सुगुरु आण मर्याद० ॥

२२ वप चउदे नै उगणीसै, फागुण विद ग्यारस मगलवर जोडी गण ईसै।
स्वाम वचनामत सुविसाली, पवर जोड जय गणि वद्धिकारक परमप्रीत पाली।
थया वीदासर मे थाट, इकतालीस समण सौ अजा नित्य प्रति गह घाट।
सरस गणपति सुख वृधि शरणा, सुगुरु आण मर्याद० ॥

सोरठा

२३ लिखत फतू[1] रा माहि, वारै वोल कह्या अछै।
वरस तेतीस ताहि, निरणो कीज्यो जोय नै ॥
२४ ऊभी नै अवलोय, जो कीडी सूझ नही।
विहार-सक्ति घटचा सोय, सलेखणा मडणो मही ॥
२५ ए दोनू बोल अवलोय, फतू जी नै ईज छ।
अवरा रे नहिं कोय, न्याय पैताली लिखत मे ॥
२६ आर्य्यादिक वद्ध गिलाण, कारणीक जे कोइ हुवै।
व्यावच तसु अगिलाण, करणी रूडी रीत सू ॥
२७ सलेखणा री सोय, ताकीदी करणी नही।
वैराग वधै ज्यू सोय, बीजा न करणो सही ॥
२८ विहार करण री रीत, काची निजर हुवै तदा।
बहु खप कर धर पीत, चलावणो तेह नै सही ॥

---

१ देखें ढा० १८।

२९ लिखत पैंताली माय, इण विध आख्यो स्वाम जी।
ते विहु बोल इण न्याय, फतू जी नैंडज छै॥
३० बीजा जे दस बोल, सगली अजा नैं अछै।
लिखत अने रा तोल, तेह मे दसनी रहिस छै॥
३१ तेतीसा लिखत नी जोड, मम कृत सोरटिया दुहा।
द्वादश तणो निचोड, निरणय कीजो देख नैं॥

ढाल ३

दूहा

१ वप इगताले स्वाम जी, वाधी ए मर्याद।
चित लगाइ साभलो, सखरी भाव समाघ ॥

'सुगुणा स्वामजी, भिक्खू लिखत कियो भारी।
नगीना नाय जी, वाधी दृढ मरजाद उदारी ॥ ध्रुपद ॥

२ साघ माहा माहे भेला रहै, त्या दोप किण ही मे देखी।
तो ततकाल घणी नै कहिणो, ते पिण अवसर पेखी ॥

३ दोप भेला नही करणा जिण नै, घणी भणी कहवता।
प्राछित लवे तो पिण गुर नै, कहि देणो कर खता ॥

४ जो प्राछित नही लेवै तो, प्राछित तणा घणी न आरे—
कराय जे-जे बोल लिखी नै, सूप देणो तिण वारे ॥

५ इण बोल तणा प्राछित था नै, गुर देवै ते दड लीजो।
जो इण रो प्राछित नही होवै, तो ही गुरा नै कहिजो ॥

६ थे गाला गोलो मत कीजो, थे नही कहिसो तो घर रागो।
तो म्हारा कहिवा रा भाव छै, हू नही काढू आघो ॥

७ सका सहित दोप म्यासे तो, सका सहित कहि देसू।
निसकपणे दोप जाणू छू, ते निसकपणे कहिसू ॥

८ नही तो अजे पाधरा चालो, इण विघ तिण नै कहिणो।
पिण दोप भेला नही करणा, प्रगट लिखत मे वेणो ॥

९ जो उ आर नही होवै तो, ग्रहस्थ पका हूं त्याने।
जणावणो उण वैठाइज, कहिणो पिण नही छानै ॥

१० चोमासा री एह वारता, जो हुवै शेखे काला।
तो किणनइ नही कहिणा, गुरु हुवै जठे आवणो न्हालो ॥

---

१ लय हठीला कान जी छल्ला में नहीं छोड़ू ।

११ पिण सतगुर रे पास आय नै, वैदो[1] घालणो नाहि।
गुरु किण नै साचो करै, किण नै झूठो करै इज त्याहि॥
१२ सतगुर तो इण वात माहि नही, कदाचित अहिलाणे[2]।
एकण नै झूठो जाणे, एकण नै साचो जाणे॥
१३ ते पिण निश्चै नही वारता, ते किण विध दड देवै।
विगर आलोया दोया री, निश्चै वतका किम कहिवै॥
१४ पाछै तो सतगुर नै वुध सू, द्रव्य खेत्र काल भावो।
जाणी नै दोनू सता रो, करणोइज छै न्यावो॥
१५ पिण उण नै तो एक दोप थी, दोय दोप दिल धारी।
भेला नही करणा छै तिण रा ए वर न्याय विचारी॥
१६ घणा दोप भेला कर आसी, तो उ तो हाथा सूं।
झूठो पड़सी सही जाणजो, साचो हुवै क्या नूं॥
१७ पछै तो केवल ज्ञानी जाणे, छदमस्थ तणे ववहारी।
भेला दोप करै तिण माहि, छै अवगुण नो भंडारी॥
१८ ए लिखत ऋप भीखन रो, सवत् अप्टादश इकतालो।
चेत विद तेरस तिथि नीकी, निर्मल न्याय निहालो॥
१९ लिखतू ऋप हरनाथ उपरलो, लिख्यो सही ते जाणो।
लिखतू ऋप भारमल उपर, लिख्यो सही प्रमाणो॥
२० लिखतू अखेराम उपरलो, लिख्यो सही ते वारू।
लिखतू ऋप स्वाम जी उपर, लिखियो सही उदारू॥
२१ लिखतू ऋप खेतसी ऊपर, लिख्यो सही ते जाचो।
लिखतू ऋप रामजी ऊपर, लिख्यो सहीज साचो॥
२२ लिखतू ऋप सिंघजी ऊपर, लिखियो सही सुजाण।
लिखतू ऋप नानक जी ऊपर, लिखियो सही प्रमाण॥
२३ सवत् उगणीसै नै चवदे, विद तेरस फागुण मासो।
गणपति जय-जश सपति जोडी, वीदासर 'सुख वासो॥

---

१. कदाग्रह। २. चिन्हो से।

ढाल · ४

दूहा

१ पतालीस वष स्वाम जी, साधा रे मरजाद।
सरस लिखत निसुणो सहु, आणी अति अहलाद॥

'स्वाम भिक्खू वच सुखदाइ रे। स्वा०।
अखड आण मरजाद अराध्या शिवपुर नी साई॥ध्रुपद॥

२ सव साधा रे मर्यादा, वाधी ते कहिये छै निसुणो छोडी विपवादा।
कारणिक जाणो, आख्यादिक गरढ गिलाणा, जद और साथ अगिलाणो।
वियावच करणी हित ल्याइ॥

३ उण न सलेखणा केरी, ताकीदी नहि देणी छै निज तन मन नै घेरी।
वधै वेरागा, करणो तिण रीत सुमागो, अति आणी हरप अयागो।
वियावच्च करणी चित ल्याइ॥

४ उण रे विहार करण नी रीतो, निजर कची ह्वै तास भरोसे ना रखणी नीतो।
घणी खप' कर नै, तसु चलावणो पग भर न, आगल मारग अनुसरम।
इसी विध चलणो हित ल्याइ॥

५ रोगियो होव तो तामो, उण रौ वोज उपाडणो उण रा चढता परिणामो—
रहै ज्यू करणो, उण मे जाणो शुध चरणो, तसु छ हृदे ना परहरणो।
पवर ए रीत सुगुण भाइ॥

६ हरप वैराग हियै आणी, सलेखणा मडे तो पिण उण री व्यावच ठाणी।
कदा इक जणो उचट होयो, त्या सगला नै रीत प्रमाणे करणी है सोयो।
करै जो नाही, नखेद नै त्या ही, करावणी ते पाही।
करावै आप किसै न्याई॥

---

१ लय महिल मन अन्तर की आडी रे।
२ परिश्रम पूर्वक।
३ किनाराकशी।

७ कारणीक रोगी नै लेणो, रीत प्रमाण आहार सहु भेला हो कहै ते देणो।
वलि किण ही रो, अजोग स्वभाव तिणी रो, वेठण वाल्नो नही जिणी रो॥
तसु सग ले जावै नाहि॥

८ तदा उ पैला नै ताहि, घणी परतीत उपाय घणी वलै करणी नरमाइ।
जोड़ कर केणो, इसी विध वदणो वेणो, थे मोय निभावो सेणो।
कहि इम तनु सायै जाइ॥

९ चलावै ज्यू चलणो तेह नै, कार्य जिको भलावै ते तो करणो छै जेह नै।
घणो रीझाइ, तन मन मुकर नरमाइ, परतीत अधिक उपजाइ।
इसी विध रहै ते न्याइ॥

१० इसी नरमाइ नी शक्ति, नही ह्वै तिण नै सलेखणा मडणो है युक्ति।
हिया मे धारे, वेगो निज कार्य सारे, अपनी आतम निस्तारे।
पवर पिडत-मरणो पाइ॥

११ मरण पिडत 'के' नरमाई, दोय वोल मे एक वोल पिण आवै नाहि।
उणो सू आमो, अति कलेश करनै तामो, कुण काढे जन्म निकामो।
वाहिर तनु काढ देणो ताहि॥

ढाल : ५

[1]स्वाम भिक्खू नी मर्याद सुणीजै ॥ ध्रुपद ॥

१ [1]एकल होवण तणी चित आणी, इसडी सरधा धारै।
टोला माहै जे बेठो रहै छै, ते दोनूइ जन्म विगाड ॥
२ म्हारी इच्छा आसी ज्या लग, रहिसू टोला माह्यो।
म्हारी इच्छा आसी जद हू, एकल हासू ताह्यो ॥
३ इसरी सरधा धारै अबुद्धि, रहै टोला रे माह्यो।
ते ता निश्च असाध कहीज, विवेक विकल कहिवायो ॥
४ सजम सरध्या पहिला गुणठाणा रो, धणी कहीज तासो।
दगावाजी ठागा सू रहै माहै, न करणो तिण रो विसवासो ॥
५ इण विध दगावाजी कर तिण नै, जाण राखै गण माह्यो।
त्या नै पिण महादोप कहीजै, प्रतख ही देखायो ॥
६ कदा जो गण मे दोप जाणे तो, टोला माहै नहि रेणो।
एकलो होय सलेखणा करणी, एह लिखत मे वेणो ॥
७ वेगो आतमा रो सुधारो हुव, ज्यू करणो अति प्रीत।
आ सरधा हुवै तो माहै, राखणो रूडी रीत ॥
८ गाला गोलो कर नै जो रहै तो, राखणो नही तिवारे।
उत्तर देणो तुरत तिणी न, काढ देणो गण वारै ॥
९ पछै इ आल देइ निकले ते, किसा काम रो तामो।
इण विध स्वामी प्रगट लिखत मे, आखी वात अमामो ॥
१० टोला माहै तथा गण सू' दूर ह्व, कम जोग मद भागो।
सत अज्जा रा असमात्र पिण, अवगुण बोलण रा त्यागो ॥
११ साध-साधविया री असमात्र पिण, सक पड ज्यू वाणा।
अथवा आसता उतर ज्यू पिण बोलण रा पचखाणो ॥
१२ गण सू फाड सागै ले जावण रा, त्याग अछ शुद्ध मागो।
कदाचि उ आवै तो ही उण न, साथ ले जावण रा त्यागो ॥

१ लय कुविसन केरो सग न कीज।

१३ टोला माहै नै वारै निकल्या पिण, अवगुण बोलण रा त्यागो।
माहों मा मन फाटै ज्यू बोलण रा, ए पिण त्याग सुमागो ।।
१४ जे कोइ बोल आचार श्रद्धा रो, बोल सूत्र नो विमासो ।
अथवा कल्प रा बोलतणी पिण, समझ पडै नही तासो ।।
१५ गुर तथा भणणहार मुनि भाखै, तेहिज वच मान लेणो ।
नही तो केवलिया नै भलावणो, प्रगट लिखत मैं देणो ।।
१६ टोला माहि पिण अवर साध रै, नाहि घालणी संको ।
वलि किणरो मन भांगणो नाहि, रहिणो सरल अबंको ।।
१७ टोला माहि पिण जे साधा रा, मन मागी वेसर्मा ।
आप-आप तणै जिलै करै तनु, कहिये भारी कर्मा ।।
१८ विसवासघाती तिण नै कहिये, अधिक अजोग अन्याइ ।
घात-पावड़ी इसटी करै ने, अनत संसार री माइ[1] ।।
१९ उत्तम ए मर्याद प्रमाणै, किणसूं जो चालणी नावै ।
तिणनै सलेखणा मडणो सिरै छै, इम भिक्खू फुरमावै ।।
२० घनै अणगार तो नव महिना में, किल्यांणआतम नों कीधो।
ज्यू इण नै पिण आतम सुधारो, करणों छै प्रसिद्धो ।।
२१ आतम सुधारे पिण अप्रतीतकारियो, काम न करणो काचो ।
रोगिया विचै तो स्वभावअजोगनै, माहि राख्यो नही आछो ।।
२२ या बोला री मर्याद बाधी ते, शुद्ध पालणी लिखिया प्रमाणो ।
अनत सिद्धा री साख करी नै, सगला रे पचखाणो ।।
२३ ए पचखाण चोखा पालण रा, हुवै जिण रा परिणामो ।
ते मन शुद्ध कर आरै होय जो, इम कहै भिक्खू स्वामो ।।
२४ विनयमार्ग चालण रा परिणामहोवै, गुर नै रिझावण होयो ।
सजम पालण रा परिणाम हुवै ते, आरै होय जो सोयो ।।
२५ ठागा सू टोला माहि रहिणो नही छै, जिण रा चोखा परिणामो ।
होवै ते तो आरै होय जो, ए अक्षर लिखत मे आयो ।।
२६ सनचै आचार तणी मर्यादा, आगै साधां रे बाधी ।
ते तो कबूल छै सहु सता रे, वारणी समचित साधी ।।
२७ वलै कोइ आचारज बावै, मर्यादा वरू प्यारो ।
याद आवै ते पिण कबूल करणी, आणी हरष अपारो ।।

---

1. पेशगी (पूर्व देय)

२८ लिखतू ऋप भीखन रो छै, ए सवत् अठारै सारो।
वप पतालीसै जेठ सुदि वर, एकम तिथी उदारो॥
२६ ए मयाद ऋप भारमल, हरख सू अगीकार कीधी।
ए मयाद ऋप सुखराम, अगीकार कर लीधी॥
३० ए मयाद ऋप अखेराम, अगीकार कीधी आछी।
ए मर्याद ऋप स्वामजी, अगीकार करी जाची॥
३१ ए मर्याद ऋप गेतसी, अगीकार करी वारु।
ए मर्याद ऋप रामजी अगीकार करी चारु॥
३२ ए मर्याद ऋप नानजी कीधी छ अगीकारो।
ए मयाद न ऋप नेमे, अगीकार करी सारो॥
३३ ए मयाद ऋप वेणे, अगीकार करी सोयो।
आप आप रा कर सू अक्षर, लिख दीधा अवलोयो॥
३४ भिक्खू स्वाम भली पर बाधी मयादा सुखकारो।
तसु कर ना अक्षर अवलोकी, जोडी जय गणि सारो॥
३५ मवत उगणीसै न चवद, सुदि एकम फागुण मासो।
जय गणपति सुख सपति, जाकी बीदासर सुखवासो॥

ढाल : ६

दूहा

१ स्वाम भीखण जी शोभता, अठारै सय पचास।
लिखत कियो मरजाद वर, सुणजो आण हुलास॥

'भिक्खू सीखडली रे॥ ध्रुपद॥

२ सर्व साधा नै सुध आचार, पालणो वर अहिलादो जी रे।
हेत माहो मा अधिक राखणो, तिण ऊपर बाधी मर्यादो रे॥

३ आप माहि अथवा टोला रा, साध-साधव्या माह्यो।
साधुपणो सरधो तिको टोला मे, रहिजो हरप सवायो॥

४ कोइ कपट दगा सू साधा भेलो, रहैं नर मूढ अजाणो।
अनत सिद्धा री आण छै तिण नै, पच पदा री आणो॥

५ जे कोइ साधु नाम धराय, असाधा भेलो रहिया।
अनत संसार वधै छै तिण रे, प्रगट स्वाम इम कहिया॥

६ जिण रा चोखा परिणाम हुवै ते, प्रतीत इती उपजावो।
साव-साधव्या रा अवगुण बोलने, खोटा मत सरधावो॥

७ किण ही ना परिणाम फाड नै, मत भागी नै बावो।
खोटा सरधावण तणा त्याग छै, ए भीक्खू मर्यादो॥

८ किण सू साधुपणो पलतो नही दीसै, तथा न मिलै सभावो।
तथा कपाय बेठो जाणी नै, कोइ कनै न राखै चावो॥

६ तथा खेत्र आछो न बताया, वस्त्रादिक कारण माणी।
तथा अजोग जाण करै न्यारो, तथा दूर करतो जाणी॥

१० इत्यादिक कारण अनेक ऊपनै, हुवै टोला सू न्यारो।
किण ही साधु नै साधविया ना, अवगुण नही बोलणा लिगारो॥

११ हुतो नै अणहुतो खूचणो, काढण रा त्याग 'सुं' भागो।
रहिसे-रहिसे[2] सका घाल नै, आसता उतारण रा त्यागो॥

१. लय : सैणा थइयै जी रे।

२ छपे-छपे।

१२ कदा कर्मजोग तथा क्रोध वस, सहु गण नैं असाध केवैं।
असाधुपणो वली सरधी आप मे, नवो साधुपणो लेवैं॥
१३ तो पिण अठीरा साधु-साधव्या री, मर्का घालण रा त्यागो।
खोटा कहिण रा त्याग ज्यू रा ज्यू पालणा, ए भिक्खू वच शिव मागो॥
१४ म्है तो फेर साधपणो लीधो, सूस कीया म्है आगैं।
अब म्हारैं अटकाव नही छैं, यू पिण कहिण रा त्यागो॥
१५ मत-मत्या नी अधिक आमता, उतारणी नहीं जाणा।
असाधपणा सरधैं सक पडैं ज्यू, वालण रा पचखाणो॥
१६ किणही साधु आय्या म दोष देखे ता, तुरत धणी न केणो।
अथवा आय गुरां नैं केणो, ओरा आगै न वदणा वेणो॥
१७ घणा दिन आडा घाली नैं, दोष वतावं कोई।
नहीं लेवैं तो उण नैं मुसक्ल ए पिण भिक्खू वेणो॥
१८ प्राछित रा धणी न याद आवैं ता, दंड उण नैं पिण लेणो।
नही लेवं ता उण नैं मुसक्ल, ए पिण भिक्खू वेणा॥
१९ काइ सरधा आचार तणा नवा वाल नीकलैं ज्या ही।
वडा थकी ते वोल चरचणो ओरा सू चरचणा नाही॥
२० पिण ओरा सू चरच ओर रे नाहि घालणी सका।
वडा जाव दव निज हिय वैसे तो, मान लेणो तज वका॥
२१ नही वसे तो केवलिया नैं भलावणा तज सल्लो।
गण मे भेद पाडणा नाहि, माहो मा न वाधणो जिल्लो॥
२२ मिल-मिल नैं मन आप तणो, उचक्यो टोला सू त्याही।
अथवा सजम पलैं नही तो, किणनैं साथे ले जावणा नाहि॥
२३ अनत सिद्धा री साख करी न, साथे ले जावण रा पचखाणो।
स्वाम भिक्खू नी ए मर्यादा, उत्तम न खडे आणा॥
२४ कोइ दिक्ष्या लेतौ देख न्यारो होय न करणो शिष घर रागो।
नवो माग काढी न आप रा मत जमावण रा त्यागो॥
२५ ए सुध सरधा आचार पालणो, निरमल चित्त शिव मागा।
किण रो मन हुवैं जुदा होण रा ता परतो[1] कहिण रा त्यागो॥
२६ जिण रो मन हुवैं रजावध चाखी तरैं चरण सुहायो।
साधपणा पलता जाणैं ता, रहिणा टाला माह्यो॥
२७ आप माहि अथवा पेला मे, साधुपणा सुध जाणो।
तो टोला मे रहिणो सैंमल[2], ठागा सू रहिण रा पचखाणा॥

१ नीचा दिखाने वाली बात। २ शामिल।

२८ ठागा सू रहण रा अनता सिद्धा री, साख करी पचखाणो।
इण विध स्वाम प्रगट लिखत मे, वारू दाखी वाणो॥

२९ टोला मे रहिं लिखै-लिखावै, कोइ देवे ते ले जाणो।
या नै पिण सग ले जावण रा, ए पिण छै पचखाणो॥

३० परत पाना ते वडा तणी—नेश्राय जाचणा जाणो।
आप तणी नेश्राय जाचण रा, ए पिण छै पचखाणो॥

३१ अजाणपणे जो जाच्या किण ही, तो पिण वडा रा जाणो।
या नै पिण सग ले जावण रा, ए पिण छै पचखाणो॥

३२ पात्र लोट जाचै टोला मे, वडा तणी नेश्रायो।
वडा देवै तो ते पिण लेणा, विण आज्ञा लेणा नाह्यो॥

३३ गण वारै नीकलिया ते पिण, ले जावणा नही सागै।
नवो वस्त्र हुवै ते पिण, टोला वार ले जावण रा त्यागो॥

३४ लिखत पचासै ए मर्यादा, वाधी स्वाम सुग्यानी।
हलुकर्मी सुण-सुण मन हरपे, सुवनीता मन मानी॥

३५ सुवनीत सत श्रावक नै, ए मर्यादा लागै मीठी।
अवनीत सुणी तसु अवगुण सूझै, लागै अग्नि अंगीठी॥

३६ सुण अवनीत तणो मुह विगडै, विनयवत सुण हरखै।
सुवनीत नै अवनीत तणा, अहिलाण उत्तम ए परखै॥

३७ विनयवत मर्याद आरावै, इहभव तसु जस थावै।
परभव सुर, शिव ना सुख पावै, च्यार तीर्थ गुण गावै॥

३८ अवनीत ए मर्याद उलघै, इहभव फिट-फिट होवै।
परभव नरक निगोद तणा दुख, दोनू जन्म विगोवै॥

३९ गण थी नीकल अवगुण वोलै, कुल नै लगावै दागो।
स्वाम तणी मर्याद उलघै, निपट निरलजो नागो॥

४० कर्म जोग गण थकी नीकल नै, उत्तम फिर शुध थावै॥
गाव-गाव निज अवगुण निंदे, प्रतीत इण विध आवै॥

४१ गोशालो केवल पामी नै, गाम-गाम इम कहिस्यै।
प्रतनीकपणा सू वहु दुख पावै, नरक तिर्यच विशेषे॥

४२ आचार्य नैं उपाध्याय नो, प्रतनीक कोई मत होयो।
गाम-गाम जन नैं इम कहिसी, सूत्र भगवती[1] जोया॥

४३ ता निज आतम अवगुण निंदत, लाज सरम नहीं ल्यावै।
टालोकर न चोडै निपेदे, वलि सुण-सुण हरषित थावै॥

४४ उगणीस चवदै चौथ कार्तिक सुद बीदासर सुखवासो।
जय-जश सपति सरस जाड ए छासठ ठाणा चौमासो॥

---

१ भगवई शत १५

ढाल : ७

दूहा

१ लिखत पचासा नो बनो, कहियै छै अधिकार।
भिक्खू स्वाम तणी भली, मर्यादा सुध सार॥

[1]स्वाम भिक्खू नी मर्याद सुणीजै ॥ध्रुपद॥

२ वडा तणै नामै दिक्षा देणी, आप-आप रै शिष्य करवा रा त्याग।
आगै पाना मे मर्याद लिखी छै, ते लोपण रा त्याग वारू शिवमाग।

३ (जो किण ही) मर्यादा उलघी आज्ञा मे न चाल्या, अथवा किण रा देख्या अथिर परिणाम।
अथवा टोला मे टिकतो न देख्या, तो गृहस्थ नै जणावा रा भाव छै ताम॥

४ साधु-साधवियां नै जणावा रा भाव छै, पछै कोइ [2]अहोला टोला माहि—
तथा लोका मे आसता उतारै, तिण सू घणा सावधान चालजो ताहि॥

५ एक-एक नै चूक पड्या तुरत कहिजो, कजियो म्हा ताइ म आणजो तिलमात।
उठै रो बोल उठैज निवेरणो, पूछ्या अणपूछ्या कहणी बीती बात॥

६ कोइ टोला मा सू टलै सत-सत्या रा, अवगुण बोलै तथा दोष बताय।
तिण री कही तो मानणी नाही, तिण नै झूठो बोलो जाणणो मन माय॥

७ साचो हुवै तो ज्ञानी जाणै, पिण छदमस्थ रै ववहार जाणणो झूठो।
एक दोष सू बीजो भेलो करै तो, तिण नै कहिजै अन्याइ नै महाहूठो॥

८ परिणाम जेहना मेला होसी ते, साध अनै आर्या रा ताम।
छिद्र जोय-जोय भेला करसी, ते तो भारीकर्मा जीवा रा छै काम॥

९ सरलआतमा रो वणी ते इम कहिसी, कोइ ग्रहस्थ सत-सत्या रा दूजा नै।
सभाव प्रकृति तथा दोष कहै तो, तिण नै यू कहिणो, म्हानै कहो थे क्या नै॥

१० कहो तो वणी नै, के कहो स्वामीजी नै, ज्यू या नै प्राछित दे करै सुध निसक।
न कह्या दोषीला रा सेवणहार थे, स्वामीजी नै न कहिसो तो था मे इज वंक॥

११ थे म्हानै कह्या सु काइ हुवै छै, इम कहि आप न्यारो हुवै ताहि।
पैला रा दोष धारी भेला करै ते, एकत मृषावादी छै अन्याइ॥

१. लय : आ अनुकपा जिन आज्ञा मे। २ अलग होकर।

१२ किण ही नै खेत्र काचो वताया सू, (किण नै) कपडादिक माटा दीधा द्वेपजाग।
इत्यादिक कारणे कषाय उठै जद गुरवादिकरी निंद्या करवा रा त्याग॥
१३ एक एक आगे अवगुण बोलण रा, माहा मा मिल नैं जिलो बाधण रा त्याग।
अनता सिद्धा री आण छै तिण नै, ए स्वाम वचन धार मुनि महाभाग॥
१४ गुरवादिक भेलो रहै आपर मुतलव, पछ आहारादिक थाडा घणा रा ले नाम।
वले कपडादिक रो नाम लेइ नै, अवगुण बोलण रा त्याग छ ताम॥
१५ वले इण सरधा तणा भाया रे, तनू ठिकाणा छै तह विमास।
विना आना जाचण रा त्याग छै, ए स्वाम वचन हिय धारा हुलास॥
१६ नडा दस-विस कोसा ताइ वस्त्र जाचै, चोमासा उतरिया ताहि।
वडा आग ते आण मेलणो, आप र मेलें[1] वावरणा नाहि॥
१७ वावरै ता सहु कपडा माहिना, उलका[2] हुवै ते वावरणा जाण।
पिण मही कपडा न वावरणो नही छै, ए पिण जाणजा स्वाम भिक्खू नी वाण॥
१८ गुरवादिक जा अलगा हुवै तो, माहामाहि सरीखा वाट लेणा।
अधिको चावै तिण न परता देणा, ए पिण जाणजा भिक्ख ना वणा॥
१९ डाहा होव ते विचार जायजो, ा रहै उपगार हुव ता ही लूख खेत।
उपगार न हुवै ता ही आछै खेत्र पड रहै इण विध करणा नही छै तेथ॥
२० चौमासो तो अवसर देखै तो रहिणा, पिण शेख काल रहिणा चित धरणो।
किण री खावा-पीवादिकरी सका पडै तो, उण नै साधु कहै ज्यू करणो॥
२१ दोय जणा तो विचरै नै मोटा माटा खेत्र साताकारिया आछा-आछा सुखदाई।
लोलपी थका जावता फिरै रहै त्या, गुरु राख ज्या नहि रहै इम करणा नाही॥
२२ घणा भेला रहता दुख वदे, दाय जणा म सुख वेदत।
लोलपी थको यू करणो नही छ ए स्वाम वचन धारै मुनि मतिवत॥
२३ आपरा किण ही नै परत न पाना, उपगरण दवै ता आघा[3] इज दणा।
त्याग हुवै जद पाछा मागण रा त्याग छै, आमग हु ता दोजा पाछा नही लणा॥
२४ त पिण गुरु री आना विना दणा नही छ वनीत अवनीत री चापी म दाख्या।
आठमी ढाल री तेवीसमी गाथा, इहा पिण आग्या विण दणा ता असन आख्या॥
२५ आर्या मू दवा न लेवो, लिगार मात्र न करणा काइ।
वडा तणी वल आगन्या विना, आग आग्या हुवै त्या जाणा नाहि॥
२६ जाय ता एक रात्रि तिहा रहिणा, पिण अधिक न रहिणा त ग्राम माहि।
कारण पडया जा तिहा रहे ता, गोचरी रा घर वाट लेणा छ ताहि॥

१ अपन आप।
२ सामान्य।
३ पूरा।

२७ पिण नितरो नित पूछणो नाही, कनै पिण वैगण देणी नाहि।
वलै ऊभी पिण रैहण न दैणी, चरचा वात नही करणी काइ॥
२८ वडा गुरवादिक तणा कह्या थी, अनै कारण पडिया री वात न्यारी।
स्वाम भिक्खू री छै ए मर्यादा, आज्ञा सू रह्या न दोष लिगारी॥
२९ सरस आहार मिलै ते ग्रामे पिण, आज्ञा विना रहिणो नही कोय।
वलै कोइ करडी मर्यादा बाधा, तिण मे पिण ना नही कहिणो गोय॥
३० आचार री सका पडचा थी बावै, वनै कोइ बोल याद ज आवै।
जे लिखा ते सर्व कबूल कर लेणो, ए स्वाम वचन धारचा गुण पावै॥
३१ ए मर्यादा लोपण के रा, अनत सिद्धा री साख करै पचखाण।
जिण रा चोखा परिणाम हुवै ते, अगीकार कर लीजो जाण॥
३२ सूस पालण रा परिणाम हुवे ते, मन शुद्ध कर नै आरै होयजो।
सरमासरमी रो काम छै नही, उण विध स्वाम कह्यो ते जोयजो॥
३३ सवत् अठारै नै बरस पचासै, महाविद दशम तिथि सुखदाय।
लिखत ए ऋष भीखन रो छै, उण विध स्वाम कह्यो निमत माय॥
३४ लिखत पचासा री ढाल दूजी ए, गणपति जय करी जोड उदार।
पोह सुदि चोथ उगणीसै चवदै, जय-जश आनद-सपति सार॥
३५ समण बावीस नै तेपन समणी, ठाणा गुण्यासी जबर मुनि मेल।
भिक्खू भारीमाल ऋषराय प्रतापै, चूरू शहर थइ रगरेल॥

ढाल ८

दूहा

१ सवत अठार बावन सतिया र सुखकार।
मर्यादा बाधी मुनि, भिक्खू गुण भडार॥

'भिक्खू दिसावत भारी क, भिक्खू दिसावत भारी।
सतिया र मर्यादा सखरी, बाधी सुखकारी ॥ध्रुपद॥

२ सतिया सब तण सुखदायक, मर्यादा बाधी।
सुध आचार पालणा चोखा, सखर चित्त साधी॥

३ आपस माहि हेत राखणो, हरष अधिक आणी।
तिण ऊपर मर्यादा बाधी, शिवपुर नी नीसाणी॥

४ गणरा सत-सत्या म सजम सरधा सुखदाइ।
आपस माहि सजम सरधा, (त) रहिजो गण माहि॥

५ काइ कपट-दगा सू साधवियां रे, भेली रहै जाणो।
अनत सिद्धा री आण छ, पच पद री आणो॥

६ समणी नाम धराय असाधवियां, सू रहै भेली।
अनत ससार वधै छै तिण र, जिनवर तसु हेली॥

७ जिणरा चोखा परिणाम हुव प्रतीत उपजाओ।
(किणही) सत-सत्या रा अवगुण, कहिखोटा मत सरधावो॥

८ मन भागी कारण कै रा, त्याग सखर जाणो।
खोटी सरधावी न कारण कै रा, पिण पचखाणो॥

९ किण ही सू साधुपणो, पलतो दीसै नाही।
तथा सभाव मिलै नहीं किण सू प्रकृति दुखदाई॥

१० तथा कषायण धेठी, जाण कन को ना राखै।
तिण न अलगी करै टोला थी, विनय सुगुण पाखै॥

११ तथा खेत्र आछा न बताया, वस्त्रादिक काज।
अजोग जाण गण सू अलगी, करतो जाणै साज॥

---

१ लय स्वामी रायचन्द राजा रे क स्वामी ""।

१२ इत्यादिक अनेक कारण सूं, गण सूं ह्वै न्यारो।
(तो किणही) सत-सत्यां रा अवगुण, बोलण रा त्यागतत सारो ॥
१३ हुतो नै अणहुतो सूचणो, काढण रा त्यागो।
'पिट्ठी मंस न खाइज्जा', दशवैकालिक' मागो ॥
१४ रहिसै-रहिसै लोकां रे दिल, न घालणी सको।
आसता उतारण तणा त्याग छै, मेट देणा वको ॥
१५ कदा कर्म जोग तथा कषाय नै, वस, द्वेष धरी हिरदै।
सहु टोला रा सत-सत्यां नै, असाध जो सरधै ॥
१६ असाधुपणो बलि आपस मांहि, पिण सरधि ह्वै न्यारो।
अथवा भेषधारयां मे जावै, कर्म-रेख कारो ॥
१७ तो पिण अठी रा सत अनै, सावधियां री मोयो।
अवगुण बोलण तणा त्याग छै, भिक्षू वच जोयो ॥
१८ उगणीसै चवदै चैत कृष्ण छठ, निरखत बावना री।
प्रथम ढाल जोड़ी जय गणपति, सपति सहचारी ॥

---

१ दसवेआलिय ८।४६

ढाल ६

स्वाम[1] सोहदा महासुख कदा, चित निमल पूनमचदा।
मतिया री मर्यादा बाधी, अधिक गुण कर ओपदा ॥ध्रुपद॥

१ किण ही साधु आर्य्या माहि, दख्या दोप तुरत त्या हो।
धणी भणी कहणो कै गुर नै अवरा नै कहिणो नाही ॥

२ किण ही रा परिणाम टोला सू, जुदा हुण रा हुवै सागो।
जव पिण तिण न ओरा केरी, परती कहण तणा त्यागो ॥

३ आपस माहि अथवा टोला रा, सत-सत्या न सलहिजा।
साधपणा चाखो गुध जाणो, तिका टाला माहि रहिजा ॥

४ ठागा सू तिण न टाला माहि, नही रहिवो छै जाणो।
अनत सिद्धा री साख करी नै, छै तिण रे ए पचखाणो ॥

५ पाना टोला माहि लिख त, साधु-साधवी मन साचै।
गणपति आणा सू तसु दव अथवा ग्रहस्थ कनै जाचै ॥

६ गण सू टल नै जुदी हुवै त, साथ ले जावण रा त्यागो।
पाना सूप देणा सता नै, ले जावण रा नही मागो ॥

७ गण मे पात्रा लाट करै, जाच न पिण ले जावण रा।
टोला री नेश्राय अछै त, गण म छ त्या लगावण रा ॥

८ वस्त्र ऊजला नवा अछै त, कपटो वावरीयाज न छै।
ते पिण साथ ले जावणा नाही टाला री नश्राय अछै ॥

९ पाना परत जाचणा त पिण, वडा तणी नश्राय जाचै।
आप तणी नश्राय विवे पिण नाहि जाचणा मन साच ॥

१० कम-जोग टाला वार नीकल जो अपछदी थाइ।
अथवा गण वार काट (ता) उपगरण साथ लेणा नाहि ॥

११ गण माहि उपगरण किया त, टोला री नश्रा केणा।
वार लै जावण तणा त्याग छ, वडा भणी सूप देणा ॥

१२ आगै कागद माहि आर्य्या न जे मयादा वाधी।
सगलाई ते त्याग पालणा, समचित स्यू आतम साधी ॥

---

[1] सय—चन चतुर नर कहै तन सतगुर किस विध " "।

१३ किण नै आछो खेत्र बताया, राग-द्वेष मन में करनैं।
वात चलावण तणा त्याग छै, अमर्ष भाव हियै धर नैं॥
१४ खेत्र आछी कपड़ा आछी, आहार-पाणी आछी मागो।
वले ओषधादिक आछी पिण, वात चलावण रा त्यागो॥
१५ कहै तिहा चौमासो करणो, सेखे काले पिण नांयो।
बड़ा कहै तिण खेत्र विचरणो, ए मर्यादा अवलोयो॥
१६ कपड़ो गृहस्थ पासै जाचै, वावरवा री विध त्याही।
बड़ा तणी आज्ञा विण ते पिण, वसतर वावरणो नाही॥
१७ कदा बड़ा जो अलगा[1] होवै, वस्त्र चाहीजे जरूर तै।
ठलको-ठलको तो वावरणो, मही[2] तो आण लेउ वस्त्रे॥
१८ किण नै मांहि मोटो दीधा री, वात चलावणी छै नाही।
प्रगट अक्षर ए लिखत माहि छै, स्वाम वचन भाख्या ज्याही॥
१६ उगणीसै चवदै वैसाख, कृष्ण पख वर तिथ तीज भली।
द्वितीय ढाल वावना लिखत री, जय-जश सपति अधिक फली॥

१ दूर। २. बारीक।

ढाल १०

दूहा

१ लिखत बावना री भली, कहिय तीजी ढाल।
स्वाम तणी मर्याद वर पाले ते गुण माल॥

'सतिया ! स्वाम मर्याद आराधिय रे॥ ध्रुपद॥

२ सतिया ! सुगुरु तणी आणा विना रे, सता भेली न रहिणा ताहि रे।
सतिया ! आना विण पास न बेसणो रे, कन उभो पिण रहिणो नाहि रे॥
३ सतिया ! देवा लेवो उपगरण नो आ तो करणा नही काय।
सतिया ! मुनि नै सुणै तिण गाम मे, जाणा नही अवलोय॥
४ सतिया ! जाण्या विना जावै कदा, अथवा माग मे हुव गाम।
सतिया ! एक रात्रि सु अधिको तसु, रहिवो नही तिण ठाम॥
५ सतिया ! कारण पडिया रहै कदा, ता गोचरी ना घर ताहि।
सतिया ! वाट लेणा तिण अवसरै, नित रो नित पूछणो नाहि॥
६ सतिया ! वदना करण जाव ता अलग सू (वदणा) कर पाछो वलणा सताव।
सतिया ! अधिक उभा रहणो नही एहवा लिखत माहै छै जाव॥
७ सतिया ! कोई समाचार साधा तणा, पूछणा है तो अलगी सोय।
सतिया ! पूछी न वलणो[2] सताव[3] सू, पिण उभा न रहिणा काय॥
८ सतिया ! सतगुर रा कह्या थकी, वले कारण पडिया ताम।
सतिया ! वात न्यारी छ तेहनी इम लिखत म कह्यो भिक्खु स्वाम॥
९ सतिया ! किण ही सत अन सतिया मझे दोप देख्या कहिणा तसु ताहि।
सतिया ! अथवा कहिणा गुर आगलै और किण ही आग कहिणा नाहि॥
१० सतिया ! रहिम रहिसै किण ही भणी, और भूडी जाण ज्यू तास।
सतिया ! करणा नही छ तह नै, ए स्वाम वचन सुप्रकाश॥
११ सतिया ! किण ही आरज्या जाण नै, दोप सेव्यो हुवै जो ताहि।
सतिया ! (तो) पाना माहि लिखिया विना, विग तरकारी खाणी नाहि॥

---

१ लय हसा नदीयै किनारै रूखडा रे
२ वापिस होना।
३ शीघ्रता।

१२ सतिया ! कदा कारण पडिया ना लिखै, और आर्य्या नै कहिणो जोय।
सतिया ! सायद[1] कर नै वेगो लिखणो पछै, लिख्या विना नही रहिणो कोय ॥

१३ सतिया ! आय गुरा रे आगलै, मूढा सू न कहिणो विण आण।
सतिया ! अजोग भाषा नही बोलणी, माहो मा खोटी वाण ॥

१४ सतिया ! कोई साधु अनै साधविया तणा, ओगुण काढै तो मुणवा रा त्याग।
सतिया ! इतरो कहिणो तेहनै, 'स्वामी जी नै कहिजो' शुद्ध भाग ॥

१५ सतिया ! जिण रा परिणाम टोला मझे, होवे रहिण तणा निकलक।
सतिया ! ते गण माहै रहिजो सही, पिण मन मे न राखणो वक ॥

१६ सतिया ! (पिण) टोला बारै हुवा पछै, सत-सत्या रा जाण।
सतिया ! अनत सिद्धा री साख सू, अवगुण बोलण रा पचखाण।

१७ सतिया ! कोइ टोला बारै नीकली तणी, मानै उणा लखणो ही बाय।
सतिया ! कै मानै भेषधारी (भागल) धर्म रा, पिण उत्तम जीव तो मानै नाय ॥

१८ सतिया ! वलि कोई याद आवै कदा, ते पिण लिखणो लेख।
सतिया ! वलै करडी-करडी मर्याद नैं, ऐ तो गणपति बांधै विशेख ॥

१९ सतिया ! अनत सिद्धा री साख सू, त्या मे पिण नटवा रा त्याग।
सतिया ! आरै[2] हुवै जो परिणाम हुवै तिका, नही सरमासरमी रो माग ॥

२० सतिया ! आज पछै किण हो आर्य्या रे, अजोगाइ कीधी जो काय।
सतिया ! प्राछित तो देणो तसु रे, हेलणी चिहु तीर्थ माय ॥

२१ सतिया ! वलै च्यार तीर्थ माहै निंदणी रे, पछै कहोला म्हानै भाडे जाण।
सतिया ! करै फितूरो माहरो रे, तिण सू पहिला रहिजो सावधान ॥

२२ सतिया ! सावधान जो ना रहि रे, तो भूडी दिसोला लोका माय।
सतिया ! पछै कहोला म्हानै कह्यो नही रे, तिण सू पहिला दियो है जताय ॥

२३ सतिया ! लिखत ऋष भीखन तणो रे, बावनै संवत् अठार।
सतिया ! फागुण सुदी चवदश दिनै रै, ए स्वाम वचन श्रीकार ॥

२४ सतिया ! तीजी ढाल बावना लिखत नी रे, जोडी उगणीसै चवदै उदार।
सतिया ! चौथ कृष्ण वैशाख मे रे, जय-जश गणपति सपति सार ॥

---

1 साक्ष्य।

2. स्वीकृत।

ढाल ११

दूहा

१ लिखत बावनारी हिवें, चौथी ढाल समाध।
बेंठी अज्जा ऊपरे, बांधी ए मर्याद॥

'स्वाम के वच प्यारे।
आ तो स्वाम मर्यादा भारी, सासण सुखकारी ॥ ध्रुपद ॥

२ किण ही आर्य्यां नै माहो माह्यो, ऊपजै एहवा अध्यवसायो।
स्वाम के वच प्यारे।

३ कारण विण ले कारण रो नामो औरा आगै करावै कामो॥
४ वले कारण रो नाम जतावै, औषध मूठादिक उन्हा आहार ल्यावै॥
५ इत्यादिक सक मेटण री उपायो, मर्यादा बांधी छै ताह्यो॥
६ जितरा गोचरी आप न ऊठै, तिण सूं विमणो[2] ऊठणो पूठै॥
विहार माहै बोझ उपडावै विगै त्याग जिता दिन पावै॥
७ वलै उण रो बाझ पिण पाछो, ओ ता विमणो उपाडणो जाचो॥
८ आहार आछो जो लेवै तिण रो पाछा विमणा टाल दवै॥
९ किण रो वहिर मागै नै ल्यावै, ता पिण विमणो टालणा भाव॥
१० विगत लिखिये छै तेहनी, आ ता खाड मिटावण जेहनी॥
११ पाव लूग खाय तो तिण नै, इक दिन विगै टालणा जिण नै॥
१२ टका भर निज पाती रा आव, घृत तिण दिन टालणो चावै॥
१३ इम बीजाइ वोन विशेखा लिखिये छ त्या रा पिण या लखो॥
१४ अधेला भर मूठ नेवा रा इक दिन सपी टालणा त्या रा॥
१५ अधना भर अजमा रो, टका भर सपी टालणा ज्या रो॥
१६ खाड सू दुगुणा घी जाणा, मागी आणे ता टालणो पिछाणा॥
१७ मिश्री सू चौगुणा घृत सारा, मागी ल्याव ता टालणा जिवा रा॥
१८ गुड सू दुगुणा घत टाला अथवा गुड बराबर घत न्हाला॥

१ लय ज्यारे मोहे वमरिया साड़ी लिया फिरत राधिका प्यारी।
२ दुगुना।

१६ दूध-दही सू दुगुणो तेहिज देखो, अध सेर दूध-दही रो दिन एको ॥
२० पैला आगै उपगरण उपडावै, तसु घृत इक दिन टलावै ॥
२१ आथण रो उन्हो आणै, आख्या मे काजल माणै ॥
२२ पीपलामूल टाकरो[1] जाणी, चक्षु मे औषध रो पिछाणी ॥
२३ तीन वार दिसा जावै, दूजै दिन इक टक लूखो खावै ॥
२४ राते दिसा जाय तिण रै, वे दिन लूखो जिण रे ॥
२५ गूतो[2] पीवै घर रागो, तिण रै दिन पनरै विगै रा त्यागो ॥
२६ जिण रो कारण जाणै उघारो, अथवा उण नै वेठी न जाणै लिगारो ॥
२७ तथा सरल जाणै तिण नै सारी, अथवा गुर कहै तिण री वात न्यारी ॥
२८ लिखतू आर्या मेणा, लिखतू अजा धनु केणा ॥
२६ लिखतू सदा सुखदाइ, लिखतू वना कहिवाइ ॥
३० लिखतू अजा वरजु जाची, लिखतू वीजा वना साची ॥
३१ लिखत वावना री चौथी ढाल, जोडी गणपति जय सुविसाल ॥
३२ ए चौथी ढाल माहि मर्याद, तिण रो विरला परमार्थ लाध ॥
३३ कारण विना कारण रो ले नाम, तिण ऊपर मर्यादा छै ताम ॥
३४ कारण विण कारण रो नाम, रात्रि दिसा जावै ताम ॥
३५ तिण नै वे दिवस लूखो दाख्यो, पिण सर्व अज्जा रो न भाख्यो ॥
३६ इमहीज दिन मे दिसा तीन वार, दूजै दिन एक टक लूखो धार ॥
३७ ए पनरइ वोल घेठी रा, पिण म जाणो सहु-समणी रा ॥
३७ उगणीसै चवदै वैशाखै, सातम विद अभिलाखै ॥
३६ भिक्खू भारीमाल ऋषरायो, जय जोडी है तास पसायो ॥
४० शहर सुजानगढ रगरेला, हुवा सत-सत्या रा मेला ॥
४१ पणवीस सत सकज्जा, सखर पचासी अज्जा ॥

---

१ वृक्ष वाला पीपलामूल । २ थोडे काल की व्याई हुई गाय-भैंस का दूध ।

५ दिख्या देणी ते पिण जाणी, भारमल्ल जी नें नाम कहाणी,
दिख्या देउ नृपणां आणी ।
ममता वस्त्र अनै चेला री, वलि गाताकारी खेत्रा री,
इत्यादि अनेक बोला री ।
ममता कर कर डूवा जीव अनंता ।।देखो०।।

६ ममता कर कर जीव अनंता, चरण गमाउ नै मनि भ्राता,
नरक निगोदा माहि भमता ।
वलै भेषधारचा रा मोयो, एहवा चेहन प्रतक्ष अवलोयो,
तिण स्यूं शिष्य प्रमुख नी जोयो ।
ममता मिटावण रो उपाय कीधो ।।देखो०।।

७ ममत मिटावण तणो सुहायो, शुद्ध चारित्र पालण रो ताख्यो,
उपाय कीधो छै सुखदायो ।
विनय मूल वर नखर सधीको, न्याय मार्ग निरमल रमणीको,
ते चालण रो उपाय तीखो ।
निरपक्ष पणा थी एह कीयो छै ।। देखो० ।।

८ विकला नै मूंडै भेषधारी, भेला करै अधिक दुखकारी,
शिष्या तणा भूखा अविचारी ।
एक-एक रा अवगुण बोलै, फाडा तोडो कर मांह झोले,
कर्जाया राड करता डोले ।
एहवा चिरत देख मर्यादा बाधी ।। देखो० ।।

९ शिष साखा रो वर सतोषो, मुखे चरण पालण रो चोखो,
उपाय कीधो छै निरदोषो ।
सत सत्या पिण इमज जणायो, भारमल जी री आज्ञा माह्यो,
चालणो रूडी रीत सवायो ।
शिष्य करणा ते भारमल जी रे करणा।।देखो०।।

१० अवरा रे चेला करवा रा, जाव जीव लग त्याग उदारा ।
ए मर्यादा महासुखकारा ।
भारमल जी शिष्य करै सुहायक, बुधवत साध कहै ओ लायक,
जो प्रतीत आवै सुखदायक ।
एहवो भारमलजी नै चेलो करणो ।।देखो०।।

११ बीजा साधा नै समभावै, प्रतीत जो तिण री नही आवै
तो नहि करणो छै प्रस्तावै ।
किया पछै कोइ अजोग होयो, ते पिण बुधवत मुनि कहै सोयो,
छोड देणो तसु कहिण सुजोयो ।
किणही थेपी रा कह्या सू छोडणो नाहि।।देखो०।।

१२ नव पदाथ नै ओलखाइ, दिक्षा दणी छै सुखदाइ,
आचार पाला छा ह्वि ल्याइ।
तिण हिज रीत पालणो योग्नो, इण माहै कोइ जाणा जाखा,
ते ह्विडा कहिजा तज दाखा।
पछै माहोमाहि ताण न करणी ॥देखा० ॥

१३ जो किण नै म्यास दोप विपरीतो, ता ग्वच नही करणी ए नीतो,
करणी वुधवत री प्रतीतो।
भारमल जी री इच्छा थाइ, जद चरण लघु शिष्य न हित ल्याइ,
अथवा चरण वद्ध गुर भाइ।
सूप गण रा भार समाधी, सव मत सतिया गुण साधी,
एकण री ग्राना आराधी।
चलणो है तमु आण प्रमाणा, असमान्न नही करणो ताणा
एहवी रीत वाघी छ जाणा।
सतसत्या रो माग चाले जठा ताइ ॥देखो०॥

१४ गुणसठा लिखत रा पहिली ढाग, उगणीस चवद गुणमाल,
विद वशाख दशम तिथि हाल।
भिक्ख भारीमाल ऋपराय प्रमाद रची जाड जय सपति साध,
सहर मुजाणगढ अविराध।
मत सती एक सा दस हुता ॥ दखा० ।

ढाल १३

दूहा

१ लिखत गुणसठा री हिवै, सुणजो दूजी ढाल।
भिक्खू स्वाम तणा भला, गूथू वचन विशाल।।

[1]स्वाम भिक्खू नी रे आछी, काइ वुद्धि उत्पत्तिया भारी।
जबर मर्यादा रे जाची, काइ बाधी अधिक उदारी।।
भक्ति विनय रस रे भणियो, ते अखड मर्यादा आराधै।
सखर गुणी जन रे सुणियो, ते सकल मनोरथ साधै।। ध्रुपद ।।

२ असुभ कर्म रे जोग सू काई, गण मा सू कोई साथ।
फाडा तोडो कर निकले, काइ एक दोय त्रिण आद।।
फिट फिट जग मे रे थावै, अवनीतपणा नै प्रसगो।
दुख बहु दुर्गति रे पावै, इम जाण मर्याद म लंघो।।

३ बहु धुरताइ ते करै, बुगलध्यानी हुय जाय।
तसु साधु नही सरधणा, चिहु तीर्थ मे न गिणाय।।

४ या नै चतुर विध सघ ना, निंदक जाणवा छार।
एहवा नै वादै तिको, छै जिण आज्ञा बार।।

५ कदाचित कोइ फेर सु, दिख्या ले तज लाज।
अवर सत छै तेह नै, असाधु सरधावण काज।।

६ तो पिण उण नै साधु नहि, सरधणो जिन वच न्हाल।
उण नै छेडविया थका, ऊ दे काढै आल।।

७ तसु एक वात पिण नाहि मांनणी, उण तो अनंत ससार।
दीसै छै आरै कियो, अवगुण रो भडार।।

८ कदा कर्म धको दिया, टलै टोला सू कोय।
तो उण रे टोला तणा, सत सत्या रा सोय।।

९ अंसमात्र अवगुण बोलण रा, हुता अणहुता जाण।
अनत सिद्धा री आण छै, तिण नै पच पदा री आण।।

---

[1]लय—कोरो कासो जल भर्यो काइ घरती सोस्यां जाय वारु दखिण री चाकरी।

१० पाचूं पदा री साख सूं, त्याग अवगुण रा जाण।
[किण ही] सत सत्या री, सक पड़ैज्यूं बोलण रा पचखाण॥
११ कदा विटल उ होय न, भागै मूम अयाण।
तो हलुकर्मी नै न्यायवादी तो, मूल नै मान वाण॥
१२ उण सरिखो विटल कोइ मानै, ते लेखा म नाहि।
इस विध भिक्खू भाखियो, प्रगट लिखत रे माहि॥
१३ हिवै किण ही नै छोडणा, पडै मेलणा ताम।
किण ही चरचा बोल रो, पडै किवारे काम॥
१३ तो बुधवान मुनीश्वरु, विचार नै तिण वार।
करणो इम भिक्खू कह्यो, अखर लिखत म सार॥
१५ वले सरधा रा बोल पिण, बुधवंत हुव ते साय।
विचार नै सचै तदा वैसाणणो अवलाय॥
१६ जो कोइ बोल वैसे नहीं, तो ताण न करणी रच।
केवलिया नैं भोलावणो, पिण अस न करणी खच॥
१७ लिखत गुणसठा री कही, दूजी ढाल सुभाय।
उगणीस चवदै समै, वदि चवदश वशाख॥

ढाल १४

दूहा

१ लिखत गुणसठा री हिवै, कहियै तीजी ढाल।
भिक्खू स्वाम तणा भला, वाह वचन विशाल॥

'वर भिक्खू नी मर्याद, अखंड आराधिये।
ते सुगुणा सुवनीत कै, शिव पद साधियै॥ ध्रुपदं॥

२ वीस कोस चालीस, अथवा अलगी दूर नूं।
वाह कर चउमासा, उतरिया जरूर सूं॥

३ अथवा शेखे काल, ततू जाचियो मही।
आप मतै फाड तोड़, वाट पहिरणो नहीं॥

४ कदा जरूर री काम, पड़ै तो तिण अवसरै।
जाडो-जाडो वाट लेणो, मही परिहरै॥

५ ततू मही गणि आण, विना वाटणो नहीं।
मही तो गणपति पास, आण मैलणो सही॥

६ आचार्य जथा जोग, इच्छा आवै ज्यूं दियै।
ते लेणो तिण री वात, पाछी 'न' चलावियै॥

७ इण नैं तंतू सार, मही दीधो सही।
इण नै मोटो दीध, एम कहिणो नहीं॥

८ कर्म थको किण वार, ढेवै किण ही भणी।
ते टोला सूं न्यारो, पड़ै चूकै अणी॥

९ अथवा टोला बार, काढै तिण नैं कदा।
तथा आपहीज न्यारो, हुवै ग्रहै आपदा॥

१० तो इण सरखा रा जाण, भाइ वाइ हुवै तिहाँ।
रहिणो नहीं तिण ठाम, टालोकर नै तिहा॥

---

१ लय—काया करै रे पुकार जंगल विच क्यूं धरी

११ एक भाइ वाइ, त्या पिण रहिणो न अछै।
वाटै वहतो एक रात्रि, ते पिण स्व इछै॥
१२ रहै कारण सू तो पच, विगै नै सूखडी।
खावा रा छै त्याग, अनत सिद्ध साखे करी॥
१३ लिखत गुणसठा री ढाल, तीजो वसाख म।
विद चवदश सुखकार, उगणीस चवद सम॥

ढाल १५

दूहा

१ लिखत गुणसठा री हिवै, चौथी ढाल सुचग।
मर्यादा पालै मुनि, विमल चित्त जल गग ॥

'स्वाम थारी उत्पतिया वुद्धि भारी, हूवारी२हो स्वाम वाधी दृढ मर्याद उदारी।
हू वारी हू वारी हो स्वाम आप शासण रा सिणगारी ॥ ध्रुपद ॥

२ टोला माहै उपगरण करै ते, परत पाना लिखै सागो।
परत पात्रादिक गण माहै जाचै, सर्व साथै ले जावण रा त्यागो ॥
३ एकवोदो चोलपटो नै वोदी पछोवडी, वोदो रजोहरणो ताहि।
मुखपति नै वलि खडिया उपरत, साथै ले जावणा नाहि ॥
४ गण री नेश्राय रा उपधि सहु, सता रा ते किम राखै।
और अस मात्र ले जावण रा त्याग छै, अनता सिद्धा री साखै ॥
५ कोइ पूछै यां खेत्रा मे रहिण रा, क्यू पचखाण कराया।
तिण नै कहिणो रागा धेखो वधतो जाण नै, त्याग कराया सुखदाया ॥
६ वलै कलैस नै वधतो जाण नै, उपगार घटतो जाणी।
इत्यादिक वहु कारण आलोची, त्याग कराया पिछाणी।
७ तिलोक चदरभाण नै दशमो प्रायछित, दिया विण लेवा रा त्याग है ज्याही।
अै तो दोनू महा दगादार छै, माहि लेवा जोग नाहि ॥
८ वलै कोइ याद आवै ते लिखणो, तिण रो पिण जे वेणो।
ना कहिवा रा त्याग छै सहु रे, सर्व कवूल कर लेणो ॥
९ सर्व साधा रा परिणाम जोय नै, रजावध कर सावी।
या कना सू जूदो जूदो कहिवारी, ए मर्यादा वाधी ॥
१० परिणाम जिण रा चोखा हुवै ते, या मर्याद तमाम।
वलि या सूसा मे आरै होय जो, सरमासरमी रो नही काम ॥
११ मूहढे और नै मन मे ओर, इमतो साधु नै 'न' करणो ज्याही।
इण लिखतमे खूचणो न काढणो कोइ, ओर रो ओर वोलणो नाहि ॥

१ लय—झिरमिर झिरमिर मेहा वरसै आगण हो गयो आलो,
२ पुराना।

१२ अनता सिद्धा री साख करी सहु रे, पचखाण ए जाण।
ए पचखाण भागण रा अनता, सिद्धा री साख सू पचखाण ॥
१३ किण ही अनेरा टोला माहै, जावा रा पचखाण।
मर खपणो, पिण सूस न भागणो, एहवा अखर लिखत मे जाण ॥
१४ ओ एहवो लिखत लिखतू ऋष भिक्खन रो, सवत अठार सा सार।
गुणसठै महासुदि सातम शनि, हेठे साधा रा अखर उदार ॥
१५ लिखतू ऋष सुखराम, ऊपर, लिखिया ते सही पिछाणो।
लिखतू अखेराम ऊपर लिखिया, तेह सही कर जाणो ॥
१६ लिखतू ऋष खेतसी ऊपर, लिखिया ते सही साचा।
लिखतू ऋष नानजी ऊपरलो, लिखिया त सहु ही जाचा ॥
१७ लिखतू ऋषमुग्गा ऊपरलिख्यो सही, लिखतू ऋष उदै राम।
लिखतू खुसाल ऋषऊपरलिख्या सही, लिखतु आटा ऋष ताम।
१८ लिखतू ऋष रायचद ऊपर, लिखिया ते सही सुजाणो।
लिखतू डूगरसी लिखतू भगा ऊपर, लिख्या ते सही पिछाणो ॥
१९ केयक सत स्वामी पास न हुता, तिण वला अखर किया नाही।
तिण सू केयका रा नाम न घाल्या, त्या पछ लिख्या ते नही इण माहि ॥
२० आप आप रा कर सू अक्षर, साधा लिखने ताह्यो।
ए मर्यादा अगीकार कीधी, भिक्खू वयण धारचा सुखदायो ॥
२१ भिक्षु कर ना अक्षर देखी, जोड रची सुखकार।
उगणीस चवदै माम वशाख, शुक्ल चोथ शनिवार ॥
२२ बावीस वाणू मुनि अज्जा लाडणू, सरस जाड जय साजी।
भिक्खू भारीमाल ऋषराय प्रताप जय जश सपति जाझी ॥

ढाल १६

दूहा

१ वर्ष गुणसठे स्वाम जी, बांधी वर मर्याद।
ते पिण कर गणपति तणै, नगरी भाव समाध॥

'भिक्खू भजनें रे घर भाव॥ ध्रुपदं॥[1]

२ साधु साधवी नी मर्यादा, बांधी भिक्खु स्वाम।
एक दिवस माहे घी लेणो, वे पइसा भर नाम॥

३ च्यार पइसा भर मिष्टान, बिगै लेणो उनमान।
मिश्री नैं गुल खांड पतासा, आदि देइ सहु जान॥

४ अवसेर दूध दही तिम गिणणो, तिम अधसेर ही सीर।
तिम अवसेर धनागरो जाणो, गणपति आण सधीर॥

५ खाजा साकुली पापड़ीयादिक, पाव तणै उनमान।
पाव सीरा लापसी कहियै, चूरमादिक पहिछाण॥

६ एह माहिली बिगै कदाचित, थोडी थोडी आय।
पाव तणा उनमान माहे, लेखव लेणी ताय॥

सोरठा

७ खाजा साकुली आदि, पाव कह्या छै स्वाम जी।
सीरा लापसी चूरमा दि, ए पिण पाव कह्या जुदा॥

८ खाजा साकुली पाहि, फीकी कड़ाइ विगय है।
वलि अल्प घृत गुलरी ताहि, तेल तणी पिण तिण मझे॥

९ सीरा लापसी माहि; खाड तणी वस्तु सहू।
वलि बहु घृत गुल री ताहि, मालपुवादिक तिण मझे॥

१० खाजा साकुली माहि, अल्प घृत नी जे लापसी।
अति घृत वाली ताहि, सीरा मे गिणणी सही॥

---

१ लय · सीता आवै रे धर राग ।

११ कदाच जो नहिं आय, सीरादिक नी जे विगय।
तो अधसेर लिवाय, खाजा साकुली आदि जे॥
१२ कदाच थोडी आय, खाजा साकुली नी विगय।
तसु बदलै न लेवाय, सीरादिक अति घत तणी॥
१३ ढाल माहि विस्तार, भिक्षु कृत मर्याद जे।
जय गणि तिण अनुसार, न्याय सोरठिया मे कह्यो॥
१४ पाव-पाव पहिछाण, ए दानू इ जु जुइ।
अधिक भोगवै जाण, तो ते बीजे दिन नही॥
१५ [1]उपवास तण पारण च्यार, पइसा भर घी कहिवाय।
बीजा बोल कह्या उतराइज, गणपति रहिस बताय॥
१६ छठ अठम दशम तण पारण, पट पइसा भर घी ताय।
बीजा बाल कह्या इतराइज, गणपति कहै त न्याय॥
१७ पच आदि माटो तपसा रे, पारणै एम कहीज।
आठ पइसा भर घृत आरग्रो, बीजा बाल उतराइज॥

सोरठा

१८ आम्या भिक्खू एम, बीजा बाल उतरा अछ।
घत वधायो तेम, बीजा बोल न वधारणा॥
१९ भारीमाल ऋपराय जय गणी नी पिण आण ए।
गणपति आणा माय, दोप कोइ मत जाणजा॥
२० कदा टका भर सेती अधिको, जाणी न घत खाय॥
तो दूज दिन घृत न खाणो, छै ए निरमल न्याय॥
२१ और दूध दही सुखडियादिक नी, मर्यादा शुद्ध जाण।
अधिक लिया दूज दिन तेही, विगय तणा पचखाण॥
२२ दोय त्रिण दिन लगै कदाचित जो सपी न साधो होय।
तो चार पइसा भर घृत लेणो, निमल चित्त सुजोय॥
२३ अधेला तथा पइसा भर थी, वध वाटता ताहि।
तो एकण न देणो उतरो, दूज दिन देणो नाहिं॥
२४ आहार कदा नही मिलिया, आटादिक रो मिलिया जोग।
घी खाटगुलादिक अधिक लेणरो, नही अटकाव प्रयोग॥

---

१ २ लय सीता आवे रे घर राग ।

सोरठा

२५ आटादिक रै माहि, अथवा आटादिक विना।
अल्प आहार जो आय, तो अविक विगै री आगन्या॥
२६ अविक विगै रे काज, मित्या आहार नहीं छोडणो।
अविक विगै नो साज, आहार अल्प मिलवै दियो॥
२७ 'आचार्य पासै साधु साधवी, शेखे काल चोमास।
रहै त्या रै मर्याद नहीं ए, सूस नहीं ए तास॥
२८ साधु साधवी कदै घणा हुवै, कदेयक थोडा थाय।
कदै आहार बहु आवै, कदेयक थोडो आय।
२९ तेह तणो अवसर आचारज, देखी नेमी ताम।
त्यारो कोई बीजो साधू, लेण न पावे नाम॥

सोरठा

३० इण अक्षरे कर तास, शेष काल चौमास मे।
साधवियां गणि पास, रह्या स्वाम नी आगन्या॥
३१ 'गणि आज्ञा विना शेष काल, चोमास रहै जितरा दिन रूस।
त्याग सूखडी पच विगय ना, जाव जीव ए सूस॥
३२ कोइ गण माहिथकी टली नीकलै, अथवा काढै बार।
तो पिण तिण नै त्याग अछै, ए जावजीव लग सार॥
३३ यू कहिणो नही भेला थका, म्हारै था त्याग सुमाग।
अवै म्हारै कोइ सूस नही, इम पिण कहिवा रा त्याग॥
३४ कोइ लोलपी थको कदाचित, विगै खावा री हूस।
टोला बारै टलै कर्म वस, तिण रे पिण ए सूस॥
३५ वर्ष गुणसठै स्वाम भिखन जी, बाधी ए मर्याद।
सवत् मिति रो नाम नही, पिण हुती धारणा याद॥
३६ सवत् उगणीसै चवदै विद, अष्टमी पहिलो जेठ।
भिक्खू भारीमाल ऋषराय प्रतापै, जय जग सपति भेट॥
३७ समण तीस इक सो इक समणी, सखर सपदा सार।
जयवर गणपति संपति जोडी, लाडणु शहर मझार॥

---

१ २. लय : सीता आवै रे घर राग ।

ढाल १७

दूहा

१ अखेराम जी गण थकी, टर फिर आवत ताम।
भिक्खू लिखत किया इसा, सुणा राख चित ठाम ॥

'ए ता स्वाम वडा सुखकारी रे, भिक्खू नी बुद्धि भारी।
आ तो उत्पतिया अधिकारी रे, निपुण न्याय नेतारी'॥ ध्रुपद ॥

२ अखेरामजी रा गण माहै, आवण रा परिणामा।
वलि परिणाम सजम पालण रा, दख्या अति अभिरामो ॥
३ पिण अप्रतीत घणी ऊपनी, जा गण सू अभिलाख।
ए प्रतीत पूरी उपजाव अनत सिद्धा री साख ॥
४ तो टोला माहि फिर लेणा, तसु विध सुणो उदारु।
सभाव आप रो फेर वडा रे छाद' चालणा बारु ॥
५ चारित्र सुद्ध पालणा चाखो, मुनिवर ना आचारो।
दीठोईज अछै नही छाना, आछी रीत उदारो ॥
६ कदाचित ए टाला सेती, न्यारा टल स्वमेवा।
तो च्यारु ही आहार तणा, पचखाण करै ता लेवा ॥
७ खुणम धरी न अधिक खूचणो', काली नै ततखवा।
अलधा ह्वेण तणा पचखाण, करे ता माहै लवा ॥
८ सलेखणा सथारो सत, कराया तुरत करवा।
ते पिण ना कहिवा रा त्याग, करै तो गण म लेवा ॥
९ घेठापणा' सभाव म अविनीतपणे वलि देखे।
अथवा मुनि रे चित नही वेम, अवगुण जाण विशेष ॥
१० इत्यादिक अनेक वोला सू, छाट सत सुभेवा।
ताच्यारआहारमुख मे घालण रा त्याग कर तो लेवा ॥

---

१ लय ए तो जिण मारग रा नायक रे ।
२ अधिकारी ।
३ अधीन ।
४ आज्ञा ।
५ त्रुटि ।
६ धृष्टता ।

११ टोला माहि पत्र लिखे ते, मगलाइ साधा रा।
साध साधवी श्रावक श्रावका, काढे खूचणा त्या रा ।।
१२ दोप तथा अणहुतो पर नै, भ्यास्या दड धरेवा।
ए पिण ना कहिवा रा त्याग, करै तो गण मे लेवा ।।
१३ जिण माध साथे मेल्या तसु, हुकम प्रमाणे रहणो।
तेहनी आज्ञा नही लोपणी, आण प्रमाणे वहिणो ।।
१४ जे कोइ सत साथै ले जावै, रजावध[1] तसु करणो।
असमात्र ओलमो[2] आवै, ज्यू मूल न ही आचरणो ।।
१५ प्रतीत आ उपजावणी पूरी, सखरी रीत सदीवा।
आज पचमा आरा माहि, भारी कर्मा वहु जीवा ।।
१६ सुध आचार पलै नही त्या सू, न फिरै निज स्वभावो।
पछै कर्म उदै सू एहवी भाषा, वोलै असुभ प्रभावो ।।
१७ एकल ह्वेण तणा परिणाम, हुवै जद वोले वायो।
साधपणो गण मे नही दीसै, हू किम रहु गण माह्यो ।।
१८ इम कही वहु उपद्रव करै, वलै अवरणवाद वदेवा।
इणविध करवा रा पचखाण, करै तो माहै लेवा ।।
१९ सरधा मे फेर पड्या, वुधवत री प्रतीत सू मानेवा।
ए पिण ना कहिवा रा, त्याग करै तो माहै लेवा ।।
२० आचार विरुद्ध नही चालणो, चूक पडै तो मुनि नै कहैवा।
ताण करि तोड़ण रा त्याग- करै तो माहै लेवा ।।
२१ ओ 'मुनि री' इच्छा आवै, जिण रीते वरतेवा।
पाछो 'ओरो'[3]-ऊतर करण रा, त्याग करै तो लेवा ।।
२२ गण सू तो नही ह्वेणो एकलो, तथा वे तीन भिलेवा।
आदि देइ अलगो न ह्वेणो, ए त्याग करै तो लेवा ।।
२३ सर्व सरीर पोता रो छै ते, तजी मान अहकारो।
थिर चित सता कार्य थापणो, आणी हरप अपारो ।।
२४ निज मन सू ढीला जाणे तो, चिहु, त्रिण आहार तजे वा ।।
किण सू मिल नै जूदो ह्वेण रा, त्याग करै तो लेवा ।।
२५ तवन सझाय वखाण सूत्र नो, काम भलाय कहैवा।
छती सवित ना कहिवा रा, पचखाण करै तो लेवा ।।

---

१ वचनवद्ध।
२ उपालम्भ।
३ प्रत्युत्तर।

२६ असमात्र घेठापणा रे, मान अहकार न धरणो।
तुरग[1] खिण रग विरग न करणो, जो वछ भव तिरणो ॥
२७ इत्यादिक बहु बोल याद, आवै त वले लिखेवा।
तेह ना पिण ना कहिवा रा, पचखाण कर ता लेवा ॥
२८ एहवी ए प्रतीत पकावट उलट धरी उपजाव।
ता सगला नै प्रतीत आव, इम भिक्खू फुरमावै ॥
२९ समत अठारे गुणतीमे फागुण सुदि वारस सारो।
वहस्पतिवार लिखतू ऋष भीखन वूसी गाव मझारो ॥
३० ए लिखत थिरपाल फतेचन्दजी, हरनाथ भारमलजी नै।
तिलोकचदजी नै पिण ए, सभनायो हरप धरी नै ॥
३१ पाछै क्ह्या लिख्या तिके र, बोल सारा इ तामा।
अखेराम साभल नै, ए अगीकार किया छै आमो ॥
३२ चरण सघात त्याग कर, माथा न प्रतीत उपजाइ।
लिखतू अखेराम ऊपर ला, लिख्या सही छै ताहि ॥
३३ ए दोनू इ गाथा तणा र, अक्षर अति अभिरामो।
अखेरामजी निज कर सेती, लिख दीघा छै तामो ॥
३४ उगणीसे चउदे समे रे, महा सुदि छठ गुरवारो।
जय जश गणपति जोड करी ए आणी हरप अपारो ॥
३५ चउतीस सत अठयासी समणी, रतनगढ रग रेला।
ठाणा एक सो वावीसा सू, मडिया जवरा मेला ॥

---
१ तरग।

ढाल १८

दूहा

१ बावीस टोला माहिली, फतू आदि दे च्यार।
भिक्षु गण आवी तदा, कीधो लिखत उदार॥

'जोय जो रे नीत निपुण स्वामी तणी रे॥ ध्रुपदं॥

२ आर्या फतूजी आदि च्यारू भणी रे, दिख्या दीधा पहिली सीखामण सार रे।
आचार गोचर विधि लिखिये अछै रे, ते चरित्र सघाने त्याग रे॥

३ ऊभी नै कीडी जद सूझ नहीं, तो संलेखणा[2] मडणो हरष अपार।
विहार करण री सक्त हुवै नहीं, जद पिण संलेखणा सुविचार।

४ आर्या री विजोग पड्या कल्पे नहीं, जद पिण संलेखणा सुविशेष।
ए बोल तीजा रो भिक्खू भाखियो, नहि कल्पै जद संलेखणा ए रेस॥

५ चोमासो करणो साधु कहै जिहा, रहणो साधु कहै ज्या सेखे काल।
चेली करणी साधा रा कहण स, आज्ञा विण करणी नहीं निहाल॥

६ शिष्यणी कीधा पछै पिण अर्जिका, साधपणा लायक न हुवै मनूर।
साधा रा चित माहि बैसे नहीं, तो सता रा कह्या सू करणी दूर॥

७ जो साधा री इच्छा आवै रहवी, जदो करावै विहार सुजोय।
और आरजिया साथै जुदा[3], मेले तो ना नही कहिणो कोय॥

८ साध साधवियां री कोइ खूचणो, दोष प्रकृतादिक री ताहि।
अवगुण देखै कहिणो गुरा भणी, पिण गृहस्थादिक आगै कहिणो नाहि॥

९ आहारपाणी न कपडादिक मते, उपजे लोलपणा री सक।
तो साधा नै प्रतीत आवै जिण विधैरे, तिण विध करणो छाडी वक॥

१० अमल तम्बाखू वस्त्र आदि दे, लेणो रोगादिक कारण ताहि।
पिण विसन[4] रूप तो ते लेणो नही, लिया इ सझे ज्यू करणो नाहि॥

---

१ लय . श्री जिणवर गणधर मुनिवर ।

२ अनशन की पूर्व तैयारी के लिए की जाने वाली तपस्या ।

३ अलग ।

४ व्यसन ।

११ वल सब साधु नैं साधविया भणी, आचार गोचार माहि सुविहाण।
ढीला पडता दख तिण अवसर, अथवा सका पडती मन जाण।
१२ जद समचैं साध अनैं सनिया भणी, करली' मर्यादा बाधैं सार।
तो पिण ना नही कहिणा एह मे जव वाचै ते कर लेणी अगीकार॥
१३ इत्यादिक सीस्वामण साचैं मनैं, चारित्र सघाते सखर सुजाण।
अगीकृत कर लेणी आछी तरैं, जावजीव लग ए पचखाण॥
१४ सवत् अठार तेतीसे सम, मिगशिर विद बीज अनैं बुधवार।
अगीकार कराया लिखत वचाय नैं, अदरायो सामायिक चारित्र सार॥
१५ छेदोपस्थापनी चारित्र वली दिया, जद पिण एहिज लिखत वचाय।
हरप सू अगीकार कीधो अछै, च्यारु इ आर्य्यां चित चाय॥
१६ सवत् उगणीसैं चवद समैं, विद फागुण छठ अन गुरवार।
जोड कीधी बीदासर सहर म, जय जश गणपति सपति सार॥

सोरठा

१७ लिखत तेतीसा माहि, मर्यादा फतू तणी।
सहु समणी नी नाहि केइ बोल सघला तणा॥
१८ वर चोतीसे स्वाम, लिखत सहु समणी तणो।
कीधा अति अभिराम, अक्षर छै तिण मे इसा॥
१९ फतूजी न गण माय लीधा जद कीधा लिखत।
ए मर्याद सोभाय सहु समणी नैं कबूल छ॥
२० इण विध आख्या स्वाम, वरस चोतीसा लिखत मे।
पिण बहु बोल तमाम, सघली समणी रै नही॥
२१ कभी न अवलोय, जो कोडी मूल नही।
विहार सगत घटया सोय, सलेखणा मडणो सही॥
२२ ए दोनूइ बोल अवलोय फतूजी न ईज छै।
अवरा रै नही कोय, च्याय पैंतालीसा लिखत म॥
२३ आख्यादिक वृद्ध गिलाण, कारणीक जे काइ हुवै।
व्यावच तसु अगिलाण, करणी रूडी रीत' सू॥
२४ सलेखणा री साय, तावीदो करणो नही।
वैराग वध ज्यू जोय, बीजा नैं करणा सही॥
२५ विहार करण री रीत बाची निजर हुव तदा।
बहु स्वपर घर पीत', चलावणो तेह नैं सही॥

---
१ कही।

४२ बोल सातमा माय, कीधा पछै अजाग हुवै।
तो देणी छिटकाय, साधा रा कह्या थकी ॥
४३ ए पिण सहु नै जाण, न्याय गुणसठा लिखत म।
वुद्धवत कहै पिछाण, (तो) अजाग नै नहिं राखणा ॥
४४ हिव बोल आठमा माहि, आरजिया सार्थे जुइ।
मेल्या नटणा नाहि, ए पिण बोल सहु तणा ॥
४५ लिखत गुणसठे ताम, आचारज री आण सु।
शेस्रे काल चामास, विण आना रहिणो नही ॥
४६ मत सत्या रो जाण, दोप प्रकृत आगुण तिका।
गुरु नै कहिणो आण न कहिणो ग्रहस्यादिक आगलै ॥
४७ नवमा बोल निहाल ए पिण छ सघला तर्णे।
पचासै बावनै न्हाल प्रगट अक्षर है लिखत म ॥
४८ मत सत्या रा काय, दाप तुरत कहिवा तसु।
तथा गुरा पै सोय अवर भणी कहिवा नही ॥
४९ हिवै दसमाबोल कहिवाय, लालपणा जाण मुनी।
वस्त्र अन्नादिक माहि ता प्रतीत उपजावणी ॥
५० ए पिण सहुनो जाण, न्याय कहु हिव एहनो।
लिखत गुणमठे आण, भाखी सत सत्या भणी ॥
५१ वीस कोस चालीस अथवा अलगी दूर हुवे।
चोमासो उतरया दीस अथवा सेस्रे काल मे ॥
५२ कपडो जाच्यो हाय, फाड ताड ते वस्त्र न।
वेंत[1] वैत न सोय आप मते नही पहिरणो ॥
५३ काम पडै जरूर रो ताय ता जाडो-जाडो वाटणो।
मही आचाय रै पाय आण मेलणो आगल ॥
५४ आचाय इच्छा जाग इच्छा आव ज्यू दियै।
ते लेणा तज सोग पाछी वात न चलावणी ॥
५५ वरस गुणसठे स्वाम सत सत्या न वारता।
आखी इण विध ताम वस्त्र ममत मेटण भणी ॥
५६ लिखत पचासा माहि, आख्यो मुनि न इण विधे।
किण री खावा पीवादिक री ताहि करणो वडा कहै ज्यू तेह न ॥

१ बाट-बाट कर।

५७ लिखत बावना माहि, आर्गजिया नै उम कह्यो।
आहार आश्री माहो माहि, बान चलावण रा त्याग छै।।
५८ शेषकाल चोमास, करणो वटा कहे जठै।
इत्यादिक सुविमास, विविध वारता न्या कही।।
५९ हिवै बोल इग्यारमो जोय, अमल तमाखू आदि दे।
(लेणो) रोगादिक कारण सोय, विमन रूप लेणो नहीं।।
६० सह्न समणी नै सोय, आचारज नी आण ए।
आज्ञा सू लै कोय, दोष नहीं छै तेह मे।।
६१ मुनि ना लिखत मझार, ए वस्तु वर्जी नहीं।
(तिण सू) सुगुरु आण श्रीकार, आज्ञा बिन लेणो नहीं।।
६२ वस्त तमाखू आदि, सूत्र माहि वर्जी नहीं।
गणपति बांधी मर्याद, आचारज रै हाथ है।।
६३ बोल बारमो सार, सता नै सतिया भणी।
आचार गोचार मझार, टीका पढता जाण नै।।
६४ सामण निमल समाध, सर्व सत सतिया भणी।
करली बाधै मर्याद, तो पिण ना कहिणो नहीं।।
६५ सीख इत्यादिक सार, चरण सथान सुहामणी।
कर लेणी अगीकार, जाव जीव पचखाण छै।।
६६ अठार तेतीसै सार, विद बीज बुद्ध मृगसर मझे।
ए लिखत वचाय अगीकार, कराय सामायक आपियो।।
६७ वलै छेदोपस्थापनी फेर, दीधो लिखत वचाय नै।
कियो अगीकार चित घेर, हरष सहित स्याम अजा।।
६८ उगणीसै चवद उदार, फागुण विद अष्टम शनी।
जय जश गणपति सार, सरस जोड बीदासरे।।

ढाल १६

'प्रणमू गणपति सपति करणा ॥ध्रुपद॥

१ भिक्खू भारीमाल ऋष नृप भारी, स्वामी न्याय माग ना नेता री।
सुखदायक स्वाम तणा सरणा प्रणमू गणपति सपति करणा ॥
२ अमे राम जो न गण माहि लिया भिक्खू वार वाला रा करार किया।
लिखत गुणतीम अनुचरणा प्रणमू गणपति सपति करणा ॥
३ [भिक्खू] विविध मर्यादा बाधी भारी एक गणपति नाम सपति सारी।
लिखत वतीसा माहै निरणा, प्रणम गणपति सपति करणा ॥
४ फतू जी न पिण माहि लिया, भिक्खू वार वाला रा करार किया।
ततीस स्वाम वयण तरणा, प्रणमू गणपति सपति करणा ॥
५ अज्जा क्रोध वस दव तूकारा, पच दिवस पाचू विग परिहारो।
आसू काटै ता दस दिन उचरणा प्रणमू गणपति सपति करणा ॥
६ ग्रहस्थ आग उतरती रा एक मासा विगै पाचू त्याग कह्या तासा।
लिखत चातीसा माहै वरणा, प्रणम गणपति सपति करणा ॥
७ ओरा म दोष देखो मेणो, तिण न कह्यो पाना म लिख लेणा।
इक्तालीमा लिखत मे ए निरणा, प्रणमू गणपति सपति करणा ॥
८ गण वाहिर तथा माहि जाणा, अ समात्र उतरती रा पचखाणो।
पैतालीसै कह्यो तिम पग धरणा प्रणमू गणपति सपति करणा ॥
६ आप म तथा गण म ताह्या मजम जाणो ता रहिज्या गण माह्यो।
ठागा सू रह्या पाप पिंड भरणा प्रणमू गणपति सपति करणा ॥
१० दगावाजी सू रहै तिण नै जाणो अनत सिद्धा री साख सू पचखाणो।
वल अनत ससार सचरणा, प्रणमू गणपति सपति करणा ॥
११ दोष तुरत धणी न कह्या पेखी तथा गुर नै कहै ते निरा पखी।
घणा दिन सू कह्या ता कुगति परणा, प्रणम गणपति सपति करणा ॥
१२ गुरु आज्ञा विण इक निस उपरत एक ग्राम न रहै समणी सत।
पचासै वावन ए सहु निरणा प्रणमू गणपति सपति करणा ॥

---

१ लय —भारीमाल भजो भवियण प्राणी ।

१३ कर्म जोगे गण वार थयो, तो गुणसठा रा लिखत मे एम कह्यो।
सरधा रा क्षेत्रा मे नही फिरणा, प्रणमू गणपति सपति करणा ॥
१४ कर्म जोगे गण वार थया नै जाणो, अंस ओगुण वोलण रा पचखाणो।
हुता अणहुता पिण नही उचरणा, प्रणमू गणपति सपति करणा ॥
१५ गण मे पाना लिख्या जाच्या जाणो, ते साथै ले जावण रा पचखाणो।
त्याग अनता सिद्धा री साख भरणा, प्रणमू गणपति सपति करणा ॥

१६ मर्यादा ए सुखदायो, पचासा गुणसठा लिखत माह्यो।
अखड आराध्या ऊवरणा, प्रणमू गणपति संपति करणा।
१७ कर्म वस गण वाहिर हुवै मदा, एक दोय आदि जे अपछदा।

एहवा नै साधृ ना गिणणा, प्रणमू गणपति संपति करणा ॥
१८ नही गिणणा च्यार तीर्थ माह्यो, चिहु सघ रा निंदक कह्या ताह्यो।
एहवा पासथा नै नही आदरणा, प्रणमू गणपति सपति करणा ॥
१९ त्या नै वादै ते पिण आज्ञा वारो, लिखत वतीसै गुणसठै अधिकारो।
स्वाम वचन हृदय धरणा, प्रणमू गणपति सपति करणा ॥
२० वोल सरधा आचार तणो कोइ, गुर वुधवत सत कहै सोइ।
ऊचरग सेती आदरणा, प्रणमू गणपति सपति करणा ॥
२१ कोइ वोल न वैसे दिल माह्यो, तो केवलिया नै भलाय देणो ताह्यो।
खंच असमात्र पिण परहरणा, प्रणमू गणपति सपति करणा ॥
२२ और साधु रे नही घालणी सको, वलै मेट देणो मन रो वंको।
स्वाम वचन है सुख सरणा, प्रणमू गणपति संपति करणा ॥
२३ जिलो वाधणा रा पचखाणो, अनता सिद्धा तणी अणो।
पैतालीसै पचासै गुणसठै निरणा, प्रणमू गणपति सपति करणा ॥
२४ आर्य्या रो विजोग पड्या वरणी, नही कल्पै जद संलेखणा करणी।
तेतीसा लिखत माहै वरणा, प्रणमू गणपति सपति करणा ॥
२५ दोप जाणै जो गण माह्यो, तो टोला माहै रहिणो नाह्यो।
एकलो होय सलेखणा धरणा, प्रणमू गणपति सपति करणा ॥
२६ आ श्रद्धा हुवै तो गण माहि रैणो, गाला गोलो कर रहै तो उत्तर देणो।
लिखत पैतालीसै उच्चरणा, प्रणमू गणपति सपति करणा ॥
२७ इण लेखे कारण पडिया सोयो, दोय समणी इक मुनि नै जोयो।
सलेखणा ना कह्या सरणा, प्रणमू गणपति सपति करणा ॥

२८ इत्यादिक बहु मर्यादा अति हरप धरी न आराधो।
थारा मिट जाय जन्म मरण फिरणा प्रणमू गणपति सपति करणा ॥
२९ उगणीश चवदे वैशाखा छठ सुकल नाम्णू अभिलाखा।
ठाणा एक सा अठार सुग सरणा प्रणमू गणपति सपति करणा ॥
३० भिक्खू भारीमाल न ऋषराया, जय गणपति सपति सुखदाया।
स्वाम वचन धारया तिरणा, प्रणमू गणपति सपति करणा ॥

गणपति-सिखावण

ढाल १

दूहा

१ गण वृद्धि चाहो सुगणपति समणी सपद हाथ।
तो नेठाउ[1] पच त, अधिक म सूपौ आथ॥

२ कोइ समणी न गणी सूप सत्या सवाय।
अन्य अज्जा वा मुनि भणी, तक न करणी ताय॥

३ गण वद्धि चाहो सुगणपति, जे काइ दीक्षा देह।
सिख सिखणी[2] लेणा उरा, इण म गुण अधिकेह॥

४ अधिक गुणी मुनिवर अज्जा सूप तसु कर दीख।
ते अन्य नैं तसु ईसको, नही करवू ए सीख॥

५ तथा द्रव्य क्षेत्रादिके गणि सापै तसु दीख।
करै तास कोई ईसको, ते अवनीत अलीक॥

६ गण वद्धि चाहा सुगणपति, तिण मुनि ज अगवाण।
गाहा[3] पणवीस वहुनपण वलि द्रव्यादि पिछाण॥

७ जिता दिवस अगवाण वण, विचरै जे सिंघाड।
तेता दिवस गिलाण[5] नीं, व्यावच[6] करणी सार॥

८ तथा कराव काय अन्य, तसु पट विख्यात।
वलि गुण जाणै तिम कर [पिण] सपति राखै हाथ॥

९ अधिक गुणी मुनिवर कहै, जो न लिखाव गाह।
अन्य मुनि न तसु ईसका करिवा नही सुराह॥

---

१ साधारणतया
२ शिष्य शिष्या
३ गाथा—लिपिकरण का एक माप। तेरापथ श्रमण-सघ की एक ऐसी पूंजी जो लिपिकरण सेवा आदि के द्वारा अर्जित की जाती है।
४ द्रव्य क्षेत्र काल और भाव आदि को देखकर
५ रुग्ण
६ सेवा
७ वन्दन मे
८ इच्छा

१० इमज गणी पासे रह्या, एक साज र गांय।
वहु अज्जा नही राखणी, कारणीक विण ताय ॥
११ गणी समीपे वहु रहै, तो वहु साज करेह।
पिण इक साजे वहु अज्जा, नेठाउ मत देह ॥
१२ प्रकृति तनु रोगी विग्घ[1], जो तिण ने गोपेह।
तास निभावा अविक दै, अवसर देखी जेह ॥
१३ गण वृद्धि चाहो सुगणपति, चतुरमास उतरेह।
बाहुल्य दरसण विन क्रिये, विचरण आण म देह ॥
१४ गण वृद्धि चाहो सुगणपति, सत सती गुण गेह।
विण कारण इक ग्राम मे, रहिवा आण म देह ॥
१५ गणवृद्धि चाहो सुगणपति, सत सती गुण गेह।
परिचय रूपज सेव नी, तू आणा मत देह ॥
१६ गण वृद्धि चाहो सुगणपति, चतुरमास उतरेह।
सत सती आवै तसु, पूछा सर्व करेह ॥

गणी[1] गुण धारी रे २।
वर जय गणपति नी हरख सीख हितकारी रे, गणी०॥
ए समण-सत्या नी, सपति अविचल सारी रे ॥गणी०॥
मरजाद पलाया अति गण वृद्धि उदारी रे, गणी० ॥ध्रुपद ॥
१७ चउमासो उतरिया आवै मुनिवर अज्जा ज्यारीरे[3]।
तास हकीगत[4] सर्व पूछणी, ए नीती निरधारी रे ॥
१८ सत सती चउमासा पाछै, दरसण करै तिवारी।
पुस्तक पडघे विण सूप्या तसु, च्यार आहार परिहारी ॥
१९ सेखैकाल[5] विचरिया त्यारी, पूछा कीजै सारी।
चउमासा री इमज वारता, पूछ करै निरधारी ॥
२० घृत, माखण, पय, दही, लकारज[6], ओखधि करै तिवारी।
विगय मर्याद थी अधिक न लेणी, पूछा कीजै सारी ॥
२१ गणपति पे चउमासो धारी, विहार कियौ सुखकारी।
चउमासा पहिला वा पाछै, विचरया क्षेत्र मझारी ॥
२२ जे जे रात्रि रह्या जे क्षेत्रे, पूछ करै निरधारी।
इक-बे-त्रिण-निसि प्रमुख मास लग, कारण अधिक विचारी ॥

---

१ वृद्ध
२ लय: हींडे हालो रे।
३ जिस समय
४ विवरण।
५ चतुर्मास के अतिरिक्त आठ महीने
६ मैथी आदि के लड्डू

२३ मुनि अज्जा मिलिया त्या भेला, रह्या किती निशि धारो।
गाम विषे गामादिक बाहिर, पूछा कीजै सारी ॥
२४ वस्त्र पात्र रोगान पत्रादिक, सत सत्या न सारी।
दीधा लीधो सव हकीगत, पूछ करै निरधारी ॥
२५ गणिआणा विण समणीपासे, पात्र रगाव धारी।
वस्त्र सिवाव तसु दड दीजे, उभय भणी तिहवारी ॥
२६ वलि पूछ थे विहार करी ने, जे ग्रामादि मझारी।
उसण आहार[1] आथण[2] रा ल्याया क नही ल्याया धारी ॥
२७ उसण ल्याया तो तेह ग्राम मे, तुम्ह गया किणवारी[3]।
दाढ पोहर चढिया वा पाछ, किती मजल करी धारा ॥
२८ विहार करी गोचरी तणो ज वला आवै सारी।
सुखे आथण रा उसण मगाव, तसु दड दीजे भारी ॥
२९ साध साध्वी करै चउमासा, पच्छा ज्या सेत्रा री।
विगयादिक नो दायक कुणकुण, अधिक हरप मन वारी ॥
३० सेखेकाल चउमासो सेल, सत सती सुखकारी।
तसु धणियाप[4] नकरणी त्यानै, सहु गणि नामे धारी ॥
३१ गणिवाचणपोथ्या द तिणन, तसु धणियाप निवारी।
मुनि, अज्जा, पाथ्या जो माग, सूप विनीत तिवारी ॥
३२ माग्या सेती ह्व वेराजी, तहनै मती वधारी।
बुध सू खोड[5] मेट तसु सेत्रज देख भलाव धारी ॥
३३ आना सासण ऊपर दष्टज, अनुकूल नीत उदारी।
प्रकृति देखी सेत्र भलाव, खल गुल नही इकसारी ॥
३४ विगय तणो आग्रह कीधा, तह्यो दुगुणा दिन धारी।
एक सधी[6] उपरत न नेणो, विगय लिखत अनुसारी ॥
३५ ततू[7] जाचै ताम नाम लिख, गणि न कहै तिवारी।
ते पिण पूछो लिख्यो वाचजे आलस अग निवारी ॥

१ गम आहार स० २०१६ तक सायकाल के समय सामूहिक रूप से गोचरी नहीं होती थी। अत नये विहार मे पहुचने मे विलम्ब हो जाने से भोजन आदि पर्याप्त नहीं मिल पाता था। स्थिति मे गरम आहार लिया जा सकता था।
२ सायकाल
किस समय
४ स्वस्थ अवस्था मे
५ भावना भाने वाला
६ स्वामित्व
७ त्रुटि
८ सूत
९ वस्त्र

३६ सत सती चउमासा माहि, चउत्थ[1] छठादि[2] उदारी।
ते पिण लिखियो पत्र वाचजे, सुरत राखजै भारी॥
३७ कारण आथण असण मगाया, पच विगय परिहारी।
पत्र लिख्यौ वाचे वलि इमहिज, कारण नित पिंड आहारी॥
३८ अज्जा कोइक अधिक कठोरज, वचन वोलै अविचारी।
लिख्यो वाचजे तसु दड दीजै, पूछा कीजै सारी॥
३६ सवत उगणीसै नै दसके, स्वाम लिखत री सारी।
प्रवर हाजरी जय जस गणपति, कीधी अधिक उदारी॥
४० नित्य हाजरी[3] वाचै कै नही, पूछ करै निरधारी।
तसु मुख आगल सत सती जे, सुणैक न सुणै सारी॥
४१ विहार कारण विन मुनि अज्जा, परठै असन[4] तिवारी॥
दूजे दिन तसु घृत नहि लेणो, लिख्यौ वाच सुविचारी॥
४२ जे गाम मे अज्जा छै त्या अन्य, अज्जा आया सारी।
तसु आज्ञा विन व्यजण विगय, न लेणो लिख्यो विचारी॥
४३ दीक्षा दै गुरु पे रहिवा रा, दै परिणाम उतारी।
तिण नै वलि चारित्र देवा नी, आण म दिये लिगारी॥
४४ ए गणपति अनुकूल अछै के, प्रतिकूल छै दुखकारी।
उडी दृष्टि करी ओलखजै, सहज म गिणै लिगारी॥
४५ सत सति गणपति सू अनुकूल, कुरव[5] वधारै भारी।
दिन-२ अनुकूल अधिको वरतै, तास निरत[6] दिलधारी॥
४६ गणपति नो प्रतिकूल छै तेहने, ओलख करे विचारी।
कुरव वधावा लायक नही ए, जाणी तसु दुखकारी॥
४७ आपस मे जिल्लो कोइ बाधे, ओलखजै तसु जारी।
तेहने भेला तू मत राखै, अवसर देख उदारी॥
४८ कटमी[7] वात करै सासण री, ते छै जनम विगाडी।
तिणनै रूडी रीत ओलखजै, धिग् तिण रो जमवारी॥

---

१ उपवास
२ दो दिन का तप
३ गण विशुद्धि के लिए आचार्य भिक्षु निर्मित मर्यादाओ के आधार पर वनाया गया शिक्षात्मक सकलन, जिसे सभी की उपस्थिति मे प्रतिदिन पढा जाता था।
४ आहार
५ प्रतिष्ठा
६ अनुरक्ति
७ आलोचनात्मक।

६२ एक पक्ष मे सरस हाजरी, वखाण मे इकवारी।
सिंघाडा बंध वाचै त्यारी, पूछा करै उदारी॥
६३ आपस मे परचो नहि वावे, तास उपाय विचारी।
कलह मिटावै गण सोभावै, तू गण तिलक उदारी॥
६४ सग मिटावण ग्राम-ग्राम मे, अवसर देख उदारी।
बोलण चालण नै बेसण री, कर मरजादा भारी॥
६५ भाव सल्य राखै तेहना फल, वखाण मे विस्तारी।
सल्य मिटै तेहना फल सुर सिव, कहिजै वारंवारी॥
६६ सुद्ध असुद्ध अन्नादिक लेवे, देवै वलि दातारी।
तेहनां फल पिण वखाण मे, तू वार-वार विस्तारी॥
६७ मुनि अज्जा नी प्रकृति ओलखी, मेलै क्षेत्र मझारी।
परिचय आदि पुकार न आवै, दीजै सीख उदारी॥
६८ कदाचित जो[1] पुकार आयां, वलि तिण स्थानक वारी।
वलि तिण खेत्र विषै मेलै तो, करै विचारण भारी॥
६९ सूकी[2] दोब दीसै पिण घन[3] सू, हरित हुवै तिणवारी।
तिम वलि तिण खेत्रै तसु मेल्या, हुवै हरित मोह क्यारी॥
७० भिक्षु स्वाम थया ओजागर[4], लीधो मारग भारी।
ते सुध राखै सिव अभिलाखै, लही सपदा सारी॥
७१ ए श्रद्धा आचार अनोपम, सिव हेतु सुखकारी।
ते सुद्ध पालै, सुद्ध पलावै, तू सासण नेतारी॥
७२ भिक्षु स्वाम तणे परसादे, तै मग पायो भारी।
दुर्गति खडन सिव सुख मंडन, राखै अधिक सुधारी॥
७३ त्रिभुवननाथ वीरप्रभु मोटा, तास पाट तू भारी।
च्यार तीर्थ ना थाट सम्पदा, ते गहघाट[5] उदारी॥
७४ नीत हुवै चारित पालण री, दीजै स्हाज[6] अपारी।
ए सगला तुज सरणै आया, तू सहु नो नेतारी॥
७५ कोइक तो ह्वं तन नो रोगी, कोइ मन रोगी धारी।
नीत हुवै चारित्र पालण री, स्हाज दियै हितकारी॥
७६ चरणपालण नी नीत हुवै नही, तसु काढै गण वारी[7]।
तिण री काण मूल मत राखै, डर भय दूर निवारी।

---

१ त्रुटि की सूचना।
२ दूब।
३ जल।
४ उद्योग करने वाले।
५ उत्साह वर्धक भीड।
६ सहायता।
७ वाहर।

७७ सासण वीर तणा इण भरते, छै थारे भुज भारी।
तिण कारण ए सीख दई तुज, स्यूं कहू वारवारी ॥
७८ भिक्षु स्वाम तणी मरजादा, अखड पलावै सारी।
वलि ए सीख देइ मैं तुज ने, गण वच्छल हितकारी ॥
७९ भिक्षु स्वाम थया ओजागर, भारीमाल शिष्य भारी।
जबू स्वाम जिसा पट तीजै, रिखिराय वडा ब्रह्मचारी ॥
८० तास पसाये लही सपदा, जय जस गणपति सारी।
ते थिर राखण सिवसुख चाखण, दीधी सीख उदारी ॥
८१ पद युवराज समापे गणपति, ते रहै त्या लग सारी।
तू सेवा कीजै साचै मन, रहिजै आज्ञाकारी ॥
८२ चरण वडा सता ने वनणा[1], आछी रीत उदारी।
तू सुघ कीजै जग जस लीजै, मूल रीत ए भारी ॥
८३ विहार करी नै वडा मुनिसर, आया नगर मझारी।
आसण छोडी ऊभो थइ न, कर वदण हितकारी ॥
८४ चरण वडा न लघु सता जिम, आण अखडित थारी।
आराघणी छै तन मन सेती चारित जेम उदारी ॥
८५ पद युवराज शिष्य मघराज, भणी ए शिक्षा सारी।
वले अनागत गणपति हुवै तसु, एहिज सीख उदारी ॥
८६ शिक्षा ए गणपति नै दीधी, म्हे निज बुध अनुसारी।
वलि तुझनै सुख हुवै जिम कीजै, सासण गण वद्धिकारी ॥
८७ उगणीस वीसै चउमासे, चूरू शहर मझारी।
जय जस गणपति शिक्षा आपी, आणी हरष अपारी ॥

१ वन्दना।
२ सयम पर्याय में बडा।

शिक्षा री चोपी

ढाल १

दूहा

१ दसवैकालिक पंचमे, द्वितीय उद्देशक माय।
दाख्यौ दीन दयाल जी, सुगुरु आण सुखदाय॥

२ आरावै आचार्य नै, श्रमण भणी पिण तेम।
गृहस्थ पिण पूजै तसु, जाणै सुविनय[1] एम॥

३ नारावै आचार्य नै, श्रमण भणी पिण तेम।
गृहस्थ पिण नींदै तसु, जाणै अविनय[2] एम॥

४ इण विध श्रीजिन आखियो, सुगुरु आण भगवाण।
जिण सतगुरु आराविया, (तसु) जीतव जन्म प्रमाण॥

५ जय जश करण सुआण इम, श्रमणी संत अनूप।
जो सुख चावौ जीव नै, (तो) आरावौ धर चूंप॥

हो[3] गुणवंता महागुणी, सुगुणा संत सती सुखदाया हो लाल।
जे बुद्धिवंता महामुनि, सासण मे रंगरत्तासवाया हो लाल।
॥ध्रुपद॥

६ आण सुगुरु नी आराधियै, सुविनीत सुगुण सुखदाया हो लाल।
सेपै काल चउमासै विचरणो, भगवाण आण हुसलाया हो लाल।

७ छांदै[4] सुगुरु नै चालणो, चउमासौ उतर्‌यां चित चाह्या।
(गुरु नै) पहिलां पूछ्या विण अन्य दिशा, विण मरजी न विचरै मुनिराया।

८ चउमासा पछै गुरु रा दर्शन कीयां, सूपौ पोथ्यां पडगै[5] सुखदाया।
सूप्यां विण च्यारूं आहार म भोगवौ, मेटौ मान मछर दंभ माया॥

९ कनलो आर्या गुरु पै मोकल्यां, समाचार त्या साथे सवाया।
आर्या पोथ्या हाझर आपरै, मन मानै ते दिवस मगाया।

---

१. सुविनीत
२. अविनीत
३. लय—घूम घूमालो घाघरो...।
४. विचारो के अनुकूल
५. उपकरण।

१० पाडियारी[1] सूपी मो भणी, सहू आप तणी नेश्राया।
ममत धणियाप न माहर, सुविनीत ए शब्द सुणाया ॥
११ ममत धणियाप करवा तणा, किया त्याग न अक्षर लिखाया।
गुरु माग्या सू मुह न विगाडणो, सूप्या बिन च्यारूआहारपचखाया॥
१२ कन रहै ते संत सती कदा, प्रवर पडित मरण हद पाया।
तिण रा पाना लिख्या न दिन्या तणा, तथा अवर तास नश्राया ॥
१३ सव सुगुरु नें सूपणा, धणियाप कर विण न्याया।
राख्या चौरी देव गुर तणी, एहवो पाप तजैं मुनिराया ॥
१४ निज लिख्या दिख्या रा अवर पिण, गुरु नैं पूछ्या विना मन चाह्या।
आपस मे दवा लेवा रा त्याग छ, जीवैं ज्या लग सूस[2] सुहाया ॥
१५ काल किया तस लोट पातरा, नवो वस्त्र मूकैं गुरु पाया।
तिण रौ राख अवर नही मपणो परठवा योग्य वोसराया ॥
१६ भगवती सूत्रे[3] भाखियो काल किया स्थविर चल आया।
उपधि आप्या भगवत नैं, नानी देव सिद्धत मे गाया ॥
१७ मत सती सिंघाडाबध ते कदा पडित मरण सुपाया।
सब पोथ्या सुगुरु नैं सूपणी, मन सू धणियाप मिटाया ॥
१८ गुरु राखैं जठै रहिणो निज भणी, सिंघाडो करवो नियम नाह्या।
मन हुव तो कीज्यो चाकरी, गुरु आगूच शब्द सुणाया ॥
१९ विध इमहिज सिंघाडाबध नी म्हैं कारण मे करी सेव सवाया।
इम कही तसु पाना न राखणा, एहवी रीत परपर माह्या ॥
२० खामी[5] पडया बहू जन मझै, गुरु चौड निषेध सुन्याया।
अवनीत मुह विगाड द, सुविनीत रैं हरष सवाया ॥
२१ इमहिज सिंघाडाबध तणी खामी पडया निषेधे अयाया।
मन हुवे तो आग विचरज्यो गुरु आगूच शब्द सुणाया ॥
२२ चोड मोन निषेधो मती, कदा गुर नही मान वाया।
तिण सू चाट स्मणी पहिला धार न अगवाण विचरो मुनिराया ॥
२३ वार वार जतावू था भणी, पछैं कहोला पहिला न फुरमाया।
सुगुरु काण[6] राख नही, करला आपघ देत सवाया ॥

---

१ प्रातिहारिक—जो वापिस दी जा सके।
२ प्रत्याख्यान
३ भगवई शतक २ उद्देशक—१ सूत्र ७०।
४ प्रारम्भ म।
५ गलती।
६ लिहाज।
७ कडुवा

२४ हम' राखै निघाडा तणी, चोडै निषेध्या मुख कुमलाया।
तारा कु रव न वधावणो, खमिया तोल वधै अधिकाया॥
२५ रीत ए सहू श्रमण-श्रमणी तणी, अगवाण नै तो अधिकाया।
सूत्र वखाण सीखै सही, तिमखमवो सीख्या सुखपाया॥
२६ भारीमाल ईड़वा मझै, परषदा मे निषेध्या सवाया।
ते मुनिवर कहै स्वाम नै, मोनै छानै कहो ऋषिराया॥
२७ ताम स्वाम भारीमालजी, सतयुगी मुनि नै बोलाया।
सुणो खेतसीजी ए इम कहै, मोनै छानै कहो ऋषिराया॥
२८ छानै कह्या म्है किण विधै, हिवे तो चौडै कहिवा सवाया।
इम सुण नै ऋषिराय जी, हद सीख धार पद पाया॥
२९ भिक्षू स्वाम पीपाड मे, वैणीरामजी नै बोलाया।
दोय तीन वार हेलो पाडियो, पिण बोल्या नही ऋषिराया॥
३० लूणावत गुमान जी नेहनै, इम स्वाम भिक्षू बोल्या वाया।
'वैणो छूटतो दीसै अछै, जब गुमानजी त्या पासै आया॥
३१ कही स्वाम भिक्षु नी वारता', सुण त्रास अधिक दिल पाया।
आय पगा पड्या स्वाम नै, थे तो सुवनीत महामुनिराया॥
३२ स्वाम कहै हेलो पाडियो, तू बोल्यो नही किण न्याया।
वैणीरामजी कहै सुणियो नही, घणो विनय करी नै रीझाया॥
३३ इसड़ा सुवनीत गुरा तणा, ज्यांरो काण-कुरब' वधाया।
चोडै निषेध्या बेदल हुवै, त्यारो कुरब वधै किण न्याया॥
३४ वर्ष बावना रा लिखत मे, इम स्वाम भिक्षु फुरमाया।
अजोगाई' कीधी किण आर्य्या, तिण नै प्राच्छित देणो सवाया॥
३५ वलै च्यार तीर्थ मे नेहनै, हेलणी निंदणी पडसी ताह्या।
पछै कहोला मोनै भाडे अच्छै, वले करै फितूरो' अथाया॥
३६ [तिण सू]पहिला सावधान रहिज्यो सहू, सावधान रह्या जो नाह्या।
तो भूंडा दिसोला लोका मझै, पछै कहोला मोनै न जताया॥
३७ लिखत पचासो सावां तणो, तिण मे पिण ए गाया।
आज्ञा लोप्या मरजाद उलंघिया, अथवा अथिर परिणामी नै ताह्या॥

---

१ उम्मीद
२ प्रतिष्ठा।
३ वार्ता
४ विशेष प्रतिष्ठा
५ अनमना
६ अनुचित व्यवहार
७ उपद्रव

३८ ता गहीं[1] नै जतावा रा भाव छ, वले श्रमण सती न सुनदाया।
त्या नै पिण जतवारा भाव छै, पछ कहाला मान न जताया ॥
३६ मतजुगी नै वणीरामजी वल हैम अनै ऋषराया।
गण स्तभ ज्यू च्यारू महागुणी, समभाव मह्या तज माया ॥
४० गण भार वुरा ज्यारी भुजा ते पिण मान अहकार मिटाया।
तो औरारी कुणसी चली गुरु सव उपर कहिवाया ॥
४१ अधिक तोल त्यारी वध्यौ तीरथ च्यार सराया।
भारिमाल परसमिया चाड, समियारा ए फन पाया ॥
४२ जिणनै सुगुरुवचनसमवादोहिना[2] ता अबर ना कठण अयाया।
मान राख सतगुरु थकी, त तौ महामूरख कहिवाया ॥
४३ कठिन वचन गुर सीख द त ता अमरित सू अधिकाया।
भाग्य दिसा भारी हुव जव सतगुरु सीख सवाया ॥
४४ तीन ठाण माजीरामजी विण मुरजी लावा म रहिवाया।
राजनगर आया पूज आगल, सुण स्वाम सता न वातराया ॥
४५ कोइ वनणा कीज्या सती, हिवै माजीरामजी आया।
देखै सहू साव-साधवी पिण किण नवि सीस नमाया ॥
४६ पछै आय पूज पगा लागिया, भारीमाल हुक्म फुरमाया।
जद वनणा कीधा साध-साधव्या निपदी तसु दड दिराया ॥
४७ वहुवार सतजुगी हैम न, इमहिज स्वाम ऋषराया।
त्यान चोड परपद स निपेधिया, समभाव रह्या मुनिराया ॥
४८ माद पिडतपणा ना आण न, अभिमानी कह इम वाया।
परिपद माहै मान मत कहो छान सीख दवौ मुनिराया ॥
४६ इम अभिमानी नै चोड कह्या दुलभ रहिवौ सम अध्यवसाया।
कुरव[3] वध त्यारो किण विध मान मेटया सू कुरव वधाया ॥
५० उत्तराध्ययन पहिला स कह्या गुरु कठण सीख कहिवाया।
सुवनीत हित मान सही अवनीत ने द्वेष भराया ॥
५१ मित्र भाई ज्याती न कहै तिम जाण वनीत सुहाया।
अवनीत सीख कठण सुणी लेखवै दास जेम रुलाया ॥
५२ गुरु कठण वचन निपविया, सुवनीत चित मन माया।
आज अनुग्रह गुरु तणा मुज उपर छ अधिकाया ॥

---

१ गहस्थ
२ मुनिन
३ सम्मान
४ उत्तरज्झयणाणि अ १ गा ३८

५३ शीतल कठण वचने करी, गुरु सीख देवै सुखदाया।
परम लाभ अति लेखवै, सुवनीत तिको मुनिराया॥
५४ आचारज नै कोप्या जाण नै, सुवनीत सत सुखदाया।
प्रसन्न करै मधुर वचन सू, वलै करै घणी नरमाया॥
५५ बुझावै क्रोधअग्निसुगुरतणी, कर जोड वदै इम वाया।
आज पछै इसो काम हू वलै, कदे ही न करू गुरुराया॥
५६ आज कृतारथ हू थयो, मोनै निषेध्यो परिषद माह्या।
आज भलो भाग ऊगीयो, मोनै अमरित प्याला पाया॥
५७ आज म्हारी जागी दिसा, रत्न चितामणि पाया।
वृष्टि अमोलक रत्न री, वारू परिषद मे वरसाया॥
५८ सवत उगणीसै बारे समे, मृगसर विद दसम सुखदाया।
सतगुरु सीख सहामणी, दीधी जय जस हर्ष सवाया॥

ढाल २

दुहा

१ सुखदाई सुविनीत नो वाधै सुजस विसेष।
सुध प्रकति मद चोकडी, वारू विमल विवेक॥
२ दुखदाई अविनीत नो, अपजश अधिका होय।
क्रोधी मानी लालपी, विवेक रहित अवलाय॥
३ स्वाथ तसु पूग नही, अवगुण सूझै अनक।
वोल विगर विमासियो, अविनय क्रम कुरेख॥
४ प्रकृति खाडिली[1] तास अति काढ खूचणो काय।

समभावै सहिवौ कठण अति क्राधातुर होय॥
५ अक-वक वालै अति घणा अवगुण ढाकण काज।
आलखावू तस प्रकृति नै, सुणज्यो सुरत[2] समाज॥

[3]खाडीली प्रकृति नो घणी॥ध्रुपद॥
६ करे चालता वात, कहै कोइ ते भणी।
ठीक न कहै वोल ओर खाडीली प्रकृतिनो घणी॥
७ पक्की जयणारो कहै करता आहार, इण म चका अणी।
ठीक न कहै रहै मौन खाडीली प्रकृति ना घणो॥
८ आहारकरता पूरी जयणा नाहि कर का जतावणी।
तो पाछौ आडा[4] द जाण खाडोली प्रकृति नो घणी॥
९ चूकै पडिलेहण करत, दीयै सीख त भणी।
फेर मुह नो नूर खाडीली प्रकृति ना घणी॥
१० जाडी[5] करता चूका कहै तास, ता रीम करै घणी।
वद क्राध तर्णे वश वाण, खोडीली प्रकृति ना घणी॥
११ चालता ततू[6] घीसत, कह्या वच अवगणी।
वडा कहुण वाला मोय, खाडीली प्रकृति ना घणी॥

---

१ दुष्ट
२ सावधान।
३ सय—नदी जमुना क तीर
४ शिक्षा दन वाला का बीच-बीच म टाकना।
५ चिक्न पात्रा की अतिम रूप स सफाई।
६ वस्त्र।

१२ सीवत बोलै सोय, कह्या रीस अति घणी।
कहै थेइज रहिज्यो सचेत, खोड़ीली प्रकृति नो घणी॥
१३ इक दिन मे चूका वहुवार, करै को जतावणी।
कहै लागो म्हारी लार, खोडीली प्रकृति नो घणी॥
१४ पडिकमणौ पडिलेहण करत, चूका कहै ते भणी।
तो विगाडै मुख नो नूर, खोडीली प्रकृति नो घणी॥
१५ पाणी ना तडका[1] पडता देख, कह्या लाली[2] घणी।
कहै-पोतारा क्यो न पेखत, खोडीली प्रकृति नो घणी॥
१६ वोले वस्त्र पहिरत, काढै खोड ते भणी।
कहै हूतो रह्यो छू जाण, खोडीली प्रकृति नो घणी॥
१७ ऊची साडी रौ कहै कोय, तो मुह विगाडणी।
कहै वडा रो खूचणो[3] काढत, खोडीली प्रकृति री घणी॥
१८ चोलपटो न पहिर्यो सुध रीत, कह्या रीस करै घणी।
निर्लज नाणै लाज, खोडीली प्रकृति नो घणी॥
१९ पूछै खुद्र परिणाम, पाती अवरा तणी।
थारै विगय कितीयक आइ जाण, खोडीली प्रकृति नो घणी॥
२० आहार पाणी रे निमित, करै राड[4] अति घणी।
निर्लज नाणै लाज, खोडीली प्रकृति नो घणी॥
२१ थांरी पाती मे आहार अधिक, करै वाता घणी।
कलहगारो कहिवाय, खोडीली प्रकृति नो घणी॥
२२ आपस मे करै वात कै, मन भागण तणी।
कहै भूख तृपा मे दिन जाय, खोडीली प्रकृति नो घणी॥
२३ किण ही सिंघाडा माय, आतम वश आपणी।
करणी नावै कोय, खोडीली प्रकृति नो घणी॥
२४ निज आतमवश नाय, तो स्यू अवरां तणी।
ते अगवाण अजोग, खोडीली प्रकृति नो घणी॥
२५ पायो रुपइयो एक, पडित थयो भणी।
पिण प्रकृति निनाण् रह्या शेप, खोड़ीली प्रकृति नो घणी॥
२६ हूस टोलारी[5] अधिकाय, पूगै किम ते तणी।
प्रकृति अविक अजोग, खोडीली प्रकृति नो घणी॥

---

१ विन्दु
२. आखो मे उत्तेजना।
३ अवगुण।
४ कलह।
५ अग्रगण्य वनने की इच्छा।

२७ निज पटरी खवर न काय, ता स्यू हजारा तणी।
, ए दप्टत लीज्या जोड, खाडीली प्रकृति ना धणी ॥
२८ तिण न मल सिंघाड अ य कहै ना ततखणी।
इसडी प्रकत दु खदाय खाडीली प्रकृति नो धणी ॥
२९ साज[1] माहि पिण काय, राखै नही ते भणी।
फिट फिट अधिका होय खाडीली प्रकृति ना धणी ॥
३० ओ पिण सुख न वेदत, किण ही सिंघाडा भणी।
वले मन राख अभिमान खोटीली प्रकृति ना धणी ॥
३१ कर अवरा री होड (निज), आतमवश ना वणी।
ते किम पामैं सुख, खोडीली प्रकृति ना धणी ॥
३२ आहार पाणो वस्त्रादिक ताम, दिय गुरु अ य भणी।
तो गुरु स पिण राखै द्वेप खाडीली प्रकृति नो धणी ॥
३३ जो तिण न न दीये अन्नपान, तो खच मन तणी।
आपा न खोजै मूढ खोडीली प्रकृति नो धणी ॥
३४ स्वारथ न पूग सोय, गुरु स् पिण अवगुणी[2]।
अवगुण सूझै अनेक खोडीलो प्रकृति नो धणी ॥
३५ आप जिसो अवनीत, तिण सू प्रीत अति घणी।
वात करै दिल खोल खोडीली प्रकृति ना धणी ॥
३६ कर उतरती वात ओघड घाट[3] अति घणी।
मन रा मला परिणाम, खोडीली प्रकति नो धणी ॥
३७ मत कहै अवरा पास वात आपा तणी।
इम वरजी राख तास, खोडीली प्रकति ना धणी ॥
३८ तिण कहि ते कहै सव, वात गुरु आदिक भणी।
(तो) तिण सू राख द्वप, खोडीली प्रकति ना धणी ॥
३९ जिल्लो वाघे माहो माहि अपकींत वहु ते तणी।
त हुवै जगत मे भड, खाडीली प्रकति ना धणी ॥
४० छेडविया फुकार करै रीस अति घणी।
खिण खिण माह क्रोध, खाडीली प्रकति ना धणी ॥

---

१ एक व्यक्ति की प्रमुखता म स्थापित मुनिया का मडल।
२ अवगणना करन वाला।
३ सकल्प विकल्प।
४ वदनाम।

४१ लालपणी अधिकाय, साता नी वाछा घणो।
सुखमीलियो साख्यात, खोडीली प्रकृति नों घणी ॥
४२ निशदिन वेदे दुख, पुदगल प्यासा घणी।
आज्ञा ऊपर नहि दिप्ट, खोडीली प्रकृति नो घणी ॥
४३ आचार्य नी मर्याद, लोपण वाछा घणी।
नही साहूकारा नी नीत, खोडीली प्रकृति नो घणी ॥
४४ चिहुतीर्थ मे पेख, पाडे ईज्जत घणी।
तो पिण नही सचेत, खोडीली प्रकृति नो घणी ॥
४५ स्त्रियादिक नी ताम, विपय प्यासा घणी।
पछै हुवै जगत मे भड, खोडीली प्रकृति नो घणी ॥
४६ बोलै ऊधी वाण, वक वच मे घणी।
विवेक विकल कहिवाय, खोडीली प्रकृति नो घणी ॥
४७ म्हारा सिघाडा नी वात, कहणी नही गुरु भणी।
ते भेप ले हुवो खराव, खोडीली प्रकृति नो घणी ॥
४८ खामी कहै गुरु ने कोय, तास सिघाडा तणी।
तो तिण ने निपेधे मूढ, खोडीली प्रकृति नो घणी ॥
४९ क्रोध मान माया लोभ, वशै वाणी घणी।
बोलै वक सहित, खोडीली प्रकृति नो घणी ॥
५० साताकरिया खैत्रा नी हूस, राखै मन मे घणी।
लूखो[1] खेत्र भलाया देवै टाल, खोडीली प्रकृति नो घणी ॥
५१ चउमासो सेखै काल, रहै इच्छा मन तणी।
गुरु राखै जठै रहै नाहि, खोडीली प्रकृति नो घणी ॥
५२ करे पाती रो आहार, वाछा विगयादिक तणी।
नही पाती मे सतोप, खोडीली प्रकृति नो घणी ॥
५३ वछा दूध दही घृत दाल, सरस आहारादिक तणी।
वोजपातीनो दियावेदै दुक्ख, खोडीली प्रकृति नो घणी ॥
५४ निशिदिन वाछा तास, ताजा खेत्रा तणी।
नहीआज्ञा उपर तीखी दिप्ट, खोड़ीली प्रकृति नो घणी ॥
५५ सुगुरु पासे सुखदाय, श्रमण सतिया घणी।
तिण मे काढै दोप, खोडीली प्रकृति नो घणी ॥
५६ सहै भूख तृषा पिण सेव- न छडै गुरु तणी।
त्यासू कलुस परिणाम, खोडीली प्रकृति नो घणी ॥

१ सामान्य।

५७ गुरुकुल वासै वनीत, पामै रति अति घणी।
पिण ओ ता पामे दुक्ख खोडीली प्रकृति ना घणी ॥
५८ श्रमण मतो रहै गुरु पास, कारत सपत घणी।
त्या म बतावै दाप खाडीनो प्रकृति ना घणी ॥
५९ ऊडी विचारणा नाय वोनी अलखामणी[1]।
कहै—गवपणा नही कोय, खाडोली प्रकृति नो घणी ॥
६० गुरु कनै रहै छादो रूध, लानपणा नै हूणी।
अधिकगुणनहीजाणगिवार खोडीली प्रकृति ना घणी ॥
६१ पाता री सगत[2] न काय, रहै तसु अवगणी।
आ दोय मूरख[3] कहिवाय खाडीली प्रकृति ना घणी ॥
६२ भेला रहै बहू मत सत्या पिण रहै घणी।
एकाढयोभिक्षुमरूपचन्द दाप खोटीलो प्रकृति ना घणी ॥
६३ त रूपचन्द टल्यो गण वार[4], हुई खराबी अति घणी।
तिम ए पिण हुव खुराव खाटीली प्रकृति नो घणी ॥
६४ काय भलावै कोय, आचारज ते भणी।
नकरैविनयसहितअगीकार खाडीली प्रकृति ना घणी ॥
६५ दवै आचारज सीख कठिन मदु वच भणी,।
तो बोलै अलखामणा ताम, खोडोली प्रकृति ना घणा ॥
६६ प्रकृति खाडीली राख पामै आपद घणी।
भव २ दुखिया थाय, खाडीली प्रकृति ना घणी ॥
६७ इम साभल नर नार सग तजा त तणी।
जो तिण भू राख प्यार खोडीनी प्रकृति ना घणी ॥
६८ भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रमाद सपति वणी।
जय जश करण गणेश, सरस शिक्षा भणी ॥

---

१ अनगमती
२ शक्ति
३ दाहरी मुखता करन वाला
४ दम—परपरा रो जाड
५ स० १८५० म

ढाल ३

दूहा

१ निज छादो[1] रुंधे[2] निपुण, विनयवंत सुविचार।
गुण ग्राही सुवनीत नो, सुजस वधै संसार।
२ छादो रुंध्या शिव मिलै, चउथे उत्राध्येन।
रमै सुगुरु अभिप्राय रिख, ते पामैं सुख चैन।।
३ विनयवंत निर्मल मुनि, पतली च्यार कपाय।
ठाम-ठाम गुण मुनि तणा, दाख्या श्री जिनराय।।
४ तिण सूं प्रकृति सुधार नें, पंडित हुवै प्रवीण।
सफल सुभव तेहनो सही, सुगुणो संत सुचीन।।
५ खोडीली प्रकृती तज्या, चोखी प्रकृती होय।
ओलखावूं तस वानगी[3], सुणज्यो भवियण लोय।।

चोखी[4] प्रकृति नो धणी ।।ध्रुपद।।

६ करे चालता वात, कहै कोई ते भणी।
कर जोड तथा कहे-ठीक, चोखी प्रकृति नो धणी।।
७ पक्की जयणा रो कहै करता आहार, इण मे चूकां अणी।
ठीक कहै तत्काल, चोखी प्रकृति नो धणी।।
८ आहार करता अजयणा देख, करै को जतावणी।
ओडो न दै कहै ठीक, चोखी प्रकृति नो धणी।।
९ जोडी करता चूका कहै तास, तो ठीक कहै गुणी।
वलि माने तसु उपगार, चोखी प्रकृति नो धणी।।
१० चूकै पडिलेहण करत, दीयै सीख ते भणी।
हरप सहित करै अंगीकार, चोखी प्रकृति नो धणी।।
११ चालता अजयणा देख, कह्या तसु वच सुणी।
कहै—भलो जतायो मोय, चोखी प्रकृति नो धणी।।

---

१ इच्छा
२ उत्तरज्झयणाणि अ० ४ गा० ८
३ नमूना
४. लय : नदी जमुना के तीर उडै

१२ सीवत, रगत, वाटत, वोल्या कहै ते भणा।
कहै—ठीक तू परम मत्रीश, चाखी प्रकृति नो घणी ॥
१३ एक दिन म चका वहुवार, कर का जतावणा।
कहै-तो सम कुण मुज मण चोखी प्रकृति ना घणी ॥
१४ पडिक्मणोपडिलेहण करत, चूका कहै ते भणी।
कर हरप सहित अगीकार चाखी प्रकति नो घणी ॥
१५ वोले वस्त्र पहिरत काढै खोड ते तणी।
कहै—भूला ने आण्या माग, चाखी प्रकति ना घणी ॥
१६ पाणी रातडका पडता दख, कह्या रीस न हणी।
ठीक कहै तसु अभिप्राय, चाखी प्रकति नो घणी ॥
१ ऊची साडी रो कहै काय ता प्रकति सुधारिणी।
कहै—राखी म्हारी लाज, चोखी प्रकति नी घणी ॥
१८ चालपटा न पहर्यासुध रीत, कह्या त सुधा सम गिणी।
अधिक मानें उपगार चोखी प्रकति ना घणी ॥
१६ आहार पाणी र निमत्त, वासत लज्या घणी।
गम खावै रहै मौन चाखी प्रकति ना घणी ॥
२० पूछ खुद्र परिणाम पाती अवरा तणी।
तसु पास वसता आवै लाज, चाखी प्रकति ना घणी ॥
२१ न वर भीट-भखाल[1] वात आहारादिक तणी।
न वोले पला[2] र वीच चाखी प्रकति ना घणी ॥
२२ अवनीत कर को वात, मन भागण तणी।
(तसु)पासै वसता लाज अत्यत, चाखी प्रकति नो घणी ॥
२३ बौले गिणवा वाल, लज्या मन म घणी।
सव भणी सुखदाय, चाखी प्रकति ना घणी ॥
२४ रखै वरी हुव काय, विचारणा दिल घणी।
वाल गिणवा वोल, चाखी प्रकति ना घणी ॥
२५ सव सिंघाडा माय, आतम वश आपणी।
त्तिए वधाई तास, चाखी प्रकृति ना घणी ॥
२६ निज आतमवश कीध, तार अवरा भणी।
त अगयाण मुजाग चाखी प्रकृति ना घणी ॥

---

१ बू
२ टटा फिसाद।
३ अन्य।

४३ सुख सीलियो नही कोय, ल्गलपणा नें हणी।
कम काटण नी नीत, चोग्वी प्रकृति ना घणी॥
४४ सगुरु तणी वर आण, ऊपर दग्टि अति घणी।
छाड पुदगल प्यास चोग्वी प्रक्ति ना घणी॥
४५ आचाय नी मयाद के सरम सुहामणी।
न गिणें सहल[1] मन माय, चोखी प्रक्ति नो घणी॥
४६ प्रवर हाजरी पेख, वाचण मनसा घणी।
सुणे, सुणावा मन हूस, चोखी प्रक्ति ना घणी॥
४७ स्वाम भिक्षु ना लिखत, उमग पाव सुणी।
इक चित हरग्व विमेस, चाग्वी प्रकति ना घणी॥
४८ लिखत सुणता मुख नूर करत सरावणी।
तिणरा पालण परिणाम, चाग्वी प्रक्ति ना घणी॥
४९ जो माथे आव दड याद राख गुणी।
साहूकारा नी नीत चाखी प्रकति ना धणी।
५० मव साघा म पेग्व इज्जत तेहनी घणी।
दिन दिन अघिक सचेत, चोखी प्रक्ति ना घणी॥
५१ स्त्रियादिक नी तास, वछा नही विपय तणी।
छाड[2] कुमग कुमाग चाखी प्रक्ति ना घणी॥
५२ बाल सूधी[3] वाण[4] वाक नही वच तणी।
सरल घणा सुवनीत, चोखी प्रक्ति नो धर्णा॥

५३ म राखा छानो वात म्हारा सिघाडा तणी।
इसडो अदल साहूकार, चोखी प्रक्ति ना घणी॥
५४ जो कहै गुरा न जाय, खामी सिघाडा तणी।
तिण नें सराव सुजाण, चाखी प्रकति ना धणी॥
५५ त्रोध मान माया लाभ, वगे वाणी धणी।
न बौले बक सहीत, चाखी प्रकति ना घणी॥
५६ प्रकृति खोडीलो मेट, पाम सपति घणी।
भव भव सुग्वियो थाय, चाखी प्रक्ति ना घणी॥
५७ खोडीली प्रक्ति नी ढाल, वाचण हूस अति घणी।
सुण-सुण मटे खोड, चोग्वी प्रक्ति नो घणी॥

---

१ सामाय।
२ मरन।
३ वचन।
४ अटल—नही मुकरने वाला।

ढाल ४

दुहा

१ पाटे वीर तण प्रगट, सुधम जम्बू आद।
दुष्पसह[1] नग दीपावसी, जिन गादी अह्लाद॥

गणपति[2] गहरारे

सुध श्रमण सपदा सत सत्या सिर सहरा रे॥ गण०॥
सुध सीख समापी, शिष्य सुविनीत सुमरा रे॥गण०॥
पद प्रगट वीरनें जय जश हरख घणेरा रे। गण०॥ ध्रुपद॥

२ चरण वडा अथवा छोटा न वय लघु वद्ध वखाणी रे।
गणपति थाप तास मानणो (ए)रीत परपर जाणी रे।गण०॥
३ आचारज नो इच्छा हुव तसु वर पट-पदवी वरणी।
सत अवर अथवा श्रावक न किंचित ताण न करणी॥
४ किंचित मन मेलो नवि करणो, आडडोड मत आणो।
वाक सहित वच मूल न वदणा, तरक जिला मत ताणा॥
५ अग्निहोत्रि जिम अग्नि आराधै तिम सिष सुगुरु आराधै।
रुडो विनय करी रीझाया, शिष्य नान पट साधै॥
६ नही छै चरण वद्ध लघु लेखो इम द्विज बुध ना लेखा।
सुगुरु रिझाया गणपति आपै दसवकालिक[3] देखा॥
७ विनय धम नो मूल कह्यो वर निपुण प्रथम गुण निरखी।
अवर सुगुण पाछ अवलोके पद दीय गुण परखी॥
८ पद लायक दो च्यार आदि मुनि, सहुनी बुध नही सरखी।
अधिक विनय सू सुगुरु रिझाया हद गणि पद द हरखी॥
९ गणपति उचित जाण पद दवे, तास वडा मदहेज।
पट थाप्यो तसु लघु मुनि तीजै-पद म आदि आणीज॥

---

१ पचम आरे के अन म होन वाल अतिम मुनि। ३ अ०९उ० ३ गा० ३।

२ लय—हींड हालो रे।

१० आचारज, अरु वडा सत तिम, तीजै पद रे माही।
समचे आचारज ने वदै, नाम लिया विन ताही॥
११ पद युवराज समाप्या, पाछै मन हुवै तो पट वैइसे।
मन होवै तौ पट नवि वैसे, गणपति इच्छा रहिस्यै॥
१२ भारीमाल तो पट नही वैठा[1], वैठा ऋषि, जय ज्याही।
तिण सेती पट वेसण केरो, कारण न दीसै काइ॥
१३ मन इच्छा सू गणि पट वैसे, सत सत्या ने सोयो।
अस मात्र पिण ताण न करणी, अरज मिसै अवलोयो॥
१४ काम, वोझ छोडो मुज केरो, दीक्षा आणा दीजै।
इत्यादिक वहु विविध पणै वच, किंचित ताण न कीजै॥
१५ विहार करी ने वडा सत पिण, आया, गणपति आपो।
सनमुख-गमन तणो नही कारण, स्थिर वदन नो थापो॥
१६ विहार करी नै वडा आविया, गणपति ऊभा थाई।
आसण छोडी, वदणा करणी, अधिक किया अधिकाई।
१७ वडा सत पिण आचारज सू, पडिकमणा मे पेखो॥
आलोवण ले आण आराधै, वीजो न करै लेखो।
१८ विहार करी नै श्रमण आविया, प्रथम गणी नै वदै।
गणपति वडा मुनि नै पाछै, वादै अति आनदे॥
१९ ऊचे आसण गणपति वैठा, वडा सत तसु आगै।
महितल वैठा तो पिण गणि ने, असातना नही लागै॥
२० सैखे काल चउमासे रहिवै, आचारज नी आणा।
चउमासो उत्तरिया गुरु दिसि, विहार करै मुनि स्याणा॥
२१ एकण री आज्ञा मे रहिणो, सत सती सुविनीतो।
साध-साधविया रो मारग चालै, जठा ताइ ए रीतो॥
२२ शिष्य-शिष्यणी सुगुणा ते पिण, गणपति नामे करणा।
अवर तणै नामे नही करणा, गुणसठा लिखत मे निरणा॥
२३ आचारज नै जो आराधे, श्रमण आराधक सारो।
गृहस्थ पिण तसु वदै पूजै, दसवैकालिक[2] मझारो॥
२४ आचारज ने जो न अराधे, श्रमण भणी पिण नाहि।
गृहस्थ पिण हेले निंदै तसु, दसवैकालिक[3] माहि॥
२५ संवत उगणीसै ने तेरे, पोह सुदी सातम पेखो।
प्रवर जय गणी सीख समापी, सुविनीता रो लेखो॥

---

१ अपने पदारोहण दिवस को उत्सव के रूप मे नही मनाया।
२ अ० ५ उ० २ गा० ४५।
३ अ० ५ उ०२ गा ४०।

ढाल ५

'गणी गुण गाव रे

गणी गुण गावैरे, तसु विविध प्रकार वारू ताल वधाव रे
तसु श्रमण समापी वर क्षेत्र विचरावै रे।गणी०।
तसु उचरग आणी भीणी रहिस धरावै र ॥ध्रुपद ॥

१ प्रथम विनय गुण विमल मूलगा परम सुगुरु सु पेमा रे।
अमातना टाले चित ऊजन निमल निभाव नेमोरे।
२ कटुक वचन गुरु सीख दिये पिण, कलुप भाव नहि ल्यावै।
उलट धरी कर जौड आदर, विमन चित्त नवि थावै॥
३ परिपद माहि निषेध ता पिण क्रोधे ना कपावै।
समचित चिते मुझ न सदगुरु अमरित प्याना पावै॥
४ स्वारथ विण पूगा पिण सुगुणो ल र वैर नहि ल्यावै।
अरज न माया अ स मात्र पिण अथिरपणै नहि आव॥
५ अपर मुनी नें अति आदर द सतगुरु घणो सरावै।
असणादिक वस्त्रादिक आपै, ता पिण अरति न ल्याव॥
६ मासण भार-धुरा तिणरे भुज दिन दिन अधिक दीपाव।
परिपद मे गणपति नें गण ना, हरस धरी गुण गाव॥
७ अविनीता री मगन टाले, तसु मुह नाहि लगावे।
सुविनीता सू अति हित' राखै, गणपति चित अनुभाव॥
८ अस मात्र पिण वात उतरती, न मुण नाहि सुणाव।
कदाच का प्रतनीक' कह्या गणपति नें तुरत जणाव॥
६ जिलो भुजग सरीखो जाणी ए महा रोग मिटाव।
आप तणो रागी पिण न कर प्रभुता ते मुनि पावै॥
१० वारू विनय करी सदगुरु नें रूडी रीत रिझावै।
इकचित आण अखड आराध, त गण मे सोभाव॥
११ चित्त अनुचाले आणा पाले वर उपयोग वधाव।
अहनिसि मे आलाचन एहिज तें गण तिलक कहाव।
१२ गण रहिता अनि आदर लहितो, हिय सदा हुलसाव।
शासण नदन-वन ओ मानें, पुद्गल प्यास मिटावै॥
१३ उगणीसै तेरे सुदि एकम चैत मास चित चाव।
लीन पणे सुविनीत लडाया, जयजश आनद पाव॥

---

१ लय—हीँड हालो रे।
२ प्रम।
³ प्रतिकूल वतन करन वाला।

ढाल ६

दूहा

१ गणि मर्यादा लोपिया, इह भव फिट-फिट थाय।
परभव मे दुःख उपजे, वरणविये ने वाय॥

काड[1] धिग् २ जीवित धिग् २ जीवित, ते शिव सुख किम चाखैजी
॥ध्रुपद॥

२ आचारज नी आण लिया विन, रेशम आदिक राखै जी।
ऊन सूतु और उपधि पिण, कपट करी नही दाखै जी॥

३ वलि मर्यादा कल्प लोप नै, अधिक उपधि अभिलाखै।
तीर्थंकर नो चोर कहीजे, सुगुरु-अदत जिन दाखै॥

४ खड-वस्त्र ना वटका ते पिण, कल्प माहि गिण लेणा।
मापै नाही, मपावै नाही, (त्यानै) किणविध कहियै सैणा॥

५ कपट करी नै वस्त्र पात्र ला, गुरु नै नही दिखावै।
अममात्र पिण अधिको राख्या, परभव मे पिछतावै॥

६ लावपणा नै चोडपणा मे, वसतर अधिक रखावै।
इह भव परभव फिट २ होवै, चिहु गति गोता खावै॥

७ इमज पात्र वलि राखै अधिका, गुरु ने नाही जणावै।
सल्य सहित मर हुवै विराधक, आभियोगिक[3] सुर थावै॥

८ दूध दही घृत आदि विगय, पिण मर्याद उपरत[2] खावै।
सहल गिणी ने मापो न करै, लोलपणो चित ल्यावै॥

९ मर्यादा लोपै तसु अवगुण, गुरु ने नाहि जणावै।
फिट-फिट होवै जनम विगोवै, ते परतीत गमावै॥

१० दूजै दिन रे अर्थे औषधि, आणी आप रखावै।
वलि दूजा दिन अर्थे अधिकी, वहिरी अन्य गृह ठावे॥

११ अजन-पूडी अर्कनी शीशी, प्रमुख, धणी गृह दूरो।
धणी आज्ञा सू अन्य गृह मेले, तजी कपट नै कूडो॥

---

१ लय इण स्वार्थ सिद्ध रे।
२ टूकडा।
३ छोटी जाति के देव।

१२ ते पिण अजन पूडी आदि द, दूज दिन अवधारा।
मूल घणी री आण लिया विण वहिरे नहि लिगारो॥
१३ मूल घणी कहै सदा आण मुज ता पिण त नही गिणणी।
मूलघणी री नित नित आज्ञा, लेइ वस्तु वावरणी॥
१४ आचारज नी आणलिया विण विचरै नै विचराव।
सखे काल चउमासे वसता, त पिण भीका[1] खावै॥
१५ ए मयादा लाप तहथी चारित्र रत्न रुलाव।
अल्पकाल ना सुख ने अर्थे अनत सुखा ने गमावै॥
१६ सल्य सहित उत्कृष्टे भागे, नरक तिर्यच मे जाव।
काल अनतो भ्रमण करैत वाधि दुलभ अति थाव॥
१७ सवत उगणीस तेर रवि दसमी, सुदी वसाख वसाव।
आणदपुर म सीख समापी, जयजश गण सुख चाव॥
सुध मर्यादा पालो सता गुरु वार-वार समभाव।

---

१ दुखी होकर पश्चात्ताप करना।
२ जतारण (राज०) के पास कानू नामक गाव जिसे आनदपुर भी कहा जाता है।

ढाल ७

'सतिया! सुगुरु सीख दिल धारिये रे ॥ध्रुपदं॥

१ सतिया! स्वाम मर्यादा आराधियैरे, ये तो मेटो मान मरोड रे।
सतिया! बैसत बोलत गमन मे रे, राखो जुगत विनय विधजोड रे ॥

२ सतिया! चउमासो उतरियां छतां, राखो गुरु दरसन रो कोड।
सतिया! शीघ्र आय सुगुरु पद प्रणमिये, जाणो सुविनीता री जोट ॥

३ सतिया! स्वाम मर्यादा सिर धरो, थे तो छल परपच निवार।
सतिया! इण भव सुख बधै घणो, थारे परभव जय जयकार ॥

४ सतिया! थारै वखाण सुवाचता, तिण मे सासण अधिक दीपाय।
सतिया! वर मर्याद दिखावियै, थारी जग माहि कीरत थाय ॥

५ सतिया! हेतु दृष्टांत वखाण में, थे तो दाखो मलाय-मलाय।
सतिया! इम हिज सासण दिटावता, इण मे लाज मरम मन ल्याय ॥

६ सतियां! गुरु भाई टोला तणा, थे तो गुण गावो रुडी रीत।
सतिया! गुण हरस हिवडै धरो, आतो सुविनीतां री नीत ॥

७ सतिया! दभ कदाग्रह मत करो, वले मत करो वाद विवाद।
सतिया! क्षमा धर्म दिल मे धरो, थारे भव-भव हुवै समाध ॥

८ सतिया! सुगुरु रिझावो विनय सू, थे तो बोलो विनय सू बोल।
सतिया! चित अनुकेडै चालता, थारो वाधै तोल अमोल ॥

९ सतिया! सुगुरु रिझाया संपदा, थारी रहिस्यै थिर पद थाप।
सतिया! वार-वार कहू था भणी, पछै पामो नही पिछाताप[3] ॥

१० सतिया! सुख आगै थारे आरज्या, त्यारो वधो सुख हरवार।
सतिया! वधो टोलो[4] नै सुख तुम तणो, तो थे चालो चित अनुसार ॥

११ सतिया! सुविनीता सू प्रीतडी, पालो, सतगुर आण अखंड,
सतिया! अग चेष्टा ने ओलखो, थारो सुजस वधे महिमड ॥

१२ सतिया! उगणीसै चवदै समै, फागुण सुदि नवमी सोमवार।
सतिया! वारु सीख दीवी सतिया भणी, जोडी जयजश गणपति सार ॥

१३ सतिया! सत चोमाली सोभता, ए तो समणी एक सौ आठ।
सतिया! सहर बीदासर रंगरली, गणि सपति नित प्रति थाट ॥

---

१ लय—हंसा नदीय किनारे रुखडो रे।
२ मझा-मझा कर।
३ पश्चात्ताप।
४ अग्रगण्यत्व।

ढाल ८

'सता'[1] सुगुरु आण सिर धारिये रे ॥ध्रुपद॥

१ सता[1] सुगुरु आण सिर धारिय रे आतो आण अखड उदार रे।
सता[1] आण आराध्या सुख लहै रे, आता आण उतार पार रे॥

२ सता[1] आण निर्देशकरे तसु रे, वीर प्रभु कह्या सुविनीत॥
सता[1] आण निर्देशकरे नहीं रे, (तिणनै)वीर कह्यो अवनीत।

३ इगित आण आराधै अह्लाद थी सुविनीत ना ए अहलाण[2]।
उत्तराध्यैन[3] जिन आखियो, तिण सू पामै परम कल्याण॥

४ सता[1] गणपति दृष्टे वरतवो वलै सब काय म सुजाण।
सता[1] गुरु वचन आगे करी विचरवा आचाराग पचमे पिछाण[4]॥

५ सता आचाय नी आना विना च्यारू आहार धानै मुख माय।
सता[1] चउमासी दड नसीत मे, (ता)आना वार मयम किम थाय॥

६ सता[1] मदु कठिन वयण गुरु सीख थी हित लाभ मान सुविनीत।
लहै द्वेष अविनीत अजागडा ते पिण उत्तराध्यन[5] सगीत॥

७ सता[1] ठाम ठाम कह्यो गुरु वयण नै, धार विनयवत सुविसेस।
तरक काढै तिको अविनीतडा तिण रे अविनय कम कुरेस॥

८ सता[1] सुगुर आण चौमासा करो, चौमासा उतरिया शीघ्र आय।
सता[1] आना लेइ वलि विचरवा छतो शक्ति गोपवणी नाय॥

९ परम वनीत सू प्रीतडी, अवनीता रा सग निवार।
माहामाहि जिल्ला वाधो मती, राखो सतगुरु सू इकतार॥

१० सता[1] पज्जवधण नै परहरो, वले मत करो विकथावाद।
सता[1] निदा उतरती मत करो, थार भव भव हासी समाध॥

११ सता[1] स्वारथ पूग आपरो, स्वारथ पूग नही किण वार।
सता[1] कलुप भाव मत आदरो, थार होसी लाभ अपार॥

१२ सता[1] कठिन वचन गुर सीख थी, मत फेरो मुहडा ना नूर।
सता[1] सुगुरु रिझावा विनय सू, तिण सू पामस्या सुख पडूर।

१३ सता[1] पडित मरण आर करो पिण गण मति छाडो काय।
सता[1] मूल पूजी दढ राखज्या, रत्न हाथ आया मत गाय॥

१४ सता[1] उगणीसै चवद सम, फागुण सुदि तरस गुरुवार।
सता[1] सहर बीदासर रगरली, जय गणपति सपति सार॥

---

१ सथ हुसा नदीय किनारे।
२ चिह्न।
३ अध्ययन १ गा० २ ।
४ आयारो श्रु०५ उ० ६ सूत्र ११०।
५ अध्ययन १ गाथा २७ २८।
६ प्रम बधा
७ स्वाहनि

ढाल ६

[1]चरण रयण सुध राखो ॥ध्रुपद॥

अविचल सुख ने अभिलाखी जी, वर सुमति सुधारस चाखोजी ॥

१ चारित्र निर्मल पालीजै, चारित्र रा जतन करीजै जी।
चरण रयण सुध राखौ थे तो, आदरियो सिद्ध साखीजी ॥

२ त्रिविधे हिंस्या टालीजै, पद-पद पर जयणा कीजै।
सावज दानादि विरोधो, मन कर पिण मति अनुमोदो ॥

३ छल कपट झूठ नै टालो, दत्त गणपति आणा पालो।
तजियै त्रिय विपय भुयगा, सजियै वर सील सुरगा ॥

४ परिग्रह नी मूर्छा टालो मूर्छा थी महा दुख न्हालो।
ए पाच रत्न महा भारी, ए तो चारित्र मुक्ति नेतारी[2] ॥

५ चारित्र थी महु दुख टलियै, वलि विविध विघ्न परजलियै।
टलियै नरकादि निगोद, एहवो चरण परम सुप्रमोद ॥

६ सुर वैमानिक सुख भारी, चारित्र सू लहै उदारी।
इन्द्रादिक पदवी पावै, अहमिंद्र चरण थी थावै ॥

७ तिहा असख्यकाल सखरासो, ओ तो मुक्तिपुरी वट[3] वासो।
पछै सिवपुर वेग सिधावै, सुख आतमीक विलसावै ॥

८ पुल-पुल पर चरण सुअक, सुर वर सुख वर्ष असख।
सुर-सुख त्रिहुकाल सगहियै, इक पुल सिव तुल्य न लहियै ॥

९ पुद्‌गल सुख प्यासा टालौ, चारित्र फल नयण निहालौ।
अल्प परिषह थी मत त्रासौ, चारित्र फल हिये विमासौ ॥

१० चरण फल देखी दुख भूलै, जव जीव कमल दल फूलै।
काणी इक कवडी छोडावै, तसु जग नो राज पमावै ॥

११ कवडी सुख विपय विराणी, जग राज स्वर्ग शिव जाणी।
एहवा चारित्र थी मत चूको, थे तो गणपति शरण म मूको ॥

---

१ लय : हरी बुरज पर बगलो।
२ ले जाने वाला।
३ मार्गवर्ती विश्राम स्थल।

१२ एहवा चरित्र मे मन मडा, गणि आणा नें मत छडा।
(एहवा) चारित्र रतन गमावै, दुःख नरक निगाद ना पावै॥
१३ एतो चारित्र नें ओलखायो उगणीसै सतरे माह्यो।
महा सुदि तिथि छटठ बखाणी आतो जयजश सपति जाणी॥
१४ इक्वीस नव्यासी रगरेला, एतो मत सत्या रा मेला।
भिक्षु भारीमाल ऋषिरायो, जयजश सुख सपति पायो॥

ढाल १०

१ 'चारित्र मे चित चग, रहै रगरत्ता हो, गण माहे गुणी।
अविको मन उचरग सासण दीपावा हो करै कीरत घणी ॥

२ विनयवत विख्यात, गणपति सेती हो, इकतारी घणी।
तजै अवर पखपात, चित्त हुलसावै हो, गणि कीरत मुणी ॥

सोरठा

३ अपछदा अविनीत, (त्यारे)इकतारी नहि गणि थकी।
ज्यारे अविनीता सू प्रीत, ते मूआ पछेइ पग्व करै ॥

४ 'एहवा दुष्ट अजोग, सगत तेहनी हो, कोई करज्यो मती।
ज्यारे मोटो अविनय रोग, इह भव परभव हो माहै हुवै दुखी ॥

सोरठा

५ श्रमणी सत मिलाप, शिष्य शिष्यणी गणपति तणा।
करै तास वणियाप, ते अविनीत अजोगडा ॥

६ 'कोइ रहै किणही प[illegible] ते परलोके हो पहुच्या सू हिवै।
श्रमणी मत सुवास, उचरंग आणी हो, गणि चरणा निवै ॥

सोरठा

७ पुस्तक पानां तास, वस्त्र अनै लोट पातरा।
ते पिण आण हुलास, सर्व गणी नै सोपणा।

८ 'शिष्य-शिष्यणी करणा एक नाम, कह्यो लिखत गुणसठै ताम।
दीक्षा देई सोपणो आण, तिणरी मूल न करणी तांण ॥

९ एहवी भिक्खू नी मर्याद भारी, सुविनीत हिया मे धारी।
दीक्षा लेवे ते पिण गुणवान, लिखत प्रमाणै राखै ध्यान ॥

---

१ २ ३ लय : पांडव बोले बोल ४ लय : डाभ मूजादिक नी डोरी।

१० दीक्षा देण वालो लेण वालो, सुविनीता रो लेखो ए न्हालो।
माहो माहि न राखै ललपल्लो', इम होसी दोना रा भल्लो॥
११ इम रहै दोना री लाज, तिणरा सीझे वछित काज।
एहवी मन माहि पहिली विचारै दीक्षा लेव दवै सुखकारै॥
१२ एहवी शक्ति पोतारी जाण, ता और करणी सेती चित ठाणे।
दीक्षा देवा रो ता मोटो काम दणी पोता रा देख परिणाम॥
१३ शक्ति देखी करै सथारो, कीधा पाछ पाहुचावणा पारो।
इम दीक्षा दैव मुनिराज, जद रहै पाता री लाज॥
१४ सवत उगणोसै वप अठार फागुण सुदि एकम शनिवार।
शिक्षा जय जश गणपति आपी, सुविनीता हिय थिर थापी॥

५ अतरग सम्बन्ध।

ढाल ११

[1]स्वाम के वच प्यारे ॥

म्हे तो दीठो न गणपति एहवो, स्वामी जिन जेहवो ॥ध्रुपद॥

१ शिष्य शिष्यणी आचार्य नाम, दीक्षा देइ नैं सूपणा ताम ॥
२ कन्है राखण नी अभिलाखे, गुरु आज्ञा विना किम राखे ॥
३ राखै कन्है राखण नी हामो[2], त्यारा किण विध सीझै कामो ॥
४ दीक्षा लेण वालो सुविनीत, राखै गुरु सेवा सूं प्रीत ॥
५ विहु वरतै गणि अभिप्रायो, तिण रे दिन-दिन हरप सवायो ॥
६ परिणाम, भागें मति हीणो, तिण रा उभय भवे पुन क्षीणो ॥
७ सैखे काल चौमासे मेले, सुविनीत तुरत वच झेले ॥
८ प्रवरतै मन वच कायो, ओ तो जिम गणपति अभिप्रायो ॥
९ चौमासो उतरिया दरसण चावै, आय गणि रै चरणा लगावै ॥
१० अस उतरती नही करणी, ए भिक्षु मर्यादा आदरणी ॥
११ ए मर्यादा भाग्या महापापो, सहै परभव दुख सतापो ॥
१२ भाग्य जोगे भिक्षु गण पायो, ओ तो चिंतामणी कर आयो ॥
१३ एहथी टलियै नरक निगोदा, पामै शिव सुख परम प्रमोदा ॥
१४ उगणीसै वर्ष उगणीस, वारू जयजश हरप जगीश ॥

१ लय— ज्यारे शोभे केसरिया ।

२ तमन्ना ।

ढाल १२

१ 'थे तो चतुर सीखो सुध चरचा रे, थे तो परहर दवा परचा ।
ए तो परचा आछा नाही र राखो समझ हिया रे माही ।।

२ परचा राखै त नर भाला, त्यारा जीव करे डालाडाला।
परचा सू आनभो पावै त्यारी क्याही शाभा नहि थावै।।

३ परचा वाला जो क्षत्र मलाव ता उ मन रलियायत'थावै ।
परचा वाल क्षत्र नही मेल ता उ दाव कपट बहु गैल ।।

४ पछै आमण-दुमण थका जाव पिण मन मे बहु दुख पाव ।
गत दिवस जाए हीजरता', परचा वाला रा ध्यानज धरता ।।

५ एहवा परचा रा फल जाणी तिण न परहर उत्तम प्राणी ।
जिण र परचा रा पडिया स्वभावा छूटण रा कठिण उपावा ।।

६ जवर समझ हुव हिया माहि ता उ तुरत दवै छिटकाइ ।
तिण रे पीत औरा सू पूरी गणपति म पीत अधरी ।।

७ परचा वाला री भावना भाव, जाण दरसण करवा कद आव ।
आया दख हिया अति हरख जाणै जौहरी नग न परख ।।

८ परचा वाला म्हामा नही जावै वले नयण वयण नही मावे ।
परचा छूटण रा एह उपाया जय गणपति एम जणाया ।।

९ उगणीसै वष उगणीस मगसर विद सातम दिवसे ।
प्रथम मयादा दिन सुखदाया परचा नें जयजश ओलखाया ।।

---

१ सय रस गिरधो हिलिया गटक रे---।
२ स्नेह-सबध परिचय ।
३ प्रसन्न ।
४ अनमना ।
५ याद म झूरते हुए ।

ढाल १३

१ 'क्यू रे तोय लज्जा न आवै, भटकत गण थकी बार।
ओरन कू उपदेस देत है, आप चरण कियो छार'॥
२ स्वाम भिक्षु नी भागी मर्यादा, फिट-फिट हुओ जगत मझार॥
३ अनत सिद्धारी आण भागी ने, अवगुण बोलै मूढ गिंवार॥
४ कुक्कड धम' सरीखो टालोकर, दीवो जीतव जनम विगाड॥
५ नदण वन भिक्षु गण थकी नीकल्यो, गयो जमारो हार॥
६ टालोकर भव-भव दुख पावै, कहिता नावै पार॥
७ निज आतम ने निद परिषद मे, तजी मान अहकार॥
८ अजेस' पगे तू लाग सतगुरु रे, जो चाहै सुख सार॥
९ उगणीसै गुणवीसै चेत विद मे, बीज तिथ रविवार॥

१ लय क्यू रे तोय लज्जा न आवै नाम फकीर धरावै।

२ भस्म।

३ एक घने बालो वाला कुत्ता भोजन की तलाश मे नीलगर की कुण्ड मे गिर गया। बाहर निकलने पर उसकी रग-बिरगी सूरत से डरते हुए अन्य जानवरो ने कौतुक से पूछा—तुम कौन हो? तब ऊचे टीले पर बैठे हुए उसने रौब जमाते हुए कहा—"मेरा नाम है कुक्कडधम" मुझे जानवरो का राजा बनाकर भेजा गया है। भोले जानवर इस बात को सच मानकर उसकी सेवा करने लगे। पर सायकाल के समय जब गाव के कुत्ते भौंकने लगे तो इससे भी नही रहा गया और भौकते ही उसकी सारी पोल खुल गई। तब कुछ हिंसक जानवरो ने इसका काम तमाम कर दिया।

४ अब भी।

ढाल १४

शिष्य उवाच—

१ हाजी स्वामी! मरणे आयो गण नाथ, सीखडली आछी आपो
म्हारा स्वाम ! ।
हाजी स्वामी! परम उपगारी मुज आप, अविचल सुख थिर पद थापो
म्हारा स्वाम ! ॥

गुरु उवाच—

२ हा रे चेला ! सुवनीता रो कीज सग वारु जस कीरति वाध ।
म्हारा शिष्य ! ।
हा रे चेला ! चरण समकित दिढ होय नानादिक वर गुण लाधे
म्हारा शिष्य ! ॥

शिष्य उवाच—

३ हा जी स्वामी! काइ अविनीत हित करै- आय, ललचावे मीठा वाली ।
म्हारा स्वाम ! ।
हा जी स्वामी ! स्यू करिवा गणनाय!, आखीजे सीख अमाली
म्हारा स्वाम ! ॥॥

गुरु उवाच—

४ हा रे चेला ! मन म विचारणा एम, दुखदाई सूत्र घणा है।
म्हारा शिष्य ! ।
हा रे चेला! इण मू पीत किया पत जाय गणि स्यू प्रतनीकपणा है
म्हारा शिष्य ! ॥

५ हा रे चेला ! हित करणा नर देख, गणपति ना दुख निहालो ।
म्हारा शिष्य !
हा र चेला ! परम विनीत सपत्र, तसु सगति सिव ! पटसाला
म्हारा शिष्य ॥

---

१ सय हां जी बना ! गोरी में मोरयां सितरो भार
२ भ्रम ।
प्रतिष्ठा
४ पुष्पमाला

शिष्य उवाच—

६ हो जी स्वामी! गणपति सुगुरु सुजाण, सीखड़ली दै तिण वारे।
म्हारा स्वाम!
हो जी स्वामी! कोमल कठिन विचार, चितवणो स्यू तिण वारे,
म्हारा स्वाम!॥

गुरु उवाच —

७ हा रे चेला! मुज हित काज महाराज, सीखड़ली सुन ने देवे,
म्हारा शिष्य!
हा रे चेला! साधण सिवपुर राज, सुविनीत इसी मन वेवै!
म्हारा शिष्य!॥

शिष्य उवाच -

८ हो जी स्वामी! क्रोध आवै किण वार, किण विध ते निकंदन कीजे।
म्हारा स्वा०!

गुरु उवाच—

हा रे चेला! क्रोध कटुक फल न्हाल, समता रस मन में पीजै।
म्हारा शिष्य!॥
९ हा रे चेला! मन सरी गण माय, सुर माने अधिक सवायो।
म्हारा शिष्य!
हा रे चेला! सासण सोभ वटाय, दीपावै ते अधिकायो
म्हारा शिष्य!॥
१० हा रे चेला! गणपति ना गुणग्राम, करतो सुणतो हुलसावै।
म्हारा शिष्य!
हा रे चेला! गुरु भक्ता सू हेत, तसु गुण पिण मुख सू गावै।
म्हारा शिष्य!
११ हा रे चेला! बाल वृद्ध बहु संत, रगरत्ना सासण माह्यो।
म्हारा शिष्य!
हा रे चेला! फल्या-फूल्या रहै जेह, तसु दिन सुख माहे जायो।
म्हारा शिष्य!
१२ हा रे चेला! कोई अविनीत दु:ख वेदत, ते पिण पाती रो जाणी।
म्हारा शिष्य!
हा रे चेला! विगय भोगवै तेह, पाती रो वलि अनपाणी।
म्हारा शिष्य!

१३ हा रे चेला ! ते पिण रहै गणमाय, दुख वेद अधिक अथायो।
म्हारा शिष्य !
हा रे चेला ! जो करै सासण री वात, ता उतरती वोल वाया।
म्हारा शिष्य !

१४ हा रे चेला ! गणपति रा गुणग्राम, सुणिया पिण ते दुख पावै।
म्हारा शिष्य !
हा रे चेला ! गुरु भक्ता सू द्वेष, तसु गुण सुण वेदल[1] थावै।
म्हारा शिष्य !

१५ हा रे चेला ! गणपति वारू सीख, दे श्रमण सत्या ने भारी।
म्हारा शिष्य !
हा रे चेला ! काना मे नही सुहाय, अन्य स्थानक जाय तिवारी।
म्हारा शिष्य !

१६ हा रे चेला ! सयम ना दै साज, गणि वारू विविध प्रकारे।
म्हारा शिष्य !
हा रे चेला ! एहवा गणि ना जाण, गुण सुण नै मुह विगाडे।
म्हारा शिष्य !

१७ हा चला ! सासण सिव पद पथ, रहितो ते गण मायो।
म्हारा शिष्य !
हा रे चेला ! वेदल विलखै नूर, दुख माहि दिन तसु जायो।
म्हारा शिष्य !

शिष्य उवाच—

१८ हो जी स्वामी ! सव पाती रो आहार, विगयादिक पाती रा खाया।
म्हारा शिष्य !
हो जी स्वामी ! सुविनीत सुख वेदत, तो ओ दुख वदै किण न्यायो।
म्हारा शिष्य !

१९ होजी स्वामी ! स्वाम भिक्षु गणसार, नरकादिक ना दुख छेद।
म्हारा शिष्य !
हो जी स्वामी ! भाग्य जोग आयो हाथ किण कारण आ दुख वदै।
म्हारा स्वाम !

२० हो जी स्वामी ! चरण-रयण चितचग, चितामणि चिता चूर।
म्हारा शिष्य !
हा जी स्वामी ! ते पिण आया हाथ, किण कारण आ हिव झूर ॥
म्हारा शिष्य !

---

१ वेचन।

२१ हो जी स्वामी ! मुज पर करो प्रसाद, चीननरी मुज मानीजे ! म्हारा स्वाम !
हो जी स्वामी ! कहिता किलामना न होय, जो तिरपा कर आप कहीजे। म्हारा स्वाम !

गुरु उवाच–

२२ हा रे चेला ! इण रे शब्दादिक री चाय, मन माहि अधिक उमेदै। म्हारा शिष्य !
हा रे चेला ! जोग मिलै नही ताय, तिण कारण ओ दुख वेदै। म्हारा शिष्य !
२३ हा रे चेला ! क्रोधादि च्यार कषाय, ज्ञानादिक गुण ने भेदै। म्हारा शिष्य !
हा रे चेला (तिणरै) जबर कषाय नो जोर, तिण कारण ओ दुख वेदै। म्हारा स्वाम !
२४ हा रे चेला ! जस हेतु विनय विचार, ने (पिण) इण सू करणी नावै। म्हारा शिष्य !
हा रे चेला ! अविनीता रो जस नहि होय, तिण कारण ओ सीदावै। म्हारा शिष्य !
२५ हा रे चेला ! इणरी प्रकृति अधिक अजोग, गुरु स्यू पिण नाहि मिलावै। म्हारा स्वाम !
हा रे चेला ! मन मान्या काज न होय, तिण कारण ओ दुख पावै। म्हारा शिष्य !
२६ हा रे चेला ! आहारादिक नी एह, लोलपणा नी मन ल्यावै। म्हारा शिष्य !
हा रे चेला ! पाति मे नही सतोष, तिण कारण ओ दुख पावै। म्हारा शिष्य !
२७ हा रे चेला ! स्त्रीयादिक ना सग, परचा थी ओ अति रीझै। म्हारा शिष्य !
हा चेला ! ते पिण न मिलै जोग, तिण कारण मन मे खीजै। म्हारा शिष्य !
२८ हा रे चेला ! गुरु सू प्रकृति मिलै नाय, गणपति रा गुण जन गावै। म्हारा शिष्य !
हा रे चेला ! इण ने नही रे सुहाय, तिण कारण ओ दुख पावै। म्हारा शिष्य !

---
१ परिश्रम

२९ हा रे चेला ! गुरु भक्ता सुविनीत, तिण रा पिण गुण जन गावै।
म्हारा शिष्य !
हा रे चेला ! ते पिण नही रे सुहाय, तिण कारण ओ कुमलावै।
म्हारा शिष्य !
३० हा रे चेला ! गण में रगरत्तो नाय गण रा पिण गुण जन गावे।
म्हारा शिष्य !
हा रे चेला ! ते पिण नही रे सुहाय, तिण कारण ओ सीदावे।
म्हारा शिष्य !
३१ हा रे चेला ! अवनीत दुष्ट अजाण तिण ने पिण ओ विसरावै।
म्हारा शिष्य !
हा रे चेला ! खाच लेवे आप माय, तिण कारण,ओ दुख पावे।
म्हारा शिष्य !
३२ हा रे चेला ! दीक्षा दे मूपणो आण सुवनीत मर्यादा सवे।
म्हारा शिष्य !
हा रे चेला ! इण रे पात गखण री हाम तिण कारण ओ दुख दवे।
म्हारा शिष्य !
३३ हा रे चेला ! ए अवगुण तज दूर सुवनीता रा सग कीजे।
म्हारा शिष्य !
हा रे चेला ! वलि वहू शिक्षा सार तन मन सू त धारी जै॥
म्हारा शिष्य !
३४ हा रे चेला ! सम्यक्त्व चरण अमाल, जतन करने राखीजे।
म्हारा शिष्य !
हा रे चेला ! च्यार तीर्थ में ताल सुर शिव पद सुख चाखी जे।
म्हारा शिष्य !
३५ हा रे चेला ! करलो ही आय पड काम अनसन कर तन छडी जे।
म्हारा शिष्य !
हा रे चेला ! स्वाम भिक्षु गणसार मिवदाता नवि छडो जे।
म्हारा शिष्य !
३६ हा रे चेला ! नरक निगोद ना दुख फारकत्ती[१] इण सू होवे।
म्हारा शिष्य !
हा रे चेला ! एहवा ! भिक्षु गण जाण, गुणवता तू मत खोवे।
म्हारा शिष्य !

---
[१] छुटकारा।

३७ हा रे चेला ! नीठ-नीठ आयो हाथ, अति ही दुर्लभ छै भाइ।

म्हारा शिष्य !

हा रे चेला ! वार वार कहू तोय, गण में राखै गेठाइ।

म्हारा शिष्य !

३८ हा रे चेला ! गण ए किल्याण नो स्थान, इण मे गाढा पग रोपी जै।

म्हारा शिष्य !

हा रे चेला ! आय पड़ै कोई काम, गण सू तो नवि कोपीजै।

म्हारा शिष्य !

३९ हा रे चेला ! उगणीसै उगणीस, जय गणपति नी ए शिक्षा।

म्हारा शिष्य !

हा रे चेला ! तज अवनीता रो संग, निर्मल थे पालो दीक्षा।

म्हारा शिष्य !

ढाल १५

'रूडी भिक्षु आण मे वहिय,
आण अखडित वर गुण मडित पडित तेह प्रवीण।
रूडी गणपति आण मे वहिये ।।ध्रुपद।।

१ दीक्षा देइ नैं आण सूपणो, लिखत गुणसठे लेख।
लालपाल तिण सू मूल न राख, वलिन्नल[1] नवि देणी रेख ।।
२ नठाउ[2] पच अज्जा उपरतज, जो गणि नाप ताम।
आड दाड मन मूल न आणे, अधिक तणी तज हाम ।।
३ चउमासा उतरिया पाछ, कर दशण घर चूप।
आहार चिहू विण भागविया, मुनि अज्जा पुस्तक सूप[3]।।
४ परचो राख्या पाम ओलभो तेहथी रहिवा दूर।
अधिक सचेत रह्या थी थारो, दिन दिन चढता नूर ।।
५ उष्ण आहार प्रमुख मयादा पालै रूडी रीत।
पत्र लिखी गणपति नें आपै, निमल राखैं नीत ।।
६ परम प्रीत गणपति सू पूरण रीझाव दिल खाल।
सासण अधिक दिढाया वाधै च्यार तीथ म तोल ।।
७ टोलाकर नें अधिक निखेधे, तज अवनीता रो सग।
आप तणो रागी पिण न करे जिल्ला नैं जाण भुयग।।
८ तन मन वयण कला चतुराइ सू प्रसन्न कर गणनाथ।
प्रसन्न थया सुख इहभव परभव, वलि-वलि स्या कहू वात ।।
९ श्रद्धा आचार नै सूत्र कल्प रा वान्न री मत कर ताण।
गुरू तया बुद्धिवत क्है ते मानणो लिखत पतालीस आण[5] ।।
१० उगणीस इक्वीस महासुदि ग्यारस नें चद्रवार।
गुरु अभिप्राय रह्या सुख निश्चय, जयजश हरप अपार ।।

---

१ सय—सुगुणा पाप पक्ष।
२ झूठा आश्वासन।
३ साधारणतया।
४ ममत्व अभिलाषा।
५ आना।

ढाल १६

१ [1]सुख तो होवे छै प्रकृति सुधारिया रे, आसा तृष्णा ने दूर निवार रे।
सुवनीत चित कैडे वरते सदा रे, सासण ऊपर दृष्टि सुधार रे॥
सुख तो होवे छै प्रकृति सुधारिया रे॥ध्रुपदं॥
२ निज करना दीक्षित जे मुनि महा सती, कन्है राखण री न करै हाम।
आज्ञा दिया विण कलुषपणो नही, प्रीति गणपति सू अति अभिराम॥
३ कुरव वधावै मुनि अज्जा तणो, तो पिण विमन न हुवै मन माहि।
न करै जेहनो [2]खेदो ईसको, राखै तिण सू पिण हेत सवाय॥
४ दीक्षा मे दीर्घ तथा लघु मुनि अज्जा, बुद्धि करी अल्प तथा अधिकाय।
कुरव वधावै गणपति तेहनो, तिण सू पिण अनुकूल वरते ताय॥
५ गुरु आपै असणादिक उपधि अन्य भणी, सेत्र भलावे चोखो जाण।
तो पिण न करै तिणरो ईसको, सुविनीत ना लक्षण एह पिछाण॥
६ वाको नही वरते तिण सू सर्वथा, छल बल माया न करै रच।
अखड आराधै मर्यादा गुणी, अधिकी गणपति सू प्रीत सुसच॥
७ कठण वचन मे गणपति सीख दै, च्यार तीरथ मे दीये निषेध।
तो पिण कलुष भाव आणै नही, सुवनीत सासण तिलक सवेद॥
८ न करै उत्तरती गण नी वारता, न सुणै उत्तरती किण ही वार।
सासण दीपावै नित्य परिसद मझै, ते सुवनीत सासण रा सिणगार॥
९ सवत उगणीसे वर्ष चौवीस मे, वैसाख सुकल बीज भृगुवार।
सासण थभ भणी ओलखावियो, जय जश आनन्द हरष अपार॥

१ लय—जिनवर गणधर मुनिवर ने। २ मानसिक जलन।

ढाल १७

'जिल्लो वाघणरी नही जिन आगयारे ॥ध्रुपद॥

१ निज स्वाथ अर्थे गुरु आज्ञा विना रे, आप रो रागी करै अयाण रे।
अथवा गुरु भाई सुवनीत सू रे, प्रतिकूल अर्थे जिल्लो पिछाणरे॥
२ असणादिक रागी करवा आपणौ विगय पय दही घत नें मिष्ठान।
सूखडी सरस आहार देइ करी, व्यजण विविध प्रकारे जाण॥
३ सुदर वस्त्र पात्र देई करी लिखी कोरा पाना फुन देह।
लेखण रग रोगानादिक दिय, आप रा रागी करवा तह॥
४ असणादिक थोडो मगावी करी, निज निरस समच मेल ए रीत।
वलै और नें सरस दे निरस लेइ करी समच मेल इम कर अनीत॥
५ उणरो बोझ उपाडी नें रागी करै वले काय विविध करै धर प्रेम।
गुरु काम भलाव ते टालो करे तिण नें निजरा रा अर्थी कहियेकेम।
६ वले काय कराव ते पिण तेहना पक्षी तसु काम पऱ्या द साज।
उणरे वदले वीजा साधा भणी विरआ' वालतो नाण लाज॥
७ इमहिज विगया दिक लव तिका तहनें वदल पस याचे जाण।
'कवारो घात्या" नीचा जावता, टुकडा न्हाम्याजिम श्वान पिछाण॥
८ उपराठा वरत आचारज थकी दानूई माह मतवाला 'धीग।
खामी पडिया निपेघ जा एहनें ता दानूई स्हामा माड सीग॥
९ प्रतिकूल वरते मुनि सुवनीत सू अवनीत मू हत गुप्ट अवलोय।
अवनीत न या लखण कर आलखो च्यार तारथ म फिट फिट होय॥
१० तुक्म तागीर असर सोवत" तणा एह आखाणा छ जग माय।
अविनीत सू हत गुप्ट राग घणा गुणारो वधातर किणविध थाय॥

---

१ सय—जिनवर गणधर मनिवर ने। ५ हट्ठा रट्ठा।
२ अपराध। ६ वाज जमा पर मगन असा रगत
३ वचन-भ्रास मे सामच म। ७ कहावत।
४ विपरीत।

११ टालोकर निंदक ते सासण तणो, प्रत्यनीक गणपति नो गणमाय।
कोइ प्रत्यनीक गुप्ट हेत राखै घणो, या तीना रो अपजस अधिको थाय ॥
१२ काम करै करावै और साध पै, निर्जरा रो अर्थ थकां उमेद।
ते पिण सतगुरुनी आज्ञा थकी रे, तेहनो नही छै इहा निषेध ॥
१३ सिंघाडे विचरे जे त्रिण चउमुनि, वावै वे जणा जिल्लो तिण माय।
टोलो भलायो तसु मुरजी विना, ए पिण मोटो रोग कहाय ॥
१४ दिसा[1] जावै त्या पिण एकठ[2] करै, आगे-पाछै जड भेला होय।
माहो मा गुह्य करै अलखामणा, त्यारो च्याग्तीरथ मे अपजसहोय॥
१५ पेला रा लाभतणी वंछा करे, पाती मे पामै नही संतोप।
चोथे ठाणे[3] दुख सेज्जा कही, ए पिण अवगुण छोड्या मोख ॥
१६ वात उतरती सासण री करै, अविनीत साध श्रावक सू प्रीत।
आज्ञा मर्यादा सुध पालै नही, इण लखणा जाण लीज्यो अवनीत॥
१७ सासण दीपावै सोभावै घणो, गणपति सुविनीता सू प्रीत।
आराधै आज्ञा मर्यादा गुणी, इण लखणा जाणलीज्यो सुवनीत॥
१८ सवत उगणीसै पच्चीस मे, माघ वदि तेरस नें रविवार।
जोड कीधी जिल्लो ओलखायवा, जयजश आणी हरप अपार ॥

१. जगल।
२ एकत्व।
३ ठाण ४।४५०।

ढाल १८

'धम ना घोरी जी, सुगुरु सिप जोडी जी।
होजी एतो भिक्षु ने भारी माल ज्सिा जसधारी जी।
सासण सिणगारी जी ॥ध्रुपद॥

१ आण आराध सुगुरु नी काइ, काय विलव रहीत।
अ ग चेष्टा प्रति आलखै काइ ते सुगुणा सुविनीत।
२ वलि न हुव 'मुख नो अरी' काइ म्यतर' वाह्य प्रशात।
आचारज न आगल काइ सीख अथ सुदात॥
३ तन मन स सेवा कर काइ सासण रो सिणगार।
च्यार तीरथ जाण तसु इण रे सुगुरु थकी अति प्यार॥
४ परम प्रीत सतगुरु थकी काइ त्रिहु योगे करी तेम।
साताकारी ए सही काई, गणपति जाण एम॥
५ गणपति नें आराधिया काइ विनय करी विधविध।
विनय करी न सविया काइ विनय तणी समरिध॥
६ एहवा शिष्य सुविनीत ने काइ, गणपति गण सिणगार।
चरण पलाव निमलो काइ थेट उतारे पार॥
७ आराधन विध विध करी काइ, सताप सुखकार।
पभण परिपद न विपे काइ ए गण ना आधार॥
८ आचारज मोटा हुव काइ, वारू गुण ना जाण।
मरण पडित हुवै ज्या लग काइ ताडै नही कर ताण॥
९ नवम दसवैकालिके काइ कथा नो दष्टात।
जनक कन्या नें पाल नें काइ, प्रवर मिलाव कत॥
१० तिम गुरु सिप सुवनीत नो काइ, प्रवर वधाव तोल।
पदवी जोग करी तसु काइ, गणपति तिलक अमोल॥
११ विनयवत मुनिवर भणी, गुरु जाण अति हितकार।
झीणी रहस्य सिद्धात नी काइ, तास धराव सार॥

---

१ लय—पायल वाली पदमनी।
२ वाचाल।
३ अतरग।
४ दसवेआलिय ९।३।१३।

१२ अविक प्रीत वाला तणो काइ, सतगुरु गण रे माय।
कुरव वधावै अतिघणो काइ, विविध प्रकारे ताय॥
१३ अ तसीम आरावना काइ, हुवै जिहा लग ताम।
छेह[1] न देवै तेहनै काइ, गणपति जी गुण धाम॥
१४ छेह न देवै तेहने काइ, हरख वधावै हीर।
सदा प्रसन्न राखै तसु काई, पिण न करै दिलगीर॥
१५ विनय करी रीझाविया काइ, तसु फल इहभव एह।
आराधक पद पामने काइ, वेगी मुगत वरेह॥
१६ विनयवत सिप एहवा फुन, गणपति इसा गभीर।
सासण तिलक सुहामणा काइ, निमलपयोधी क्षीर॥
१७ विनय करी ने सेविया काइ, वारु विव-विध रीत।
एहवा सिप सुविनीत सू गुरु, पालै पूरण प्रीत॥
१८ त्रिहु योगे रीझाविया, काइ सत गुरु ने सुखदाय।
एहवा सिप सुवनीत नै काइ, पडित मरण सहाय॥
१६ कार्य मनगमता करी काइ, गणपति ने सतोप।
एहवा सिप सुविनीत नै काइ, पद दिये आराधक पोष॥
२० विनयवत सिप नै वली काइ, गणपति नी वर जोड।
अविचल तीरथ च्यार मे काइ, सासण सिरमणि मोड॥
२१ एहवा आचारज थकी, सिप राखै हरप विशेप।
उचरग दिन-दिन अति घणो काइ, परम विनय नी रेख॥
२२ समकित जेहनी निरमली काइ, प्रवर महाव्रत पच।
एहवा सिप गणपति तणै काइ, दिन-दिन सपति सच॥
२३ आजा अमल आराधनै काइ, तीरथ च्यार मुतत।
एहवा सिप गणपति तणी काइ, जोडी जग दीपत॥
२४ अन्यमति स्वमती पेख नै काइ, ते पिण इचरज थाय।
एहवा सिप गणपति तणी काइ, दिन-दिन सोभ सवाय॥
२५ दिन-दिन सोभा अति घणी काइ, हियै हरष अति हेव।
एहवा सिष गणपति तणी काइ, सारे सुरनर सेव॥
२६ सेवा सारे सुर घणा काइ, च्यार जाति ना चाय।
एहवा सिष गणपति तणा काइ, प्रणमे अपछर[2] पाय॥

१ किनारा। २ अप्सरा।

२७ प्रणम पाय जपछर घणा काइ, फुन अन्य रा साहृत ।
एहवा सिप गणपति भणी काइ देव-देव हरपत ॥
२८ देव देव ने हरखती काइ परम प्रीत अधिकाय ।
एहवा सिप गणपति तणी कर विविध प्रकारे सहाय ॥
२९ विविध सहाय कर घणा काइ, सुरवर मरी सुजाण ।
एहवा सिप गणपति तणो काइ वारू गुण वखाण ॥
३० वारू वखाणज साभल काइ अन्य समय पिण आय ।
एहवा सिप गणपति तणी काइ सेव कर चित ल्याय ॥
३१ उत्तराध्ययन विप कह्या काइ प्रथम अध्ययनन अत ।
विनयवत न पूजता काइ चिहुविध देव सुतत ॥
३२ च्यार जाति ना देवता फुन मनुष्य तणा वहु व द ।
ते पिण सिप सुवनीत न, पूजै अति आनद ॥
३३ औदारिक तनु छाड नै काइ, पाव सिव पद तत ।
देव हुवै ता दीपता काइ अल्प रज[1] महद्धिवत ॥
३४ प्रवर चारित्र पालण तणी, निमल जहनी नात ।
आचारज गुण आगला काइ शिष्य सुगुणा सुवनीत ॥
३५ उगणीस पणवीस मे काइ विद वसाख सुवीज ।
सिप सुगुरु सेव्या लहै काइ विविध प्रकार रीझ ॥

---

१ हलकर्मी ।

ढाल १६

[1]सुमति सदा दिल मे धरो ।।ध्रुपद।।

१ आचारज ने आगले, शिष्य शिष्यणी सुखदाय, सलूणा !
विनयवंत गण वालहा, सासण तिलक सोभाय सलूणा !
२ आण अराधै सुगुरु नी, कार्य करै धर प्यार ।
निपुण अनै स्थूल वुद्धि करी, जाणै इगित आकार ।।
३ कठण वचन गुरु, सीखवै समभावै रहै सूर ।
लाभ कारण ए मुझ भणी, न फेरै मुख नो नूर ।।
४ गे'रा सायर सारिखा, सुरगिरि जेम अडोल ।
सासण स्तंभ सुहामणा, त्यारा च्यार तीरथ मे तोल ।।
५ परिषद माहि निपेधिया, तो पिण पूरण प्रीत ।
कलुप भाव आणै नही, संतसती सुवनीत ।।
६ एहवा शिष्य सुवनीत रो, सर्वकार्य मे सार ।
गणपति नै आधार छै, धरा सहे जिम भार ।।
७ काच भाजन अवनीतडो, कहो चोटा खमै केम ।
सहै चोटा तो वनीत ही, कै हीरा कै हेम ।।
८ अवनीत गोलो मैण नो, तप्त गलै तत्काल ।
सुवनीत गोलो गार नो, ज्यू धमै ज्यू लाल ।।
९ अवनीत वृक्ष एरडियो, अस्थिर ते करै कोप ।
सुवनीत कल्पतरू समो, विनय नो वगतर टोप ।।
१० ऊडी तास आलोचना, गुण कर गहर गभीर ।
निर्मल भावै वरततो, जिम गगा नो नीर ।।
११ उगणीसै पणवीस मे, तेरस धुर वैसाख ।।
सुकल[2], सुवनीत लडावियो, जयजश शिव अभिलाख ।।

---

१ लय—तारा हो प्रत्यक्ष मोहनी ।

२ शुक्ल पक्ष ।

ढाल २०

'मविभाग करी लीज ।

१ निज पाती म जे रज ने मुनिवरनें कुणगजै जी म०।
ज्यारी भद्र प्रकृति गुण रास, सहूनें सुखदाइ जाम जी ।स०।

२ जिम्या इद्रिय वस कीजै, तिणम वाछितकारजसीन्ह जी।
मुज सीख सुगुण धारीजे लज्या यत्न राखीज जी ।

३ निज पाती मे नही रजै तेहना दुख कहा कुण भजै ।
अतिखावणपीवणरी पिपासा, किम पूरीजे तसु आशा ॥

४ निज पाती म रगराता त्यारे मानसीक सुखमाता ।
जेहवा मिल्यो करै सतोप समभावपण सुन पाप ॥

५ पाती म रति नही पाव, त पग-पग म सीदाव ।
गमती (वस्तू) देखी मन जाव, मागता लाज न आव ॥

६ मागै दूध न्हो घृत दाल नवा मादक ग्वड विमाल ।
वलि विविध तरकारी ताजी, सरसव प्रमुख नी भाजी ॥

७ माग फलका चावल दाल माहि सुगध घत सुविसाल ।
माग घत तलिया गुलगुलिया तुरतुरिया[1] ने मुरमुरिया[2] ॥

८ मागै घेवर नै खाजा, इण न भोजन भाव ताजा ।
मागै लापसी न सीरो, सुख पावै मुझ मन हीरो ॥

९ मागै मानपूआ न खीर, सुख पाव जीव शरीर ।
मागै बूरो नैं पतासा दीधा हुवै हरप हुलासा ॥

१० माग पापड अति चगो इम सुख पावै मुज अगो ।
बाजरी री राटी नही भाव, गहू री देखी मन जाव ॥

११ बाजरी री माग तो ताजी आता उष्ण चौपडी जाझी ।
नूखी जो निण नें देवै तो मुह विगाड दुख वव ॥

---

१ लय—हरी वरज पर बगलो ।
२ ग्वाल के बडे ।
३ बमन क मुजिय ।

१२ वाजरी रो खीच नही भावै, कहे मुज तनू गरम लखावै ।
उष्ण दूध वडादिक आपै, तो खाता मन नही धापै ॥

१३ खीच वाजरी री चिन्नावे, फलका री भावना भावै ।
फलका जो आवै थोडा, विण पाती इम तसु फोडा ॥

१४ जो कदाचित खीच उवेखै, तो सीज्यो अणसीज्यो देखै ।
ते पिण मन वाछित नावै, विन पाती इम सीदावै ॥

१५ वीस तीस चालीस करवाली[1], ज्या मासू मागै टाली ।
रस इन्द्रिय मोकली मेली, लज्जा पिण दूरी ठेली ॥

१६ समभाव अज्जा मुनिरायो, करवाली देवै तायो ।
तो कहै न दीधी आछी, रोस करिनै न्हाखै पाछी ॥

१७ पाती खावण ने पाछो[2], दीधा कहे न दीयो आछो ।
मोनै उनरतो[3] दियो आहार, तिण सू अवगुण हुवो अपार ॥

१८ समचा[4] रो दे कोइ आहार, उनरतो आवै किवार ।
(तो उणरो) वैरी होय जावै पूरो, विगाडै मुखनो नूरो ॥

१९ विन पाती ना फल एह, सतोस विना तसु देह ।
निज पाती मे रति पावै, तो ए अवगुण किम थावै ॥

२० पर लाभ तणी नही चायो, सुखसेज्जा[5] कही जिन रायो ।
पर लाभ वाछे मागतो, दुख सेज्जा कही भगवतो ॥

२१ जे असविभागी[6] मतो, अवनीत कह्यो भगवतो ।
वर उत्तराध्ययन[7] सभारो, ग्यारम अध्ययन उदारो ॥

२२ ले असविभागी लाधू[8], तिण ने कह्यो पापी साधू ।
सतरम उत्तराज्झयणो[9], ए वीर तणा वरवयणो ॥

२३ असविभागी नै नहि मोखो, दसवै०[10] नवमे अवलोको ।
वर सविभाग जे साधै, ते तीजो[11] व्रत आराधै ॥

२४ कह्यो दसमे[12] अग दयालो, वच वहु सूत्र इम न्हालो ।
इम जाणी ने जे सारो, सविभाग करी ले आहारो ॥

---

१ रोटी ।
२ पीछे रहने वाला ।
३ नीरस ।
४ समुच्चय—सबके लिए लाया हुआ ।
५ ठाण ४।४५१ ।
६ भक्त पान आदि का सविभाग न करने वाला ।
७ उत्तरज्झयणाणि ११।९
८ प्राप्त ।
९ उत्तरज्झयणाणि १७।११
१० दसवेआलिय ९।२।२२ ।
११ अचौर्य व्रत ।
१२ पण्हावागरणाइ ८।१२ ।

२५ 'आहारपाणी साधु वहिरी न ल्याया, सभोगा साधु न बाट देवारी रीत।
आप आण्यो जाणी अधिक लवै, तो अदत्त लागे जाय परतीत॥
आ श्रद्धा श्री जिनवर भाखी॥ध्रुपद।

२६ 'गणपति अतिसय ठाणायगा', पत्थ वत्थ' आहार अति चंगा।
विण पाति लेवै आहार तिण में श्री जिन आना सार॥

२७ त्यांरी आना सू अणगार विण पातो ले कोई आहार।
तिण में दोष नहीं छे काइ, सुख तो समभाव थी होई॥

२८ कारण सूं दे विण पती, समचित दे ते नहै व्रती'।
लज्जा तज मांग नें लेवे, तेहना कुण अपजस केवे॥

२९ अय नें कहै ल्यो मुज भारो इम सके नहीं लिगारो।
करे अय वगत्तर आहारो, किम उदर नें दे भारो॥

३० वद्ध ता छै बहु मुनि अज्जा निजभार उपाडै लज्जा।
पिण उन्ड न नहीं दवै, अल्प गाउ विहार करवै॥

३१ जे अधिक गुणी मुनि अज्जा सुवनीत भद्र वर लज्जा।
नारी जिम भार धुरा लै पिण उदीर न नहीं आल॥

३२ तसु उदीर नै कोइ भारा तो पिण न करै नाकारा।
जवरी मूं जा कोई लेवे तेहनी तो कीरत कहवे॥

३३ अथवा तेहना जे भारा गुरु उपडावे तिणवारा।
जे कुरववत मुनि कहिये, जग में तेहना जस लहिये॥

३४ उगणीस वर्ष छावीस मग० विद चउदस सुर ईस।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराया जाडी जय जग सुज पाया॥

---

१ लय—मेघ कुमर हाथी रा भव में।
२ लय—हरी बुरज पर वगलों।
ठाण ८।१५।
४ पथ्य।
५ वस्त्र।
६ समाधान।
७ चतो करे।
८ थोड गांवा को छोटा विहार।
९ स्त्र।

ढाल २२

[1]नंदन वन भिक्षु गण मे वसोरी, हे जी प्राण जाय तो पग म खिसोरी ।न०
नदन वन० ॥ध्रुपदं ॥

१ गण माहि ज्ञान-ध्यान सोभैरी, हे जी दीपक मदिर माहि जिसोरी
२ टालोकर नो भणवौ न सोभै, नाक विना ओ तो मुखड़ु जिसो ॥
३ अवनीत री देसना न दीपै, गणिका तणो सिणगार जिसो ॥
४ दुखदाई क्षुद्र जवा सरीखो, निंदक टालोकर वमन जिमो ॥
५ सासण मे रगरत्ता रहो, सुर शिव पद माहि वास वसो ॥
६ भाग्य वलै भिक्षु गण पायो, रत्न चितामणि पिण न ईसो ॥
७ गणपति कोप्या ही गाढा रहो, समचित सासण माहि लसो ॥
८ आड-डोड चित मे म आणो, मोह कर्म नो थे तज दो नसो ॥
९ वार-वार स्यो कहियै तुम्है, अचल रहो पिण मति रे मुसो ॥
१० खेल खिलाड्या रो याद करो, अडिग पणै थे तो गण मे वसो ॥
११ उगणीसै गुणतोस फागुण री, जय जश आणा मे सुख विलसो ॥

१ लय : मन वृ दावन जाय वस्यो री ।

ढाल २३

दुगति केरी माई[1] हो टालोकर पकड़ी नें लीधी,
आल पंपालज[2] बोले हो, टालोकर लज्जा तज दीधी ॥ध्रुपद॥

१ चडाली चोकडिया हो टालोकर चाला[3] चालव्या,
दुर्मति कुमतो कीयारे प्रवेश।
क्रोध भुजंगी पैठा हो टालोकर रा घट मधें,
समकित चारित्र खोव करी क्लेश।

२ अतीत काले हुवा हो, टालोकड निंदक नागडा
निरथक दीया जनम बिगाड।
हिवडाहिज[4] पिण दीसै हो, टालोकर वे मुख[5] गण थकी
फिट फिट हुवा जगत मझार॥

३ मोह वसैं मतवालो हो, असराला वाला[6] हाथ रह्यो,
कालो लगाया करम कठार।
गेहरिया[7] होली ना हो, ज्यू बाले निरलज बालता,
टालोकड ए जिनमत केरो चार॥

४ परभव री नहीं चिंता हो मदमस्त अछता आलद
जिण तिण आगै बाल विरखी वाण।
आतम काली करतो हो। घेखज[8] धरता गण थकी
कृतघ्न, हराम खार पिछाण॥

५ वंदणा पंच पदारी, तिणमाहि नामन घालता,
आचारज नो अधिक उदार।
देव तीथंकर सरिखा हो। इम कहिता गणपति नें सदा
हिव अवरण[11] बाल मूढ गिंवार॥

---

१ सब महलां री मेवासी हो।
२ उलटा सीधा
३ घाल्या चाला
४ साप
५ वर्तमान में
६ विपरीत
७ भयंकर
८ बावना
९ फागुन मास में गेर में नाचने वाला व्यक्ति
१० द्वेष
११ अवगुण निन्दा

६ नित्य प्रति नित्य प्रति करतो हो, टालोकर ऊभो होय नें,
गण रा अवगुण बोलण रा पचखाण।
पच पदारी साखै हो, जे सूस लिया ते भागिया,
वलि भागी अनत सिद्धारी आण॥

७ वीर थका जे हूता वर चवदै सहस मुनीसरु,
अज्जिया हूती वलि छत्तीस हजार।
त्यारै सरिखा श्रद्ध हो, इम कहितो गण माही सदा,
हिवै अवगुण बोलण हुवो हुसियार॥

८ अढी द्वीप[1] रा तस्कर हो, त्या थी पिण टालोकड बुरो,
इम नित्य कहतो हाजरी में कर जोड।
तिणरी वतका[2] माने हो, तिण ने पिण जाणू चोरटो,
हिवै काटण लागो गण माहि खोड॥

९ सूस अनेकज भाग्या हो, टालोकड गण थी नीकली,
ते उदय हुवै जव इण भव माहै पाप।
विविध प्रकारे पामै हो रोगादिक आपद आकरी,
व्यापै घणो सोग सताप॥

१० परभव माहै पामैं हो, टालोकड पीडा अति घणी,
वहु विध देवैं परमाधामी मार।
लाल गोला कर घाले हो, टालोकड रा मुख मझै,
कीया कर्म सभार सभार

११ उगणीसै सैतीसै हो टालोकड ओलखावियो,
फागुण सुदि चौथ नै भृगुवार।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराया हो, गण नायक तास प्रसाद थी,
जय गणि जोडी जयपुर शहर मझार॥

सासण वीर जिणद नो हो ए गण समुदाय भिक्षु तणो,
तसु गण मे रग रत्ता, ते मुनि ने सुख आनद घणो॥आकडी॥

---

१ जम्बूद्वीप, धातकी खण्ड, पुष्कर (अर्द्ध)   २ वात

ढाल २४

'सयाणा ! स्वाम गण सुख कारिया जी ॥ध्रुपद ॥

१ शासण वीर तणा सुविसाल हाजी ओ तो धारयो भिक्षु भारीमाल ॥
२ तास प्रसाद लह्या सुख चारु ओ तो नपशशि जयजश वार ॥
३ भरत मे भाण भिक्षु भलकत जो तो धारिया प्रभुजी रा पन्थ ॥
४ गर्भ जन्म जरा मरण ना दुख भारी, स्वाम गण थी हुवै निस्तारी ॥
५ मनुष्य लाक थी अनत गुणा नरक माया, स्वाम गण थी त दुख मुकाया ॥
६ छेद्र-वेदन सुर कृत अनत, स्वाम गण थी त दुख नों ह्वै अन्त ॥
७ निगोद ना दुख नरक थी अधिकायो स्वाम गण थी ते पिण मिट जायो ॥
८ दुख समुद्र ससार है भारी, स्वाम गण थी ते पिण लहै पारी ॥
९ काल अनत भ्रमण किया आग पाया तीर्थ स्वाम गण साग ॥
१० सम्यक्त्व देस विरत न चरित्त स्वाम गण वर मरण पवित्त ॥
११ स्वाम प्रवर गण सरणे आया, ए तो भव दुख क्षय पाया ॥
१२ पद अहमिन्द्र सव्वट्ठ सिद्ध' भारी स्वाम गण थी लहै सुख भारी ॥
१३ चक्री वनदेवादिक ना पद भारी, स्वाम गण थी हाव अधिकारी ॥
१४ पद तीर्थङ्कर गोत बधावे स्वाम गण थी प्रवर सुख पावै ॥
१५ आत्मिक-सुख पामै भारी, स्वाम गण मरण थी उदारी ॥
१६ सासण नाथ तणा तीर्थ तीखा म्है तो पाया स्वाम गण नीका ॥
१७ पारस परम स्वाम गण साचा पाया जबर भाग्य थी जाचा ॥
१८ रत्न चिन्तामणि गण कर आया, आता चिन्ता सब मिट जाया ॥
१९ सरण स्वाम गणरै कोइ आवे त्यारा विघन सब मिट जावे ॥

---

१ सय आज अम्बाजी क नोपन । २ सर्वार्थ सिद्ध ।

ढाल २५

१ [1]चरण रयण चिन्तामणि,
भाग्य प्रमाणे पायो, काई भिक्षु स्वाम प्रसादे हो लाल ।
करडोही काम वणै कदा,
तो गण मे थिर पग रोपै, पिण चारित्र नही विराधै हो लाल ॥

२ सासण रग रत्ता सदा,
परम प्रीत गणपति स्यू, अनुकूल पणे प्रवर्त्तो ।
सुवनीता सिर सेहरा,
तसु च्यारतीर्थ गुण गावै, छै जसु चिहु दिश कीर्ति ॥

३ निन्दक टालोकर भणी,
मन कर नै नही वछै, काई जाणे 'भूर भूयगा'[2] ।
जवर आसता गणी तणी,
शक कख नही ल्यावै, रहै सदा इकरगा ॥

४ मत करो गणी असातना,
मति खीजावो कोइ, ए जिनवर नी वाणी ।
काष्ठ वहै ज्यू प्रवाह मे,
पापी नै दुरगति मे, पाप ले जावै ताणी ॥

५ पातक छानो नवि रहै,
आपण चोडे आवै, ढाले ढलतो पाणी ।
सत असातना एहवी,
निश्चय सही कर जाणो, दुरगति नी नीसाणी ॥

६ भगवती[3] अगे भाखियो,
श्रीमुख अतरजामी, कुशिष्यक शतक निहाली ।
असातना दुखदायनी,
सीख सुवनीत सुभागी, असातना दै टाली ॥

---

१. लय—पातक छाने नवि रहे आपण मै ।
२ भयकर सर्प ।
३ भगवई सत १५ ।

ढाल २६

'स्वामी भीखणजी सुखकारी रे, (त्यारो) गण समुदाय उदारी।
शासण वीर तणा ए भारी रे गण समुदाय उदारी ॥ध्रुपद॥

१ महावीर स्वामी रा सासण, भिक्षु-गण समुदाया।
भाग्य प्रमाणे तुज कर आया, सिव दायक सुखदाया।

२ दधि[2] मे जिहाज पायनवि छड, वण करडा कामा।
विविध प्रकारे वचन सहै पिण, न तज प्रवहण ठामो[3]।

३ भव सायर म जिहाज सरीखो, भिक्षु गण ए जाणी।
नरक निगाद दुखा सू डरतो न तज उत्तम प्राणी॥

४ विविध प्रकार ना कष्ट ऊपज, कटुक वचन मुनि तडै।
च्यार तीर्थ र माहि निषेध तो पिण गण न वि छड ॥

५ आहार पाणी रो कष्ट ऊपनो अधिक काम अरु भारो।
कदा आवइ प्रगट उतार ता पिण नहि हुव न्यारो ॥

६ आसवालादिक न्यात भणी न तज जग प्रगट दीसता।
तिम ए वीर तणा सासण नें न तज मुनि मतिवता ॥

७ किण ही पुरुष न अकारज, (करता) दखी न्यात मभारो।
तो पचा न आण सुणाव, पिण आप हुव नहि न्यारो ॥

८ तिम किण ही न दाप सेवतो, दख्यो तीर्थ मभारो।
तो गणपति न आय सुणाव पिण आप हुवै नहि न्यारो ॥

९ राजा ठाकुर न अगरेज, तण आगै न पुकार॥
न्यात बाहिर काढण रा कारज त नही त्यारे सारे॥

१० न्यात बाहिर काढण रा कारज, है पचा रे हाथो॥
अथवा त्यारे तोल[4] आव जिम, सेहिज कर विख्याता॥

११ पचा भणी सुणाय आप निर्दोष हुवै निकलको।
पिणआप न्यातबारक्यू निकलै, निकल्या अपजस डका॥

---

१ लय—सासू सुसरा चन्द नपति न।
२ उदधि समुद्र।
३ जहाज का आश्रय।
४ इज्जत।
५ तुल्य।

१२ तिम किण ही मे दोष देख, गणपति ने तुरत सुणावै।
आप आसता[1] त्यारी राखी, अधिक विमल चित्त भावै।।
१३ प्रतिसेवणा[2] वकुस[3] भेला, रहै केवली आपो।
सूत्र[4] वयण वहुविध अवलोकी, टालै निज सतापो।।
१४ छमासी प्रायश्चित वहिता, वेमास रो दोप लगायो।
तो दोयमास ने वीस दिवस दड, देणो जिन वच न्यायो।।

सोरठो

१५ दोय मास दड सेव, कपट करी आलोविया।
तो वीस दिवस अधिकेव, असी दिवस इम सभवे।।

१६ [5]असी दिवस नो दड वहिता, वेमासरो दोप लगायो।
वीस दिवस आरोपण देणी, इम ए सौ दिन थायो।।
१७ सौ दिन नो प्रायश्चितवहिता, वेमास नो दोप लगायो।
तो वीस दिवस आरोपण देणी, मास च्यार इम थायो।।
१८ च्यारमास प्रायश्चित वहिता, वे मास नो सेव्यो न्हाली।
तो वीस दिवसआरोपणदेणी, ए दिवस एक सौ चाली।।
१९ इकसय चाली दिन तप वहिता, वे मास नो दोस प्रपन्नो।
तो वीस दिवसआरोपणदेणी, ए पचम मास दश दिन्नो।।
२० पचम मास दस दिन तप वहिता, वे मास नो दोष लगायो।
तो वीस दिवस आरोपण देणी, इम षटमासी थायो।।
२१ ए विस्तार नसीत सूत्र रे, कह्यो वीशमुद्देशो।
सुण जिन वचन आसता राखी, मैटे भर्म कलेशो।।
२२ दोष सेवने पूछ्या नटियो, ते अपराधी मोटो।।
ए दोनूइ दोष आलोया, मिटै चारित्र नो तोटो।।
२३ दोष सेवनै नटियो ते पिण आलोया सुध थावै।
विना आलोया कह्यो विराधक, अभियोगपणू[6] पावै।।
२४ सभा मझै बोलै तिण ऊपर, च्यार पाच सुर ऊठै।
हे देवा! मा वोल, वचन तुज, गमै नही इम रूठै।।

---

१ विश्वास।
२ दोषाचरण से मलिन।
३ चारित्र मे अतिचार के घब्बे लगाने वाला।
४ आगम
५ लय—सासू सूसरा चद नृपति ने।
६ निम्न जाति का देवत्व।

२५ दाप सेवियो तिको दाप पिण, नटिया ते पिण दापा।
ए दानूइ दोप आलाइ, गया अनता माग्या॥
२६ एक मास रा दाप लगावी, कपट रहित आलाव।
एक मास ना प्राछित दणो इम आराधक हाव॥
२७ एक माम ना दाप लगावी, कपट सहित आलाया।
तो दोय मास ना प्राछित दणा, ए कपट मूठ समहाया॥
२८ दोय माम ना दाप सेवन, कपट रहित आलाया।
ता दाय माम ना प्राछिन दणा, ए जिन वच अवलाया॥
२९ दोप मास ना दाप मवनें कपट सहित आलाया।
ता तीन माम ना प्राछित दणो, इम आराधक हाया॥
३० तीन मास ना दाप सवनें, कपट रहित आलाया।
तो तीन मास ना प्राछित दणा ए वीर वचन अवनाया॥
३१ तीन माम ना दाप सवनें, कपट सहित अवलाया।
तो च्यारमामनाप्राछिनदणा, आलाया सुध हाया॥
३२ च्यार माम ना दाप सेवनें, कपट रहित आलाया।
तो च्यारमासना प्राछितदणा, मक म राग्या काया॥
३३ च्यार मास ना दाप सवन कपट सहित आलाया।
तोपाचमासनाप्रायश्चितदणा कह्या पाठ म साया॥
३४ पाच मासना दाप सवनें कपट महित आलाया।
ता पच मास तणा दड देणो, श्री जिन वच ए हाया॥
३५ पचमास ना दाप सव नें कपट सहित आलाया।
तो छमास तणो दड दणा, व्यवहार सूत्र र माया॥
३६ तिण उपरत दाप जे सर्वा कपट रहित आलाया।
अथवा कपट सहित आलोया, छमासी दड हाया॥
३७ वहु वार इक मास तणा दापण सर्वा नें ताया।
कपट रहित आलाया तिण नें एक माम दड आया॥
३८ वहु वार इक माम तणा, दापण सवो नें ताया।
कपट सहित आलाया तिण नें दाय माम दड थाया॥
३९ वहु वार दाय माम तणा, दापण सर्वा नें ताया।
कपट रहित आलाया तिण नें, दाय माम दड थाया॥
४० वहु वार दाय माम तणा दापण सवी नें ताया।
कपट सहित आलाया तिण नें, तीन माम दड आया॥

४१ वहु वार त्रिण मास तणो, दोपण सेवी नें तायो।
कपट रहित आलोया तिण ने तीन मास दंड थायो॥
४२ वहु वार त्रिण मास तणो, दोषण सेवी ने तायो।
कपट सहित आलोया तिण ने, च्यार मास दड आयो॥
४३ वहु वार चिहु मास तणो, दोपण सेवी ने तायो।
कपट रहित आलोया तिण ने, च्यार मास दड पायो॥
४४ वहु वार चिहु मास तणो, दोपण सेवी ने तायो।
कपट सहित आलोया तिण ने, पच मास दड आयो॥
४५ वहु वार पच मास तणो, दोपण सेवी ने तायो।
कपट रहित आलोया तिण ने, पच मास दड पायो॥
४६ वहु वार पच मास तणो, दोपण सेवी नें तायो॥
कपट सहित आलोया तिणने, छ मासी दंड आयो॥
४७ तिण उपरत दोप जे सेवी, कपट सहित आलोयो।
अथवा कपट रहित आलोया, छ मासी दड होयो रे॥
४८ प्रथम उद्देशै सूत्र व्यवहारे, आख्यो ए अविरुद्धो।
समचित सेती जिन वच सरध्या, समकित हुवै सुद्धो॥
४९ दोप सेव मन माहि विचारे, आलोविस अतकालो।
अंतकाल आलोया आराधक, सूत्र भगवती[1] न्हालो॥
५० तिमज झूठ जे अतकाल पिण, आलोया सुद्ध थावै।
नही आलोया उण ने मुसकल, बीजा रो स्यू जावै॥
५१ मास छमास दोप वहुवारे, सेव्या प्राछित भाख्या।
मासिक चउमासिक ना कारज, सूत्र नसीने दाख्या॥
५२ इत्यादिक जिन वच अवलोकी, मेटै भर्म सुजाणो।
गणपति तणी आमता राखी, तजै ज मन री ताणो॥
५३ समकित चारित्र विहु विराध्या, इहभव अपजस होवे।
परभव नरक निगोदे वासो, दोनू जनम विगोवे॥
५४ सासण री उतरती न करे, ए भिक्षु मर्यादो।
ते सुख पामै सुजस उजवाले, उभय भवे अहलादो॥
५५ सासण मे रही लहर रूप जे, वदै उतरतो वोलो।
ते तो विवेक तणो विकल छै, कहिये फूटो ढोलो॥
५६ सासण मे रही सासण री, करै उतरती वातो।
अवोवरो कारण जिन भाख्यो, जासी जम रै हाथो॥

१ भगवई २०।८३,८७

५७ सासण मे रहि सासण री, कर उतरती मोद ॥
समकित चारित्र विहु विराध्या, जावै नरक निगोद ॥

५८ सासण री उतरती कीधा, परमाधामी झालै ।
गोलो रातो लाल करी नें, मुहढा माहि घालै ॥

५९ सासण री उतरती कीधा, इणभव उदेज हाव ।
तो विविध प्रकारे रोग उपजै वेदन सू वहू रोवै ॥

६० सासण री उतरती कीधा, वध रोग ने सोगा ।
वले अचित्या घसका तिण र वाल्हा तणा विजागो ॥

६१ इम जाणी सुवनीत मुनीश्वर श्रावक जे सुखदाई ।
सासण री उतरती न करै, दिन दिन सोभ सवाई ॥

६२ करै उतरती सासण री, तसु सग कद नही करणो ।
काल भुजग सरीखो लेखव, अहो निश तिण सू डरणो ॥

६३ उतरती जे करे सासण री मोटो एह अकज्जा ।
भव भवमाहि फिट फिट हावै, प्रत्यक्ष निपट निलज्जा ॥

६४ स्वारथ अण पूगा गणपति सू, कलुप भाव जे राखै ।
वलि कुण-कुण सू कलुप भाव तसु साभलज्या निजशाख ॥

६५ परम प्रीत गणपति सू पूरण, सासण माहि सनूरा ।
तिणसू कलुपभाव तेहना तसु गुण सुण विगडै नूरो ॥

६६ भिक्षु सू पिण कलुप भाव तसु वर तेहनी मयादा ।
ते पिण सरावणी नही आवै, सुणिया नही अह्लादो ॥

६७ तीथकर सू कलुप भाव तसु वीर सासण ए नीका ।
सासण दिढावता मन शक गुण सुण नै हुव फीका ॥

६८ पद युवराज समाप गणपति तिण सू पिण नही राजी ।
तसु गुण पिण मन म न सुहाव पुयहीण महा पाजी ॥

६९ परम प्रीत गणपति सू पूरण, प्रीत वाला री मावत[१] ।
शासन अधिक दढावै चित सू, त सुविनीत विनयवत ॥

७० अप्रीत भाव गणपति सू राखै, तिण री ही मावतो ।
सासण रा गुण मन न सुहाव, ते अवनीत कुपतो ॥

७१ सासण वीर तणो भिक्षुगण, भाग्य प्रमाणे मिलिया ।
विनयवत सुख माने अधिका, रहज फूल्या फलिया ॥

---

१ सगति

७२ सासण वीर तणो तिण मे, अविनीत हरप नही पावै।
रग रत्ता नही छै तिण कारण, हीजरता दिन जावै ।।

७३ अल्पकाल वहुकाल तणी, गणपति मर्यादा वाधै।
विनयवत मन माही हरखै, समभावै चित साधै ।।

७४ तेहिज मर्यादा सुण-सुण, अविनीत घणो सीदावै।
जाणै मुज ऊपर ए वाधी, कलुप भाव मन ल्यावै ।।

७५ विनयवत अविनीत तणा, लक्षण गणपति ओलखावै।
विनयवत सुण-सुण ने हरखै, भली भावना भावै ।।

७६ विनयवत अवनीत तणा, लक्षण सुण नै अविनीतो।
अति दुख पावै मन सीदावै, खोटी तिण री रीतो ।।

७७ वदणा करता पिण सुवनीत तणै, मन हरप सवायो।
ओच्छाह रहित अविनीत करै, अति कलुप भाव मन ल्यायो।

७८ उगणीसै वीसै -चउमासै, चूरू वर उपगारो।
जयजश गणपति जोड करी ए, समभावण नर नारो ।।

ढाल २७

ऊंच[1] (सुगुण) नरां रा उत्तम मारग ॥

१ उपगारी नो उपगार न भूलै, ते गिरवा गुणवंतो रे।
अपराधकरि नें 'नमणखाधां'[2] पछै, मन में न राखै संतो रे ॥

२ नमण करी निज अवगुण जाण्यां, 'खून गुना'[3] वकस देवै।
रोष लहर मन में नहिं राखै अपूठा तसु गुण लेवै ॥

३ सापुरुष[4] धीर सुजाण न गिरवा तन मन वहु सुखदाई।
आगलो अवगुण मूल न पखै पावै पीत सवाई ॥

४ आगमिया काल माहैं नवि चूक छाड दियै दष्टि खोटी।
तठा पछै त्यां सूं खटक न राखै, मोटा री मति मोटी ॥

५ वले कोई चूक देखै त तिण नें, निशकपणें मुध कहीजै।
पिण रूडी रीत राखै मुख प्रीते, त्यां सूं लहर मूल न राखीजै ॥

६ अनेक वार कोइ दोष लगावै डंड लेवै रुडी रीतो।
तिण सूं पिण लहर मूल न राखै जायला सूत्र नशीतो ॥

७ संवत उगणीस आसोजी सातम सापुरुष विरद बताया।
नमण खाधां पछै लेहर न राखै, संत सती सुखदाया ॥

---

१ लय—स्थिर स्थिर चेतन।
२ त्रुटि स्वीकृत करने पर।
३ खून करने का अपराध।
४ सज्जन।

ढाल २८

'प्रभु के वच प्यारे ॥ध्रुपद॥

१ ओ तो श्रेणिक नामे राजा, तिण रा जग माहै सुयश दिवाजा ॥
२ तिको पहिली नरक माहै पडियो, ओ तो दुख जजीरे जडियो ॥
३ गोगालो इक-इक नरक मझारो, ओ तो जासी दोय-दोय वारो ॥
४ कुडरीक चारित्र भागो, नरक सातमी मे तसु सागो ॥
५ जिहा उष्ण योनि पहिछाणी, तिहा शीत वेदन अति जाणी ॥
६ जिहा शीत योनि मे जास, तिहा उष्ण वेदन छै तास ॥
७ जिम निंव मे ऊपनो कीडो, सुख माने तिहा सागीडो ॥
८ तिण नै मेलै मधुर रस मायो, तो ओ दुख लहै अधिकायो ॥
९ तिम जेह नारकी नै जोई, अति उष्ण वेदन छै सोई ॥
१० तिण रे उत्पत्ति स्थान छै शीत, तिण सू उष्ण वेदन महाभीत ॥
११ जेह नारकी नै जाणी, शीत वेदन छै दुख खाणी ॥
१२ ते तो ऊपनो, उष्ण स्थानक मे, दुख शीत तणो रकझक मे ॥
१३ ऊदर ऊपना जे अग्नि मायो, ते रति लहै अग्नि मे तायो ॥
१४ तिके शीत स्थानक जो आवै, तो वेदन दुख अति पावै ॥
१५ इण दृष्टान्ते जोई, नारकी शीत उष्ण योनि सोई ॥
१६ उष्ण योनि रे वेदन शीत, शीत योनि रे उष्ण कहीत ॥
१७ एहवी वेदन नरक मझारो, जीव सही अनती वारो ॥
१८ हिवै भिक्षु स्वाम पसायो, ओ तो चरण रत्न कर आयो ॥
१९ तिण नै यत्न करी राखीजै, गण शरणो नही छाडीजै ॥
२० मरणात कष्ट जो आवै, तो पिण गण मे आराधक थावै ॥
२१ गण शरणो नही छोडै, तिके प्रीत मुनि सू जोड़ै ॥
२२ दुख नरक निगोद ना न्हाली, मत कीजो आतम काली ॥
२३ गणपति री आज्ञा वारो, उत्कृष्टो रुलै अनत ससारो ॥
२४ तिको इक-इक नरक मझारो, जाये अनत-अनती वारो ॥
२५ दुख नरक थकी अधिकायो, अनत गुणो निगोद रे मायो ॥

१ लय—ज्यांरं सोहै केसरिया साडी ।

२६ उत्कृष्टपण ए आख्या, दु ख निदक टालोकर ना दाख्या ॥
२७ वले इहभव फिट-फिट होवै, ते तो मानव ना भव खोवै ॥
२८ इम जाणी उत्तम नर नारी, राखो गणपति स्यू अति प्यारा ॥
२९ त्यारी आना माहि शुद्ध चालै, तिके स्वग माहि सुख म्हालै ॥
३० पछै शिवपुर वेग सिधावै, अनत आत्मीक सुख पावै ॥
३१ त्या सुखा रा नाव कदा पारो एहवा शाश्वत सुख श्रीकारो ॥
३२ उगणीश तीस वासा, विद चत नवमी सुखगामो ॥
३३ भिक्षु भारीमाल ऋषिराया, सुख जयजश तास पसाया ॥

ढाल २६

[1]सुणज्यो शीख सतगुरु तणी रे ।।ध्रुपद।।

१ मोटा कुल रा मानवी रे, ऊडो करै विचार।
सुरगिरि धर्म हिये धरी रे, नाणै आर्त्त लिगार ।।

२ अदेखाई न करै और नी, ते पिण निज थी बहू हीन।
सूर खद्योत नो अरि किम हुवै, वो वेचारो दीन ।।

३ किहा सर्सप किहां सुरगिरी, किहा हीरो पुखराज।
किहा चदन एरडियो, रोप करै किण काज ।।

४ किहा आम किहा आवली[2], अतर अधिक अपार।
आम अदेखाई किम करै, आवली सू अवधार ।।

५ इन्द्र-वाहन[3] न करै इसको, देखी मनुष्य लोक ना गजराज।
ऊच करै ए आलोचना, रोप करताइ आवै लाज ।।

६ धीरपणो चित्त मे धरै, सुखदाई सुवनीत।
हितवछक सतगुरु तणो, पूरण पालै प्रीत ।।

७ तन मन सुख हुवै गुरु भणी, तेहिज करै उपाय।
लहर वैर सर्व परहरै, साताकारी सवाय ।।

८ आपन तपै न तपावै औरनै, आछा माणस ताम।
गुणवत गहर समुद्र सा, एहवो न करै काम ।।

९ वारू विनय विवेक मे, भीज रह्या निश दिन्न।
त्यारे दिन दिन तीखी आशता, ते सदा रहै सुप्रसन्न ।।

---

१ लय—कामणगारो छै रे।
२ इमली
३ ऐरावत हाथी।

ढाल ३०

'धन धन घन धन गुणवता भणी रे ।।ध्रुपद।।

१ बालपणा म केइ सजम लियै रे, केयक जावन वय रे माय रे।
परभवनी खरची करता महामुनि रे, समपरिणाम म रहै सवाय रे।।
२ बालक वय म केइ घर म छता, धार छ सील वग्त सिरदार।
केयक जावन वय मे व्रत आदर, त्यासाहमी राख दिष्ट उदार।।
३ आरत ध्यान थकी दुरगति मिल, नरक निगादे दुख भरपूर।
काम भोग पिण दुख दाता कह्या, इम जाणी नै आत्त करद दूर।।
४ मघमुनिआठरमण तज व्रतधरयो, छाडी वल सालभद्र वत्तीस।
कृष्णादिकनी राण्या व्रतधर शिव गई त्या साहमी राख दष्ट जगीस।।
५ पुत्रादिक पुन बाधी आया इहा भागवसी ते पाता रा पुन।
त्या री पण चिता मूल कर नही, कम काटण री राख धुन।।
६ लाभ-अनाभ सुख-दु ख म सम रहै त्या न वखाण्या जिनन्द्र देव।
सामायक पासादिक सुभ ध्यान म, सफ्न दिन रात्र कर नित्यमव।।
७ अल्प दिवस माहै करणी थकी, वमानिक दव हुव श्रीकार।
पछ अल्प भव कर शिवपद मचर, करणी रा ए फल लहै उदार।।
८ काम न भोग थकी इण जीवड वलेपुत्रादिक धन री ममतकरह।
नरक निगाद तणा दु ख भोगव्या, इम जाणी न कर किणसू नह।।
९ ममत् उगणीम अष्टादम सम जेठ विद अष्टम मिति उदार।
ए दीधी सिम्या हलुकर्मी भणी, जयजश गणपति महा सुखकार।।
१० प्रतीत पक्की सतगुर तणी जा करडाइ आय पड काम।
तो पिण आसता नवि उतर ते सुवनीत अमाम।।
११ इसा विरला पुरुष ससार म पूरण सतगुरु सू प्रीत।
ज्या र आसता मूल न उत्तरै, त गया जमारो जीत।।
१२ सतगुरु तो पारस सारिखा कर दीय आप सरीस।
आसता पूरण सिष तणी ता सिपनधारणीयाहिज सीस।।

---

१ लय—पालड वयसी आरे पांचमें रे।

१३ जो भाग्य प्रवल हुवै गुरु तणो, तो शिष्य रे ह्वै गुरु नी प्रतीत।
पूर्ण वरतै अग चेष्टा, सर्व कार्य मे सुरीत ।।

१४ सुवनीता सू प्रीतडी, ते पण मुरजी प्रमाण।
रखिया रोहणी सारिखा, सुगुर रीझावै जाण ।।

१५ तन मन सू कार्य माहिला, करै थिर परिणाम ।।
कपै नही मेरु परै, ले सुवनीत सुजाण।

१६ परिपदा समिया सारखा, सर्व कार्य अगवाण।
मेघकुवार तणी परै, सव तन सूपै आण ।।

१७ सर्व कार्य मे गुरु तणै, हुवै वनीत नो आधार।
भितर मिलणै मिल रह्या, जिम जल पय मझार ।।

१८ ए शिख्या सतगुरु तणी, धारे चित सू सार।
नित प्रति सेवा नव नवी, राखै सतगुरु सू इकतार।।

१९ ए शिख्या सुगणा भणी, म्है दीधी हितकार।
गुण वर्धन के कारणै, चौराणुअै समत अठार।।

ढाल ३१

'जिनश्वर धन्य थारो अवतार ॥ध्रुपद॥

१ देव मनुष्य तिर्यंच ना रे भीम भयकर भीर।
महा परीसह आकरा रे भगवत श्री महावीर ॥

२ तीव्र रोग वेदन सही, घणे काल इकधार।
कम काट मुक्ते गया, चक्री सनतकुमार ॥

३ अग्नि वेदन अति आकरी महा पडिमा महाकाल।
विमलध्यान शिवगति वरी मुनिवर गजसुकमाल ॥

४ छठ-छठ तप नै पारणै, आविल उज्झत[2] आर[3]।
सव्वट्ठसिद्ध नव मास म धय धना अणगार ॥

५ खधक मेघ मुनीश्वरू, तीसक कुरुदत्त सार।
विकट तप सुर सुख लह्या, चव लेसी भव पार ॥

६ वासी[5] चदण सम गिणै समचित सुख दुख माय।
मास सथार शिव लही, मृगापुत्र मुनिराय ॥

७ गणपति नै चित चालता, तज परिचय त्रिय प्रीत।
सुखे चरण तसु निरवहै, तिण री घणी प्रतीत।

८ पचम आर परगटया भिक्षू गुण भडार।
सावद निरवद सौधि नै, माग लिया ततसार ॥

६ अमीचद ऋषि ओपतो पचम आर मझार।
धम उद्योत कियो मुनि जयजश हुप अपार ॥

---

१ लय—लिम्यावल जोम भगवत रो ज्ञान।
२ नीरस।
३ आहार।
४ सर्वाय सिद्ध
५ वमूता।

ढाल ३३

'सुमत सदा हिरद धरो र लाल ।।ध्रुपद।।

१ कुमति दिशा अति छाड नै रे, सुमति दिशा दिल धार र साभागी ।
आचाय उवज्झाय प र लाल, घर छाड थयो अणगार रे साभागी ।।

२ वमन पित्त रुधिरे भरयो तन उदारीक असार ।
सडण पडण विघसण सभाव छ वण हुत कर आहार ।।

३ रूप रस गध फश कारण कर असणादिक नो भोग ।
एह भव तीय च्यार म, हलवा निदवा जाग ।।

४ सरस आहार स्वाद करण, खाए सराय-सराय ।
चारित्र ना हुवै कोयला वल और अनथ हुवै आय ।।

५ तन फूटराइ[2] कारणे, गारादिक वण काज ।
मूर्च्छा थका आहार भोगव, त्यारी परभव किम रहसी लाज ।।

६ हुवै जीम्या रा लालपी, ए भव फिट फिट हाय ।
परभव दुख पाम घणा, विविध प्रकार ना जाय ।।

७ इम जाणी लोलणा तज, टाले आतम दोष ।
राग द्वेष तजता थका, पाम चारित्र पोष ।।

---

१ लय—सीता अगन म धमतां रे । २ सुन्दरता ।

उपदेश री चौपी

ढाल १

[1]खिम्यावत जाय भगवत रा जी नान ॥ध्रुपद॥

१ देवै सतगुरु देशना रे, ए ससार असार।
रोगसोग दु ख अति घणा र दखा आख उघाड।
खिम्यावत जोय भगवत रा जी ज्ञान ॥

२ आज काल धम आदरू पक्ष मास चउमास।
इम आशा वाध आगली फस्या विपय मोह पास ॥

३ अन्जलि ना जल नी परे, आउ घटता जाय।
विघ्न घणा मोहरत मझ तू साच देख मन माय ॥

४ सज्जन त्रिय सुत कामणी, रिण विरहो न खमाय।
इक दिन पाप उदय हुवा सा काल गया गटकाय ॥

५ तीन अरि लार लग्या राग जरा मरण जाण।
इण न्हासण रे अवसरे क्यू सूतो मूट अयाण ॥

६ वलद जेम चद सूर छ दिवस रात्रि घडमाल।
जल आयु ओछो कर ए काल रट विकराल ॥

७ काल सप्प खाधा थका नहि चतुराई जाण।
नही कला नहि औपधी तिण सू घर राख प्राण ॥

८ पथ्वी रूपी कमल छ, मरु केशर दिशि पान।
रस आउखा रूपीयो काल भ्रमर ले ताण ॥

९ छाया मिप छल ताकता काल महा विकराल।
पास न मूक सवथा, पहिला आपो सभाल ॥

१० जीव रुल्यो ससार म, विविधपण गति स्थान।
आदि अत दीस नही नरक निगाद पिछान ॥

११ वधव सुत जन मित्रवी मरण न राख काय।
दाग दई पाछा वल, निज स्वाथ रह्या राय ॥

---

१ लय—खिम्यावत जोय भगवत रो जी ज्ञान।

ढाल २

'जेठाणीजी सू न्यारा रहिस्या राज॥
म्हानै म्हारा सत सत्या री छ सीख,
जेठाणी स्यू न्यारा होस्या राज ।ध्रुपद॥

१ असुध निज गुण वड वधव घर, त्रिया कुमति अनाद जेठाणी।
सुध निज गुण लघु वधव घर सुमति त्रिया देराणी॥
२ चरखो ध्यान शुक्लवर घ्यास्या काता सूत हजारी।
चेतन पिउ र पाग चरण तप शील सुरगी मुझ साडी॥
३ तन नै अल्प आधार दई न, भारी माल कमास्या।
आया गया नै सीख समापी, सीतल वाणी सुणास्या॥
४ कुगुरु कुदव पूजै जेठाणी म्हारै सुगुरु सुदेवा।
म्हानै अविचल शिवपुर मिलसी, जेठाणी नै नरक मिलेवा॥
५ जुदा हुवा रो नागल[२] करस्या, सत सती गुणखाणी।
फासुक सुध आहार वहिराई इम घर माड्या देराणी॥
६ उगणीस पनर महाविद तिथ चोथ सुमति दराणी।
जयजश गणपति कहै सुणो सता अविचल घर चित ठाणी॥

---

१ लय—जेठानी न्यारा होस्या नागल
२ गह प्रवेश पर किया जाने वाला अनुष्ठान

ढाल ३

१ [1]केइक गावै केइक रोवै, कोयक ख्याल करिंदा।
केइक नाचै केइक राचै, केइक रति विलमदा।
केइक शब्दादिक मे खूता पुद्गल सुख नी प्यासा।
जय गणपति कहै मोह कर्म ना जग मे जबर तमासा॥

२ केइक हिंसक जीव हणै बहु दया नहीं दिल माही।
केइक कूड केलवै केइक पर धन हरै सदाई।
केइक मिथुन काल मे कलिया केइक परिग्रह पासा।
जय गणपति कहै मोह कर्म ना जग मे जबर तमासा॥

३ केइक क्रोध वसै अति ज्वलता, केइक मान मच्छरिंदा।
केइक माया कपट केलवै, केइक जन लोभिंदा।
केइक राग स्नेह परवस करि, केइक द्वेष धमामा।
जय गणपति कहै मोह कर्म ना जग मे जबर तमासा॥

४ केइक कलह करै फुन, केइक पर शिर आलज देवै।
केइक चुगलीखोर केइक वलि पर परिवादज सेवै।
केइक रति अरति मे मुरझ्या, हरख सोग मे वासा।
जय मणपति कहै मोह कर्म ना जग मे जबर तमासा॥

५ माया सहित मृषा कै बोलै केइक जन मिथ्याती।
दस बोल ऊधा कर श्रद्धै, कुगरा ना पखपाती।
आज्ञा वारै धर्म परुपै, वलि राखै सुख आशा॥
जय गणपति कहै मोह कर्म ना जग मे जबर तमासा॥

६ केइक षट्खड त्रिणखडाधिप, केइक राजा राणा।
केइक सेठ सेन्यापति मानव जग मे वाजै स्याणा।
काम भोग किंपाक तणा फल, सहै नरक दुख त्रासा।
जय गणपति कहै मोह कर्म ना जग मे जबर तमासा॥

---

१ लय—छद धमाल तथा चौरासी मे भमता रे

छद कुडलिया

७ सेवो थानक सुध क्या म करा रस कामण[२]।
त्रिय सग आसण तजो[१] भरी दग् निरख म भामण ।
वस मति अ तरवास जिहा त्रिय श द सुणीजै[३]।
कृत ्रीडा म सभार[१] सरस रस चित्त न दीजै ।
प्रमाण लोप अधिका अदन[६], उद्‌भट वप म आदरा[१]।
तज शब्द रूप रस गध फश धीरज स्यू ए व्रत धरो ॥

ढाल ४

[1]चेतानद धर्म धरो सुखदाई, धर्म धरया शिव सांई ॥ध्रुपद॥

१ ससार रूपी भव नगर विषै, च्यारू गति रूपी बाजार।
तिण मे विविधपणै दु ख भोगविया, जीव एकलडो निराधार॥

२ गर्भ तणा दु:ख सह्या घणा, मल मूत्र तणो भडार।
राध लोही कर्द्दम अशुच रह्यो, तिण ठाम मझार॥

३ चौरासी लाख योनि मे भटक्यो, पूर्यो ओ ससार।
एकीकी योनि माहि, जीव रुलियो अनती वार॥

४ माता पिता सुत सगपण किया, एकाकी नै ए वार अनंत।
ते स्वजन मित्र दु ख मेटण नाहि, ए काम पड्या विरतत॥

५ श्वास खास जरा दाह ज्वर कुक्षि शूल भगदर व्याध।
पोता रा कीया सर्व पोतै सहे, कोई टालै नही असमाध॥

६ तू जाणै छै माता-पिता सुत कामण, मित्र म्हारै सुखदाय।
पिण अतर ज्ञान माहे सहु बधण, दुर्गति ना छै सहाय॥

७ जे जीव माता हूती तेहिज, भवतर मर नै थई नार।
जे स्त्री मरी नै माता हुई, पामी अवस्था गिवार॥

८ कर्म वशे सर्व योन राच्यो, नट जिम नाच्यो ससार।
जन्म मरण ओ फिर-फिर करतो, रुलियो गति च्यार मझार॥

---

१ लय—महाबल रायथयो वैरागी

ढाल ५

१ पुण्यवान पुरुष न, घर हुव वहुलो धन्न।
ता पात्रे वावरे, कुपात्र न जाणे पुन्न ॥
२ जो तेल घणो तो, वलू माहि न ढोल।
वहु वीज हुवै ता, उपर म न भकाल ॥
३ घणा स्वण हुव तो, साकल केम करावै।
वहु दूध हुवै तो, सर्प भणी किम पावै ॥
४ घणा गजेन्द्र हुव तो, भार अथ स्यू वाव।
तिम धन वहु हुव ता, किम कुपात्र पोखाव ॥
५ मगालाढा न देखी, गोयम पूछ्यो नान।
इण पूव भव मे, स्यू दीया कुपात्र दान ॥
६ वलि कुमार सुवाहु देखी पूछ्या ताम।
कुण दान सुपात्र दीधो तसु फल पाम ॥
७ ए प्रश्न दोई सूत्र विपाक मझार।
समदृष्टि जाणै उत्तम न्याय उदार ॥
८ दान असजति न, सचित्त अचित्त दिया पाप।
पचम अग पेखो, अष्टम शतक आलाप ॥
९ उगणीश तेरे, फाल्गुन सुदि ग्यारस भगुवार।
फल दान दिखाया, जयजश गणपति सार ॥

१ लय—नमू अनत चौवीसी

ढाल ६

[1]सेवा जिन मुनि नी कीजै, सेवा थी वंछित सीजै जी।
सेवा जिन मुनि नी कीजै, लाहो नरभव नो लीजै जी ॥ध्रुपद॥

१ कह्यो सूत्र उवाई मांह्यो, जिन सेवा महा सुखदायो ॥
२ इहभव परभव मे जाणो, अति सुख ने खेम कल्याणो ॥
३ दूजै शतक भगवती मांह्यो, वर पंचमुद्देशे वायो ॥
४ इहभव परभव मे जाणी, मुनि सेवा महासुखदाणी ॥
५ मुनि सेव किया थी पावै, दश बोला नी प्राप्ति थावै ॥
६ मुनि सेव्या सुणवो पावै, पछै ज्ञान विज्ञानज थावै ॥
७ पचखाण संयम सुखदायो, फल तास अनाश्रव थायो ॥
८ तप ने वलि कर्म्म वोदाणो, अक्रिया सिद्धि निर्वाणो ॥
९ तिहा आतिमक सुख विलसावै, तिहा सदा काल सुख पावै ॥
१० सेवा थी मिटै कुलच्छन, जड नर पिण होय विचक्षण ॥
११ शुभ लच्छन सेवा थी पावै, इहभव पिण आनंद थावै।
१२ परभव सुर शिव सुख जाचै, सेवा थी गहघट माचै ॥
१३ गोतम जिन संगत कीधी, गणधर थया परम प्रसिद्धि ॥
१४ उववाई दशमे अंगे, आख्या वर पाठ उमंगे ॥
१५ मन [2]सराप-अनुग्रह-समर्थ, इम वचन काय पिण अर्थ ॥
१६ मुनि सेव्या सुप्रसन्नज थायो, तसु जय-जयकार जणायो ॥
१७ अशातना अबोधन पावै, इहभव पिण भूडो थावै ॥
१८ महामुनि जे अतिशय धारी, तेहना ए गुण भारी ॥
१९ इम जाण मुनि पद सेवो, वर शीख हिया मे वेवो ॥
२० उगणीसै सतरै उदारू, विद फाल्गुन अष्टम वारू ॥
२१ जय-नगरी जोड जणाणी, जय जश सुख संपति जाणी ॥

---

१ लय—नई बुरज पर बंगलो   २ श्राप।

ढाल ७

रमनीय[1] काहि कू गुमान भरी हे रमनीय काहि कू गुमान भरी हे ।
'कमनीय ! काहि कू गुमान भरी हे ।।ध्रुपद।।

१ रग रगीली देही छेल छवीली, मलमूत्र अशुचि भरी हे ।।
२ रुद्र शुक्र सू तेरी काया ऊपनी नव माम गभ धरी ।।
३ चित का चटका मन का मटका करती पिण इक दिन काल हरी।।
४ जोवन मद मतवाली चिरताली, थाय वृद्ध थया जोजरी ।।
५ तरुणपणे रोगादिक ऊपना आ प्रत्यक्ष क्षीण पडी ।।
६ रग रगीली तू ता काया राख पिण परभव सू न डरी ।।
७ सध्या भान तेरी तनु शोभा, क्षिण माहै जाय सरी ।।
८ तन बहु वेदन हुवा थी थार दुरगधता पुज जरी ।।
९ श्री देवी सुदर रमणी चक्री नी उत्कृष्ट छठी म पडी ।।
१० तू ता जाण मो सम कुण सुदर हू पुण्यवान सुरी ।।
११ पिण इक दिन पाप उद हुवा परभव, परवश जमा पान पडी ।।
१२ वैतरणी प्रमुख बहु वेदन, तू महसी आक्रद करी ।।
१३ इम सुण तू घर सतगुर सेवा, भावन भाव खरी ।।
१४ सम्यक्त न दशव्रत चारित्र, धारया तू पामसै अमरपुरी ।।
१५ निदक टालाकर तू मत वाछ ए शीख हिया म धरी ।।
१६ ए धाडवी समकित ना लूटारा ज्यारी सगति दूर करी ।।
१७ वार वार स्यू कहिय तुझ न तू ता स्थिरपदगण म धरी ।।
१८ गणपति नी पक्की आस्था राख्या थारा वाछित काय सरी ।।
१९ उगणीश गुणतीस चत्र सुदि, जय जश शिक्षा उच्चरी ।।

---

१ नय—काहि कू गुमान कर

ढाल ८

जिन[1] वचने प्रतिवूझो रे प्राणी ।।ध्रुपदं।।

१ काल अनंत प्राणी नर भव लाधो, आर्य कुल अवतारो रे लोय ।
दीर्घ-आयु-वल पूरण इंद्रिय, रोग रहित तन सारो रे लोय ।।
२ सत समागम आगम वाणी, श्रवण दुलभ मरधानो ।
पा सामग्री परम सयाणी, धर्मोद्यम चित ठाणो ।।
३ लख चौरासी मे रुलियो रे प्राणी, लही जन्म मरण दुख खानो ।
अनुभ्या[2] दीन अनाथ ज्यूं परवस, भूल्यो सुख मे अयाणो ।।
४ काम भोग किंपाक समाना, तज पुद्गल सुख प्यारो ।
तन धन जोवन मान इथर[3], वीजल चिमत्कारो ।।
५ अगजा अंगज प्राण पियारा, राज ऋद्धि ठकुराई ।
संसार मे जे जे पुद्गल लीला, ते वार अनंती पाई ।।
६ रजनी[4]-सुवणा ज्यूं सर्व विलावै, धर सुख समता आणी ।
सतगुरु वचन समाधि लह्या थी, तृष्णा तृपत वुझाणी ।।
७ नौका समानो सिवपुर मारग, ज्ञानादिक चित्त धारो ।
भीम भयंकर भवदधि तारक, सतगुर पथ नेतारो ।।
८ चिंतामण तज काच म राचो, कल्प तजी मत आको ।
जिन धर्म छोड विषै मत ध्यावो, परभव कटुक किंपाको ।।
९ गीत विलाप नाटक विटवना, भूपण भार समानो ।
नरक निगोद ना पथ देखाला, भोग मनोहर जानो ।।
१० मत गाफल हूसीयार थई नै, संजम तप धन सारो ।
जतन करो विपय इंद्री चोर थी, ज्यूं परभव होय आधारो ।।

---

१ लय—देखो रे भोला चेतं नांही · ·
२ अनुभव किये ।
३ अस्थिर ।
४ रात्रिकालीन स्वप्न ।

ढाल ९

[1]जीवा सुगरु आण सिर धारिय रे ॥ध्रुपद॥

१ जीवा! काल अनत दोहिनो रे जीवा! लाधो नरभवसार रे।
जीवा! धर्म सामग्री पाय नै रे हिव एल जन्म मत हार रे॥

२ जीवा! सुरपति सुरपनि ऋद्धि लही, भोगव्या सुख विलास।
जीवा! तृप्त कदे हुवो नही, चाल्या परभव होय निरास॥

३ जीवा! तन धन जोवन कारमा, जीवा! जाता न लागे वार।
जीवा! काम भोग विष सारखा यारी अतरग चाहि निवार॥

४ जीवा! जन्म मरण जरा पूरिया, दुख भोगव्या विविध प्रकार।
ए डाव आयो तिरवा तणा तू वहिला होय हुसीयार॥

५ जीवा! सजम तप दाय मन्नवी जीवा! ले तूवा लावा लार।
प्रेम प्रतीत आराधिया ए तो मुक्त पाहुचावण हार॥

---

१ लय—नदीय किनारे रुखड़ो

ढाल १०

सुगण जन साभलो रे ।।ध्रुपद।।

१ आचारज गुण आगला रे, धर्मघोष अणगार।
वाण अपूरव वागरै रे, साभलता सुखकार ।।

२ पृथी अप तेउ वाय मे, रुलियो असख्याता काल।
असख्याता कालचक्र लगै, पायो दुख असराल ।।

३ प्रदेश अगुल खेत्र मे, कह्या असख्यात जगनाथ।
समै समै एकीको काढता, थायै कालचक्र असख्यात ।।

४ असख्याता लोकाकाश ना, प्रदेश जेता होय।
एता कालचक्र दुख सह्या, च्यार थावर मे जोय ।।

५ वनस्पति मे जीवडो, रह्यो अनता काल।
कालचक्र अनता लगै, जनम मरण दुख झाल ।।

६ अनता लोक आकास ना, प्रदेश जेता होय।
एता कालचक्र दुख सह्या, वनस्पती में जोय ।।

७ पैसठ हजार नै पाचसी, छत्तीस ऊपर न्हाल।
एक मुहूर्त मे भव किया, निगोद दुख विकराल ।।

८ काल अनत निगोद मे, जनम मरण महाभीच।
नरक थी दुख अनत गुणो, निगोद केरो नीच ।।

९ नरक सातमी रो आउखो, तेतीस सागर प्रमाण।
मार अनंती भोगवै, सुख रो सचार म जाण ।।

१० तेतीस सागर ना समा हुवै, सातमी मे गयो इती वार।
तिणसू अनतगुणो दुखनिगोदमे, काल अनत मझार ।।

११ तसकाय मे जीवडो, रह्यो उत्कृष्ट पिछाण।
दोय हजार सागर लगै, कायक जाझो जाण ।।

१२ बेंद्री तेइद्री चौरिंद्री, रह्यो वरससख्याता हजार।
विविधपणै दुख भोगव्या, अब तो आख उघाड़ ।।

लय--सीता कुंवरी वाघती रे · ···

१३ सातू नरक में ऊपना इक इक नरकावासा माय।
अनंत-अनंत वार दु ख सह्या, सुणियाइ थडहड थाय॥
१४ जन्म मरण री वेदना, वलि शस्त्रां नी मार।
इम बहु दु ख सहता थका, तिण रा कहता नावे पार॥
१५ इम सांभल उत्तम नरा, सम्यक्त धार सधीर।
संजम तप करणी करघा, मिटे जन्म मरण री पीर॥
१६ मुक्ति मारग च्यार छे, दान सीयल तप भाव।
मत भवा भवा भान ना, निश्चय तरण ना डाव॥

ढाल ११

धर्म करो सदा धर्में आपद नायो रे, सुख लहै तदा ॥ ध्रुपद ॥

१ अनतकाल भमता थका रे, पायो नर अवतार ।
गर्भ तणा दुःख भोगवी रे, पाई सखरसामग्री सार रे॥

२ उत्तम कुल दीर्घ आउखो, वलि तन लह्यो निरोग ।
धर्म सामग्री पाय नै, मूर्ख मुरझै काम भोगो ॥

३ शब्द रूप रस गध मे, फर्श मनोहर पेख ।
राग भाव रातो रहै, अणगमता पर वेख ॥

४ राखमणी रमणी कही, वैतरणी विष वेल ।
नरक नीसरणी जिन कही, मत कर रामत खेल ॥

५ ऊपर दीसै ओपती, अतर अधिक असार ।
खेल खखार रुधिरे भरी, मूर्ख मत कर प्यार ॥

६ आउ सागर इकतीस नो, सुख विलस्या ग्रीवेग ।
तो पिण तृपत हुओ नही, अव तो आण सवेग ॥

७ काय फर्श रूप शब्द ना, मन परियार विचार ।
अवछर सुखवहु विलसिया, पिणतृप्त न हूओ लिगार ॥

८ काम किपाक समा गिणो, समगति सूधी धार ।
धर्म श्रीजिन आज्ञा मझै, अधर्म आज्ञा वार ॥

९ भव तरु मूल सींची रह्या, क्रोधादिक चिहु जाण ।
भेद सोल जिन भाखिया, अनर्थ करण पिछाण ॥

१० अनतानुवधी जावजीव रहै, वर्स इक अप्रत्याख्यान ।
प्रत्याख्यानी च्यार मास रहै, पख सजलन पिछान ॥

११ समगत नै देश-विरत नै, सर्व-विरत अहक्खाय ।
च्यारुइ आवा दे नही, अनुक्रम च्यार कषाय ॥

१२ क्रोध विणासै पीत नै, मान विनय नो नास ।
माया खोवै मित्रता, लोभै सकल विणास ॥

१३ ए च्यारु चडाल चोकडी, टालै ते मतिवत ।
आतम वस करै आपणी, ते गिरवो गुणवत ॥

१४ कर सेवा सतगुरु तणी, देइ सुपात्र दान ।
कर्म कटक दल पेलवा, रहै उपसम रस गलतान ॥

---

१ लय—कुमर तदा अनुमत थयो रे ...

ढाल १२

१ अभ्र[1] पडल पचरग, अधिक आडवर हो अ वर साभ रह्यो ।
वले इन्द्र धनुप गाज वीज, तन धन जावन हो एम अथिर कह्यो ॥
२ जिम रमणी रग पतग, मात पितादिक हा लिछमी अथिरछै ।
विप फल विपय विपाक, मधुर भोगवता हो पिछताआ पछै ॥
३ जे दीसै परभात, मध्याह्ने न दीस हा सुख सपत रता ।
मध्याह्ने ते नहीं रात, रजनी-सुवणा हो ज्यू सव असासता ॥
४ आम कुभ फल जेम, क्षिण भग काया हो मुग्ध जाणै नसी ।
दिन दिन मरण नजीक मात पितादिक हा स्वार्थिया सही ॥
५ जरा न घेरचा आय व्याधनव्यापी हा इद्री हीणी ना पडी ।
त्या लग धम सभाल, तारा हा आत्म आपरी ॥
६ रित अरित दुख पात, जन्म जरा नो हा वलि मरवा तणो ।
घोर रुद्र ससार, नरक निगादे हो दुख सह्यो घणो ॥
७ काम क्रोध मद लाभ, तन माहै तिष्टे हा किंकर चारटा ।
नान दर्शन चारित्र, रत्न अमालक हो लूटण परगटा ॥
८ मात पिता सुत नार, क्षिण माहै विहड हा स्वार्थिया सहु ।
इद्र नरद्र सुरेंद्र, काल आया थी हा सरणागत नही ॥
९ दुख दावानल माहि, जीव प्रजलाता हा दीसै वहु पर ।
आत्म तारण ताहि, सजम लीधा रा सिव पद सचर ॥

---

१ सय – पाढव चोल बाल

ढाल १३

दोहा

१ देवै श्रीजिन देशना, भाखै भिन-भिन भेद।
चित्त लगाई साभलो, आणी अधिक उमेद॥

२ [1]साभल श्रीजिन मीठडी, वारु वाण विसाल। सयाणा।
अस्ति भाव सू आविया, नव तत्त्व आदि निहाल। सयाणा।
साभल श्री।॥ध्रुपद॥

३ पाठ अठारै परहरो, धर चित्त सवर धीर।
तप करि कर्मज तोडिया, सिवपुर मे हुवै सीर॥

४ सजम तप सुध साचव्या, सुभ फल सुरपद सार।
दुर्गति हिंसादिक किया, दुर्गति दुख दातार॥

५ पुन्य पाप करि प्राणियो, सचरियै ससार।
सवर निर्जरा सोभता, मेलै मुक्ति मझार॥

६ जिन-मार्ग जयकारियो, निर्मल नै निर्दोख।
धीरपणै जन धार नै, महिमागर वर मोख॥

७ सुध जिन मार्ग सेव नै, सुर केइ होय दीपत।
ऋधि मोटी रलियामणा, महासुख महाजोत झात॥

८ चारु थित चिहूकाल नी, हिवडै सोभै हार।
मुकट कुडल मुख ऊजलो, पेखत पामै प्यार॥

९ बाजुबध नै बेरखा, कडि कणदोरो झात।
छव गहिणा हियै छाविया, रतन तिलक झलकत॥

१० महिमागर वर मुद्रिका, निर्मल गात्र निहाल।
गल्लस्थल नै रेखा पडै, वरै वस्त्र सुविसाल॥

११ सुख एहवा पामै सही, एक लहै अवतार।
शिवपेर वेग सिधावसी, सजम तप फल सार॥

१२ महाआरभी महापरिग्रही, पचैंद्री वध प्रताप।
मास भखै मदिरा पीयै, सहै नरक मे सताप॥

---

१ लय : स्वाम स्वरूप सुहामणा

१३ माया वचने मानवी, कपट वधावै माया गूढ ।
अलीकवचन मुखआखिय, महा मिथ्याती मूढ ॥
१४ कपट करी मूख ठगै, पिंडत ठगवा पास ।
सरलपणै मृदु भाखवै तिर्यंच हुवु तास ॥
१५ पडित ठगवा पारख मान करै खिण मात ।
वारू वचन विप्र तारियै घार तियच म घात ॥
१६ प्रकृति भद्रीक विनीत छ, सानुकास दयावन्त ।
मच्छर भाव निहालव मनुष्य हुव मतिमत ॥
१७ राग सहित सजम रच देश व्रत तप वाल ।
भाव विना निजरा थकी सुर गति पाय सुमाल ॥
१८ पाप क्रूर नरक पामियै, नरकावास निहाल ।
सीत उष्णादिक नी सहै वेदन महा विकराल ॥
१९ भूख त्रिखा वहु भोगव तप्त अनती त्राम ।
वैतरणी ना दुख वडा परमाधामी पाम ॥
२० सागर पल दुख त्या सहै कदप रक्त करूर ।
हास कतूहल हाम थी पामै दुख भरपूर ॥
२१ आख मीच साल इत सुख नवि पाय सुहाल ।
दुख सुणता तन धजणी दाखी दीनदयाल ॥
२२ महा सरीरी मानसी पाप प्रसग पामत ।
तियच दुख तिम वरणव, तस थावर त्रासत ॥
२३ मनुष्य भव पिण मानवी गभावास दुगध ।
मत्र मूत्र म मुरछिया वीय रुद्र विलसद ॥
२४ मास सवा नव मानवी दुख भुगतया दखाय ।
भूल गया जनम्या पछ विपय वल्लि लिपटाय॥
२५ जिण थानक दुख म जुड्या तिण थानक मन जाय ।
निजल धेठा निसरडो अजुही लाज न आय ॥
२६ रमणी तन रलियामणो, दखी राचै दीन ।
मल मूत्र रा कोथला, रुद्र असुचि मलीन ॥
२७ वमन पित्त वमती थकी रुद्र वहै निस दीस ।
मेल खखार खरडीजता दुर्गंध विसवावीस ॥
२८ असुच तणा घर आखिया, ऊपर रूप अनूप ।
अतर दुख घर आखियो कामणी सुग भवकूप ॥

सील सुधारस मे रमो, प्रवर गुणागर पाच ॥

३० व्याधि जरा वृद्ध वेदना, अनित्य अत्यत असार ।
इम जाणी धर्म आदरै, सुर शिव पामै सार ॥

३१ दुर्गंधिया सुख छोडि नै, देव हुवै दहदीप ।
अल्पकाले आराधियै, मन इद्री नै जीप ॥

३२ ऋद्धि करी रलियामणा, वारू विविध विमाण ।
चारू चचल चाल ना, भलकै सुर तन भाण ॥

३३ अपछर रूपे ओपती, विवध वणावत वेस ।
पच इद्री सुख परवरा, सुख विलसै सुविसेस ॥

३४ चिहु गति नै विपै सचरै, दाखै तेह दयाल ।
छ. काया ना जीव छांट नै, खटकाया प्रतिपाल ॥

३५ जिम वधन लहै जीवडो, अलुझै इण ससार ।
राग द्वेष मोह रति करि, परखो विविध प्रकार ॥

३६ मूकै माया मोह थी, राग स्नेह मद मार ।
पामै शिवगति पचमी, ध्यान सुधारस धार ॥

३७ राग द्वेष कर्म काम थी, कायर पामै कलेस ।
समभावै चित्त स्थापिया, वारू सुख विशेस ॥

३८ काम भोग किपाक सा, जाणी नै मौह पार ।
केइक समण सूरा कह्या, अप्रतिवध विहार ॥

३९ कदर्प शोक चित्त करी, दुख सागर भय दीठ ।
थिर चित्त सयम थापवो, नर भव पायो नीठ ॥

४० जिण विध पामै जीवडो, वैराग्य रो प्रतिवोध ।
एहवी वाणी आखियै, सकल कर्म नो सोध ॥

४१ राग स्नेह रति मे रमै, उलझ्या जीव अजाण ।
पाप रूप फल भोगवै, वीर तणी ए वांण ॥

४२ वचन समिति वगतर वण, धर खिम्या वर टोप ।
सील दया सभ सूरमा, अखिल गुणागर ओप ॥

४३ राग द्वेष मोह जाल नै, ध्यान एकत आराध ।
आतम निज गुण ओलखो, परहर पाच प्रमाद ॥

४४ समभावै चित्त स्थाप नै, ध्यांन सुधारस ध्याय ।
मान हमारी सीखडी, सिवपदना सुख पाय ॥

४५ स्तुति निंदा न सम धरो मानापमान समना।
अवर मित्र सव परिहरो, आत्म निज मित्त जान॥

४६ वल्लभ जन न वेरी जिसो, देखो जग दिल खोल।
समचित वल्लभज आतमा, ए सम नाहि अमाल॥

४७ इहभव परभव आकरा, कुण-कुण कष्ट हवाल।
सरणा श्री वीतराग नो, दख लिया जगस्याल॥

४८ निश्चल मदर जलनिधि भू-सम जय' गभीर।
समतामृत जल झूलियै, हुरा निज गुण हीर॥

४९ ए अवसर अति दाहिलो, निज आतम उपदस।
अल्प दिवस मे दखज्या, मुर शिव सुख लहस॥

५० कुण-कुणकष्टज भोगव्या, नरक गर्भादिक बीच।
कम हतु अलगा करा, कामभाग महाकीच॥

५१ साध श्रावक ना सोमता, द्विविध धम सुधार।
करणी करिकम खयकरा, पाला निरतिचार॥

५२ जिन वाणी सुण जाणीय, जग थूठा जजीर।
समभावे चित्त स्थापिया, सिवपुर घाल सीर॥

५३ धम कथा पर चित्त धरी, जाडी युक्ति जणाय।
धम क्या इम आखिय, निरमल बुद्ध न न्याय॥

५४ समत् अठार सत्यासीय माह सुद मगलवार॥
धम क्या कहिवा भणी, जाडी सवाई मझार।

ढाल १४

वाजे वाई समझणी ॥ध्रुपद॥

१ असणादिक असुध, दीये साधा भणी, आप डूबै ओरा न डूबोयके।
२ उद्देसीक नितपिंड आहार देवण हुलसी घणी, डरै नही मन माय ॥
३ कजिया झगडा राड, करवा तीखी घणी, मुहडे मुहपति वाध ॥
४ हिंस्या झूठ अदत्त, लेवै न चूकै अणी, करत कतांहल ख्याल ॥
५ गाल्या-गीत सराप, निंदा करै पर तणी, पर ना मर्म प्रकास ॥
६ वाह्य क्रिया देखाय, फिरे श्रावका वणी, अन्तर कपट विशेप ॥
७ करलो वचन कहै कोय, जाणै आई भूतणी, धुकती रहै क्रोध माय ॥
८ मो सम कुण छै ओर, हू छू सभा मडणी, मगरूरी वहुमान ॥
९ कपट झपट नै झोड, झखाल करै घणी, ठगारी श्रावका जाण ॥
१० कुगुरु कुदेव कुधर्म नी, महिमा करै घणी, सुगुरु सुदेव सू द्वेप ॥
११ सत मुनि नै देख, मुह मचकोड़णी, अनाचारचा स्यू पीत ॥
१२ धर्म द्वेपी स्यू हेत, नाम श्रावका वणी, जोडी जुगती मिली[1] आण॥
१३ नवतत्त्वरी नही ठीक, वणी वडधर्मणी, अहोनिश आरत ध्यान ॥
१४ नवकरवाली हाथ, कै ली निन्दया तणी, अहोनिश पर नी वात ॥
१५ सामायिकपोसा माहि, करै विकथा घणी, न मानै किण री सीख ॥
१६ करै समाई माहि, वात पेला तणी, आपो वखाणे आप ॥
१७ मत करो वाया वात, समाई मे घणी, रीस करै मन माहि ॥
१८ आवाकर्मी आहार, देवा हरखी घणी, वलै तिण मे जाणै धर्म ॥
१९ घालै थानक मे गार, छ काया नै मरदणी, दडै लीपै साधु रै काज ॥
२० पडदा परेच कनात, वाधण आघी घणी, मूल न जाणै दोष ॥
२१ इसडी सुणिया वात, दोरी लागै घणी, पिण जोर लागै नही कांय॥
२२ पाप पोट वहु वाध, वणी नरक वीदणी, न जाणै धर्म नै कर्म ॥
२३ मूहडे मुहपती वाध, हाथै लीधी पूजणी, वाणी वोलै सखर सवाद॥
२४ निरलज लज्जा रहीत, धूतारी कामणी, राखै मन ना दुष्ट व्यापार॥
२५ साधसाधवियारेमाहि, भात घलावणी, उभा ही देवै लडाय ॥
२६ मोसा मर्म प्रकास, पर घर भाजणी, देवै अछता आल ॥
२७ इसका खेदा करै ताहि, कर्म वहु वाधणी, मर न दुरगति जाय ॥

१ लय—मत करज्यो अहंकार ।

ढाल १५

१ ¹घर छाड थया ऋखपान महामुनि गणमाल आछ लाल ।
रति अरति न परहर ए ।।

२ शब्द मनोहर जाय न राच रूप सुभ जाय ।
न रीझै सुगाध माहे मही ।।

३ मन गमता रस माय फरस मनोहर ताय ।
ग्रधपणा मुनि परहर ।।

४ स्त्रीयतणा काम भोग, दुरगति दाता रोग ।
मगपरचात्यारा नही कर।।

५ पुदगल ना सुख पख नदीफल सम दख।
मुनिवर मूल राच नही ।।

६ रमणी राखमणी जाण चारित्र नी कर हाण ।
मग ढाल मुनिवर सही ।।

७ महिला मोटा फद राच रह्या नर इद ।
छाड मुनि न्यारा थया ।।

८ पुद्गल पच प्रकार मूछा न कर लिगार ।
समता रस म गह गह्या ।।

९ वद पूजै तसु नर-नार मान द सतकार ।
ए भव सेण हुव मह ।।

१० परभव सुख श्रीकार पौहत्र माग मझार ।
आतमिक सुख पाविय ।।

११ नदा फलज्यू कामभोग टाल्या हुव आरोग ।
जामण मरण मिटाविय ।।

१२ नदीफलज्यू कामभोग टाल्या हुव आरोग ।
उत्तम नर रात नहा ।।

१३ विषयनमगविरान कर अराग थान ।
ग्याण त गमना मरे ।।

---

¹ मय—ज्ञाता री जोड़ भाठ माग

१४ पहिला सुखअल्पकाल, पछै पामै दु.ख असराल।
अनतकाल परलोक मे ॥

१५ गृधपणो गात माय, रक्त रूप मे थाय।
मुगध थकी मन मोह मे ॥

१६ गमता फर्श रस माय, मूर्ख नर मूर्छाय।
दुख सहै नरक निगोद मे॥

१७ रमणी रूप सुरग, निरखै अग उपग।
खिण सुख दुखआगे घणा॥

१८ ताकला लाल तपाय, घालै आग्या माय।
दुख भारी नरका तणा॥

१९ कामण सेती केल, मूढ करै मन मेल।
हास कतोहल थकी रमै॥

२० अगन थभ कर जेह, आलगन दै देह।
ए परमाधामी नरक मे॥

२१ उदक आरभदुखन्हाल, वेतरणी विकराल।
कलकलतो जल पावही॥

२२ हासी गाल्या हाम, जीभ्या काढै ताम।
परतख पाप दिखावही॥

२३ पाचू आस्रव सेव्या पाप, सहे नरक सताप।
असख काल आपही॥

२४ मनुष्य लोक थी ताम, अनंत गुणो दु:ख पाम।
वेदन तो अति पामियै॥

२५ क्षिण सुख सेवै खत, दुख निगोद अनंत।
दुख नदीफल सारखा॥

२६ उत्तम जे नर-नार, रहै काम भोग थी न्यार।
मुगत सुखां री ज्यारै पारखा॥

भक्त के लक्षण

१ नान श्रेय अभ्यास थी, ध्यान ज्ञान थी शिष्ट।
ध्यान थकी तज कम फल, तेहथी शाति विशिष्ट ॥
२ सव भूत परद्वेप तजी, सव मित्र सम जान।
ममत भाव अहकार तज, सुख दुख भाव समान ॥
३ पर न दुखदाई नही पर थी आप न दुक्ख।
तज हृप उद्वेग भय, न मुझ भक्त प्रत्यक्ख ॥
४ निर्वाछा शुचि दक्ष मन उदासीन नही घघ।
आरम्भ त्यागी सवथा त मुझ भक्त सुनद ॥
५ सुख दुख हरख न साग ए चिता काक्षा नाहि।
पुण्य पाप वेहु तज त मुझ भक्त आछाहि ॥
६ शत्रू मित्री सम गिण तिमज मान अपमान।
शीत उष्ण सम दुक्ख -सुख, वजत सग सुजान ॥
७ निदा स्तुति म तुल्य मन मौन धार सन्तुष्ट।
घर त्यागी अरु स्थिर मती, सोभ भक्त पियष्ट ॥

(गीता अध्याय १२ गा १२ १३ १५ स १६)

टहुका

टहुका
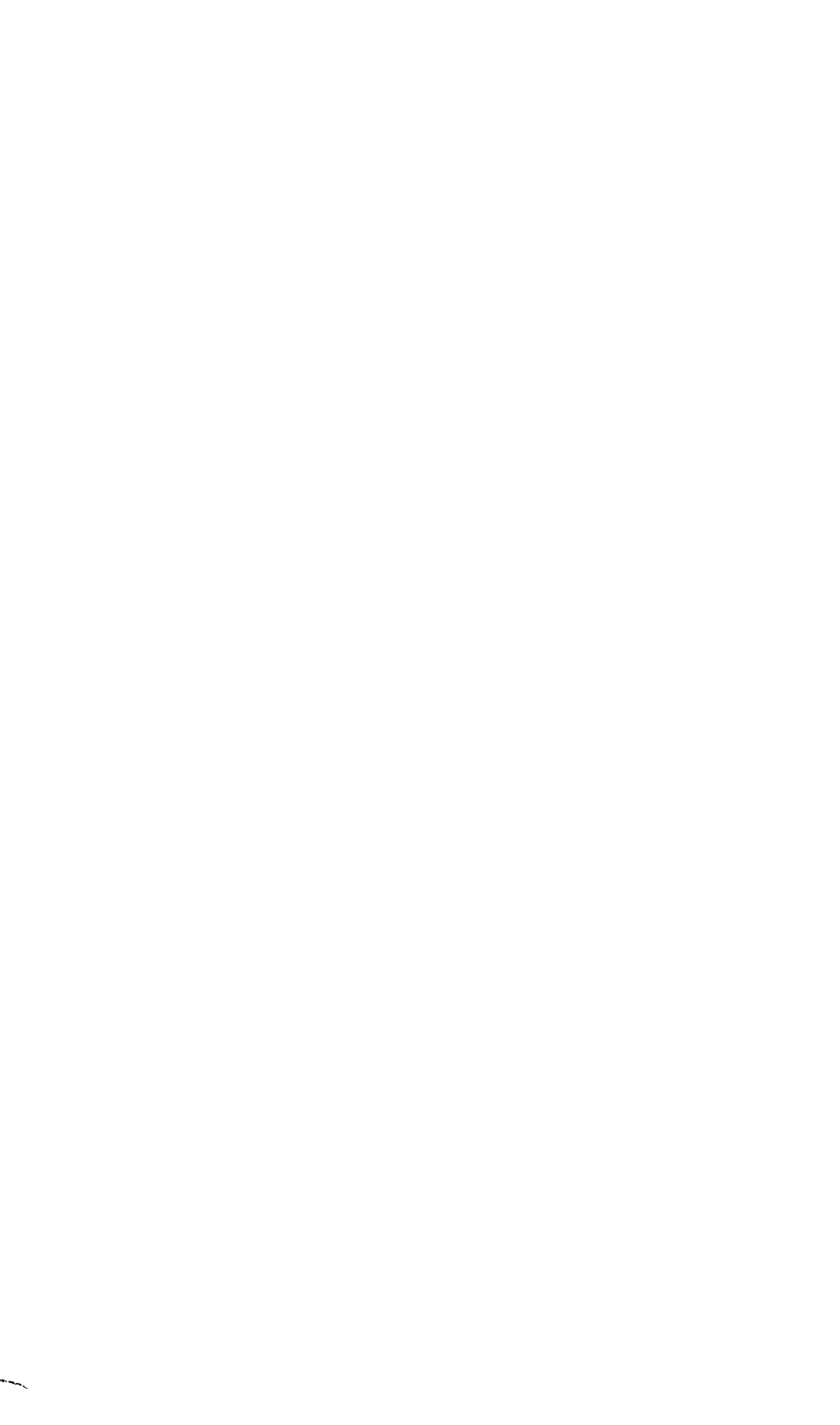
१ सहाय[1] में रैहणो। सहाय विना रहै तो एक एक दिन रा १३ मडल्या[1]।

२ आचाय सू विनय सहित कर जोडी मधुर वचन नजीक जावी न अरज करणी। स्थानक बठा अरज न करणी।

३ जिता दिन जुद सिंघाडै विचर त्या सव पाछना साधू न कारणीक साधु कन राख्या तिण रा चित नै ममाधि रहै तिम नेतला दिन रहणो।

४ करडा वचन रो तथा न्वूचणो[1] कतोहल ऊतरती वात रो तथा अजयणादिक और ही वात रो च्यार पाच साधु तथा मिरपच मडल्या विचारी देव ते लणा मन विगाडणो नही।

५ पाती रो काम पाती रो वाभ आदि रसता वध्या तिण म माथाधूण[5] न करणो। इण मैं मन विगाडै तिण नैं अपछदो अविनीत कहणा मयादा रा लापणहार कपाई दुप्ट आतमा रा धणी नेख अवदुल मुफ्त[6] रो साथी कहणो।

(हिन्दी अनुवाद)

१ साथ[1] म रहना चाहिय। अगर साथ क विना रह ता एक एक दिन का प्रायश्चित्त १३ मडलिया[1]।

२ आचाय म निवदन कर ता निकट आकर विनय पूवक कर वद्ध होकर मधुर वचना स कर। अपन स्थान पर वठा उठा नही।

३ जितन दिन बहिर्विहार म अग्रगण्य या अनुगामी रूप म रह उनन दिन उनको रुग्ण साधु क पास रखा जाए ता उसक चित्त म समाधि रह वम रहा जाए।

४ कटु वाक्य हास्यमजाक अवणवाद या अयतना आदि किसी प्रसग का प्रायश्चित्त चार' पाच माध [पच] तथा मरपच चिन्तन पूवक ... उस महप स्वीकार करें।

५ विभाग काय विभाग का वजन लन आदि क लिए जा धाराए वनी हुई है उनक पालन म आनाकानी न करें। इमम अनमना वनन वाल का स्वच्छन्द अविनीत मर्यादा भजक कपायी दुरात्मा तथा शख अब्दुल का साथी कहा जाए।

---

१ एक व्यक्ति की प्रमुखता म स्थापित मुनिया का मडल।
२ भोजन क ममय उच्छिष्ट जान वाला वस्त्र उस धाना।
३ बार-बार गलती बतलाना।
४ जयाचाय द्वारा नियुक्त युवाचाय श्री मघराज जी।
५ मस्तक हिलाना आनाकानी करना।
६ सर्व-परिशिष्ट।

६ एकलौ साधु, एकली वाई तथा आर्या सू वात न करणी। कनै ऊभो पिण न रहणी, इण मर्यादा मे चूका मडल्या ५१। इम साध्वी एकली, एकला भाई तथा साधू कनै ऊभी न रैहणी, वात न करणी, इण मर्यादा मे चूका मडल्या ५१

७ और साध री पात्री रोकै विना कह्या, तो मडल्या च्यार पाच साधु देवै तै लेणा।

८ इमज चिलमलि[1] उडै तो मडल्या री रीत छै।

९ कारण मे बोझ न उपाडै, तेतो बोझ कारण मिटिया पछै उपाडणो।

१० पाती रो काम साहज्य वाला नै करणो।

११ कारण मे गोचरी न उठै तो तथा रात्रि दिशा जाय, कारण मे पडिकमणो वेठो करे, हाजरी न सुणै, दिनै तथा पोहर रात्रि पहला नीद लेवै, तथा आथण रा ऊन्हो आहार मगावै, तो च्यार पाच साधु तथा सिरपच साधु ने भ्यासै पको कारण तो मडलीया न देवै, अनै थोडो कारण भ्यासे तो ते मडलीया दीया मन विगाडै तो शेख अवदुल मुफ्त री साथी अविनीत अजोग्यकहणो।

सवत् १९११ वैशाख सुदि १० गुरुवार।

(हिन्दी अनुवाद)

६ अकेला साधु, अकेली वहन तथा साध्वी से और अकेली साध्वी, अकेले साधु तथा अकेले भाई से वात न करे व पास में भी खडी न रहे। इस मर्यादा का भग होने पर प्रायश्चित्त ५१ मडलिया।

७ दूसरे साधु की पात्री उसकी आज्ञा विना काम मे ले तो पच-रूप मे अधिकृत साधु जितना प्रायश्चित्त दे उसे स्वीकृत करे।

८ इसी प्रकार चिलमलि उडे तो प्रायश्चित की व्यवस्था है।

९ रुग्णावस्था मे समुच्चय का वजन न ले तो स्वस्थ होने पर उतना वोझ उठाये।

१० रुग्णावस्था मे उसके विभाग का काम साझ वाले करे।

११ कारण मे गोचरी न जाए, रात्रि मे पचमी समिति का कार्य करे, प्रतिक्रमण वैठकर करे, हाजरी की शिक्षा न सुने, दिन मे या प्रहर रात वीतने से पहले सोए तथा साय काल के समय गर्म आहार मगाए—आदि के लिए अधिकृत साधु या सरपच को रोग का पक्का भरोसा हो जाए तव प्रायश्चित न दे और थोडा रोग लगे तव प्रायश्चित्त दे, ऐसे प्रसग पर अनमना वने उसे 'शेख अब्दुल मुफ्त' का साथी, अविनीत, अयोग्य समझा जाए।
(सवत् १९११ वैसाख शुक्ला १० गुरुवार)

---

१ पर्दा। (पारसी भाषा का शब्द)

१२ कारणीक साधु नै आहार देणो पडै तो पइसा भर तो सप्पी[1], करवाली[2] उतकष्टी सरस नही, अनै अत्यत निरस पिण नही इसो देणो। व्यजन ६ पइसा भर रै आसरै मक्रम वजण। अनै पाच विग समचा माहि थी नही देणी। परभात विना पाती रो लेणो ए कारणीक नी रीत छ, वैद ओषध बताव तो वात न्यारी तथा आचाय आज्ञा देव तो वात न्यारी।

१३ द्रव्य क्षेत्र काल भाव देखी साधु आहार जव गवू मका बाजरी नी रोटी वहुत पण जे आहार आव ते माहिला दोधा कारणीक न मूढा विगाडणो नहीं कुलक भाव[3] आणे तिण कारणीक रा लखण खोटा। पैंतालीसा रा लिखत म रागिया विचै सभाव रा अजाग्य नै खाटो कह्यो' ते भणी कारणीक न समभाव राखणा। ए सव साधा भला हाय नै रीत वाधी छै।

१४ कारणीक नें रीत उपरत आहार व्यजन विग दव तो देवण वाला र अन लण वाला रै मडल्या ७।

१५ दूजो साधु कहै—इण रीत उपरत दीयो ता डड मण्डल्या ७ देणा। अन जो कारणीा नैं समचा रो आहार दवण वालो ओर साहज्य वाला साधा नैं पूछ नैं देवै ता देण वाला र मटल्या नहीं। भीखनजी स्वामी पैंतालीसा रा लिखत मे कह्यो—रागिया र आहार री रीत सगला साध भला हाय न दव ता लेणा एहवा कह्यो। ते भणी बीजा साहज्य वाला न पूछ न रीत प्रमाण देव तो मडल्या नहीं। मवत १९११ चैत सुदि ५।

(हिन्दी अनुवाद)

१२ रागी साधु को समुच्चय का आहार देना पड़े तो पैसा भर घृत रोटी (न अधिक सरस और न अधिक नीरस) मध्यम व्यंजन छः पैसा भर लगभग दे पर पांच विगय समुच्चय से न दे। यह प्रातःकाल बिना विभाग की वस्तु लेने की रोगी के लिए व्यवस्था है। इसमें भी वैद्य औषध बताए या आचार्य आज्ञा दे तो अलग बात है।

१३ साधु द्रव्य क्षेत्र काल भाव देखकर आहार में से जव गेहूं मक्का या बाजरी आदि की रोटी जो अधिकांश रूप से मिले उसमें से दे तो रोगी मुंह न बिगाड़े। कालुष्य भाव लाने वाले रोगी की आदत बिगड़ी हुई होती है। संवत् १८४५ के लिखित में रुग्ण की अपना स्वभाव के अयोग्य को बुरा कहा है इसलिए रुग्ण व्यक्ति को समभाव रखना चाहिए। यह व्यवस्था सभी साधुओं ने सम्मिलित होकर की है।

१४ रुग्ण व्यक्ति को इस व्यवस्था के उपरान्त भोजन व्यंजन विगय वगैरह दे तो देने वाले तथा लेने वाले को प्रायश्चित मंडल्या ७।

१५ दूसरा साधु कहे—इसके व्यवस्था उपरान्त दिया है तो भी देने वाले को प्रायश्चित्त मंडलिया ७ अगर रुग्ण को समुच्चय का आहार देने वाला अन्य साथ वाले साधुओं को पूछ कर दे तो उसे प्रायश्चित नहीं। आचार्य भिक्षु ने १८४५ के लिखित में रोगी के आहार की व्यवस्था के संबंध में कहा है—सब साधु सम्मिलित होकर दे तो लेना इसलिए दूसरे साथ वालों को पूछकर विधिपूर्वक दे तो प्रायश्चित्त नहीं।

[संवत् १९११ चैत सुदी ५]

---

१ घृत।
२ रोटी।
३ कलुषभाव।

मर्यादा मोच्छब री ढाला

ढाल १

'वारी र जावू म्हारा गणपति नी ॥
फूल क्यारी शासण गणि मपति नी,
स्वामी नामण कलश चढाया, वारी० ॥ध्रुपद॥

१ भरत क्षेत्रे भिक्षु परगटिया भारीमाल शिष्य भारी।
पट तीजे ऋषिराय जवू सा सुयश दिशा जयकारी॥
२ विविध मर्यादा बांधी भिक्षु बारू लिखत मझारा।
गणपति नामे दीक्षा देणी वच बत्तीशे सारो॥
३ दोष देख ता तुरत दाखणा लिखत पच्चासे एही।
घणा दिवस पाछ दोप कहै ता, धणी दोष रा तही॥
४ इमहिज लिखत बावना माहि इमहिज रास मझारा।
माघ सिखामण-ढाल दुहा म इमहिज बहु अधिकारा॥
५ लिखत बावनें दाख्यौ अज्जा जाणी दोष लगावै।
तो पाना म लिखी राखणो, इम भिक्षु फरमावै॥
६ विण लिखें विगै तरकारी न खाणी, कदा कारण म न लिखाया।
ता औरअज्जाने सायदार करणा, वेगा लिखणा ताया॥
७ साधु न आया केरी न सुणे अवणवादा।
'स्वाम भणी कहिजा, इम कहिणा, लिखत बावनें लाधा॥
८ दोष धणी न तया गुरा न, कहिणा इण विध आख्या।
अवर किणहि न कहिणा नाही पच्चासे बावनें आख्यो॥
९ गण बाहिर नीकल न पार्थी, पाना लेजावणा नही साया।
अश अवगुण बालण रा त्याग छ, गुणमठे पच्चासे ख्यातो॥
१० गण मे वा बाहिर निकल न, अवगुण बालण रा त्यागो।
लिखत पैंतालीसा म भाख्या वलि जिला न वाधणो धर रागो॥
११ उगणीस पनर सुदि एकम, माघ माम रे माह्या।
जय जश गणपति जाड करी ए, स्वाम वचन सुखदाया॥

---

१ लय—चरखा नी

ढाल २

'भिक्षु भज ले रे घर भाव ।।ध्रुपद।।

१ अष्टादश सोले वर्षाते², ते भाव चरण मुनि लीध ।
धुर³ मर्याद बत्तीसे बाधी, चरम⁴ गुणसठे सिद्ध ।

२ भारीमाल प्रमुख गणपति ने, नामे देणी दीख ।
सेखे काल चौमासो आज्ञा थी, ए भिक्षु नी सीख ।।

३ गणि इच्छा सू पद युवराज आपे, तसु आण प्रमाण ।
एक तणी आज्ञा मे रहिणो, ए रीत परपर जाण ।।

४ कर्म योगे एक दोय प्रमुख, टलिया तीर्थ मे नाहि ।
तेहने वादे पूजे ते पिण, नही जिन आज्ञा माहि ।।

५ कर्म योग गण सू निसरिया, अवगुण बोलण रा पचखाण ।
पाच पदा री आण तास है, वलि अनत सिद्धा री आण ।।

६ कदा विटल थई सूस भागे, ओ हलुकर्मी माने नाय ।
कोई विटल उण सरीखो माने, तो लेखा मे न गिणाय ।।

७ गण मे लिखिया जाच्या उपधि, लेई जाणा नही जाण ।
क्षेत्रा माहि इक निशि उपरते, रहिवा रा पचखाण ।।

८ गुणसठे महा सुदि सातम दिन, बाधी ए मरयाद ।
अष्टादश साठे भाद्रवे अणसण, करी लही समाध ।।

९ भारीमाल पट अधिक ओजागर, भद्र प्रकृति गुण खान ।
अठतरे अणसण कर महा विद, अष्टम कियो प्रयाण ।।

१० पट तीजे ऋषिराय जबू जिम, प्रवल दशा पुन्यवान ।
उगणीशे आठे महा विद चवदश, तिथी कियो कल्याण ।।

११ चोथा आरा जिसा आचार्य, ए प्रगट थया इण आर ।
अतिशय धारी अधिक ओजागर, शासण ना सिणगार ।।

१२ तास प्रसादे लही सपदा, च्यार तीर्थ सुखकार ।
गण वृद्ध समृद्ध सुख सपति वर, जयजश हर्ष अपार ।।

१३ स्वाम चरम मर्यादा गणि पट, महोत्सव मगलमाल ।
उगणीसै इकवीसै जोडी, जयजश हर्ष विशाल ।।

---

१ लय—सीता आवै रे धर राग ।
२ आषाढ पूर्णिमा ।
३ प्रथम ।
४. अतिम ।

ढाल ३

[1]अहा मुज गुणवत पूज्य जी, मु०, धन्य धन्य भिक्ष स्वाम हो
॥ध्रुपद॥

१ सवत अठारे वत्तीस म मुनिद मारा, वाधी मर्यादा ताम हो।
शिष्य शिष्यणी करणा सही, मु० भारीमाल न नाम हो॥

२ गुणसठे दृढ वाधी वलि, भारीमाल न नाम।
शिष्य शिष्यणी करणा सही, दीक्षा द सूपणा ताम॥

३ भारीमाल री आण थी, वलि करणो चउमास।
शेषकाल पिण विचरणो, आना ले गुण रास॥

४ इण वचने करी जाण जो, उतरिया चउमास।
आना लइ ने विचरणा शेषकाल विमास॥

५ अथवा चउमासो धारे तर चउमासा पहिला शेपकाल।
वा चउमासा पछै शेपकालनी गणि आना ले विचरे विशाल॥

६ भारीमाल इच्छा थकी पद युवराज पिछाण।
गुरु भाइ शिष्य न दिया रहिवा तेहनी आण॥

७ सव साधु न साधवी, इक गणि आणा माहि।
रहिवा रूडी रीत सू ए रीत परपर ताहि॥

८ सत अन सतिया तणा चाले माग जाण।
त्या लग ए मर्याद है, इक गणी आण प्रमाण॥

९ कोइककम योगगण थी टने एक दाय तीन आदि।
करे घुरताई बुगलध्यानी हुव श्रद्धणो नही तसु साध॥

१० च्यार तीथ म गिणवो नही निंदक तीथ नो धार।
एहवा ने वादे तिक, छै जिन आज्ञा वार॥

११ औरमुनिन असाधु श्रद्धायवा, कदा फेर दीक्षा लेवे कोय।
तो पिण उण नेसाधुनश्रद्धणो, ए भिक्षु वच जोय॥

१२ उण ने छेडविया आ आल दे तिण री वातनमानणी एक।
उणतो अनतससारआर कीया दीसे छे सुविशेप॥

---

१ लय—सिहल नप कहै चद न।

१३ कदा कर्म योग गण सू टले, गण रा सत सत्या रा जाण।
अवर्णवाद वोलण तणा, अश हुता अण हुता पिछाण ॥

१४ अनत सिद्धारी आण छै, वलि पाचू पदा री आण।
पच पदा री साख सू, अवगुण वोलण रा पचखाण ॥

१५ किणही साधु साधविया तणे, शका पडे ज्यू जाण।
वोलण रा पचखाण छै, काई ए भिक्षु नी वाण ॥

१६ कदाचित विटल थई सूस भागै, हलुकर्मी न माने सोय।
कदा उण सरीखो विटल हुवै, तो लेखा मे नही कोय ॥

१७ शेप काल चउमासो उतरचा, वस्त्र जाच्यो ते गुरु पे आण।
काम जरूर रो ऊपना, जाडो-जाडो वाट लेणो जाण॥

१८ कर्म धके गण सू टले, वाई भाई श्रद्धा रो होय।
इक पिण वाई भाई हुवे, तिहा रहिणो नही छे कोय ॥

१९ वाटे वहितो इक निशा, कारण पडचा रहे सोय।
पाच विगय सुखडी रा त्याग छै, अनत सिद्धारी साख सू जोय ॥

२० टोला माहि उपगरण करे, गण मे पडत पाना लिखे जाण।
जाचे पत्र पानादिक वस्तु ते, साथ ले जावण रा पचखाण ॥

२१ वोदो[1] चोलपटो ने मुहपति, वोदो ओघो पछेवडी जाण।
खडियादिक उपरत ते, साथ ले जावण रा पचखाण ॥

२२ कोइ पूछे क्षेत्रा मे रहिण रा, किम त्याग कराया तास।
उत्तर तेहने एह विधे, दीधो भिक्षु विमास ॥

२३ रागा धेखो क्लेश वधतो जाण ने, उपगार घटतो जाण।
इत्यादिक वहुकारण जाणी करी, कराया छै पचखाण ॥

२४ जिण रा परिणाम चोखा हुवे तो, सूस मर्यादा ताम।
आरे हुजो आछीतरे, नही सरमासरमी रो काम ॥

२५ मुडे और मन मे और ह्वे, इम तो साधु ने करिवो न सोय।
वलि इण लिखत मे खूचणो, काढणो नही छै कोय ॥

२६ पछे ओर रो ओर न वोलणो, अनत सिद्धारी साख सुजाण।
सगला रे पचखाण छै, ए स्वामी नी वाण ॥

२७ अन्य टोला मे जावा तणा, ए पिण छै पचखाण।
मर खपणो पिण सूस ए, भागणो नही छै जाण ॥

---
१ पुराना।

२८ लिखत ए ऋषि भिक्खण तणो, काई सवत अठारे सोय।
गुणसठे महासुदि सप्तमी, वार शनेश्चर जोय॥
२९ इम गुणसठे महासुदी सप्तमी, बाधी ए मर्याद।
अष्टादश साठे भाद्रवे, अनशन भाव समाध॥
३० सवत अठारे अठतरे, महावदि आठम ताय।
भारीमाल अनशन भलो, ए द्वितीय पाट सुखदाय॥
३१ उगणीशे आठे सम महावदि चवदश सार।
ऋषिराय परलोक पधारिया ए ततीय पाट गुणधार॥
३२ ताम पसाये सपदा, जय जश करण सुपसाय।
त सगला गणपति तणा पट महोत्सव सुखदाय॥
३३ पाटानुपाट परवरा, रहिवा एक गणी आण।
गुणसठ महासुदि सप्तमी वले विविध मर्याद पिछाण॥
३४ तिण कारण मगलीक ए, उत्तम दिवस उदार।
मर्यादा ने गणि पट तणा, महोत्सव मगलाचार॥
३५ सवत उगणीसे बावीस मे महासुदि छठ चद्रवार।
जय जश गणपति युक्त सू, जोडी हर्ष अपार॥

ढाल ४

[1]स्वाम सुखकारी जी, तीर्थ सिणगारी जी।
हो जी म्हारा भिक्षु ने भारीमाल तणी वर जोड़ी जी,
धर्म ना धोरी जी ।।ध्रुपद।।

१ भिक्षु भाणज भरत मे, काई अवतरिया इण आर।
मर्यादा वाधी भली, काइ लिखत विषे सुविचार ।।
२ वर मर्यादा स्वामजी, धुर वत्तीगे वास।
चारू मर्यादा चरम, गुणसठे गुणरास ।।
३ भारीमाल आज्ञा थकी, शेषकाल चउमास।
आज्ञा विन रहिणो नही, किण ही स्थानक तास ।।
४ शिष्य शिष्यणी करणा सही, भारीमाल रे नाम।
चरण देइ ने सूपणा, गुणी सत गुण धाम ।।
५ भारीमाल इच्छा थकी, थापे पद युवराज।
रहिणो तसु आज्ञा मझे, ए रीत परपर साज ।।
६ कर्म योग गण सू टले, एक दोय ने तीन।
तसु साधु नही श्रद्धणो, निंदक तेह मलीन ।।
७ हूता अणहूता वलि, अवर्ण वाद पिछाण।
अनत सिद्धा साखे करी, वोलण रा पचखाण ।।
८ गण माहि जाचे लिखे, वस्त्र पानादिक जाण।
साथे लेजावण तणा, जावजीव पचखाण ।।
९ श्रद्धा रा क्षेत्रा मझे, एक रात्रि उपरत।
रहिवा रा पचखाण छै, ए भिक्षु वच तत ।।
१० सवत अठारे गुणसठे, महासुदि सातम सार।
ए मर्यादा स्वामीजी, वाधी अधिक उदार ।।
११ तेह लिखत नी जोड ए, उगणीसै तेवीस।
माघ शुक्ल छठ तिथि करी, जयजश हर्ष जगीस ।।

---
१ लय—पायल वाली पदमणी

ढाल ५

'चरम मयाद भिक्षु नी भारी
बाधी महामुदि सातम सारी ।च०। तो गुणमठे लिखत उदारी ।।च०
।।ध्रुपद।।

१ सवत अठार वत्तीस निम्वन म, शिष्य गणि नाम सुजाण।
इम गुणमठे शिष्य गणि नामे दीक्षा द मूपणा आण ।।
२ गणि आणा म् चउमास करणा फुन शेप काल विचरणा।
आना विना न रहिणो किहाइ गणपति छद तिरणो ।।
३ गणपति आप तणी इच्छा सू शिष्य अथवा गुरु भाइ।
पद युवराज ममाप तिण न तास आण शिर ठाइ ।।
४ महु मनमतो रहिणा इक गुरु आणा, एह परपर रीत।
साव माव-या रो माग चाल, तठा ताइ सुवदीत ।।
५ कम याग गण वाहिर निकले एक दाय तीन आद।
च्यार तीथ म तिण न न गिणवा तमु वाद तिण र असमाध ।।
६ आर माधा न असाध श्रद्धवा फेर दीक्षा लवे काई।
तो पिण एहवा टालाकर न साधु न श्रद्धणा साई ।।
७ छेडविया ता आल देव आ तिणरी न मानणी वात।
उणता समार अनता आर किया दीस साक्षात ।।
८ कम याग गण सू टलिया टाना रा हूता अणहूता जाण।
अवगुण अश वालण त्याग छ पाचू पदा री आण ।।
९ कदा विटल हाय सूम भाग, ता न्याय वादी ता मान नाय।
उण सरीखा काइ विटल मान ता लेखा म न गिणाय ।।
१० शेप काल चउमासा उनरया तनू जाच्या ताहि।
आचारज न आण मूपणा आना विन वतवा नाहि ।।
११ कदा जम्र रा काम पडे ता जाडा जाडो वाट लेणा।
मही तो आना विना वाटणा नाहि, गणपति न मूप देणा ।।
१२ इण श्रद्धा रा क्षेत्रा म नहि रहिणा, टालाकरन ताहि।
वाट वहता इक निशि उपरात रहिणा नही क्षेत्रा माहि ।।

१ सय—आवन मरो गनियन म गिरधारा।

१३ कारण पडिया क्षेत्रा माहि रहे तो, पाच विगय पचखाण ।
सूखडी रा पिण त्याग छै तिण रे, अनत सिद्धा री आण ।।
१४ गण मे थका पाना लिखे जाचे, ते ले जावणा नही वार ।
पात्रा जाचे ते ले जावणा नही, नवो ततु इम धार ।।
१५ इत्यादिक मर्यादा लोप्या, फिट-फिट जग मे होवे ।
निदक टालो कर दुख पावे, जीतव जन्म विगोवे ।।
१६ उगणीशे पणवीशे वर्षे, महासुदि छठ सोमवार ।
जयजश गणपति जोड करी ए, सातम महोत्सव सार ।।

ढाल ६

[1]आता भिक्षु बाधी भारी रे, मर्यादा सुखकारी।
वर्ष गुणसठै संवत अठारी रे महा सुदी सातम सारी ॥ध्रुपद॥

१ आचारज रे नामे दीक्षा, देणी मुनि श्रमणी नं।
दीक्षा दे ने आण सूपणा, गणपति परम गणी ने ॥
२ शेषकाल चउमासे रहिणा, गणपति आण प्रमाणे।
आज्ञा विना न रहिणो क्याही और काय इम जाणे ॥
३ आचारज अपणी इच्छा सू, पट आप घर पमा।
गुरु भाइ अथवा चेला नें, तसु आज्ञा पिण एमो ॥
४ एकण री आज्ञा मे रहिणो सव भणी धर प्रीत।
सत सत्या रा शुध मग चाले त्या लग एहिज रीत ॥
५ कर्म योग गण सू निकल तसु साध श्रद्धणो नाही।
तिण ने वाद पूजे त पिण नहीं जिन आज्ञा माही ॥
६ कर्मयोग गण सू टलिया हूता अणहूता जाण।
गण रा अवर्ण बोलण रा जावजीव पचखाण ॥
७ गण म लिखे तथा जाचे, त वस्त्र पात्रादि पिछाणा।
ते पिण साथे ले जावण रा छै तेहन पचखाणो ॥
८ इण श्रद्धा रा क्षेत्रा विषे पिण रहिवा रा पचखाणा।
इक बाइ भाइ हुवे त्या पिण, रहिणा नही छ जाणा ॥
९ शेषकाल चउमास उत्तरिया तत्र जाचे ज्याही।
आचारज ने आण सूपणो बाट बावरणो नाही ॥
१० काम जरूर पडया थी, जाडो-जाडो बाटी लणो।
मही आचार्य द ते लेणो बुरो दियो नही कहिणा ॥
११ इत्यादिक मर्यादावा बाधी भारी गुणकारी।
साठे भाद्रव परभव पहुता सात पोहर सथारी ॥
१२ चरम मर्यादा स्वाम ए बाधी, तह तणा सुविचारा।
नाम चरम मर्यादा महोत्सव, च्यार तीर्थ हितकारी ॥
१३ उगणीसे पट बीस बीदासर महासुद छठ निशि तायो।
चालीशं त्राणू वर मुनि अज्जा, जय जश हर्ष सवायो ॥

१ लय—ए तो जिन मारग रा नायक रे।

ढाल ७

भिक्षु स्वाम भला

भिक्षु स्वाम भला अति ही उजला ।
मर्यादा पाल्या थी जीव निर्मला ।।ध्रुपदं।।

१ सर्व सत सतिया ने जोय, भारीमाल आज्ञा मे सोय ।भिक्षु०।
चउमासो ने शेषे काल विहार, भारीमाल आज्ञा थी सार, भिक्षु० ।।
२ विण आज्ञा रहिणो न किण ही ठाम, दीक्षा देणी भारीमाल रे नाम ।
दीक्षा देइ ने सूपनो आण, आज्ञा विना नही राखणो जाण ।।
३ आचार्य विण और रे जाण, चेला करण तणा पचखाण ।
और साधा ने आवे प्रतीत, तेहवो भारमाल ने शिष्य करणो वदीत ।
४ भारमलजी री इच्छा होय, जद गुरु भाइ अथवा चेला न सोय ।
भार टोला रो सूपे जश जाण, सर्व सत सतिया ने चालवो तसु आण ।।
५ वाधी ए परपर रीत, सर्व सत सतिया सुवदीत ।
एकण री आज्ञा रे माय, चालणो एहवी रीत शोभाय ।।
६ साधु साधवियां रो चाले मग्ग, जठा ताइ ए रीत उदग्ग ।
अशुभ कर्म रे योगे कोय, टोला मा सू फाडा तोडो करि सोय ।।
७ एक दोय त्रिण आदि निकलेह, हुवै बुगल ध्यानी बहू धुर्ताइ करेह ।
तिण ने साधु श्रद्धणो नाहि, गिणवो नही चिउं तीर्थ माहि ।।
८ ते चिहु तीर्थ ना निंदक सोय, तेहने वादे पूजे कोय ।
ते पिण छे दिन आज्ञा वार, ए भिक्षु रा वयण उदार ।।
९ कदा कोई दीक्षा ले फेर, अवर साधा ने असाधु श्रद्धायवा हेर ।
तो पिण उण ने साधु न सरधणो न्हाल, उण ने छेडविया तो ओ देवे आल ।।
१० तिण री पिण वात न मानणी जेह, उण तो अनत ससार आरे कियो दीसेह ।
कदा कर्म धक्को दीधा कोय, टोला थकी जो टले तो सोय ।।
११ उण रे टोला रा संत सत्या रा जाण, हूता अणहूता अश मात्र पिछाण ।
अवगुण बोलण रा पाचू पदरी आण, अनत सिद्धा री साख करी पचखाण ।।
१२ किण ही साधू साधवी रा जाण, शका पडे ज्यू बोलण रा पचखाण ।
जो कदाचित ओ विटल होय, सूस प्रते भागे ते जोय ।।

---

१ लय—लाल कृष्णपुरी

१३ ता हलुकर्मी न्याय वादी हुव जेह, तेह तणा वच नहीं मानेह।
तिण रे सरीचो विटल मानेकाइवाय, त ता लेखा म न गिणाय॥
१४ किण चरचा बोल रा पडे काइ काम, तो बुद्धिवतसत विचारी करणा ताम।
वले श्रद्धा रो बोल पिण कोय, बुद्धिवत विचारी सचै वेमाणणो सोय॥
१५ कोइ बोल बेमे जा नाही, तो पिण ताण न करणो ताहि।
वे वलिया न देणो भोलाय, पिण अश खच नही करणी काय॥
१६ चउमासो उत्तरीया तथा शेषे काल, ततु जाच्या तह निहाल।
आपरे मते वाट वटाय, फाड तोड न पहिरणा नाहि॥
१७ कदा पडे जरूर रो काम, तो जाडो जाडा वाट लेणा ताम।
महो तो आचाय नी आना विनसाय, वावरणो नही छै अवलोय॥
१८ महो तो आचाय आगे मेलणा आण आचाय दव तो लेणो जाण।
तिण री पाछी वात न चलावणी काय महो इण ने मोटा दियो कहिणा नाय॥
१९ कम घको दीया टने गणवार, श्रद्धा रा क्षेत्रा म न, रहिणो लिगार।
एक वाई भाई श्रद्धा रो हाय तिहा पिण नही रहिणा छै काय॥
२० वाटे वहिता इक निशि उपरत त्याग, कारण पडिया रहे ता तसु भाग।
पाचू विगय ने सूखडी रा पचखाण, अनत सिद्धारो साग करी जाण॥
२१ गण मे जाचे निमे वस्त्रादि, साथे ले जावण रा त्याग समाधि।
जूना चोलपट्टो ओघा पछवडी ताहि मुहपती खडिया उपरतल जावण नाहि।
२२ कोइ पूछे या क्षेत्रा म देख त्याग कराया छै किण लेख।
तिण ने कहिणा रागाधे खोवघता जाण उपगार घटता जाण कराया पिछाण॥
२३ चाखा परिणाम ह्वे ता जारे हायजा ताम सरमामरमी रा नही छै काम।
इण लिखन मे खचणा काढणो नाहि, मारा र पचखाण छै ताहि॥
२४ ए मर्यादा वाधी भिक्षु स्वाम, सवत अठार गुणसठे ताम।
महा सुदि सातम न शनिवार, ए मयादा पाल्या जय जय कार॥
२५ सवत उगणीस गुणतीसे वास, महासुदि सातम जाडो हुल्लास।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय पसाय जयजश सपति हुय सवाय॥

ढाल ८

'भिक्षु ए मर्यादा वाधी, अष्टादश गुणसठै जी ।।ध्रुपद।।

१ सहू सत सत्या ने भारीमाल री, आज्ञा माहि रैणो जी ।
तसु आज्ञा थी विहार चउमासो, ए भिक्षु ना वेणो जी काइ ।।

२ आज्ञा विना कठे नहि रहिणो, वलि भारीमाल रे नामो ।
शिष्य शिष्यणी करणा चरण देइ ने, आण सूपणा तामो ।।

३ भारीमाल री इच्छा हुवै जद, गुरु भाइ ने तामो ।
वा चेला ने भार टोला नो, आपे अति अभिरामो ।।

४ जद सगला सत सत्या ने उण री, आज्ञा माहे रहिणो ।
एहवी रीत परंपर वाधी, ए भिक्षु ना वेणो ।।

५ सगला संत सत्या ने रहिणो—एकण री आज्ञा मायो ।
साधु साधव्या रो मारग चाले, जठे ताइ सुखदायो ।।

६ अशुभ उदय गण थी कोइ, निकले एक दोय लिण आदो ।
वहु धुर्ताइ करे वुगल ध्यानी हुवै, तसु गिणवा नही साधो ।।

७ तसु चिहू तीर्थं मे नही गिणवा, ते निंदक चिहु तीर्थं ना ।
तेह ने वदे ते पिण श्री जिन—आज्ञा वार प्रपन्ना ।।

८ साधा भणी असाधु श्रद्धायवा, फेर दीक्षा ले कोइ ।
तो पिण तेह ने मुनि न श्रद्धवू, ए भिक्षु वच जोइ ।।

९ उण ने छेडविया ओदेवे, और साधा शिर आलो ।
उण तो अनत ससार ने आरे, कीधो दीसै वालो ।।

१० कदा कर्म धको दीधा टोला सू, निकले जेह अयाणो ।
तो उण रे गण रा सत सत्या रा, अवगुण वोलण रा पचखाणो ।।

११ अ श मात्र हूता अणहूता, अवगुण वोलण रा जाणो ।
अनत सिद्धारी आण छै तिण ने, वलि पाच पदा री आणो ।।

१२ पाचू पद नी साख थकी, पचखाण तास पहिछाणो ।
किण ही सत सत्या री शक पडे ज्यू, वोलण रा पचखाणो ।।

लय—इण स्वार्थं सिद्ध रै चद्रवै ।

१३ कदा ओ विटल हाय सूस भागे तो, हलुकर्मी न माने तायो।
उण सरीखो कोइ विटल मानें ता, लखा मे न गिणायो॥
१४ ततू जाच्यो मही हुवे त, गुरु पे मूकणा सारा।
जरूर काम थी जाडा जाडा, वाट लेणो सुविचारा॥
१५ गण मे लिखे वस्तु जाच ते, गण वारे निक्ल्या जाणा।
साथे लेजावण तणा त्याग छ, अनत सिद्धा री आणो॥
१६ टालाकर ने इक निशि उपरात, क्षेत्र श्रद्धा रा जाणो।
अनत सिद्धारी साख करि ने, रहिवारा पचखाणा॥
१७ इत्यादिक मर्यादा बहु विघ, वाधी भिक्षु स्वामा।
सवत अठार वप साठे, महा सुदि सातम तामो॥
१८ तेह गुणसठा लिखत तणी ए जोड करी सुखकारा।
उगणीश तीगे महासुदि सातम, जय जश सपति सारो॥

गण विशुद्धिकरण हाजरी

पहली बडी हाजरी

सवत १९१० पास वदि ६ वार शनश्चर बटी रावलिया म ऋषि जीतमल गण विशुद्धिकरण हाजरी नी स्थापना कीधी। तहनी विध—सव साधु 'बडा लहुडाइ'' सू मुख आगलि पक्तिवध उभा राखी नै आचाय एतला वचन त्या साधु हाथ जाड उभा त्यानै सुणावै ते लिखीयइ छइ ।

''नमिऊण असुर-सुर गरुल-भुयग परिवदिए गए किलेस ।
अरिह सिद्धायरिया, उवज्झाया सव्वसाहूय।

श्री वीर वद्धमान शासण म सवत १८१७ भीखनजी स्वामी सिद्धान्त देखी सूत्र प्रमाण श्रद्धा आचार प्रगट कीया। नवी दीक्षा लीधी। परपरा रीत मयाद अनक प्रकारे वाधी। वत्तीसा रै वरम आप-आप र चेला न करणा ए मयादा वाधी। गण वारै नीकलै, अपछदा' ह्वं तिण री वात—अवगुण वाल तिका मानणी नही। तिण नै साधु सरघणो नही इम कह्या। तथा वलि आर लिखत म पिण टोला म रही तथा वारै नीकली उतरती वात करणी वरजी छ। त भणी शासण री वात गुणात्कीतन रूप करणी। अनै गुणात्कीतन रूप वार्ता साभलणी। उतरती वात न करणी। अनै उतरती वात मन सहित न साभलणी। काई शब्द कान मे पड त गुरा न कही देणा। उतरती वात कहै तथा सुण तथा सुणी नै न कहै ते इण भव म च्यार तीर्थ' मे हलवा जाग निदवा जोग कष्ट करवा जाग परभव मे उतकृष्ट अनत ससार रुल एहनी रहस्य नाता सूत्र म कही- सेलक' सरीखा अपछदा न तथा उज्झिया' भागवती रा साथी नै तथा सूत्र में, छकाय मे, पच महाव्रत धारी साधु मे सका राख—तिण न हलवा निदवा जोग कह्यो जाव उत्कृष्ट अनत ससारी कह्या। तथा ठाणाग ठा० ५ उ० २ अरिहतादिकनी आशातना किया दुलभ वोधिपणा लहै, एहवा कह्या। तथा दशवकालिक अ० ६ 'अवोहि आसायण नत्थि मोक्खो'' गुरुवादिकनी आशातना त मिथ्यात अवोधि नो कारण कह्यो, तेहथी मोक्ष न मिल एकेन्द्रियादिक म जाय, एहवो कह्या। ते माटे आचार्यादिक ना अवणवाद नो वोलणहार शासण री उतरती वात ना करणहार न तीर्थंकर नो चोर कहिणा।

तथा सवत १८५० वरस भीखणजी स्वामी मयाद वाधी तिण म कह्या—'एक दाष सू बीजो दोष भेला कर ते अन्याइ छ। जिण रा परिणाम मला हामी ते साध

१ शासन म।
२ स्वच्छन्द।
३ साधु-साध्वी श्रावक-श्राविका।
४ अनादृत करन योग्य।
५ णायाधम्मकहाओ—६।७।२८ ३०।
६ णायाधम्मकहाओ – १।५।१२५।

साधविया रा छिद्र जोय-जोय नै भेला करसी। ते तो भारी कर्मा जीवा रा काम छै। डाहो सरल आत्मा नो धणी होसी ते तो इम कहसी—कोइ गृहस्थ साध-साधवियां रो स्वभाव प्रकृति अथवा दोष कहि बतावै, तिण नै यू कहिणो—"मोनै क्यानै कहो, कहो। तो धणी नै कहो, कै स्वामीजी ने कहो, ज्यू यानै प्रायश्चित देइ नै शुद्ध करै, नहि कहिसो तो थे पिण दोषीला गुरु ना सेवणहार छो। स्वामीजी नै न कहिसो तो थामें पिण वाक छै। थे म्हानै कह्या काइ हुवै।" यू कहि नै न्यारो हुवै पिण आप वैहिदा[1] माहि क्यानै पडै। पेलै रा दोष धार नै भेला करै ते तो एकत मृषावादी अन्याइ छै। किण ही नै खेत्र काचो[2] बताया, किण हीनै कपडादिक मोटो दीधा, इत्यादिक कारणै कषाय उठै, जद गुरुवादिक री निंद्या करण रा, अवर्णवाद बोलण रा, एक-एक आगै बोलण रा, माहो-माही मिलनै जिलो बाधण रा त्याग छै। अनंता सिद्धा री आण छै। गुरुवादिक आगै भेलो आप रै मुतलब रहे। पछै आहारादिक थोडा घणा रो कपडादिक रो नाम लेइ नै अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै।" ए सर्व मर्यादा पचासा रा लिखत मे भीखणजी स्वामी बाधी ते सर्व शुद्ध पालणी। तथा तिणहिज लिखत मे एहवो कह्यो—"किण ही साधु साधविया मे दोष देखै तो तत्काल धणी नै कहिणो अथवा गुरा नै कहिणो पिण औरा नै न कहिणो। घणा दिन आडा घाल नै दोष बतावै तो प्रायश्चित रो धणी ऊहिज छै। प्रायश्चित रा धणी नै याद आवै तो प्रायछित उण नै पिण लेणो, नहि लेवै तो उण नै मुसकिल छै।" ए पिण पचासा रा लिखत मे और नै आगै उतरती दोष री वात करणी तथा घणा दिना पछै कहिणी वरजी छै। उतरती वात पर पूठै कहै तिण नै निषेध्यो छै।

तथा पैंतालीसा रा लिखत मे एहवो कह्यो—"जे कोइ आचार रो सरधा रो सूत्र रो अथवा कल्प रा बोल री समझ न पडै तो गुरु तथा भणणहार साधु कहै ते मानणो। नहि तो केवली नै भोलावणो पिण और साधा रै सका घाल नै मन भागणो नही"

तथा पचासा रा लिखित मे पिण एहवो कह्यो छै—"कोइ सरधा रो आचार रो नवो बोल नीकलै, तो वडा सू चरचणो, पिण औरा सू चरचणो नही, औरा सू चरच नै औरा रै सका घालणी नही। वडा जाव देवै आप रै हियै वैसै तो मान लेणो। नही वैसे नो केवल्या नै भोलावणो, पिण टोला माही भेद पाडणो नही"। तथा गुणसठा रा वरस रा लिखत मे पिण एहवो कह्यो छै—"किण ही नै दोष भ्यास जावै तो बुधवत साधु री प्रतीत कर लेणी पिण खाच करणी नही" इम अनेक ठामे सरधा आचार रो बोल औरा सूं चरचणो वरज्यो, गुरु तथा बुधिवत साधु कहै ते मानणो कह्यो, गुरा री प्रतीत राखणी कही। तथा माहो माही जिलो बाधणो पिण अनेक लिखत जोड मे वरज्यो छै। सैतीसा रा वर्ष रास जोड्यो। तिण मे जिलो बाधणो घणो

१ झगट। २ सामान्य।

निषेध्यो छै। तथा गुरु सूकावै तो उभो सूकू' इण मे पिण जिला बाधणा वरज्या छ। किण ही नै गुरा री आना विना आपरा रागी करणा वरज्या छ। तथा पैंतालीसा रा लिखित मे पिण एहवो कह्यो — 'साधा रा मन भाग न आप-आप रै जिल करे ते तो महा भारीकर्मो जाणवा विसवासघाती जाणवा, इसडी 'घात पावडी" करै ते तो अनत ससार री साइ छ। इण मरजादा प्रमाण चालणो आवै नाहि तिण नै सलेखणा मडणो सिरै छै। धन अणगार तो नव मास माहै आत्मा रा कल्याण कीधा ज्यू इण नै पिण आत्मा रा सुधारो करणा पिण अप्रतीतकारियो काम करणा न छ। ए पतालीसा रा लिखत मे जिना न निषध्या। तथा पचासा रा लिखत मे पिण एहवा कह्या छै - "टोला मे भेद पाडणा नही, माहामा जिला बाधणा नही। तथा चद्रभाण तिलोकचद जी ना जिला जाण नै टाला बारै किया। एहवा सतालीसा रा लिखित मे कह्या—"तिलाकचद न चद्रभाण न विसवासघाती जाण्या। सुखाजी आश्री दगाबाजी करता जाण्या गुरुद्राही जाण्या टाला माही भद रा पाडणहार जाण्या, धर्माचार्य अनै साध-साधविया रा अवगुण रा बालणहार जाण्या। धर्माचार्य री मिष्टी[1] रा करण हार जाण्या। धर्माचार्य आदि देइ न साध-साधविया ऊपर मिथ्यात पडिवज्या जाण्या। धर्माचार्य आदि दइ साध-साधविया रा छिद्रपही छिद्र ना गवषणहार जाण्या। उपसम्या कलह ना उदीरणहार जाण्या साधु साधविया आलोइ पडिकमी न सुद्ध हुआ त्या वाता रा उदीरणहार जाण्या। साधु-साधविया न माहामा कलह रा लगावणहार जाण्या। गुरु सू सनमुख नै विमुख करता जाण्या। टाला माहै छान छान साध साधविया न फार फार नै आपणा करणा माड्या जाण्या। गुरु सू फटाय फटाय न आपणा करणा माडया जाण्या। धर्माचार्य आदि देइ न साध साधविया र साथ अनक विध आल रा देणहार जाण्या। टोला माही रही नै दगाबाजी करता जाण्या। माहामा मिलन एका कीधो नै एको करता जाण्या। आप सू मिलिया चाल तिण री पखपात करता जाण्या। औरा न निन्दणा माड्या जाण्या। सामी सामी सापादुली[2] कर कर माहामा मन भागणा माड्या जाण्या। वले अहकारी नै अवनीत घणा जाण्या। अपछदा पिण घणा जाण्या। यारा अनक छल छिद्र रा लखाव पड्यो जाण्या। जद टाला बार काढ्या। ए सब सैंतालीसा रा लिखत मे कह्यो। इम जिला जाण नै अवनीत जाण न बार किया इम जिला नै घणा निषेध्या गुरु रा आना विना जिला बाध आपणा रागी कर त माटा अवनीत अपछदो च्यार तीर्थ म हलवा निंदवा जोग छ। आना विना प्रवरत तिण न भीखणजी स्वामी पचासा रा वरस रा लिखत मे कह्या—" साधा मरजादा बाधी छ तिण परमाणै सगला रै त्याग छ। उवा मरजादा पिण उलघण रा त्याग छ। जा किण ही

१ धाराबाजी। २ अवगणना। ३ उल्टी-सीधा।

साव मरजादा उलघवो कीधो अथवा आगन्या माही नही चालिया। अथवा किण ही नै अथिर परिणामी देख्यो। अथवा टोला माही टिकतो न देख्यो तो गृहस्थ नै जणावण रा भाव छै। साध साधविया नै जणावण रा भाव छै। पछै कोइ कहोला म्हारी लोका माही टोला माही आसता उतारी। तिण सू घणा सावधान पणै सुद्ध पणै चालज्यो। एक-एक नै चूक पड्या तुरत कहिज्यो। म्हा ताइ कजीयो आणज्यो मती उठै रो उठै निवेरज्यो।" तथा सवत् १८५२ रै वरस मर्यादा आर्या रै वाधी, तिण मे पिण एहवो कह्यो "किण ही आर्य्या आज पछै अजोगाइ कीधी तो प्रायश्चित्त तो देणो, पिण उणनै च्यार तीर्थ मे हेलणी निदणी पडसी, पछै कहोला म्हानै भाटै छै म्हारो फितूरो[1] करै छै तिण सू पहिला ही सावधान रहिज्यो। सावधान नही रही तो लोका मे भूडी दीसोला, पछै कहोला म्हानै कह्यो नही"। बावना रा लिखत मे पिण भीखणजी स्वामी इण रीत आज्ञा विना प्रवरते तथा मरजादा लोपै तिण नै निषेध्यो छै। तथा वलि 'हिवै साभलज्यो नर नार' या साध सिखावण री ढाल मे भीखणजी स्वामी मरजादा वाधी दोष देखै तो ततकाल कहिणो पिण घणा दिन पछै न कहिणो तिण ढाल रा दोहा मे एहवो कह्यो—

दोहा

१ अरिहत सिद्ध नै आयरिया, उवझाय सगला साध।
मुक्ति नगर ना दायका, ए पाचू पद आराध॥

२ वादीजै नित एहनै, नीचो सीस नमाय।
यारा गुण ओलख वदणा किया, भव-भव ना दुख जाय॥

३ साध-साधवी श्रावक श्राविका, जिन भाख्या तीर्थ च्यार।
मोटी छोटी माला गुण रतन री, त्यानै सीख कहु हितकार॥

४ साध-साधवी सगला भणी, चालणो इण मरजाद।
दोष देखै तो तुरत बतावणो, ज्यू वधै नही विषवाद॥

५ कोइ कषाय वस दुष्ट आतमा, और साधा सिर दै आल।
त्या मे घणा दिना पछै दोष कहै घणा, तिण रो किण विध काढै निकाल॥

६ औरा मे दोष बतावै, घणा दिना पछै, तिण री मूल न मानणी वात।
आ वाधी मर्यादा सर्व साध नी, ते लोपणी नही तिल मात॥

७ तोहि दोष काढै तिण मे घणा दिना, वलि झूठा करै विषवाद।
ते अपछदा निरलज नागडा, तिण लोप दीधी मरजाद॥

---

१ उड्डाह।

८ इसडा अजोग नै अलगा किया, जव ओ काढ दाप अनक ।
वले ओगुण वोल अति घणा, तिण री वात न मानणी एक ॥

९ इण रीत साधु न चालिया, किण र सका पड नही काय।
वले विसेस परगट करू, ते सुणज्या चित्तल्याय ॥

अथ अठै साध सिखावण री ढाल भीखणजी स्वामी कीधी तिण म कह्यो—दोप देखै तो ततकाल तिण न कहिणा। पिण घणा दिना पछै कहिणा नही। च्यारू तीथ न या सीख तीजा दूहा म इज दीधी। चाथा दूहा म कह्या—दाप दख्या ततकाल कहिणा सा विपवाद वध नही। तथा पाचवा दूहा मे कह्या—घणा दिना पछ दाप कहै तिण नै क्याइ दुष्ट आत्मा रा धणी आल नो देणहार कह्या। तथा छठा दूहा मे कह्या—घणा दिना पछ दोप कहै तिण री वात मानणी नही। तथा सातमा दूहा म कह्यो—घणा दिना पछै दाप कहै तिण न अपछदा कह्या, निरलज कह्या नागडो कह्या मरजादा ना लोपणहार कह्या। इत्यादिक अनक प्रकारै घणा दिना पछ दाप कहै तिण नै निपेध्या छ। तथा भीखणजी स्वामी रास जाडया तिण म पिण घणा दिना पछ दाप कहै तिण नै निपेध्या छ—

१ 'अवगुण सुण-सुणन समदष्टि यान जाण धम सू भ्रष्टि।
यारा वोल्या री प्रतीत नाण झूठ म झूठ वालता जाण ॥

२ मगला श्रावक सरीखा नाही अक्ल जुदी जुदी घट माही।
समदष्टि री साची हुव दिष्ट ते यान कर थाडा म खिष्ट'॥

३ ते यान न्याय सू दव जाव पाड घणा लोका माही आव।
यारी मूल न आण सक यान न्वालद यारा वक ॥

४ ये घणा दाप कहा गुरु माही घणा वरसा रा जाणा छा ताही।
ता ये पिण साधु किम थाय जाण जाण रह्या भला माय ॥

५ जा याम दाप घणा छ अनेव, कदा दाप नही छ एक।
त ता कवल पानी रह्या ग्न, पिण थ ता वूडा लें भख॥

६ जो यामे दोप कह्या ते साचा, ताही थता निदच नही आछा।
जा झूठ कह्या ता विशेप भूडा थे ता दानू प्रकार वूडा ॥

---

१ सय—म्हारी साधु री नाम छ फूली।   २ निरन्तर।

७ थे दोपीला नै वाद्या कह्यो पाप, भेला पिण रह्या कह्यो सताप।
दोपीला नै देवै आहार पाणी, वले उपधादि देवै आणी ।।

८ हर कोइ वस्तु देवै आण, करै विनय व्यावच जाण ।
दोपीला सू करै सभोग, तिण रा पिण जाणज्यो माठा जोग ।।

९ इत्यादिक दोपीला सू करत, तिण पाप कह्यो छै एकत ।
ए थे जाण किया सारा काम, ते पिण घणा वरसा लगताम।।

१० घणा वरस किया एहवा कर्म, तिणसू बूड गयो थारो धर्म ।
निरतर दोप सेवण लागा, हुवा व्रत विहुणा नागा ।।

११ थे कीधो अकारज मोटो, छानै-छानै चलायो खोटो ।
थे तो वाध्यो कर्मा रो जालो, आतमा नै लगायो कालो ।।

१२ थे गुरु नै निश्चै जाण्या असाध, त्यानै वाद्या जाणी असमाध।
त्याराहिज वाद्या नित पाय, मस्तक दोनू पग रै लगाय ।।

१३ या सू कीधा थे वारै सभोग, ते पिण जाण्या सावद्य जोग।
सावद्य सेव्यो निरतर जाण, थे पूरा मूढ अयाण ।।

१४ थे भण-भण नै पाना पोथा, चारित्र विण रह गया थोथा ।
थे कहो अर्थ करा म्हे कूडा, तो थे भण-भण नै काय वूडा।।

१५ थे विहार करता गाम-गाम, शिष्य शिष्यणी वधारण काम।
किण नै देता वधो कराय, किण नै देता घर छोडाय ।।

१६ वले कर-कर गुरु रा गुणग्राम, चढावता लोका रा परिणाम।।
वले थे गुरु नै खोटा जाणताही, औरा नै क्यू न्हाखता या माही ।।

१७ पोतै पडिया जाणै खाड माय, तो औरा नै न्हाखता किणन्याय ।
ओरा रो डवोवण रो उपाय, जाण-जाण करता था ताय ।।

१८ पाच पद वदणा सिखावता तायो, तिण मे गुरु रो नाम घरायो ।
तिण गुरु नै वाद्या जाणता पाप, तो औरा नै कायडवोया आप।।

१९ ज्यू नकटो नकटा हुवा चावै, असुभ उदै माठी मति आवै ।
ज्यू थे डूवता दोसीला माही, ज्यू औरा नै डवोवता ताही ।।

२० औरा सू करता एहवो उपगार, थारा भणिया रो ओहिज सार.।
इसडो कूड कपट थे चलायो, थारो छूटको किण विध थायो ।।

२१ थे तो जिन मारग मे हुवा ठगो, थे दियो घणा नै दगो ।
ठग-ठग खाधा लोका रा माल, थारो होसी कवण हवाल ।।

२२ आछी वस्तु हुती घर माही, आहार पाणि कपड़ादिक ताहि ।
थानै गुरु जाण हरप सू देता, सो थारा रो निकल गया पेता ।।

२३ म्हे थानैं वादता वारुवार, जद म्हान हुतो हरप अपार।
थान जाणता सुद्ध आचारी, थे छानैं रह्या अनाचारी॥
२४ म्हे थान जाणता या पुरुष माटा, पिण थे तो निकल गया खाटा।
म्हे थानैं जाणता उत्तम माधू, थे ता हाय नीवरिया असाधू॥
२५ थे जाण रह्या दोपीला माया, ठागा सू थे काम चलाया।
थे जीतव जन्म विगाड्यो, नर नो भव निरथक हारयो॥
२६ थे घणा दिना रा कहो छो दाप थारी वात दीस छैं फोक[1]।
साच झूठ तो केवली जाणैं, छद्मस्थ तो प्रतीत नाणैं॥
२७ थे हेत माही ता दोप ढक्या, हत तूटैं कहिता नहि सक्या।
थारी किम आव परतीत, थान जाण लिया विपरीत॥
२८ थे दापिला मू किया आहार, जद पिण नही डरिया लिगार।
तो हिव आल देता किम डरसी थारी परतीत मूरख करसी॥
२६ ए थे दोप वयान किया भला ए थे क्यू न कह्या तिण वेला।
थामैं साध तणी रीत ह्व तो, जिणदिनरा जिणदिन कहिता॥
३० थे दोपिला मू कियो मभाग, थारा वरत्या माठा जोग।
थारी परतीत न आव म्हान यारा दाप राम्या थे छान॥
३१ थे तो कीधो अकारज माटा जिन मारग म चलाया खाटा।
थारी भिष्ट हुई मति बुद्ध, हिवे प्रायछित ले होय सुद्ध॥
३२ उण री तो थारा कह्या सक, पिण थे तो दापीला निसक।
इम कही उण न घालणा कूडा घणा वठा देणी मुग्न घूडा॥

अथ इहा पिण भीखणजी स्वामी राम मे घणा दिन आडा घालन दोप कहै तिणन इण रीत घणा निपेध्या छै। ते भणी तत्काल कहिणा पिण घणा दिन आडा घालनैं दोप कहिणा नही। तथा स० १८५२ रै लिखत म आया रै मयादा वाधी। तिण म एहवा कह्या—
"किण ही साध आया म दाप देख ता तत्काल घणीन कहिणो क गुरा नैं कहिणा पिण आरा नैं कहिणा नही। किण ही रा टाला मू न्यारो होवण रा परिणाम हुवैं जद पिण और री उतरती कहिण रा त्याग छ। आपमैं टाना रा साध साधविया म साधपणा सरधा तिरा टाला म रहिज्या ठागा मू माहि रहण रा अनत सिद्धा री साख करन पचखाण छ।"

---

1 तथ्यहीन।

अथ इहा पिण दोप देखै तो तत्काल धणी नै कहिणो, के गुरु नै कहिणो, पिण और नै कहिणो नही एहवो कह्यो। तथा पैतालीसा रा लिखत मे एहवो कह्यो—"टोला माहे कदा च कर्म जोगे टोला बारै पड़ै तो टोला रा साव सावविया रा अंश मात्र अवगुण बोलण रा त्याग छै। यारी अंशमात्र संका पड़ै ज्यू आसता ऊतरै ज्यू बोलण रा त्याग छै। टोला मा सू फाड नै साथै ले जावण रा त्याग छै। ओ आवे तो ही साथे ले जावण रा त्याग छै। टोला माहे तथा टोला बारे निकल्या पिण अवगुण बोलण रा त्याग छै। माहो मा मन फाटै ज्यू बोलण रा त्याग छै।"

अथ इहा पिण दोप देख्या धणी नै तथा गुरुनै तत्काल कहिणो कह्यो। और नै न कहिणो। तथा टोला माही तथा बारै निकल्या पछै पिण अवगुण बोलण रा त्याग छै। एहवो कह्यो, ते मर्यादा लोपण रा सर्व रै त्याग छै। इमहिज पचासा रा लिखत में दोप देख्या तत्काल धणी नै तथा गुरा नै कहिणो कह्यो पिण औरा नै न कहिणो। तथा विनीत अविनीत री चोपी मे पिण अविनीत श्रावक ऊपर जोड कीधी तिहा पिण एहवो कह्यो।

१ केइ[1] अवनीत हुवै साध साधवी, कदा गुरु दै लोका नै जतायो रे।
ते जनम कदाग्री[2] साभलै, तो तुरत कहै तिण नै जायो रे॥
२ अवनीत ने तीखो करै घणो, विगड्या नै विसेस विगाडै।
तिण रो मन भागै कूड कपट करी, टोला माहे भेद पाडै॥
३ अवनीत नै पोगा[3] चढाय नै, अवगुण बोलै तिण पास।
ते सुण-सुण नै हरपित हुवै, तेतो बाधै कर्मा री रास॥
४ ओ छानो विगड्यो थो घणा दिनो, पिण लोका मे न पड्यो उघाड।
अवनीत सू एकट किया पछै, परगट हुवो लोक मझार॥
५ दोप देखै किण ही साध मे, तो कहिदै तिण नै एकत।
जोउ मानै नही तो कहिणो गुरुकनै, ते श्रावक छै बुद्धिवत॥
सुविनीत श्रावक एहवा॥ध्रुपदं॥
६ प्रायश्चित दराय नै सुद्ध करै, पिण न कहै औरा रे पास।
ते तो श्रावक गिरवा गम्भीर छै, वीर वखाण्या तास॥

---
१. लय—चंद्रगुप्त राजा सुणो।
२. कदाग्रही।
३ ऊचा चढाकर।

७ उण र मूहटै तो दास कहै नही, उणरा गुर नैं पिण न कहै जाय।
और लोका आगैं कहतो फिरैं तिणरीपरतीतकिण विधआय॥
८ वले साधा नैं आय वदणा करै, साधविया नैं न वाद रुडी रीत।
त्यानैं श्रावक-श्राविकाम जाणज्यो, ते ता मूढमती अवनीत॥
९ तिण श्री जिन धम न ओलख्या वले भण भण करैं अभिमान।
आपछद माठी मति उपज तिण न लागो नही गुर कान॥

अथ इहा पिण भीखणजी स्वामी कह्या—काइ अवनीत साधु हुवै तेहनें गुरु लोकानैं जताया जम कदाग्री सुण तो तिण न जाय कहै। तया वलि कह्यो—दोष दख्या धणी न तथा गुरु न तुरत कहिणो, पिण अनरा नैं न कहणो। इम अनक ठाम और नैं कहणा वरज्या छ ते भणी तुरत दोष रा धणी न तथा गुरुन कहिणा पिण और न न कहिणो तथा घणा दिन आडा घालनैं पिण न कहिणा ए मर्यादा सुध पालणी। किंचित मात्र लापणी नही। तया वलि पचासा रा लिखत मे एहवी मयादा वाधी—'सव साधा नै सुद्ध आचार पालणो न माहामा गाढो हेत राखणो। तिण ऊपर मरजादा वाधी। काइ टोला रा साध साधविया म साधपणो सरधो आप माहि माधपणा सरधा तिको टोला माहि रहिज्यो। कोइ कपट दगा स साधा मला माह रहै तिण नैं अनता सिद्धा री आण छै। पाचू पदा री आण छ। साध नाम धराय नै असाधा भेला रह्या अनत ससार वध छ जिण रा चाखा परिणाम हुवै ते इतरी परतीत उपजावो। किण ही साध-साधवी रा आगुण बोलन किण ही नै फाडन मन भागन खोटा सरधावण रा त्याग छ। किण सू इ साधपणा पलता दीस नही। अथवा स्वभाव किण सू ही मिलता दीस नहा। अथवा कषाय घठो जाणन याइ वनै न राख। अथवा सेनर आछा न वताया अथवा कपडादिक न कारण अथवा अजोग जाणन और साधु गण सू दूरा कर। अथवा आपन गण सू दूरो करता जाणन इत्यादिक अनक कारण ऊपनैं टोला सू न्यारो पड ता किण ही साध-साधविया रा आगुण बोलण रा हुता अणहुता सूचणा काढण रा त्याग छ। रहिस रहिस लोका र सका घालन आसता उतारण रा त्याग छ। वदा कम जाग अथवा साध वस साधा न साधविया न सव टोला न असाध सरध आप म पिण असाधपणो सरध न फेर साधपणा लेय ता ही पिण अठी रा

साव-साधविया री मका घालण रा त्याग छै। खोटा कहिण रा त्याग ज्यू रा ज्यू पालण छै। पछै यू कहिणा रा पिण त्याग छै 'म्हे तो फेर साधपणो लीवो अवै म्हारै आगला सूंस रो अटकाव कोइ नही' यूं कहिण रा पिण त्याग छै। किण ही साव आर्या नै पिण साध आर्या री आसता उतरै साध आर्या री सका पडै ज्यू असाधपणो सरधै ज्यूं वोलण रा त्याग छै।

अथ इहा पिण अवगुण बोलण रा त्याग कराया ते पिण उत्तम जीव सुद्ध पालै, किंचित मात्र लोपवा रा पच्चखाण छै। तथा वावना रा लिखत मे आर्या रै मर्यादा वाधी तिण मे एहवो कह्यो - "किण ही आर्या जाणनै दोप सेव्यो हुवै ते पाना मे लिख्या विना विगै तरकारी खाणी नही कदा कारण पडिया न लिखै तो और आर्या ने कहणो सायद[1] करनै पछै पिण वेगो लिखणो, पिण लिख्या विना रहिणो नही, आयनै गुरा नै मूढै मू कहिणो नही, माहोमा अजोग भापा वोलणी नही, एहवो वावना रा लिखत मे कह्यो, ते मर्यादा पिण सुद्ध पालणी। तथा स० १८३४ रे वर्प आर्या रो लिखत कीयो तिण मे पिण एहवो कह्यो—माहो माही आर्या आर्या नै तूकारा दै तिण नै पाच दिन पाचू विगै रा त्याग। जितरा तूकारा काढै जितरा पाच-पाच दिन रा विगै रा त्याग। तू झूठा वोली छै, एहवा वचन काढै जितरा पाच-पाच दिन विगै रा त्याग। प्रायछित आयो तिण रो मोसो वोलै जितरा पाच-पाच दिन विगै रा त्याग। गृहस्थ आगै टोला रा साव-साधविया री निंदा करै तिण नै घणी अजोग जाणणी, तिण नै एक मास पाचू विगै रा त्याग, जितरी वार करे जितरा मास पाचू विगै रा त्याग, आर्या री माहोमाही री वाता करायनै उण रो परतो वचन उण कनै कहै उण रो मन भागै जिसो कहीनै मन भागै तो १५ दिन पाचू विगै रा त्याग, माहो माही कहै तू सूसा री भागल छै, एहवो कहै तिण रै १५ दिन रा त्याग छै। जितरी वार कहै जितरा १५ दिन रा त्याग छै। आसू काढै जितरी वार १० दिन विगै रा त्याग छै, कै पनरै दिन माहै वेलो करणो। इत्यादि करड़ो काठो वचन कहै तिण नै यथा योग प्रायछित छै। ए विगै रा त्याग छै ते उण री इच्छा आवै जद साधा सू भेला हुवा पहिली टालणा, जो नही टालै तो बीजी आर्या यू कहण पावै नही तू टालहीज, साधा नै कहिदेणो साधा री

---

१ साक्ष्य।

६ कोइ गुरु री आज्ञा लोपी चेलो करै, तिण छोडी छै जिण शासण री रीत।
ते फिट-फिट होसी समझू लोक मे, परभव मे पिण होसी घणो फजीत ॥

७ वैराग्य घटयो नै आपो वस नही, तिण रै रहे चेला करण रो ध्यान।
उण नै शिष्य मिल्यां तो शिथिल पडे, वले वधै लोलपणो नै अभिमान ॥

८ विनीत शिष्य रे शिष्य री मन ऊपनी, पिण गुरु री आज्ञा विन न करै चाव।
तिण आतमा दमनै इन्द्रया वस करी, शिष्य मिल्या न मिल्या सरल स्वभाव॥

६ जो अवनीत आगै घर छोडै तेहनै रे, तो वनीत बोलै सुत्तर रै न्याय।
हु गुरु री आज्ञा विन चेलो किम करु, हु दिख्या दे सूपू गुरु नै जाय ॥

१० केइ उपगारी कठकलाधर साध री, प्रशसा जग कीरत बोलै लोग।
अविनीत अभिमानी सुण-सुण पर जलै, उण रै हरष घटै नै वधै सोग ॥

११ जो कंठकला न हुवै अवनीत रै, तो लोका आगै बोलै विपरीत।
या गाय-गाय रिझाया लोका भणी, कहैहू तत्त्व ओलखाउ रूडी रीत ॥

१२ एहवा अभिमानी अविनीत लोका कनै, एहवी जणावै ऊधी रेस।
उनारे उत्तम साधा री आसता, तिण छोडयो छै सतगुरु नो आदेस ॥

१३ गुरु रा पिण गुण सुण नै विलखो हुवै, ओगुण सुणै तो हरषित थाय।
एहवा अभिमानी अविनीत तेहनें, ओलखाउ भवजीवा नै इण न्याय ॥

१४ कोइ प्रत्यनीक अवगुण बोलै गुरु तणा, अविनीत गुरु द्रोही पासे आय।
तो उत्तर पडउत्तर न दै तेहनै, अभ्यतर मे मन रलियायत थाय ॥

१५ प्रत्यनीक ओगुण बोलै तेहनी, जो आवै उण री पूरी परतीत।
तो अविनीत एकट करै उण सू घणी, ओ गुरु रा अवगुण बोलै विपरीत ॥

१६ वले करै अभिमानी गुरु सू वरोवरी, तिण रे प्रवल अविनय नै अभिमान।
ओ जद तद टोला मे आछो नही, ज्यू विगडयो विगाडै सडियो पान।

१७ ओ खिण माहे रग विरग करतो थको, वले गुरु सू पिण जाये खिणमे रूस॥
जव गूथै अज्ञानी कडा गूंथणा, औरअविनीतसू मिलवा रीमन हूंस॥

१८ जो अवनीत नै अवनीत भेला हुवै, तो मिल-मिल करै अज्ञानी गूझ।
क्रोध रे वस करै गुरु की आसातना, पिण आपो नही खोजै मूढ अवूझ ॥

१९ जो अवनीत अवनीत सू एकट करै, ते पिण थोडा मे विखर जाय।
त्यारे क्रोध अहकार नै लोलपणो घणो, ते टोला मे केम खटाय ॥

२० उणन छोट न छाद चलावण तणी, ते पिण अकल नही घट माय।
वडा रे पिण छांदै चाल सक नही, तिण अवनीत रा दुख माहे दिन जाय॥
२१ पुस्तक पाना न वस्त्र पातरा, इत्यादिक साधु रा उपधि अनक।
गुरु और साधा न देता देग न ता गर सू पिण राग मूरख घण॥
२२ जब कर माहामा भेदा ईसको, वले वाछे उत्तम साधा री घात।
तिण जन्म विगाड्या करे कदागरा करे माहोमा मन भागण री वात॥
२३ एहवा अभिमानी अवनीत री करे भाला मारी कमा परतीत।
उणरा लखणपरिणाम कह्या छै पाडवा वाइ चतुर अटकलसो तिणरी रीत॥

अथ इहा पिण अवनीत नै ओलखाया—गुरु रा गुण सुणी विलखा हुवै, अवगुण सुण राजी हुवै तिण न अवनीत कह्या। प्रत्यनीक अवगुण वाल तिण नै उत्तर पडुत्तर न देवै मन मे रलियायत हुवै तिण न अवनीत कह्यो। आज्ञा विना दीक्षा देव तिण म राग विराग हुवै। विनीता मू इ ईसको मघा कर इत्यादिक अवनीत रा लक्षण कह्या। ए प्रथम ढाल री गाथा कही तथा विनीत अवनीत री चोपीरी तीजी ढाल म एहवा कह्या—

२४ [1]कोइ भगता छ सुवनीत आतमा, गुरु छाद रा चालणहार हो।
जा हेत दख तिण ऊपर गुरु तणा, ता अवनीत मुख द विगाड हो॥
श्री वीर कह्या अविनीत न अति बुरा॥ध्रुपद॥

२५ वनीत ऊपर घणा हेत हुवै गुरु तणा ता अवनीत न दुख हुव साख्यात।
जब ओगुण मूर्ष अणहुता गुरु तणा करे वाछै वनीत री घात॥
२६ वलि अविनीत जाण वनीत मूआ थका पछ म्हारा इज हामी आघ।
एहवा परिणामा पापी वाछै सुवनीत री, तिण लीधा कुगति ना माग॥
२७ वलि आषध भेषद आहार पाणी तणी उ जाणा न पाप अतराय।
दुख असाता वाछ सुवनीत री अवनीत न आलखा ज्ण न्याय॥
२८ गुरु बारा स आया उठ ऊभा हुव पग पूज नम सुवनीत।
अवनीत न लगेइ करणो दाहिना कदा कर नाइ मूडी रीत॥
२९ पग पूज व्यावच करणी अवनीत न ते ता कठिन घणा छ काम।
ते काम पडया अवनीत टाला दिय तिणर प्रबल अविनय न अभिमान॥
३० गुरु भगना ऊपर द्वेष अवनीत रे बल ईसका न घण अत्यन्त।
उणरा छिद्र जाये छ उतारण आसना तिण रा लक्षण जाणै मतियन्त॥

[1] लय पूज्य जी पधारो नगरी सेविया

३१ वले करै वनीत सू मूढ बरोवरी, पिण विनय कियो मूल न जाय।
वले अवगुण न सूझै अवनीत नै आपरा, तिण सू दिन-दिन दुखियो थाय।।

अथ इहा गुरु भक्ता गुरु छादै रो चालणहार तिण ऊपर गुरा रो द्वेत देखी दुख वेदे तिण नैं अवनीत कह्यो। वलि एहवो कह्यो—आहार पाणी ओषधादिक नी अतराय पाडै, दुख असाता वाछै तिण नै अवनीत कह्यो। वलि गुरु वारै सू आया सुवनीत उठ ऊभो हुवै पग पूज नमे। अनै अवनीत नै इतरो करणो दोहिलो कदा करै तो भूडी रीत करै एहवो कह्यो। गुर भक्ता ऊपर धेप राखै वले खेधो ईसको करै। छल छिद्र जोवै वनीत सू बराबरी करै। पोता सू विनय कियो जाय नही, पोता रा अवगुण सूझै नही, तिण रा दुख माहै दिन जाय एहवो कह्यो। तथा विनीत अवनीत री चोपी री चाथी ढाल मे एहवो कह्यो—

१ [1]उज्झिया भोगवती नै घर सूपिया रे, तो करै खजानो खराव रे। सु०।
ज्यू अवनीत नै गण सूपिया रे, तो जावै टोला री आव रे।।
सुगुण जन भाव सुणो अविनीत नो रे लाल।।

२ जिण टोला मे अवनीत छे, तिण सू आछो कदेय म जाण।
तिण री खप करनै ठाय आणज्यो, नही तो परहरो चतुर सुजाण।।

३ ज्यारै शिषा रो लोभ लालच नही, ते तो दूर तजै अवनीत।
गर्ग आचार्य सारीसा रे, ते गया जमारो जीत।।

४ ज्यू अवनीत नै छोडचा थका रे, ज्ञानादिक गुण वधता जाण।
मिट जाय कलेस कदागरो, त्यानै नेडी होसी निरवाण।।

५ अवनीत रा भाव साभली, घणो हर्ष पामै नर-नार।
केइ भारी कर्मा उलटा पडै, त्यारै घट मे घोर अधार।।

अथ इहा उज्जिया भोगवती आदि नो दृष्टात देइ अवनीत नै गण सूपणो नही। अवनीत नै गण सूपवा थकी टोला री आन जावै इम कह्यो। तथा जे गुरु नै शिष्या रो लोभ न हुवै तेहने गर्गाचारज नी उपमा दीनी तथा अवनीत छोडचा थकी टोला मे गुण वधै इम कह्यो। तथा वनीत अवनीत री चोपी री आठमी ढाल मे पिण एहवा भाव कह्या—

---

१ लय : धीज करै सीता सती रे।

१ [1]पालै गुरु री निरन्तर आगन्या, कन राख्या हुवै हरष अपारजी।
वलै वरतै गुरु री अग चेष्टा, तिण सफल कियो अवतारजी॥
श्रीवीर वखाण्यो वनीत नै॥ध्रुपद॥

२ तिणनै करड काठै वचने करी, गुरु सीख दवै किण वार।
ता उ खिम्या करै धम-जाण न, पिण नाणै कोध लिगार॥

३ सुकुमाल कठोर वचन करी गुरु दोघी सीखावण माय।
सुवनीत हुवै ते इम चिंतव मान हित रा कारण होय॥

४ आहार पाणी कपडादिक भोगवै, ते पिण गुरु री आना सहीत।
शिष्य पिण न करै आगन्या विना पाल जिन शासण री रीत॥

५ वले उपधादिक नो जाचवा, इत्यादिक काम अनेक।
वलि देवो लेवो और साधन, गुरु आगन्या विन न करै एक॥

६ उपवास वेलादिक तपस्या करै कर रसादिक परिवार।
ते पिण न करै आगन्या विना वले सलेखणा सथार॥

७ करै व्यावच और साधा तणी, और पासै कराव आप।
ते पिण गुरु आगन्या हुवा, एहवी जिन शासण री थाप॥

८ अ शमात्र करणो करावणो, ते पिण आगन्या लै सुवनीत।
सव काय मे लेणी आगन्या, एहवी वाधी छ अरिहत रीत॥

९ सुवनीत टोला माह रह्या, ते ता सगला नै गमतो होय।
और साधु साथ मेल्या थका, तिण नै पाछो न ठेलै कोय॥

१० गुरु गुरुभाइ न टाला तणा, गुण वोलै रुडी रीत।
लाक पिण गुण ग्राम करता थका सुण-सुण हरपै सुवनीत॥

११ शिष्य शिष्यणी मिल और साधा न मिलै उपधादिक अनेक।
वले कठ कला देखी और नी, वनीत तो हरपै विशेप॥

१२ किण ही साधा रो न कर ईसका, सव साधा र हुव हितकार।
एहवा सुवनीत री वशावली फेल तीनू लोक मझार॥

१३ गमतो लागै तीय च्यार न, जिन सासण रो सिणगार।
एहवा सुवनीत र पासै रह्या, सिखावै विनय आचार॥

१४ केइ क्रोधी अहकारी निरलजा, भेप पहरी कर कपटाय।
इहलोक तणा अर्थी घणा, त्या सू विनय किया किम जाय॥

१५ अवनीत म अवगुण घणा, ते ता जावक छोड वनीत।
विनय रा गुण सगला आदर, त तो गया जमारा जीत॥

१ जीवा मोह अनुकपा न आणिय।

अथ इहा सुवनीत रा लक्षण कह्या, तिणमे कह्यो—आज्ञा विना अशमाल करै नही। वली कह्यो – गुरु आदि सर्व शासण रा गुण गावै। लोक गुण ग्राम करता देखी सुवनीत मुण-मुण नै हरपै साधुपणो पालवारी आज्ञा आराधवारी नीत राखै। वलि कह्यो—क्रोधी अहंकारी निर्लजा भेप पहरी कपटाइ करै। इहलोक रा अर्थी, आछो खाणो पीणो वस्त्र पाव खेत्र आप रै वस रहणो, इत्यादिक पोता रा स्वार्थ पूगा राजी, गुरु ना गुण गावै। अने गुरु आछो खेत्र न भोलावै तथा आहार पाणी वस्त्रादिक मन गमता न देवै तथा जुदो न विचरावै वीजा छोटा वडा रै लारै मेलै जद मूढो विगाडै, अवगुण बोलै, तिण पोता नो स्वार्थ ओलख्यो, पिण साधुपणो आज्ञा न ओलखी, इसा इहलोक रा अर्थी त्या सू विनय करणो आवणो अति कठिन छै। ए अवनीत रा लक्षण सर्व छोडै वनीत रा गुण सर्व आदरै पैंतालीसा रा वरस रा लिखत मे अशमाल अवगुण बोलण रा त्याग कह्या छै। ते माटे उतरती वात करै ते भाग्यहीण, मन सहित सुणै ते पिण भाग्यहीण, तथा सुणी आचार्य ने न कहै ते पिण भाग्यहीण, या तीना नै तीर्थंकर नो चोर कहणो, हरामखोर कहणो, तीन धिकार देणी।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि ण पूयंति, जेण जाणंति तारिसं ॥
आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था विण गरहंति, जेण जाणंति तारिसं ॥

२ इति दशवैकालिक[1] में कह्यो। ते आज्ञा अखड आराध्या, इहलोक परलोक मे सुख कल्याण हुवै।

इति जयाचार्य कृत वडी हाजरी।

---

१ दसवैकालिय, ५।२।४५, ४०

दूजी हाजरी

पाच सुमति तीन गुप्ति पच महाव्रत सुध पालणा। ईर्या भाषा एषणा म साव चेत रहणो। आहार पाणी लेणो त पकी पूछा करी लेणा। निर्दोष पिण घणी हठ मनुहार सू लेणा। दवाल' ना मन घणा तीखा रहै ज्यू लेवै त चतुर, दातार ना अभिप्राय देखै नहीं त मूरख, वस्त्रादिक लेता मेलता पूजता परठता उपयोग तीखा राखणो। इमहिज गुप्ति महाव्रत म सावचेत रैहणो। गुरारी आना ऊपर दृष्टि तीखी राखणी। आना अखड अराघ ते विनीत। तया भीखणजी स्वामी री मर्याद शुद्ध पालणी। पैंतालीसा रै वर्ष मर्याद बाधी "आचार रा सावा रा सूतर री अथवा कल्प रा बोल री समझ न पटे ता गुरु तथा भणणहार साधु कहै ते मान लेणा कह्या, न बस ता केवली न भलावणो कह्या।

इमहिज सम्वत १८५० तथा ५६ रा लिखत मे कह्या— सरधा आचार रा बोल वडा सू चरचणो, वडा कहै ते मान लेणा, पिण आरा स चरच न शका घालणी नहीं'

तया पैंतालीसा रा लिखत म कह्या— साधारा मन भागन आपरै जिल कर ते ता महाभारी कर्मों, विश्वासघाती जाणवो। इसडी घातपावडी कर त ता अनन्त ससार नी साई छ। इण मर्यादा प्रमाण नहीं चालणी आवै तिण नै सलेखणा करणी सिर छ एहवो कह्यो।' तया और लिखत म रास म पिण जिला बाधणा निखध्या छ। त मिल २ न जिला बाधण रा त्याग छ। तया बावना रा लिखत म कह्या— किण ही साधु आय्या माहै दोष देख तो तत्काल धणी न कैहणा, कै गुरान कहणो पिण और न न कहिणा। तया पचासा रा लिखत म कह्या— किण ही साधु आय्या म दोष देख तो तत्काल धणी नै कैहणा अथवा गुरु न कैहणा पिण और न न कैहणा। घणा दिन आडा घालनै दोष बतावै ता प्रायश्चित रा धणी आहिज छै। प्रायश्चित रा धणी न याद आव ता प्रायश्चित उण न पिण लेणा, नहीं लेवै ता उण न मुसकल छ एहवा पचासा रा लिखत म कह्यो। तया वनीत अवनीत री चोपी म पिण एहवो गाथा कही छ।

१ दोष' देख किण ही साध म, ता कह देणा तिण न एकतार।
जो उ मान नहीं ता कहिणा गुरु भनै, ते श्रावक छ बुधिवता र॥
गुवनात श्रावक एहवा॥

---

१ दोषा। २ सच—चन्द्रगुप्त राजा गुणा।

२ प्राछित दिराय नै सुध करै, पिण न कहै अवरा पास।
ते श्रावक गिरवा गंभीर छै, वीर वखाण्या तास ॥

३ दोप रा धणी ने तो कहै नही, उणरा गुरु नै पिण न कहै जाय।
और लोका आगे वकतो फिरै, तिणरी परतीत किस विध आय ॥

४ साधा ने आय वन्दना करे, साधविया नै न वादे रुड़ी रीत।
त्याने श्रावक श्रावका म जाण जो, ते ऊधमती अवनीत ॥

इत्यादिक अनेक ठामै दोप रा धणी ने तथा गुरा ने कहणो कह्यो, पिण औरा ने न कहिणो, एहवो कह्यो। तथा घणा दिना पछै कहणो रास मे तथा साव सीखावणी ढाल मे तथा दुहा मे घणा दिना पछे दोप कहै तिण नै अपछदो कह्यो, निर्लज कह्यो, नागडो कह्यो, मर्यादा नो लोपणहार कह्यो, कपाय दुष्ट आत्मा रो धणी कह्यो, तथा अनेक लिखत मे वरज्यो। तथा पेतालीसा रा लिखत मे इम कह्यो—"टोला माहि छता कदाच कर्म जोगे टोला वारै पडै तो टोला रा साध साधविया रा असमात्र अवगुण वोलण रा त्याग छै। यारी असमात्र शका पड़े ज्यू ने आसता ऊतरै ज्यू वोलण रा त्याग छै। टोला मां सू फाड़ने साथ लेजावण रा त्याग छै। ओ आवै तो ही ले जावण रा त्याग छै। टोला माहिनै वारै नीकल्या पिण अवगुण वोलण रा त्याग छै। माहो मा मन फाटै ज्यू वोलण रा त्याग छै। ए सर्व पेतालीसा रा लिखत मे कह्यो। टोला माहै छता तथा टोला वारै पडै तो पिण साधु-साधविया रा असमात्र अवगुण वोलण रा त्याग छै। एहवो भीखणजी स्वामी कह्यो ते मर्यादा सुध पालणी।

तथा सम्वत् १८५० रा वर्ष भीखणजी स्वामी मर्यादा वाधी तिण मे एहवो कह्यो—एक दोप सू वीजो दोप भेलो करै ते अन्याई छै, जिण रा परिणाम मेला होसी ते साधु साधविया रा छिद्र जोय-जोय नै भेला करसी, ते तो भारी कर्मा जीवा रा काम छै। डाहो सरल आत्मा रो धणी होसी ते तो इम केहसी—कोई ग्रहस्थ साधु साधविया रो स्वभाव प्रकृति ग्रथवा दोप कोई कहि वतावे तिण नै यू कहिणो—"मौने क्यानै कहो कै तो धणी नै कहो, कै स्वामीजी नै कहो ज्यू याने प्राछित देई नै शुद्ध करै, नही कैहसो तो थे पिण दोपीला गुरारा सेवणहार छो। स्वामीजी नै न कहिसो तो थामै पिण वाक छै। थे म्हानै कह्या काई होवै इम कहीनै न्यारो

हुवै पिण आप बदा म क्याने पडे। पेला रा दोष धारने भेला करै ते तो मपावादी अयाई छ। किण ही नै खेत्र काचा वताया, किण न कपडा-दिक मोटा दीधा इत्यादिक कारणै कषाय उठै जद गुरवादिक री निंद्या करण रा न अवरणवाद बालण रा न एक एक आग बोलण रा माहा मा मिलने जिला बाधण रा त्याग छै। अनता सिद्धारी आण छ। गुरवादिक आगै भेला आपरै मुतलब रह पछ आहारादिक थाडा घणा रो कपडादिक रा नाम लेइने अवरणवाद बालण रा त्याग छ। ए सब पचासा रा लिखत म भीखणजी स्वामी कह्या—त मर्यादा सब सुध पालणी एहवा कह्या। तथा बावना रा लिखत म भीखणजी स्वामी आय्या रे मर्यादा बाधी तिण म कह्या—किणही न खेत्र आछा वताया रागद्वेष करन वात चलावण रा त्याग छ। खत्र आश्री वात चलावण रा त्याग छ। चोमासा कहै तिहा चामासा करणा। शप काल वडा कहै तिहा विचरणा। किण ही साध आय्या दोष जाणन सेव्या हुव त पाना म लिख्या विना विग तरकारी खाणी नही। कदाच कारण पड्या न लिख तो और आय्या न कहणा, सायद करन पछ पिण वगा लिखणा पिण लिख्या बिना रहणा नही। किण ही आय्या आज पछ अजागाइ कीधा तो प्राछित ता दणा पिण उणन च्यार तीथ म हलणी निंदणी पडसी। पछ कहाला म्हान भाडे छ, म्हारा फितूरा कर छ, तिणमू पेहलाइज सावचत रहीजा, सावधान न रह्या ता लाका म भूडा दीसाला। पछै कहाला म्हान कह्या नहा। ए सब बावनारा लिखत में भीखणजी स्वामी आय्या र मर्यादा बाधी तिण में कह्या तिण प्रमाण प्रवर्तणा। ए मर्यादा लोपणी नहीं।

तथा चातीसा रा लिखत म कह्या छ— ग्रहस्य आग टालारा साधु-साध्वियारी निंदा करै तिण न ता घणी अजाग जाणणी। तिण न एक मास पाचू विग रा त्याग एहवा कह्या। मर्यादा लोपणी नहीं आता विना प्रवर्तै तिणन भीखणजी स्वामी पचासा रा लिखत म एहवा कह्या— 'साधा' मर्यादा बाधी छ तिण प्रमाण सगला र त्याग छ। उवा मर्यादा पिण उलघवा रा त्याग छ। जा किण ही साधु मर्यादा उल्लघणा कीधो अथवा आगन्या माह नहा चलिया अथवा किण न अथिर प्रणामी दख्या अथवा टाला माही टिकता न दख्या ता गहस्थ न जणावण रा भाव छ। साधु साधव्या न जणावण रा भाव छ। पछ कहाला म्हारा

लोका माहे आसता उतारी तिण सू घणा सावधान पणै चालजो। एक-एक ने चूक पडया तुरत कहीजो। म्हा ताई कजीयो आणजो मती। उठे रो उठे निवेडजो। ए मर्यादा पचासा रा लिखत मे आज्ञा उपरत तथा मर्यादा उपरत प्रवर्त्तै तिणनै इण रीते निखेध्यो छै, ते भणी आज्ञा मर्यादा मे तीखो प्रवर्त्तणो। सर्व साधु साधव्या री नै शासण री वारता तीखी करणी, ऊतरती न करणी।

पैतालीसा रा लिखत मे असमात्र अवगुण वोलण रा त्याग चाल्या छै ते भणो ऊतरती वात करै तथा मन सहित सुणै तथा सुणी आचार्य ने न कहे तिणनै तीर्थंकर नो चौर कहिणो, हरामखोर कहणो।

"आयरिए आराहेइ, समणे आवि तारिसो।
गिहत्था विण पूयंती, जेण जाणति तारिस ॥
आयरिए नाराहेइ, समणेयावि तारिसो।
गिहत्था वि ण गरहति, जेण जाणति तारिस ॥

दशवैकालिक[1] मे कह्यो। ते मर्यादा आज्ञा सुध आराध्या इहभव परभव सुख कल्याण होवै।

ए छोटी हाजरी नी स्थापना लिखी सवत् १९१० वस्त पचमी वहस्पतिवार उदैपुर मध्यै।

१ दसवेआलिय, ५/२/४५,४०

तीजी हाजरी

सब साधु साधवी पच सुमति तीन गुप्ति पच महाव्रत अखण्ड अराधवा। आहार पाणी लेणो ते पर्छ पूछा करी ताय तपाय न लणा। परी चाक्स निग करन दवाल न दणो, लेवाल नै लेणो। तथा आहार करता पर्छ जणा करी वालणा। उधा हाथ न दणा, तिरछा हाथ न देणा, पुणचो न दणा, अलगा हाथ न राखणा। पडिलेहण करता मारग चालता न बोलणा। आहार करता अजेणा सू बालता पडिलहण करता बालता, मारग चालता बालता या तीना रा साचा तथा पूठा सूचणा वाढे ता समभाव सू अगीकार करणो पिण बीजा शब्द न बालणा।

तथा भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धात दख विविध मयाद बाधी, त पचासा रा लिखत मे कह्या—'किण ही साध आय्या म दाप दख ता तनकाल धणी न कहिणा अथवा गुरु न कहिणो, पिण औरा न न कहिणा।'

इमहिज बावनारा लिखत म कह्या तथा इमहिज वनीत अवनीत री चापी म कह्या। तथा वने माध सिखावणी ढाल म तथा राम म तथा पचासा रा लिखत म घणा दिरा आडा घालन दाप बताव तिण नै निषध्या छ।

तथा पतालीसा रा लिखत म एहवा कह्या—टाला माह कषार कम जाग टोला बार पर ता टोला रा साध साधविया रा अम मात्र आगुण बालण रा त्याग छ। तथा पचासा रा लिखत म साधा र मयादा बाधी तिण म एहवा कह्या—किण ही न गत्र खाचा बताया किण ही न कपडादिक माटा दीधा इत्यादिक कारणा कषाय उठ जद गुरुआदिकरी निदा करण रा अवरणवाद बालण रा, एक एक आग बालण रा माहामा मिलन जिका बाधण रा त्याग छ। अनता सिद्धारी आण छ। गुरुयादिक आग भला ता आपर मुननर रहै, पछ आहारादिक थाडा घणा रा, कपडादिक रा नाम लइ अवरण-वाद बालण रा त्याग छ एहवा पचासा रा लिखत म कह्या त मयादा शुध पालणा।

तथा बावना रा लिखत म आर्या र मयादा बाधी तिण म एहवा कह्या—किण न खेत्र आछा बताया राग द्वेष करा बाम सलावण रा त्याग छ। खत्र आश्री कपडा आश्री आहार पाणी आश्री आरयादिक आश्री बाम सलावण रा त्याग छ। चोमासा करै तिहा चोमासा करणा। शेषकाल यद्दा कहै तिहा विचरणा। तथा किण ही आर्या दाप जाणन राख्यो हुव ता पाना म लिख्या बिना बरतारी साख्यी नहा। कषाय कारण पडपा न लिख

तो और आर्य्या नै कहिणो। सायद करने पछै पिण वेगो लिखणो, पिण विना लिख्या रहिणो नही। आय गुरा ने मुडा सू कहिणो नही। मांहो मा अजोग भाषा बोलणी नही—एहवो वावना रा लिखत मे कह्यो ते मर्यादा सुद्ध पालणी।

तथा पेतालीसा रा लिखत मे एहवो कह्यो उणनै साधु किम जाणिये जो एकलो ह्वैणरी सरधा हुवै, इसडी सरधा धारनै टोला माहि वेठो रहे, म्हारी इच्छा आवसी तो माहे रहिसू, म्हारी इच्छा आवसी जव एकलो हुसू, इसडी सरधा सू टोला माहे रहै ते तो निश्चै असाध छै। साधपणो सरधै तो पहिला गुणठाणा रो धणी छै। दगावाजी ठागा सू माहे रहै तिण नै माहे राखे जाणने, त्यानै पिण महादोष छै। कदाच टोला माहे दोष जाणै तो टोला माहे रहिणो नही। एकलो होय नै सलेखणा करणी, वेगो आत्मा रो सुधारो करणो, आ सरधा हुवै तो टोला माहे राखणो, गालागोलो करनै रहै तो राखणो नही, उत्तर देणो, वारे काढ देणो, पछै आल दे नीकलै तो किसां काम रो।

तथा चोतीसा रा वर्ष आर्य्या रै मर्यादा वाधी तिण मे कह्यो—"ग्रहस्थ आगै टोला रा साध आर्य्या री निंद्या करे तिण नै घणी अजोग जाणणी। तिणने एक मास पाचू विगै रा त्याग, जिती वार करै जिता मास पाचू विगै रा त्याग। तथा आसू काढै तथा तुकारादिक करड़ा काठा वचन रो प्राछित कह्यो ते पिण सुद्ध पालणी।

तथा पैतालीसा रा लिखत मे एहवो कह्यो—"वले कोई अचार्य मर्यादा वान्धी ते याद आवै ते पिण कवूल छै।

तथा पचासा रा वर्ष रा लिखत मे कह्यो वले कोई करली मर्यादा वाधै तिण मे ना कहिणो नही। आचारनी संका पडचा थी वले कोई याद आवै ते लिखा ते पिण सर्व कवूल छै। ए मर्यादा लोपण रा अनता सिद्धा री साख कर नै पचखाण छै। जिणरा परिणाम चौखा हुवै, सूस पालण रा परिणाम हुवै ते आरे होयज्यो। सरमासरमी रो काम छै नही।

तथा गुणसठ रा वर्ष रा लिखत मे कह्यो—"टोल्या सू न्यारो हुवै तो इण सरधा रा भाई वाई हुवै तिहा रहिणो नही। एक वाई भाई हुवै तिहा रहिणो नही। वाटै वहितो एक रात कारण पडिया रहै तो पांच विगै नै सूखडी खावारा त्याग छै। अनन्ता सिद्धारी साख करने छै।"

तथा पचासा रा वर्ष रा लिखत मे कह्यो जिण रो मन रजामद हुवै चोखी तरह साधपणो पलतो जाणो तो टोला माहे रहिणो। आप मे अथवा पेला मे साधपणो जाणनै रहिणो। ठागा सू माहे रहिवारा अनत सिद्धारी साख सू पचखाण छै—एहवो पचासा रा

लिखत मे कह्यो । इत्यादिक अनेक भीखणजी स्वामी मर्यादा वाधी, वले गोई आचाय मयादा वाधे ते सव साध साधव्या र लोपवारा त्याग छै जावजीव लगै । तथा श्रावक क्ने कोई अवनीत साधु श्रावक उतरती वात अवगुण रूप करैं तो वनीत श्रावक तिण अवनीत साधु श्रावक न निखेद दव, अन तिण वात कही ते आचाय नैं सव सुणाय देवैं ते सुवनीत रा लगण छ । पतालीसा रा लिखत मे अस अवगुण वालण रा त्याग चाल्या छ, ते भणी आचार्यादिक सव साधवारा अवगुणवाद वालण रा त्याग छै । तिण मू गुण रूप वार्ता करणा पिण अवगुण रूप लेहर म वोलण रा अनता सिद्धारी साख करनै सव साध सावव्या र पचखाण छै । उतरत्ती वात्ता काई कहै तथा मन सहित सुण ते पिण भाग-हीण, तथा सुणी आचाय नैं न कहै ते पिण भाग-हीण या तीना न तीर्थंकर नो चोर कहणो हरामखोर कहणा, तीन धिरकार देणी । ए सव सुणाय ने आचाय गत दिवस वार्ता मव साध साधवीया नैं पूछैं—कोई कपाय रे वश शब्द वोल्या तथा हास्य रे वश वाल्या तथा उत्तरता शब्द वोल्या ए सव जाण अजाण शब्द वोल्या तथा सुण्या ते सव कहणा । तथा माग चालता पडिलेहण करता और ही हरेक गणी पूछैं तो जयातथ अरज करणी । आचार गाचर म सावचेत रहिणा । भीखणजी स्वामी रा लिखत ऊपर दृष्ट तीखी राखणी । पासत्या उसना कुसोलिया अपछदा टालाकर नी सगति न करणी । कम जोगे टोला थी टले अथवा कठणाई मे चालणी नही आव, आहा रादिक री लोलपी घणो अथवा चोकडी र वस थइ आग्या पालणी आपरा छादा रुवणो ए दोरो जद वक्र बुद्धि हाय गण वारैं नीकल, अवगुणवाद घणा वोल पेटभराई वास्ते अनेक ऊधी-ऊधी परूपणा कर, लोका न वहकावा नै अजोग-अजाग निंद्या कर, केइ वेपत्ता अक्ल विना एकला लाज छोडी फिरता फिर तिणने श्री भीखणजी स्वामी एकल रा चोढाल्या मे निखेद्या छ । ते गाथा—

दूहा

१ आरम्भ जीवी गहस्थी, फिर त्यारी नेश्राय ।
अन्य तीर्थी पासत्यादिक ते पिण तेहवा थाय ॥

२ केई वेरागैं घर छोडन, राच विषै रस रग ।
राग द्वेष व्याकुल थका करैं व्रत नो भग ॥

३ रित पामैं पाप कम म, सावज सरणो मान ।
गण छोडी हुवैं एकला, कूड कपट री खान ॥

४ न्यात लजाव पाछली, वले भेष लजावणहार ।
एहवा मानव फिर एकला, धिग त्यारो जमवार ॥

५ घणा मे रहै सकै नही, ते एकलडा थाय।
कुण कुण दोष तिण मे कह्या, ते सुणज्यो चित्त ल्याय ॥

१ 'आप छादै फिरै छै जे एकला, ते जिन मारग मे नही रे भला।
साध श्रावक धर्म थकी टलिया, ससार समुद्र माहै कलिया॥ध्रुपद॥

२ एकलो देखनै लोग पूछा करै, घणो क्रोध करै त्यासू रे लडे।
केई वदे नही जब मान वहै, करडा वचन तिण ने रे कहै॥

३ कपटाई घणी छै एकल तणी, सूत्र मे भाखी त्रिभुवन घणी।
वले लोभ घणो छै वोहलपणै, श्री वीर कह्यो छै ऐकल तणै॥

४ वहु आरभ नै विषै रक्त घणी, सचो करे वज्र पाप तणो।
नटनी परै अर्थी भोग तणो, वहु भेख धरै माढे ग्रिधपणो॥

५ घणै प्रकारे वुरतपणो, सके नही करतो कर्म रिणो।
अध्यवसाय वर्त्ते मन रा अति ही घणा, सठ पणै छै एकल तणा॥

६ वहु कोहे माणे माया लोभ पणो, रडे नडे सढे सकल्प घणो।
ए आठ अवगुण घट मे वर्त्ती, हिंसादिक आश्रव नो अर्थी॥

७ वले साधुनो लिंग लिया रहै, कर्मे आछादयो एम कहै।
हू सुध चारित्रियो आचारी, सतरे भेदै सजमधारी॥

८ रखै कोई देखै अकारज करतो, आजीवका अर्थी रहै डरतो।
अज्ञान प्रमाद सु दोप भरयो, निरतर मुढ मोह्यो कुपंथ पडयो॥

९ जिण धर्म न जाणै आप छादे रह्या, त्याने कर्म वाधण नै पडित कह्या
पाप करण सू अलगा रहै नही, तिणनै ससार मे भ्रमण कही॥

१० आचारग पचमै अधेने आख्यो, पहलै उदेसै जिण भाख्यो।
ए चरित कह्या छै एकल तणा, इण अनुसारे तो अति ही घणा॥

११ एहवा अपछदा अवनीत, त्या छोडी धर्म तणी रीत।
निरलज भागल विपरीत, किम आवै त्यारी परतीत॥

१२ उसन्नादिक पाचू तणी, सगति वरजी छै त्रिभुवन घणी।
ए मोख मार्ग ना छै फदा, एहवा छै जैन तणा जिदा॥

१३ त्या छोडी लोकिक तणी लजिया, सका नही आणै करता कजिया।
दोपण काढया तो तपता रहै, ते आया परिसा केम सहै॥

लय – समरु मत हरप।

इम इत्यादि एकलन घणो निषेध्यो, ते भणी तेहनी सगत न करणी। तथा पतालीसा रा लिखत मे कह्या—टोला माह कदा कम जोग टाला वारै पडै तो टोला रा साध साधवियां रा अममाव अवणवाद वोलण रा त्याग छै। यारी अममात्र सका पड आमता उतरै ज्यू वोलण रा त्याग छै। टोला मा सू फारन साथ ल जावण रा त्याग छ। माहो मा मन फाटै ज्यू वालण रा त्याग छ। उ आवै तो ही ले जावा रा त्याग छै। टोला माह न वारै नीकल्या पिण अ समात्र अवगुण वालण रा त्याग छ।

इम पेतालीसा रा लिखत म कह्या। त भणी सासण री गुणात्कीत्तन वात करणी। भागहीण हुवै सो उतरती वात कर भागहीण सुण सुणी आचाय नै न कहै ते पिण भागहीण।

आयरिए आराहई, समणे या वि तारिसो।
गिहत्थावि ण पूयति, जेण जाणति तारिस॥
आयरिए नाराहई, समणे या वि तारिसा।
गिहत्था विण गरहति जेण जाणति तारिस॥

इति[1] दसवकालिक म कह्या ते भणी आना मर्यादा सुध अराध्या इहभव परभव सुख किल्याण हुव।

---
१ दसव आलिया ५।२।४५ ४०

चोथी हाजरी

समत १८३२ सा रै वर्ष भीखणजी स्वामी मरजादा बाधी तिण मे कह्यो—सर्व साध साधवी एकरी आज्ञा माहे चालणो, एहवी रीत बाधी छै । कोइ टोला मा सू फाडा तोडो करनै एक दोय आदि नीकलै, घणी धुरताई करै, बगुलध्यानी हुवै, त्यानै साध सरधणा नही, च्यार तीर्थ माहै गिणवा नही । याने चतुरविध सघ ना निंदक जाणवा । एहवा नै वादे पूजे तिके पिण आज्ञा वारै छै एहवो वतीसा रै वर्ष कह्यो ।

इमहिज गुणसठा रै वर्ष मर्यादा वान्धी तिण मे कह्यो—उसभ कर्म जोग सू टोला वारै नीसरै तिणनै साध सरधणो नही । कदा कोई फेर दिख्या ले आगला साधा नै असाध सरधायदानै तो पिण उणने साध सरधणो नही । उणने छेरविया तो उ आल दे काढै तिणरी एक वात मानणी नही । उण तो अनन्त ससार आरै कीधो दीसै छै । कदाच कर्म धको दीधा टोला सु टलै तो उणरै टोला रा साध साधव्या रा अ समात्र हुता अणहुता अवर्णवाद वोलण रा अनत सिद्धा री नै पाचोई पंदा री आण छै पाच पदा री साख सू पचखाण छै । किण ही साध साधविया री सका पडै ज्यू वोलण रा पचखाण छै । कदा उ विटल होय सूस भागे तो हलुकर्मी न्यायवादी तो न माने उण सरीषो विटल कोई माने तो लेखा मे नही । किण नै कर्म धको देवै ते टोला सू न्यारो पडै तथा न्यारो करै अथवा आप ही टोला सू न्यारो हुवै तो इण सरधा रा भाई वाई हुवै तिहा रहिणो नही । एक वाई भाई हुवै तिहा पिण रहिणो नही । वाटे वहता एक रात, कारण पड़िया रहै तो पाचूइ विगै सूखडी खावा रा त्याग छै । अनन्त सिद्धारी साख कर छै । वले टोला माहे उपगरण करै, पाना परत लिखे, टोला माहे थका परत पाना पात्रादिक सर्व वस्तु जाचै ते सर्व साथे ले जावा रा त्याग छै—एक वोदो चोलपटो मुहपती एक वोदी पिछे-वडी खडिया उपरत वोदा रजूहरणा उपरत साथे ले जावणा नही । उपगरण सर्व टोला री नेश्राय साधा रा छै । ओर असमात्त साथे ले जावण रा पचखाण छै । अनता सिद्ध री साख करीनै छै, ए सर्व गुणसठा रा वर्ष रा लिखत मे कह्यो छै ।

तथा पचासा रा लिखत मे पिण एहवो कह्यो—"टोला सू न्यारो पडै तो किण ही साध साधविया रा हुता अणहुता अवगुण तथा खूचणो काढण रा त्याग छै । रहिसैं-रहिसैं लोकॉ रे सका घालीनै आसता उतारण रा त्याग छै । किण ही साध आर्य्या मे दोष देखे तो ततकाल धणी ने कहणो अथवा गुरा ने कहिणो पिण औरा नै न कहिणो । पिण घणा दिन आडा घालनै दोष वतावै तो प्राछित रो धणी उ ही छै ।"

तथा बावनारा लिखत मे पिण इम कह्यो--किण ही साध आर्य्या माह दोष देखे तो ततकाल धणी ने कहिणो के गुरा ने कहिणो पिण औरा ने कहिणो नही। तथा पैंतालीसा रा लिखत मे पिण कह्यो--टोला माह पिण साधारा मन भागनै आप आप रै जिले करै, ते तो महाभारी कर्मो जाणवो, विसवासघाती जाणवो। इसडी घात पावडी करै ते तो अनन्त ससार नी साई छ। इण मर्याद प्रमाण चालणी नावै तिणन मलेखणा मडणो मिरै छै। तथा पचासा रा लिणत मे पिण जिला नै निषेध्यो। तथा रास म पिण श्री भीखणजी स्वामी जिला ने निषेध्यो छ। ते गाथा—

ढाल

१ 'तिणनै गुर कहै महज मे सूधो, तो उ पड जाए मूल ऊधो।
तिण रा लखण घणा छै माठा, उलटा गुरनै कहै करला काठा॥
२ गुरु न करलो काठो कहणा पाछो, आ तो किम्तव जाणिया आछो।
तिणरी फिर गई सवली दिष्ट, हुआ जिण माग थी भिष्ट॥
३ तिणनै गुर करलो कहै किण वारै जव उ अवनीत पास पुकार।
जब अवनीत कहै उण न एम, थे पाछा कह्यो नही केम॥
४ इसडी करै अविना री थाप, माहो माह कियो त्यारै मिलाप।
वल जिलो वाधण र काज, हिवै कुण-कुण करै अकाज॥
५ हिवै मिल २ नै करै चारी, गण मे कर फारा तोडी।
उणरी वात करै उण आगै, जिण विध माहो मा कलह लागै॥
६ गुरु सू पिण मेले मूरष डाडी, तिण भेष लेई आतम भाडी।
गुरु सू चेला हुवै उदास, तेहवी वात कहै तिण पास॥
७ किणनै कह था उपर द्वेष, त अरवर ल्यो दख।
किणनै कहै थारी कीधी उतरती, मो आगै पिण कीधी परती॥
८ किणनै वले कहै छ आम, थान लोलपी कहै छ ताम।
किणनै कहै थानै कहता वेणा, इण नै मही कपडो नही देणा॥
९ किणनै कहै थे प्राछित लीधो ते ता मो आगै कह दीधा।
त्यारी आसता एम उतार, वल निंद्या कर पूठ लारै॥
१० किणन कहै थानै कहता चारो, किणन कहै थासू हेत थोडा।
किणन कहै थानै कहिता अवनीत, किणनै कहै थारी कर अप्रतीत॥

१ सप—तिनरा भाव सुण-सुण गूज।

११ किणनै कहै थानै नही भणावै, किणनै कहै थानै नही बतलावै ।
किणनै कहै थानै रोगी जाणै, पिण ओपद कदेय न आणै ।।
१२ किणनै कहै थानै चौमासे काल, लावो खेतर बतावै टाल ।
आछै खेतर थानै नही मेलै, शेपै काल पिण इमहीज ठेलै ।।
१३ किणनै कहै थारो न करै विस्वास, माहै रहवारी न धरै आस ।
जिण विध गुरु सू जागे द्वेप, तेहवी करै वात विशेप ।।
१४ जिण विध गुरु सू मन भागै, तेहवी वात करै उण आगै ।
जिण विध गुरु सू हेत टूटै, तेहवी बात करे पर पूठै ।।
१५ इण विध साध साधवी फारै, गण मे भेद इण विध पाडै ।
गुरु सू परिणाम उतारै, मुध साधा ने मूढ विगाडै ।।
१६ वले गुरु मे अवगुण दरसावै, झूठा-झूठा दोप बतावै ।
वले निंद्या करै छानै-छानै, जिण रै उसभ उदै ते मानै ।।
१७ जिणनै गुरु सू करै उपराठो, आपरो कर राखे काठो ।
तिणनै निसक आपरो जाणै, तिणनै घणो-घणो वखाणे ।।
१८ और साध मेले उण साथ, जब पिण करै विस्वासघात ।
उणनै फार करै आप कानी, पछै निंद्या करै मनमानी ।।
१९ इण विध करै फारा तोडी, गुरु सू छानै-छानै करै चोरी ।
त्या सू छानै-छानै जिलो बाधे, जिण धर्म न ओलख्यो आघे ।।
२० माहोमा मिलनै जिलो बान्धे, गुरु आज्ञा विण आपरे छादै ।
इसडो करै अकार्य खोटो, तिणनै दोप लागे छै मोटो ।।
२१ एहवा दोष री कर राखै थाप, पछै सेवै निरंतर आप ।
वले साधू नाम धरावै, तो उ पहिलै गुण ठाणै आवै ।।
२२ जो उ दोष नै दोप न जाणै, तो पिण पहिलै गुणठाणै ।
ते तो मूढ मिथ्याती पूरो, पडियो च्यार तीर्थ थी दूरो ।।
२३ तिणरे सरधा जमाली री आड, मूलगी पूजी सर्व गमाई ।
सम्यक्त साधूपणो खोयो, जिलो वाध नै जन्म विगोयो ।।
२४ एहवा गैरी थका गण माय, तिणरी गुरु ने खबर न काय ।
मुख उपर करै गुण ग्राम, छानै २ करै एहवा काम ।।
२५ गुरू रै मुख तो गुण गावै, छानै अवगुण दरसावै ।
मुख उपर तो बोलै राजी, छानै करै दगाबाजी ।।

२६ वले वादे गुरू न जोडी हाथा, पगा मे नित २ देव माथा।
वादताई कर गुण ग्राम, सारा पहलो ल गुर रो नाम ॥
२७ वले लोका नै वदणा सिखावै, त्यामैं पिण गुरु ना नाम घलाव।
लोका आगै करै गुणग्राम, पिण मन रा मला परिणाम ॥

इम अनेक प्रकारे जिला ने निखेध्या छै। मुहडे ता मीठो वोले गुरु रा गुण गाव अनै छानै छान दगावाजी कर इसडा अवनीत दुष्ट अजोग प्रतनीक मुखअरी न भगवान कुह्या काना री कुतरी भडसूरी री ओपमा दीधी छ। तथा वने भीखणजी स्वामी पिण अवनीत रा लखण ओलखाया ते गाथा—

१ छिद्र[1] पही छिद्र धारी राखै कदे काम पडे जव कहै दाखै।
तिणरे चरित्र पालण री नही नीत, इसडा भारी कर्मा अवनीत ॥
२ और साधु ने दोष लागो देखी, जा उ तुरत कहै तो निरापेषी।
आ सुध साधारी छाडी रीत। इसडा ॥
३ गुर री निंद्या करै छानै छान तिण अवनीत री वान अवनीत मान।
ते चिहु गति म हासी फजीत। इसडा
४ छानै छानै टोला मे जिलो वाध, गुरु आना विण आपर छाद।
तिण सजम सहीत खाई प्रतीत। इसडा ॥
५ गुरु मू चेला रा मन फाडै, वले टाला माह मूख भेद पाडे।
कूड कपट कर २ वाले विपरीत। इसडा ॥
६ सतगुर री वात देवे ठेली, अवनीत रा तुरत हुवै मेली।
तिण छोडी सतगुर स प्रीत। इसडा ॥
७ गुर नै वाद तिक्खुता रा पाठ गुणी, पिण मन माह आघट घाट घणी।
छल खेल कपट दगा सहीत। इसडा ॥
८ जिण सू हेत राखे तिणरा दोप ढके तूटा हेत देता आल नही सके।
पछै मन मानै ज्यू वाल नसीत। इसडा ॥
९ ते नागा निरलज होय वेठा त्यान वतलाया वचन वाल घेठा।
त्यार सजम रूप गिस गई भीत। इसडा ॥
१० अवनीत मण मण उलटो बूहे कर-कर अभिमान वेम तूड।
तिणर विना नरमाई नही घट भीत। इसडा ॥
११ इसडा अवनीत जावक भूडा, त्यार कड लागा ते पिण बूडा।
त्यामे पिण हासी घणी कुपीत। इमडा ॥

[1] गहवा भयपारी पचम वाल।

अथ इहा पिण अवनीत रा लखण ओलपाया ते लखणा नै छाडणा। तथा साध सीखावणी ढाल रा दूहा मे पिण घणा दिन पछै दोप कहै तिणनै अपछदो कह्यो, निर्लज कह्यो नागडो कह्यो, मरजादा रो लोपणहार कह्यो। तिणरी वात मूल मानणी नही, एहवो कह्यो।

तथा वावना रा लिखत मे आर्य्यां रै मर्यादा वाधी—किण ही आर्य्यां जाणनै दोप सेव्यो हुवै ते पाना मे लिख्या विना विगै तरकारी खाणी नही। कदाच कारण पड्या न लिखै तो ओर आर्य्यां ने कहणो। सायद करने पछै पिण वेगो लिखणो। पिण विना लिख्या रहिणो नही। आयने गुरा ने मूहढा थी कहणो नही। अजोग भाषा वोलणी नही। एहवो वावना रा लिखत मे कह्यो ते मर्यादा सुद्ध पालणी। तथा पेंतालीसा रा लिखत मे एहवो कह्यो—टोला माही कदाच कर्म जोग टोला वारै पड़ै तो टोला रा साध साधविया रा असमात्र अवगुण वोलण रा त्याग छै। यारी असमात्र शका पडै आसता उतरै ज्यू वोलण रा त्याग छै। टोला माहे सू फाडनै साथै ले जावण रा त्याग छै। उ आवै तो ही ने जावण रा त्याग छै। टोला माहे नै वारै निकल्या पिण अवगुण वोलण रा त्याग छै, माहोमाहे मन फटै ज्यू वोलण रा त्याग छै। इम पैंतालीसा रा लिखत मे पिण असमात्र अवगुण वोलण रा त्याग कह्या छै ते भणी उतरती वात करै तथा मन सहित सुणै तथा सुणी आचार्य नै न कहै तिणनै तीर्थंकर नो चोर कहिणो हरामखोर कहिणो तीन धिकार देणी।

१ आयरिए आराहेई, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि ण पूयति, जेण जाणति तारिस ॥
२ आयरिए नाराहेई, समणेयावि तारिसो।
गिहेत्था वि ण गरहति, जेण जाणति तारिस ॥

इति 'दशवैकालिक मे कह्यो मर्यादा आग्या सुध आराध्या इहभव परभव मे सुख किल्याण हुवै।

१ दसवेकालिय, ५/२/४५,४०

पाचवी हाजरी

सम्वत १८५० वष स्वामी भीखणजी सव साधा नै सुध आचार पालणो न माहो माहै गाढो हेत राखणो, तिण ऊपर मरजादा वाधी—"कोई टोला रा साध साधविया मे साधपणा सरधो, आप मे साधपणो सरधो, तिको टोला मे रहिजो। कोई कपट दगा सू साधा भेलो माहि रहै तिण नै अनन्ता सिद्धा री आण छै। पाच पदा री आण छै। साध नाव घरायनै असाधा भेलो रह्या अनत ससार वध छै। जिण रा चोखा परिणाम हुवै ते इतरी परतीत उपजावो। किण ही साध साधविया रा अवगुण बोलनै किण ही नै फाडन मन भागन खोटा सरधावण रा त्याग छ। किण सूई साधपणो पलतो दीस नही, अथवा मभाव किण सूइ मिलतो दीस नही, अथवा कपाई धठा जाणनै कोई कन न राख, अथवा क्षेत्र आछो न वताया अथवा कपडादिक रे कारणै अथवा अजाग जाणनै और साधु गण सू दूरा कर, अथवा आपने गण सू दूरो करता जाणनै इत्यादिक कारण उपनै टाला सू न्यारो पडे तो किण ही साध साधविया रा अवगुण वालण रा त्याग छ। हुता अणहुतो खूचणो काढण रा त्याग छै। रहिसे रहिसे लोका र सका घालनै आसता उतारण रा त्याग छ। कदा कम जागे कदा क्रोध रे वश साध-साधविया म असाधपणो सरधै आप मे पिण असाधपणो सरधै फेर साधपणो लेवै तो ही पण अठीला साध साध वियारी सका घालण रा त्याग छै। खाटी कहण रा त्याग छ ज्यू रा ज्यू पालणा छ। पछै यु कहिण रा पिण त्याग छै, म्है तो फेर साधपणो लीधा अवे माहरै आगला सूसा री अटकाव कोई नही। किण ही साध साधव्या न पिण साध साधविया री आसता उतर साध आर्य्या री सका पड ज्यू वालण रो त्याग छै। किण ही साध आर्य्या मे दोष देख तो ततकाल धणी नै कहिणो, अथवा गुरा नै कहिणो, पिण ओरान न कहिणो। घणा दिन आडा घालनै दोष वताव तो प्राछित रा धणी उहीज छ। प्राछित रा धणी नै याद आवै ता प्राछित उण न पिण लेणा, नही लेव तो उणन मुसकल छै ए पचासा रा लिखत मे कह्या।

तथा सवत १८४५ रा लिखत मे कह्यो—"टाला माह पिण साधा रा मन भागन आप २ र जिले करै ते तो महाभारी कर्मो जाणवा। इमडी घात पावडी कर ते तो अनत ससार री साई छ। इण मरजादा प्रमाणै चालणी नाव तिण नै सलेखणा मडणो सिरै छ। घनै अणगार ता नव मास माह आतमा नो किल्याण कीधो ज्यू इण नै पिण आतमा रा सुधारा करणा। पिण अप्रतीत-कारिया काम न करणा। रोगिया विच ता

सभाव रा अजोग नै माहे राख्यो भूंडो छै। या बोला री मरजादा बाधी ते लिखी छै ते चोखी पालणी। अनन्ता सिद्धा री साख करनै पचखाण छै। ए पचखाण पालण रा परिणाम हुवै ते आरै हुयज्यो विनै मार्ग चालण रा परिणाम हुवै गुरू नै रीझावणा हुवै, साधपणो पालण रा परिणाम हुवै ते आरै हुयज्यो। ठागा सू टोला माहे रहणो न छै। जिण रा परिणाम चोखा हुवै ते आरै हुयज्यो। आगे साधा रे समचे आचार री मरजाद बाधी ते कबूल छै। वले कोई आचार्य मरजादा बाधे ते याद आवै ते पिण कबूल छै"
एहवो पैतालीसा रे वर्ष कह्यो छै।

तथा पचासा रा लिखत मे जिला नै निषेध्यो छै। तथा रास मे पिण जिला नै घणो निषेध्यो छै। तथा 'गुरु सूकावे तो उभो सूकै' इण ढाल मे पिण जिला नै निषेध्यो छै।

१ [1]गण मे रहू निरदावे एकलो, किण सू मिलनै न बाधू जिलो।
किण नै रागी करै रापू म्हारो, एहवो पिण नही करू विगारो॥

इम गुरा री आज्ञा विना आपरो रागी करै तिण नै विगाडा मे घाल्यो छै। ते माटै जिलो बांधण रा सर्व साध साधव्या रै अनन्ता सिद्धा री साख सू त्याग छै। तथा घणा दिना पछै दोष न कहिणो, ठाम २ कह्यो छै। साध सीखावणी ढाल रा दूहा मे पिण घणा दिना पछै दोष कहै, वले झूठो विषवाद करै, तिण नै अपछदो कह्यो, निर्लज कह्यो, नागडो कह्यो, मर्यादा रो लोपणहार कह्यो, कषाय दुष्ट आत्मा रो धणी कह्यो छै। तथा ते साध सीखावणी ढाल मे पिण एहवी गाथा कही—

१ [2]घणा दिना रा दोष बतावै, ते तो मानवा मे किम आवै।
साच झूठ तो केवली जाणै, छद्मस्थ प्रतीत नाणै॥
२ हेत माहे तो दोषण ढाकै, हेत तूटा कहितो नही साकै।
तिण री किम आवै परतीत, तिण नै जाण लेणो विपरीत॥
३ इण दोषीला सू कीयो आहार, जब पिण नही डरियो लिगार।
तो हिवै आल देतो किम डरसी, इण री परतीत मूरख करसी॥
४ इण दोष क्याने किया भेला, इण क्यू न कह्यो तिण वेला।
इण मे साध तणी रीत हुवै तो, जिण दिन रो जिण दिन कहेतो॥
५ जब उ कहै मै न कह्यो डरतै, गुर सू पिण लाजा मरतै।
तब उणनै वलै कहिणो पाछो, तोनै किण विध जाणा आछो॥

१. लय—विनै रा भाव सुण-सुण गूंजे।
२. विनै रो भाव सुण-सुण गूंजे।

६ थे तो दोपीला सू कियो सभोग, थारा वरत्या माठा जोग।
थारी प्रतीत नावे म्हान, इण रा दाप राख्या थे छाने ॥
७ थे तो कीधो अकराज मोटा, जिण मारग म चलायो खोटो।
थारी भिष्ट हुई मत बुध, हिव प्राछित ले होय सुध ॥
८ उण नै पूछया आरै हाय, ता उण नै प्राछित देस्या जोय।
जा उ पूछया आरै न हाय ता उण स जोर न लाग कोय ॥
९ उण री तो थारा कह्या थी सक, पिण तू ता दापोला निसक।
इम कही उण नै घालणो कूडा, प्राछित न ले तो करणा दूरा ॥
१० ज्यू कोई वले न दूजी वार, किण रा दोपण ढाके लिगार।
दोप ढाक्या हुवै घणी खुवारी, टाका भड ता अनन्त ससारी ॥
११ सका सहित न राखमाय, और साध दापीला न थाय।
दापीना न जाणी राख माय, तो सगलाई असाधु थाय ॥
१२ छिद्रपेही छिद्रधार राख, कदे काम पड्या कहि दाख।
तिण मे साध तणी नही रीत, तिण री कुण मान परतीत ॥
१३ घणा दिना काढै दाप विख्यात, तिण री मूल न मानणी वात।
सुध साधा री आ मरजाद, तिण सू वध नही विपवाद ॥
१४ और साधा मे दापण देखी, तुरत कहै त निरापेखी।
तिण रै मूल नही पखपात तिण री मानणी आवै वात ॥

अथ इहा पिण घणा दिना पछै दोप कहै तिण न अन्याइ कह्या। तिण म साध नी रीत नही। तिण री मूल वात मानणी नही एहवा कह्या। तथा पचासा रा लिखत म एहवा कह्या—किणनई खेत्र काचा वताया किणनइ कपडादिक मोटो दीधा इत्यादिक कारणे कपाय उठे जद गुरुवादिक री निंद्या करण रा,अवगुणवाद वालण रा, एक २ आग वोलण रा माहो माहै मिलन जिला वाधण रा त्याग छ। अनन्ता सिद्धा री आण छै। गुरवादिक आग भला ता आपर मुतलव रहै पछै आहारादिक थाडा घणा रा कपडादिक रा नाम लेई अवणवाद वालण रा त्याग छ। इण सरधा रा भाया र कपडा रा ठिकाणा छ विना आना याचण रा त्याग छ तथा विनीत अविनीत री चापी री प्रथम ढाल मे एहवी गाथा कही—

१ [1]उ गुर रा पिण गुण सुणन विलखा हुवै रे अवगुण सुणनै हरपत थाय रे।
एहवा अभिमानी अविनीत तेहन रे ओलखाउ भवियण नै इण न्याय रे॥
अवनीत भारी कर्मा एहवा रे॥

---

[1] मय—श्री जिनवर गणधर मनिवर।

१३ विना अविना रा ए विस्तार, कीधो खेरवा सैंहर मझार।
वतीसैं वरस समत अठारो, भादवा सुदि छठ सुकरवारो।।

अथ इहा पिण अविनीत नैं ओलखाया—टोला बारैं नीकली, क्रोध रैं वस साधा न असाधु कहै अवगुण बोल चोर ज्यू विगाडो करैं तिण री वात बुधवत न मानैं। तिण नै लाक आरैं न करैं जद पाछो माहै आवैं, जो उ वल सुध न चाल जद गुरु दूर कर तथा आचाय रैं छादे चालणी नावैं सक्डाइ मैं चालणी नावैं जद आपही टोला वारैं नीकली फेर अवगुण वोलैं, इसडा अवनीत विवक विकल री वात न मानणी, एहवो कह्यो। अवनीत रो ठागो प्रगट कियो।

तथा पैंतालीसा रैं वस मर्यादा वाधी तिण मे कह्यो—टोला माहि कदाच कम जोगे टाला वार पडैं तो टोला रा साध साध विया रा असमात्र अवणवाद बोलण रा त्याग छैं। यारी असमात्र सका पडैं आसता ऊतरैं ज्यू बोलण रा त्याग छ टोला मासू फाडन साथ ले जावण रा छैं। आगुण वोलण रा त्याग छैं। माहो मा मन फाट ज्यू वालण रा त्याग छ। इम पैंतालीसा रा लिखत मे कह्या ते भणी सासण री गुणोत्कीतन रूप वात करणी। भागहीण हुव सो उतरती कर तथा भागहीण सुणैं तथा सुणी आचाय न कहे नही ते पिण भागहीण, तिण नैं तीर्थंकर नो चार कहणो हरामखोर कहणो तीन धिकार देणी।

१ आयरिए जाराहई, समणेयावि तारिसो।
गिहत्था विण पूयति, जेण जाणति तारिस।।
२ आयरिय नाराहेई, समणेयावि तारिसो।
गिहत्था विण गरहति, जेण जाणति तारिस।।

इति 'दशवैकालिक' मे अघेन कह्या ते मर्यादा आज्ञा सुद्ध आराध्या इहभव मे परभव मे सुख कल्याण हुवैं।

१ दसवेआलिय ५/२।४८ ४०

छठी हाजरी

पाच सुमति तीन गुप्त पच महाव्रत अखण्ड अराधणा। ईर्या भाषा एषणा मे साव चेत रहणो। आहार पाणी लेणो पडे तो पक्की पूछा करी ने लेणो। सूझतो आहार पानी लेणो ते पक्की पूछा करी ने लेणो। आगला रो अभिप्राय देखने लेणो। पूजता परठवता सावधान पणे रहणो। मन वचन काया गुप्त मे सावचेत रहणो, तीर्थंकरनी आज्ञा अखण्ड अराधणी, श्री भीखण जी स्वामी सूत्र सिद्धान्त देखने आचार श्रद्धा प्रगट कीधी। विरत मे धर्म, अविरत मे अधर्म, आज्ञा माहे धर्म, आज्ञा बारे अधर्म, अ सजनी रो जीवणो वछे ते राग, मरणो वछे ते द्वेष। तिरणो वछे ते वीतराग देवनो मार्ग छै। तथा विविध प्रकार नी मर्यादा बाधी। सवत्, १८५० रे वर्स भीखणजी स्वामा साधा रे मर्यादा बाधी, किण ही साधु आर्य्या मे दोप देखे तो ततकाल धणी ने कहिणो, अथवा गुरा ने कहिणो, पिण ओरा ने न कहिणो घणा दिन आडा घालने दोप बतावे तो प्राछित रो धणी उ हीज छै। प्राछित रा धणी ने याद आवे तो प्राछित उण ने पिण लेणो न लेवे तो उण ने मुसकल छै। कोई सरधा आचार रो बोल नीकले तो वडा सू चरचणो पिण औरा सू चरच ओरा रे सका घालनी नही। वड़ा जाब देवे ते आपरे हिय बेसे तो मान लेणो, नही बेसे तो केवलिया ने भलावणो। पिण टोला माहे भेद पाडणो नही माहो माहि जिलो बाधणो नही। आपरो मन टोला सू उचक्यो अथवा साधपणो पले नही तो किण ही ने साथे ले जावण रा अनन्ता सिद्धा रा साप करने पचषाण छै। किण रा परिणाम न्यारा होण रा हुवे जब ग्रहस्थ आगे पेलारी परती करण रा त्याग छै। जिण रो मन रजामद हुवे। चोखी तरह साधपणो पलतो जाणो तो टोला माहे रहणो। आप मे अथवा पेला मे साधपणो जाणने रहिणो, ठागा सू रहिवा रा अनता सिद्धा री साप स पचषाण छै। कोई टोला मा सू टलने साध साधविया रा दोप बतावे अवरणवाद बोले तिण री वात मांनणी न ही, तिण ने व्यवहार मे तो झूठो बोलो जाणणो, साचो हुवे तो ज्ञानी जाणे पिण छद्मस्थ रा व्यवहार मे तो झूठो जाणणो। एक दोप सू बीजो दोप भेलो करे ते तो अन्याई छै, जिण रा परिणाम मेला होसी ते साध आर्य्या रा छिद्र जोयने भेला करसी, ते तो भारी कर्मा जीवा रा काम छै, अने डाहो सरल आतमा रो धणी होसी ते तो इम कहसी—कोइ ग्रहस्थ साध साधविया रो सभाव प्रकत अथवा दोप कहि बतावे जिण ने यू कहणो—मोने क्याने कहो, के तो धणी ने कहो, के स्वामीजी ने कहो, ज्यू याने प्राछित देने सुध करे, नही केसो तो थे पिण दोपीला गुरा रा सेवणहार छो। जो स्वामीजी ने न कहिसो तो थामे पिणवाक छै। थे म्हाने कह्या काइ

हुवे, यू कहिने त्यारो हुवे पिण आप वेदा माह क्याने पडे। पेला रा दोप धारने भेला करे ते तो एकत मिरपावादी अ याई छै। किण ने खेत्र काचो वताया किण ही ने कपडा दिक माटो दीधा इत्यादिक कारणे कपाय उठे जद गुरवादिक री निंद्या करण रा अव-गुणवाद वोलण रा माहामाट् मिलने जिला वाधण रा त्याग छै। अनन्ता सिद्धा री आण छ। डाहा होवे ते विचार जोइ जो। लूपे पत्तर तो उपगार होवे तो ही न रह आछे पेतर उपगार न होवे तो ही पर रहे, यू तो साध ने करणा नही चोमासा ता अवसर देखे ता रहणो पिण शेपे काल ता रहिणा हीज। किण री खावा पीवादिक री सका पडे ता उण ने साध कह—वडा कहे ज्यू करणा। दाय जणा ता विचर आछा-आछा मोटा-माटा साताकारिया क्षेत्र लोलपी थका जावता फिरे, गुर राखे तठे न रह, इम करणो नही छै। घणा भेला रहिता ता दु खी, दोय जणा मे सुखी, लोलपी थको यू करणो नही छै। ए सव पचासा रा लिखत मैं कह्या छ।

तथा पेंतालीसा रा लिखत म कह्या— माहामाहि जिला वाधे तिण ने महा भारी कर्मो कह्या, विस्वासघाती कह्यो, इसडी घात पावडी किया अनत ससार नी साई कही।"

तया वावना रा वस लिखत म कह्यो—दाप देख्या ततकाल धणी न केहणो के गुरा न कहणो पिण आरा ने न कहिणा ए मयादा लापवा रा सव साध मावव्या रे अनन्ता सिद्धा री साख सू पचखाण छै। तथा वनीत अवनीत री चोपै[1] ढाल ७ मी मे एहवी गाथा कही—

१ जो दाप लागो देख साधन, ता कह देणा तिण न एक ता र।
जो उ मान नही तो कहणो गुरु कन, त श्रावक छै वुघवतो रे॥
सुवनीत श्रावक एहवा॥

२ प्राछित दिराय ने सुघ करे पिण न कहे आरा पास।
त ता श्रावक गिरवा गभीर छ, वीर वखाण्या तास॥

३ उण रे मुहढे ता दाप कहे नही उण रा गुर कन पिण न कहे जाय।
ओर लोका आगे कहिता फिरे तिण री परतीत किण विघ आय॥
अवनीत श्रावक एहवा॥

४ वले साधा ने आय वदना करे साधविया नै न वादे रुडी रीत।
त्यान श्रावक श्रावका मजाण जा, त ता मूढमती अवनीत॥

५ तिण श्री जिन धम न उलख्या, वले भण २ न करे अभिमान।
आप छाद माठी मत्ति उपज निण न लागा नही गुर कान॥

---

१ सघ—चन्द्रगुप्त राजा सुणा।

१९ तिण न समकत न संजम वेहु, कचिया अभितर पूरा।
त चनाव ज्यू चाले छादो कधने, पाछो उपगार करण न सूरा॥

२० वले गावा नगरा फिरता थका, सदा काल करे गुण ग्राम।
त सुवनीत गुण ग्राही आतमा, त्यान वीर वखाण्या ताम॥

२१ ए भाव कह्या विनीत अविनीत रा, साभल न नर नार।
सत गुर रा विनो करा, ता पामो भव पार॥

अथ अठ विनीत अविनीत रा लक्षण ओलखाया। विनीत न गुणग्राही रा गुण वणव्या। अविनीत कृतघ्न रा अवगुण वताया। ए भाव सुण न उतम जीव गुण ग्रह। वले श्री भीखणजी स्वामी री मर्याद सुध पाले।

तथा चोतीसा रा लिखत म आर्य्या र मर्यादा वाधी त कहे छ टोला रा साध आर्य्या री निंदा करे तिण न घणी अजोग जाणणी। तिण रे एक मास पाचू विग रा त्याग। जित री वार कर जितरा मास पाचू विग रा त्याग छ।

तथा वावना रा लिखत म आर्य्या र मर्यादा वाधी किण ही आर्य्या दोष जाणन सेव्या हुव त पाना म लिख्या विना विग तरकारी खाणी नहीं कदाच कारण पडया न नि त आर आर्य्या न कहणा। मायद करन पछे पिण वेगा लिखणा। पिण विना लिख्या रहिणा नहीं। ए आसन गुरा न मूहढा स कहणा नहीं। माहो मा अजोग भाषा वोलणी नहीं। एहवा वावना रा लिखत म कह्या।

तथा सवत १८४८ र लिखत म कह्या—टोला माह कदाच कम जोग टोला बार पड ता टोला रा साधु साधविया रा अस मात्र अनणवाद वोलण रा त्याग छ। या री [illegible] मात्र शका पड आसता उतर ज्यू वोलण रा त्याग छ। टोला मा सू फाड न साथे न जावा रा त्याग छ। उ आय ता ही से जावा रा त्याग छ। टोला मा ने वार नीकल्या पिण आगुण वोलण रा त्याग छ। माहोमा मन फट ज्यू वोलण रा त्याग छ। इम पैतालीसा रा लिखत म कह्या। त भणी सासण री गुणोत्कीर्तन वात करणी। भाव हीण हुव सा उतरती वात कर, भाग हीण न गुरु मथा गुरु आनाय न न कर न पिण भागहीण। जिन न तीर्थकर ना चोर कह्या, हरामखोर कह्यो तीन पिवार दणी।

१ आयरिए आराहेइ, समणेयावि तारिसो ।
गिहत्था वि ण पूयति, जेण जाणति तारिस ।।
२ आयरिए नाराहेई, समणेयावि तारिसो ।
गिहत्था वि ण गरहति, जेण जाणति तारिस ।।

इति 'दशवैकालिक मे ते मर्यादा आज्ञा मुध आराध्या इहभव परभव मे सुख कल्याण हुवे ।

ए हाजरी रची । सवत् १६१० का जेठ विद वगतगढ मध्ये

---

१ दसवेआलिय, ५/२/४५, ४०

सातवीं हाजरी

पाच सुमति तीन गुप्ति पच महाव्रत अखण्ड आराधणा। ईर्य्या भापा एपणा मे सावचेत रहिणा। आहार पाणी लेणो ते पकी पूछा करी न लेणो। सूजता आहार पिण आगला रो अभिप्राय देखन लेणो। पूजता परिठवता सावधान पन रहणो। मन वच काया गुप्ति मे सावचेत रहिणो। पच महाव्रत सुद्ध पालणा। तीथकर नी आज्ञा अखण्ड आराधणी। भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धात देखने आचार श्रद्धा प्रगट कीधा—विरत धम न अविरत अधम, आज्ञा माहे धम आज्ञा बारे अधम असजती रा जीवणो वछे ते राग, मरणा वछ त द्वेप तिरणा वछ ते वीतराग नो माग छ। तथा विविध प्रकार नी मयादा बाधी।

सवत १८४५ सा रे वप भीखणजी स्वामी मयादा वाधी—'किण ही रा सभाव अजोग हुवे, तिण न कोई टोला माहे बठण वाला नही जद पेला न घणी प्रतीत उपजावे घणी नरमाइ करन हाथ जोडन कहिणो—थे माने निभावा यू कहिन साथ जाणा आगलो चलावे ज्यू चालणो, जको काम भलाव ते करणा उण न घणो रीभाय न रहिणो, जो अतरी आसग विना नरमाई करण री न हुवेतो सलेपणा मडणा वेगो कारज सुधारणो। जो दोया बोल माहिला एक बोल पिण आरे न हुवे तो उण सू क्लेश कर २ ने कुण जमारा काढसी।

उण ने साधु किम जाणीये जो एकला वेण री सरधा हुवे इसडी सरधा धारन टोला माहे वेठा रह माहरी इछा आवसी जद तो माहे रहिसू मारी इछा आवसी जद एकला हुसू इसनी सरधा सू टोला माह रह ने तो निश्च असाध छ साधपणा सरधे तो पहला गुणठाणा रा धणी छ। दगाबाजी ठागा सू माह रह छ तिण ने माह राखे जाणने तिण म पिण महादोप छ। कदा टोला माह दाप जाणे तो टाला माह रहणो नही एकलो होयने सलेपणा करणी, वेगा आतमा रो सुधारा हुवे ज्यू करणा। आ सरधा हुवे तो टोला माह राखणो। गालागोलो करने रह तो राखणा नही, उत्तर देणा वार काढ देणा पछइ आल दे निकले त किसा काम रा। टोला माह पिण साधा रा मन भागने आपरे जिले करे त तो महाभारी कर्मो जाणवो। विसवासघाती जाणवो। इसडी घात-पावडी करे ते तो अनन्त ससार नी साई छ, इण मर्यादा प्रमाणे चालणी ना व तिण ने सलेखणा मडणो सिरे छ, घने अणगार तो नव मास माह आतमा रो किल्याण कीधा ज्यू इण न पिण

आत्मा रो सुधारो करणो, पिण अप्रतीत कारियो काम न करणो। रोगिया विचै तो सभाव रा अजोग ने माहे राख्यो भूडो छै—"ए सर्व पेतालीसा रा लिखत मे कह्यो।

तथा रास मे पिण जिला ने घणो निपेध्यो छै तथा पचासा रा लिखत मे पिण जिला ने निपेध्यो तथा 'गुरु सूकावे तो उभो सूके' इण ढाल मे जिला ने निपेध्यो तथा अविनीत री ढाल मे पिण जिला ने घणो निपेध्यो—

१ 'छाने-छाने टोला मे जिलो वाधे, गुर आगन्या विण आपरे छादे।
तिण सजम सहित खोई परतीत, इसडा भारी कर्मा अवनीत॥

२ गुरु सू चेला रो मन फाडे, वले टोला मे मूर्ख भेद पाड़े।
कूड कपट कर बोले विपरीत, इसड़ा भारीकर्मा अवनीत॥

तथा दशमा प्राछित री ढाल मे पिण जिला ने निपेध्यो ते गाथा—

१ रहे एक आचार्य रा शिप भेला, कुल माहे वसे सहु मन मेला।
त्यामे भेद पारण उदमी थावे, तिण ने दसमो प्राछित आवे॥

२ ओर साधा रा छिद्र जोवे ताम, तिण ने हेलवा निंदवा रे काम।
दोप भेला कर-कर पछे उडावे, तिण ने दसमो प्राछित आवे॥

३ कुल गण मे भेद पाडे केइ, हस्या ने छिद्र तणो पेही।
सावज प्रश्न वारुवार वतावे, तिण ने दसमो प्राछित आवे॥

४ ठाणा अग तीजे ने पाचमे ठाणे, त्यारा भेद अनेक पडित जाणे।
जघन मज्झम रा भेद न्यारा थावे, उत्कष्टो प्राछित दसमो आवे॥

इहा पिण जिला ने निपेध्यो। तथा पचासा रा लिखत मे कह्यो किण ही साध आर्य्यां मे दोष देखे तो ततकाल धणी ने कहिणो। अथवा गुरा ने कहणो। पिण ओरा ने न कहिणो। घणा दिन आड़ा घालने दोप वतावे तो प्राछित रो धणी उहीज छै।

तथा वावना र वरस आर्य्या रे मरजादा वाधी तिण मे कह्यो—
"दोप देख्या ततकाल धणी ने केहणो, के गुरा ने कहणो, पिण ओरा ने न कहिणो। किण ही आर्य्या ने दोष जाण ने सेव्यो हुवे ते पाना मे लिखिया विना विगै तरकारी खाणी नही। कदाच कारण पड्या न लिखे तो ओर आर्य्या ने कहिणो। सायद करने पछै पिण वेगो लिखणो। पिण विना लिख्या रहिणो नही। आय ने गुरा ने मूढा सू कहिणो नही माहोमा अजोग भापा वोलणी नही। कोई साव साधविया रा अवगुण काढे तो साभलण

१ लय—एहवा भेंषधारी पंच ।

रा त्याग छ। इतरो कहणो—स्वामी जी ने कहिज्यो" ए सब बावना रे वस कह्यो।

तथा गुणसठा रे वस मर्याद बाधी—"कदा कम धको दीधा टोला सू टले तो उण रे टाला रा साध साधव्या रा अस मात्र हुता अणहुता अवणवाद बोलण रा अनत सिद्धा री ने पाच पदा री आण छै। पाचू इ पदा री साख सू पचखाण छ। किण ही साध साधव्या री सका पडे ज्य बोलण रा पचखाण छ।" एहवो गुणसठा रे वस कह्यो छै।

तथा सवत अठारे वत्तीसा रे वस स्वामी भीखणजी विनीत अविनीत री चोपी जोडी, तिण में अवनीत रा लक्षण ओलखाया। ते लक्षण मेटया विनीत कहिये। ते विनीत रा गुण वणव्या ते चोपी माहिली प्रथम ढाल नी केयक गाथा—

१ जे पाले निरतर गुर री आगया रे, समीपे रहे तो रूडी रीत रे।
त जाण वरते गुर री अग चेष्टा रे, तिण ने श्री वीर कह्यो सुवनीत रे॥
विनो कीज एहवा सतगुर तणो॥

२ विनो ता जिण सासण रो मूल छे विनो निरवाण साधन काज।
जे विनो ते करण सू उपराठा पड्या, रह्या सजम ने तप सू भाज॥
ते अवनीत भारी कर्मा एहवा॥

३ केइ गुर री नही पाले मूख आगया, समीपे रहता सके मन माहि।
रखे करावे काय मो कनै, एहवो बूडण रो करे उपाय॥

४ त प्रतनीक अतर मे गुर नो पापियो, उण तत्व न जाण्यो रुडी रीत।
उण रे कूड कपट ने घेठापणो घणो, तिण ने श्री वीर कह्या अवनीत॥

५ जो काय करे अवनीत गर तणो रे, ते जाणे अग्यानी वेठ समान।
तिण धम जिणेसर नो नही ओलख्यो, चिहु गति मे होसी घणा हेरान॥

६ जो तप कर काया कष्टे आपणी, ते जश कीरत के खावा घ्यान।
के पूजा श्लाघा रो भूखो थको, पिण विना करणा नही आसान॥

७ जा धरावे ग्रहस्थ ने वाल थोकडा, त पिण मान वडाइ काज।
उ आपो परमसे अवर ने निंदतो, ते अवनीत निरलज नाणे लाज॥

८ अवनीत ने आपो दमवा दोहिला, तिण रा अथिर परिणाम रहे सदीव।
उ विणविध पाले गुर री आगया, जे क्रोधी अहकारी दुष्टी जीव॥

सप—श्री जिनवर गणधर मुनिवर।

९ उण रे चेला करण री मन मे अति घणी, गुर रा गुण मुख सु कह्या न जाय।
रखे मोने छोडे ले दिख्या गुरु कनै, एहवी ओघटघाट घणी घट माहि ॥
१० केइ गुर री आज्ञा लोपी चेलो करे, तिण छोडी छै जिण सासण री रीत।
ते फिट-फिट होसी समझू लोक मे, परभव मे पिण होसी घणो फजीत ॥
११ वैराग घटयो ने आपो वस नही, तिण रे रहे चेला करण रो ध्यान।
उण ने सिख मिलाया सू तो उशिथल पडे, वले वधे लोलपणो ने अभिमान ॥
१२ वनीत सिख रे सिख री मन उपनी, पिण गुर री आज्ञा विण न करे चाव।
तिण आतम दमी ने इद्रचा वस करी, सिख मिलिया सरल सभाव ॥
१३ जो वनीत आगे घर छोडे तेहने रे, तो वनीत बोले सूतर रे न्याय।
हू गुर री आज्ञा विण चेलो किम करू रे, हू दिख्या देसू पूछी गुर ने जाय ॥
१४ उ गुर रा गुण सुणनै विलखो हुवे, ओगुण सुणे तो हरपत थाय।
एहवा अभिमानी अवनीत तेहने, ओलखाउ भवजीवा ने इण न्याय ॥
१५ कोइ प्रतनीक अवगुण बोले गुर तणा, अवनीत गुरद्रोही पासे आय।
तो उत्तर पडउत्तर न दे तेहने, अभितर मे मन रलीयायत थाय ॥
१६ प्रतनीक अवगुण बोले तेहनी, जो आवे उण रे पूरी परतीत।
तो अवनीत एकठ करे उण सू घणी, उ गुर रा अवगुण बोले विपरीत ॥
१७ वले करे अभिमानी गुर सू बरोबरी, तिण रे प्रवल अविनो नै अभिमान।
उ जद तद टोला मे आछो नही, ज्यू विगड्यो विगाडे सडियो पान।
१८ उ खिण माहे रग विरग करतो थको, वले गुर सू पिण जाए खिण मे रूस।
जब गूथे अज्ञानी कूडा गूथणा, ओर अवनीत सू मिलण री मन हूस ॥
१९ जो अवनीत ने अवनीत भेला हुवे, तो मिल-मिल करे अज्ञानी गूझ।
क्रोध रे वस गुर री करे असातना, पिण आपो नही खोजे मूढ अवूझ ॥
२० जो अवनीत अवनीत सू एकठ करे, ते पिण थोडा मे विखर जाय।
त्यारे क्रोध अहकार ने लोलपणो घणो, ते तो साधा मे केम खटाय ॥
२१ उण ने छोटा ने छादे चलावण तणी, ते पिण अकल नही घट माय।
वडा ने छादे चाल सके नही, तिण रा दु ख माहि दिन जाय ॥
२२ पुस्तक वस्त्र पाना ने पातरा, इत्यादिक साधू रा उपध अनेक।
गुर ओर साधा ने देता देखने, तो गुर सू पिण राखे मूर्ख धेप
२३ जब करै माहोमा खेदो ईसको, वले वाछे उत्तम साधा री घात।
तिण जन्म विगाडयो करे कदागरो रे, करै माहो मा मन भागण री वात ॥

२४ एहवा अभिमानी ने अवनीत री, करे भाला भारीकर्मा परतीत।
उण रा लखण परिणाम कह्या छै पाडवा कोइ चतुरअटकलसी तिणरी रीत॥

एहवा अवनीत रा लपण कह्या छै तथा पॅंतालीसा रा लिखत मे एहवो कह्यो—"टाला माहे कदाच कम जागे टोला बारे पड तो टाला रा साध साध विया रा अस मात्र ओगुण बालण रा त्याग छै। यारी अस मात्र शका पडे आसता उतरे ज्यू वोलण रा त्याग छ, टाला मा सू फार न साथ ले जावा रा त्याग छै। उ आवै तो ही लें जावा रा त्याग छ। टोना माहे नै बारे निकल्या पिण अवगुण बोलण रा त्यागछ। माहोमा मन फटे ज्यू बालण ना त्याग छै। इम पॅंतालीसा रा लिखत मे कह्यो। ते भणी सासण री गुणोत्कीत्तन वात करणी। भागहीणहुवे सो उतरती वात करे, तथा भागहीण सुणे, सुणी आचाय नै न कहै ते पिण भागहोण। तिण न तीथकर ना चार कहणो, हरामखार कहणा तीन धीरकार देणी।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसा।
गिहत्था वि ण पूयति, जेण जाणति तारिम॥
आयरिए नाराहेइ, समण यावि तारिसो।
गिहत्था विण गरहति, जेण जाणति तारिम॥

इति [1]दसवैकालिक मे कह्या ते मर्यादा आना सुद्ध आराध्या इहभव मे परभव मे सुख किल्याण हुवे।

ए हाजरी नी स्थापना रची सवत् १६ म १० रा वर्शे जेठ विद १० वार मगल वपतगढ मध्ये।

१ दसवेआलिय ५/२/४५ ४०

आठवीं हाजरी

सवत् १८४५ रे वरस भीखणजी स्वामी मरजादा बाधी—जे कोइ सरधा रो आचार रो सूतर रो अथवा कल्प रा बोल री समझ न पडे तो गुर तथा भणणहार साधू कहे ते मान लेणो । नही तो केवली ने भलावणो पिण और साधु रे सका घालने मन भागणो नही । एहवू कह्यू ।

तथा पचासा रा लिखत मे कह्यो—"कोई सरधा आचार नो नवो बोल नीकले तो वडा सू चरचणो, पिण ओरा सू न चरचणो । ओरा सू चरच ने ओरा रे सका घालणी नही । वडा जाव देवे आपरे ।हये बेसे तो मान लेणो, नही बेसे तो केवली ने भलावणो पिण टोला माहे भेद पाडणो नही, एहवो कह्यो ।

तथा गुणसठा रा लिखत मे पिण कह्यो—किण ही ने दोष न्यास जाय तो बुधवन्त साधु री प्रतीत कर लेणी पिण खाच करणी नही, इम अनेक ठामे सरधा आचार रो बोल चरचणो वरज्यो । गुरु तथा बुधवत साध कहे ते मान लेणो कह्यो । गुरा री प्रतीत राखणी कही । तथा माहोमाहि जिलो पिण अनेक लिखत जोड मे वरज्यो छै । रास मे पिण 'गुरु सुकावे तो उभो सूके' इहा पिण जिला ने निषेध्यो छै तथा पंतालीसा रा लिखत मे पिण एहवू कह्यो—साधा रा मन भागने आपरे जिले करे ते तो महाभारीकर्मो जाणवो । विस्वासघाती जाणवो । एहवी घात पावडी करे ते तो अनंत ससार नी साइ छै, इण मरजादा प्रमाणे चालणी नावे तिण ने सलेखणा मडणो सिरे छै ।

तथा चद्रभाणजी तिलोक चन्दजी नो जिलो जाणने टोला वारे किया, एहवो सेतीसा रा लिखत मेकह्यो—तिलोकचन्द चन्द्रभाण ने विस्वासघाती जाण्या सुखाजी आश्री दगाबाजी करता जाण्या । गुरद्रोही जाण्या । टोला माहे भेद रा पाड़णहार जाण्या, धर्म आचार्य ने साध साधविया रा अवगुण रा बोलणहार जाण्या । धर्म आचार्य री खिष्टी रा करणहार जाण्या । धर्म आचार्य ने साधु साधविया ऊपर मिथ्यात पडिवज्यो जाण्या । धर्मआचार्यआदि देइने साधुसाधविया रा छिद्रपेही छिद्रना गवेषणहार जाण्या ।उपसम्या कलह रा उदीरणहार जाण्या । आलोइ पडिकमी ने सुद्ध हुवा त्या वाता रा उदीरणहार जाण्या । साधु-साधविया ने माहोमा कलह रा लगावणहार जाण्या । गुरु सू सनमुख ने वेमुख करता जाण्या। टोला माहे छाने २ साधु-साधविया ने आपणा करणा माड्या जाण्या । गुरु सू फटाय ने आपणा करणा माडया जाण्या । धर्म आचार्य आदि देइ ने साधु साधविया माथे अनेक विध आल ना देणहार जाण्या । टोला माहि ने दगाबाजी करता जाण्या । माहोमा मिलने एको कीधो ने एको करता जाण्या । आप सू मिलियो चाले

तिण री पपपात करता जाण्या। ओरा ने निपेदता माडता जाण्या। आहमी साहमी सापादूती कर २ माहोमा मन भागणा माड्या जाण्या। वले अहकारी अवनीत घणा जाण्या। अपछदा पिण घणा जाण्या। या रा अनक छल छिद्र रो लखाव पड्यो जाण्यो, जद टोला बारे काढचा।" ए सव सेतीसा रा लिखत मे कह्यो।

इम जिलो जाणने अवनोत जाणने वारे किया। इम जिला न घणा निपेध्यो छै। ते माटे जिलो वाघण रा सव साध-साधविया रे त्याग छै।

तथा पचासा रा वप साधा रे मरजादा वाघी—"किण ही साधसाधविया मे दाप देख ता ततकाल धणी ने कहिणो अथवा गुरा ने कहिणो पिण ओरा ने न कहिणा। घणा दिन आडा घालने दोप वतावे ता प्राछित रो धणी उहीज छै। प्राछित रा धणी ने याद आवे तो प्राछिन उण न पिण लेणो नही लेवे तो उण ने मुसकल छ।" एहवो पचासा रा लिखत मे कह्या।

तथा वावना रे वरस आर्य्या रे मर्यादा वाधी छै किण ही साध आर्य्या माहे दोप देखे ता ततकाल धणी ने कहिणो तथा गुरा ने कहिणो पिण ओरा न कहिणो नही तथा विनीत अवनीत री चोपी म पिण एहवी गाथा कही छ—

१ दाप[1] देखे किण ही साध मे, कहि देणो तिण ने एकतो रे।
जा उ माने नही तो कहिणो गुरु कने, ते श्रावक छ बुधिवता रे॥
सुवनीत श्रावक एहवा॥
२ प्राछित दिराय न सुद्ध करे, पिण न कह आरा पास।
ते श्रावक गिरवा गभीर छै, वीर वखाण्या तास॥
३ दोप रा धणी ने ता कहै नही, उण रा गुर न पिण न कहै जाय।
ओर लोका आगे कहितो फिरे, तिण री परतीत किण विध आय॥

इत्यादिक अनेक ठामे दोप रा धणी न तथा गुरा न कहिणो कह्यो। पिण आरा ने न कहणो एहवो कह्यो। तथा घणा दिना पछे न कहणो रास मे वरज्यो छ। तथा साध सीखावणी ढाल रा दूहा मे घणा दिना पछे दोप कहे तिण ने अपछदो कह्यो, निरलज कह्यो, नागडो कह्यो, मर्यादा रो लोपणहार कह्यो, कपाय दुप्ट आतमा रो धणी कह्यो छ।

तथा वावना रे वरस आर्य्या रे मरजादा वाधी, तिण म एहवो कह्यो—"किण ही आर्य्या दाप जाणने मव्या हुवे तो पाना मे लिखिया विना विग तरकारी खाणी नही। कदाच कारण पड्या न लिखे तो ओर आर्य्या न कहिणो, सायद करन पछे पिण वेगो लिखणा। पिण विना लिख्या रहणा नही। किण ही आर्य्या आज पछे अजोगाइ कीधी ता प्रायछित

[1] सच—चन्द्रगुप्त राजा सुणो।

तो देणो पिण उण ने च्यार तीर्थ मे हेलणी निंदणी पडसी। पछे कहोला म्हाने भाडे छै, माहरो फितूरो करे छै। तिण सू पहिलाइज सावधान रहिजो। अने सावधान न रही तो लोका मे भूडी दीसोला। पछे कहोला म्हाने कह्यो नहीं, कोइ साध साधव्या रा अवगुण काढे तो साभलण रा त्याग छै। इतरो कहिणो—'स्वामी जी ने कहिजो' एहवो बावना रा लिखत मे कह्यो।

तथा संवत् १८५६ रे वरस साध-सावविया रे घृत, दूध दही आदि खावा री मर्यादा बाधी, ति णलिखतमे एहवो कह्यो—आगन्या विण सेषे काल चोमासो रहे तिण रे जितरा दिन पाचोइ विगै ने सूपरी रा त्याग छै, एँ सूस जावजीव ताई छै।

तथा सवत् १८५६ गुणसठा रा लिखत मे कह्यो—"कदा कर्म धको दीधा टोला सू टले तो उण रे टोला रा साध-सावविया रा अस मात्र हुता अणहुता अवर्णवाद बोलण रा अनंत सिद्धा री ने पाचोइ पदा री आण छै। पाचोइ पदा री साख सू पचखाण छै। किण ही साध-सावव्या री सका परै ज्यू बोलण रा पचखाण छै। कदा उ विटल होय सूस भागे तो ही हलुकर्मी न्यायवादी तो न माने। उण सरीषो विटल कोइ माने तो लेखा मे नही।

तथा इमहिज सवत् १८५० रा वर्स मे कह्यो—टोला सू टलने किण ही साध-सावव्यारा अवगुण बोलण रा, हुतो अणहूतो खूचणो काढण रा त्याग छै। रहिसे २ लोका रे सका घालने आसता उतारण रा त्याग छै"। एहवो पचासा रा लिखत मे कह्यो।

तथा संवत् १८४५ रा लिखत मे कह्यो—"उण ने साधु किम जाणिये जो एकलो वेण री सरधा हुवे, इसड़ी सरधा धारने टोला माहे वेठो रहे छै माहरी इच्छा आवसी तो माहे रहिसू, म्हारी इच्छा आवसी जद एकलो हुसू, इसडी सरधा सू टोला माहे रहें ते तो निश्चै असाध छै। साधपणो सरधे तो पहला गुणठाणा रो धणी छै। दगाबाजी ठागा सू माहे रहें तिण ने माहें राखे जाणने त्याने पिण महादोष छै। कदाच टोला माहे दोष जाणें तो टोला माहे रहिणो नही। एकलो होय ने सलें-पणा करणी। वेगो आत्मा रो सुधारो हुवें ज्यू करणो। आ सरधा हुवें तो टोला माहे राखणो। गालागोलो करने रहें तो राखणो नही। उत्तर देणो, वारें काढ देणो, पछे इ आल दे नीकलें तो किसा काम रो"—एहवो पेंतालीसा रा लिखत मे कह्यो।

तथा सवत १८५६ रा वरस लिखत म कह्यो—"टोला माहें सू टलें तो टोला माहे उपगरण करे ते, पाना लिखे जाचे ते साथे ले जावा रा त्याग छ । अनन्ता सिद्धा री साख करने छै । टाला सू न्यारो हुवे इण सरधा रा बाई भाई हुवें त्या रेंहणो नही । एक बाई भाई हुवें तिहा रहिणो नही । वाटें वहितो एक रात कारण पडिया रहे ता पाचू विग न सूखडी खावारा त्याग छै । अनन्ता सिद्धा री साख करन छ" ए गुणसठा रा लिखत म कह्यो ।

तथा ग्रवनीत रा लपण वनीत अवनीत री ढाल मे ओलपाया ते गाथा--

१ 'उ गुर रा पिण गुण सुणने विलपो हुवे रे, अवगुण सुणे तो हरपत थाय रे ।
एहवा अभिमानी अवनीत तेहने रे, आलपावू भव जीवा न इण न्यायरे।।
अवनीत भारी कमा एहवा रे ।।

२ काइ प्रतनीक अवगुण बोले गुर तणा, अवनीत गुरद्रोहा पासे आय ।
तो उत्तर पडउत्तर न दे तेहने, अभितर मे मन रलियायत थाय ।।

३ उ खिण माह रग विरग करता थका, वली गुर सू पिण जाए खिण मे रूस ।
जव गूथे अज्ञानी कूडा गूथणा, ओर अवनीत सू मिलवारी मन हूस ।।

इत्यादिक अवनीत रा लखण ओलखाया तथा अवनीत ने वधारणो नही, कृतघनी कीधा उपगार ना अजाण, तिण ने हरामखार लूणहरामी सामद्राही री उपमा दीधी ते वनीत ने सामधर्मी नी उपमा दीधी छै, ढाल म दष्टात सहीत कही ते गाथा—

१ ऊदर ऊपर मनकी आपी जाण, जव जोगी उदर री अणकपा आण ।
तिण जागी मत्र पढ ततकाल, उदरा ने कीया गोधड' विकराल ।।

२ जव मिनकी नाठी गाधड ने देख, गाधड दखने त्राप्यो स्वान विशेष ।
जागी गाधड नी त्ररणा लीध, कुत्ता सिकारी ततक्षिण कीध ।।

३ अहा कम गति इधकी देप, जोगी मोह्यो राग विशेष ।
स्वान दखी चीतो आप्यो आय, जव स्वान ने जागी सिंघ कीधा ताय ।।

४ जव चीता नाठा सिंघ री दख हाक, सीकप हुवा पडी मन म धाक ।
हिवे तिण सिंघ ने भूख लागी छ ताम, तिण जागी नखावा उठधा तिण ठाम।।

१ सय—श्री जिनवर गणधर मुनिवर ने कहे । ३ वन विलाव ।
२ सय—म्हे तो भार लियो ४ दया

५ जब जोगी देख मन इचरज थात, देखो नीच उदर री जात।
इण री मनकी' करती अकाले घात, ते म्हे बचाय लियो साच्यात॥
६ माहरो उपगार कियो न गिण्यो तिल मात, म्हारी उलटी मांडी करवा घात॥
म्हे नीच उदर ने उचो लियो, सिंघ नी पदवी दे ने मोटो कियो॥
७ नीच ने वधारच्या आछो हुवे नाहि, ते भाख्यो छै नीत सास्त्र माहि।
तो इण ने पाछो ऊदर करु मत्र राल, सिंघ ने उदर कियो ततकाल॥
८ ते उदर जावक हुवो अनाथ, तिणरी मिनकी वले करवा माडी घात।
जोगी देख अणकपा कीधी नाहि, किरतघन मूवो ते विल रे माहि॥
९ ज्यू नीच ने ऊच पदवी जीरवे नाहि, जोय देखो लोकिक लोकोत्तर माहि।
किण ही राय वधारयो अमराव' दोय, वले किया पदवी धर मोटा सोय॥
१० या मे एक तो सामधर्मी सुवनीत, वले राजनीत जाणे सर्व रीत।
तिण सू राय रूठो किणवार, पटो उतार काढ्यो देश बार॥
११ जब राय उपर इण न करचो रोस, जाण लियो निज कर्म रो दोप।
अलगो रहे तो ही माने कियो उपगार, राजा तणो सदा रहे हितकार॥
१२ कदा राजा ने भीड पडी सुण कान, भीड आयो लेई साथ सामान।
वले मुख सू कहै माहरा सिरधणी' आप, सारो दीसे ते आप तणो परताप॥
१३ इम सुण ने तिण सू रीज्यो राय, आगे विचे इ घणो वधारचो ताय।
वले घणो वधारचो तिण रो मान, आगेवाण कियो सगली ठाण॥
१४ बीजो हरामखोर लूणहराम, मामद्रोही रा दुष्ट परिणाम।
तिण सू पिण राय रूठो किणवार, तिण रो पटो उतार काढचो देश बार॥
१५ जब उ दोरा करे वले करे उजाड, राय तणा देश मे करे विगाड।
फिर २ मारे वले नगर ने गाम, वले राय सू सनमुख करे सग्राम॥
१६ राजा सू जुझ करे ताण ताण, देखो नीच वधारचा रा अै फल जाण।
ज्या वधारचो त्यासूइ माडचो गर्व, उपगार कीवो ते भूल गयो सर्व॥
१७ जब राजा अनेक करने उपाय, हरामखोर ने पकड लियो ताय।
इण रा हाथ पाव कान नाक ने काट, गाम दोलो फेरचो गधे चाढ॥
१८ वले विविध प्रकारे दीधो मार, फिट-फिट हुवो लोक मझार।
ए तो लोकिक कह्यो दिष्टत, हिवे लोकोत्तर सुणो मन पंत॥
१९ एक आचार्य मोटा अणगार, दोय जणा सू किया उपगार।
त्या ने समकत पमाय ने कियो साध, वले ज्ञान भणाय ने करी छै समाध॥

१ बिल्ली। २ जागीरदार विशेष। ३ मालिक।

२० या मे एक तो गुर भगता सुवनीत, तिण मे असल साधू री रीत।
घणो भणे तो ही न करे मान, अवनीत री वात सुणे नही कान ॥
२१ तिण न गुर करडे वचने देवे सीख, तो पिण अविना साहमी न भरे वीख[1]।
वले गुर निपेद वाम्वार, तो पिण न करे क्रोध लिगार।
२२ गुर ने देखी करडी निजर करुर, तो पिण न विगाडे मुख नो नूर।
गुर राखे तो रहे गुर नी हजूर, गुर न रापे तो सुपे रह दूर ॥
२३ सदा गुर सू रामे सुध परिणाम, रात दिवस करे गुर रा गुण ग्राम।
याद आवे गुर ना कियो उपगार, ते तो कदेय न घाले विसार ॥
२४ एहवा गुणा करे कर्मा नो सोप, अनुक्रमे पामे अविचल माप।
एहवा ऊच जीव ऊच पदवी लही, त्या रा सुपा रा कोइ पार नही ॥
२५ दूजा अवनीत री ऊधी रीत, जो घणो भणे ता घणा अवनीत।
गुर सू पिण यो करे अभिमान, ओर अवनीत ने लगावे कान ॥
२६ तिण नै गुरु मीख दवे चूको देप, ता तुरत जागे अवनीत न घेप।
घणो छेडव तो करे विगाड, त्रोध करे न होय जाअे न्यार ॥
२७ वले दूजा अविनीत हुव टोला माय, तिण ने पिण देवे भरमाय।
गुर सू मन भाग कूडी कर २ वात, तिण अवनीत ने ले जावे साय ॥
२८ गुर ना अवगुण वोले दिन रात, सका पिण नाणे तिल मात।
अवनीत वधारचा अति ही मिथ्यात, भूठी कर २ मुख सू वात ॥
२६ टाला ने गुर सू जागे वेर, अविनीत हुव छे एहवा गर।
केयक एहवा हुवे अवनीत, त्या ने छेडविया वोले विपरीत ॥
३० ते फिट २ हुवे इहलाक मझार, आग नरक निगाद मे खाए मार।
घणा भमण कर ससार मझार, तेह नो कहिता नाव पार ॥
३१ नीच न वधारचा आछो नाहि, ज्यू अविनीत जाण लेजा मन माहि।
इम साभल न उत्तम नरनार, अवनीत ने नीच ना सग निवार ॥

इहा वनीत तया अवनीत रा लखण ओलखाया ते उत्तम जीव साभली न अवगुण छोडें। गुण आदर। नीच अवनीत न वधारणो नही, तिण की सगत न करणी।

तया पैंतालीसा रा लिखत मे कह्यो—"टाला माहि कदाच वम जोगे टाला वारे परे ता टोला रा साधु-साधवियां रा असमात्र अवगुण-वाद वोलण रा त्याग छ, या रा अस भात्र सका पडे आसता उतर ज्यू

[1] गति।

बोलण रा त्याग छै। टोला मा सू फार साथे ले जावा रा त्याग छै। ओगुण बोलण रा त्याग छै। माहो माहि मन फटे ज्यू बोलण रा त्याग छै।" इम पेंतालीसा रा लिखत मे कह्यो। ते भणी सामण री गुणोत्कीर्त्त वात करणी। भागहीण हुवे सो उतरती करे, तथा भागहीण सुणे तथा सुणी आचार्य ने न कहे ते पिण भागहीण, तिणने तीर्थंकर नों चोर कहणो, हरामखोर कहणो, तीन धिकार देणी।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि ण पूयंति, जेण जाणंति तारिस॥
आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि ण गरहंति, जेण जाणंति तारिसं॥

इति 'दशवैकालिक मे कह्यो ते मर्यादा आज्ञा सुध आराध्या इहभव परभव मे सुख कल्याण हुवे।

---

१ दसवेआलिय, ५/२/४५,४०

नवमी हाजरी

पाच सुमति तीन गुप्त पच महाव्रत अखड आराधणा। ईर्य्या भाषा एपणा म सावचेत रहणो। आहारपाणी लेणो ते पक्की पूछा करीने लेणो। सूजतो आहार पिण आगला रो अभिप्राय देखने लेणो। पूजता परठता सावधान पणे रहणो। मन वचन काया गुप्ति मे सावचेत रहणो। तीर्थंकर नी आना अखड अराधणी। भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धान्त देखने आचार श्रद्धा प्रकट कीधी—विरत धम, अविरत ते अधम। आज्ञा माहे धम, आज्ञा बारे अधम। असजती रा जीवणो बछे ते राग, मरणो वछे ते द्वेष, तिरणो वछे ते वीतराग देव नो माग छ। तथा विवध प्रकार नी मर्यादा बाधी।

सवत १८४५ रे वरस भीखणजी स्वामी मर्यादा बाधी—सरधा आचार रो तथा कल्प रा सुतर रो बोल री समझ न पडे तो गुरु तथा भणणहार साधू कह ते मानणा न वेसे तो केवल्या ने भलावणो कह्या। इमहिज पचासा रा गुणसठा रा लिखत में कह्यो—सरधा आचार रो बोलवडा सू चरचणा वडा कह ते मान लेणा पिण आरासू चरच ने सका घालणी नही, एहवो कह्या।

तथा पैंतालीसा रा लिखत म कह्यो—साधा रा मन भाग न आप रे जिले करे ते तो महाभारीकर्मो कह्यो तथा और लिखत मे रास मे पिण जिलो बाधणो निपेध्यो छ तथा बावना रे वप आय्या रे मर्यादा बाधी तिण मे पिण कह्यो—किण ही साध आय्या माह दोप देखे ता ततकाल धणी ने कहणा के गुरा ने कहणो पिण ओर ने कहणो नही। किण ही आर्य्यां दाप जाणने सेव्यो हुवे त पाना में लिखिया विना विगै तरकारी खाणी नही, कदाच कारण पड्या न लिखे तो ओर आर्य्यां ने कहणो, सायद करने पछे पिण वेगा लिखणो पिण विना लिख्या रहणा नही, आय ने गुरा ने मूहडा सू कहणो नही, माहामा अजाग भाषा बोलणो नही, काइ साध साधविया रा अवगुण काढे तो साभलवा रा त्याग छै, इतरा कह्णा—स्वामी जी ने कहिजो तथा पचासा रा लिखत मे एहवा कह्यो—किण ही साध आर्य्यां में दोप देखे तो ततकाल धणी ने कहणो अथवा गुरा न कहणा पिण ओरा नें न कहिणो, घणा दिन आडा घालन दोष बतावे ता प्राछित रो धणी उहिज छ तथा विनीत अवनीत री चापी मे पिण एहवी गाथा कही—

> १ दोप[1] देखे किण ही साध ने, कहि देणो तिण नै एकता र।
> उ मानें नही तो कहणो गुरु कनें, ते श्रावक छ बुधिवता रे॥
> सुवनीत श्रावक एहवा॥

---

[1] लय—चद्रगुप्त राजा सुणो।

२ प्राछित दिराय ने सुध करे, पिण न कहे ओरा पास।
ते श्रावक गिरवा गभीर छै, वीर वखाण्या तास ॥
३ दोप रा धणी ने तो कहे नही, उण रा गुरने पिण नही कहेजाय।
ओर लोका आगे कहितो फिरे, तिण री परतीत किण विध आय ॥

इत्यादिक घणा दिना पछे दोष न कहिणो रास मे कह्यो छै। तथा 'साध सीखामण' ढाल रा दूहा मे घणा दिन हुवा पछे दोष कहे तिण ने अपछदो कह्यो, निरलज कह्यो, नागडो कह्यो, मर्यादा रो लोपणहार कह्यो, कषाड दुष्ट आतमा रो धणी कह्यो छै।

तथा चोतीसा रे वर्स आर्य्या रे मर्यादा वाधी तिण मे कह्यो—ग्रहस्थ आगे टोला रा साध आर्य्या री निंदा करे तिण ने घणी अजोग जाणणी। तिण ने एक मास पाचू विगै रा त्याग छै। जितरी वार करे जितरा मास पाचू विगै रा त्यागतथा तूकारो काढे तू सूसा री भागल तू झूठा वोली, इत्यादिक रो प्राछित कह्यो ते पालणो तथा साधा ने आय ने कहणो। गुर देवे ते लेणो, एहवो चोतीसा रा लिखत मे कह्यो। उसभ उदे टोला वारे नीकल्या तिण ने साध सरधणो नही, च्यार तीर्थ मे गिणणो नही, एहवा ने वादे पूजे तिके पिण आज्ञा वारे छै।

तथा पचासा रा लिखत मे कह्यो—कर्म धको दीधा टोला सू टले तो टोला रा साध साधव्या रा हुता अणहुता अवर्णवाद वोलण रा त्याग छै। टोला ने असाध सरध ने नवी दिख्या लेवे तो पिण अठी रा साध साधव्या री सका घालण रा त्याग छै।

तथा गुणसठा रा लिखत मे पिण इमहीज कह्यो—टोला वारे नीकली एक रात उपरत सरधा रा क्षेत्रा मे रहिवा रा त्याग छै। उपगरण टोला माहे करे ते परत पाना लिखे जाचे ते साथे ले जावण रा त्याग छै। तथा पचासा रा लिखत मे कह्यो—पेला रा दोष धारने भेला करे ते तो एकत मिरपावादी अन्याइ छै किण ने ही क्षेत्र काचो वताया किण ही ने कपडादिक मोटो दीधो इत्यादिक कारणे कपाय उठे जद गुरवादिक री निंद्या करण रा अवर्णवाद, वोलण रा एक एक आगे वोलण रा माहो मा मिल-मिल जिलो वाधण रा त्याग छै, अनता सिद्धा री आण छै। गुरवादिक रे आगे भेलो तो आप रे मुतलव रहे पछै आहारादिक घणा थोडा रो कपडादिक रो नाम लेई ने अवर्णवाद वोलण रा त्याग छै। इम इत्यादिक घणे ठा मे कह्यो छै, ते माटे अवनीतपणो छोड़े,

अने मर्यादा सुध पाले, आखी उमर ताई तन मन सू सेवा भक्ति करे आछी तरे सू पूर्व उपगार लेखवी ने सजम सम्यक्त रा दाता जाणी ने विनय मे प्रवर्ते। तथा ठाणाअग ठाणे तीजे तीना स उरण हुवे तेह समास नी ढाल भीखणजी स्वामी कीधी तेह माहे सिष्य गुरा सू उरण हुवे ते माहिली केयक गाथा—

१ जो गुर भगता सिख सुवनीत, गुर सू उरण हुवे इण रीत।
ए ठाणा अग सूत्र रे माय, तीजे ठाणे कह्यो जिनराय॥

२ गुर कीधो भारी उपगार, उतारयो ससार थी पार।
कियो मुगत तणो अधिकारी, त्या न किण विध घाले विसारी॥

३ रात दिवस गुर रो ध्यान ध्यावे, रात दिवस गुर रा गुण गावे।
गुर कीधो उपगार बतावे गुर रा गुण किण विध गावे॥

४ गुर मोसु कियो उपगार, ज्ञानादिक गुण रा दातार।
हु तो हूतो जीव अनानी, मोने सतगुर कीधा ग्यानी॥

५ हु तो अनाद काल रो मिथ्याती, हिंस्या धम तणो पखपाती।
ते माहरी सरधा खोटी छोडाय, गुर सम्यक्त दे आण्यो ठाय॥

६ हू खूतो थो ससार मभार जव हू सवता पाप अठार।
मोने दिष्या दे गुर कियो साध, म्हारी भव भव मेटी असमाध॥

७ हू डूबो इण ससार रे माहि, गुर बारे काढचो बाह समाहि।
साध श्रावक धम पमायो, त्या सू ऊरण किणविध थायो॥

८ हू अनत ससारी जीव थो भारी, मोने गुर किया परत ससारी।
हू दुलभ बोधी जीव थो करलो, गुरमान सुलभ बोधी किया सरलो॥

९ हू ता अचरम मिथ्यात सहोत, ससार रा छहडा रहोत।
गुर चरम करे सिर चाढचो, म्हारा ससार रा छेहडा काढचा॥

१० मोने गुर कियो मुगति नजीक, इद्रा नो पिण किया पुजनीक।
म्हारो जीतव जन्म सुधारचा, माने ससार थी पार उतारचो॥

११ सिख सुवनीत हलुकर्मी होवे, ते गुर रा उपगार साहमा जोवे।
जिण आगम सीपामण धारी, हिवे कुण-कुण करे विचारी॥

लय—विन रा भाव सुण-सुण गूजे।

१२ कोइ पटो राजा रो खावे, कोइ रोजगार नित पावें।
ते पिण विनो करें जोडी हाथ, वलें लेंपवें सिर धणीनाथ ॥

१३ तिण ने करडी [1]मूम धणी मेलें, ते पिण धणी रो वचन न ठेलें।
मर जावे तिण रा मूढा आगे, धणी मेल पाछो नहीं भागे ॥

१४ तिण धणी रो पिण काचो आधार, थोडा मे देवे पटो उतार।
वले काढ दे देस रे वार, कदा जीवा पिण न्हाये मार ॥

१५ तिण धणी रो पिण वचन न लोपे, मरणे साह्मो मडें पग रोपे।
जाणे आउ धणी रे काम, तो हू नहीं होवू लूणहराम ॥

१६ रिजक रोटी पटा रे काजे, मर जाए पिण पाछो नही भाजे।
तो हू मुगत जावा रे काज, पडित मरण करतो नाणु लाज ॥

१७ गुर शिष ने मुगत गामी कीधो, मोप रो पटो अवचल दीधो।
दलद्र दियो दूर गमाय, ग्यानदरसणचारिततपपमाय ॥

१८ जो उ शिष हुवे सुवनीत, गुर री आज्ञा पालें रूडी रीत।
ते गुर रो वचन किण विध लोपे, मरणा साह्मो तुरत पग रोपे ॥

एहवा वनीत रा गुण कह्या। ते विनीत कीधा उपगार रो जाण तिण ने वखाण्यो। तिण सू विनीत ते गुर री आज्ञा अखण्ड पाले आखी उमरमुरजी प्रमाणे प्रवर्ते। गुर री वाधी मर्यादा सर्व चोखीपाले।

तथा पेंतालीसा रा लिखत मे कह्यो—"टोला माहे कदाच कर्म जोगे टोला वारे पडे तो टोला रा साघु साघविया रा असमात्र अवर्णवाद वोलण रा त्याग छै। या री असमात्र सका पडे आसता उतरे ज्यू वोलण रा त्याग छै। टोला माहे सू फारने साथे ले जावा रा त्याग छै। उ आवे तो ही ले जावा रा त्याग छै। टोला माहे न वारे नीकल्या पिण ओगुण वोलण रा त्याग छै। माहो मा मन फटे ज्य वोलण रा त्याग छै।" इम पेंतालीसा रा लिखत मे कह्यो। ते भणी सासण री गुणोत्कीर्तन वात करणी भागहीण हुवे सो उतरती वात करे, तथा भागहीण सुणे, तथा सुणी आचार्य ने न कहे ते पिण भागहीण। तिण ने तीर्थंकर नो चोर कहणो, हरामखोर कहणो, तीन धिकार देणी।

---

१ स्थिति।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि ण पूयंति, जेण जाणंति तारिस ॥

आयरिए नाराहेइ, समणे यात्रि तारिसो।
गिहत्था वि ण गरहंति, जेण जाणंति तारिस ॥

इति 'दशवैकालिक मे कह्यो ते मर्यादा आज्ञा सुद्ध आराघ्या इहभव परभव म सुख किल्याण हुवे।

ए हाजरी रची, सवत् १६१० रा जेष्ठ विघ ५ वार बुघ वखतगढ मध्ये देश मालवा म।

---

१ दसवेआलिय ५/२।४५ ४०

दसवीं हाजरी

पाच सुमति तीन गुप्त पच महाव्रत अखड आराधणा। ईर्य्या भाषा एषणा मे सावचेत रहिणो। आहार पाणी लेणो ते पक्की पूछा करी ने लेणो। सूजतो आहार पिण आगला रो अभिप्राय देखने लेणो। पूजता परिठवता सावधान पणे रहणो। मन वचन काया गुप्ति मे सावचेत रहणो। तीर्थंकर नी आज्ञा अखड आराधणी। श्री भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धात देखने आचार श्रद्धा प्रगट कीधी—विरत धर्म, अविरत मे अधर्म। आज्ञा माहें धर्म, ने आज्ञा बारे अधर्म। असजती रो जीवणो वछे ते राग, मरणो वछे ते द्वेष, तिरणो वछे ते वीतराग नो मार्ग छै।

तथा विविध प्रकार नी मर्यादा बाधी। सवत् १८५० रे वरस भीखणजी स्वामी साधा रे मर्यादा बाधी—"किण ही साध आर्य्या मे दोष देखे तो ततकाल धणी ने कहणो तथा गुरा ने कहिणो, पिण ओरा ने न कहिणो। घणा दिन आडा घालने दोष बतावे तो प्राछित रो धणी उहीज छै।

तथा सवत् १८५२ वरस आर्य्यां रे मरजादा बाधी, तिण मे एहवो कह्यो—किण ही साध आर्य्या मे दोष हुवें तो दोष रा धणी ने कहिणो, तथा गुरा ने कहिणो और किण ही आगे नही। रहिसे रहिसे और भूडी जाणे ज्यू कहणो नही। किण ही आर्य्या दोष जाणने सेव्यो हुवे ते पाना मे लिखिया विना विगै तरकारी खाणी नही। कदाच कारण पड्या न लिखे तो ओर आर्य्या ने कहिणो। सायद करने पछें पिण वेगो लिखणो। पिण विना लिख्या रहिणो नही, आय ने गुरा नै मूहढा सू कहणो नही। माहोमा अजोग भाषा बोलणी नही। जिण रा परिणाम टोला माहे रहिण रा हुवें तो रहिजो। पिण टोला बारे हुवा पछें टोला रा साध साधव्या रा अवगुण बोलण रा अनता सिद्धा री साख करने त्याग छै। कोइ साध साधव्या रा ओगुण काढे तो साभलण रा त्याग छै। इतरो कहणो—'स्वामीजी ने कहिजो, ए बावनारा लिखत मे कह्यो।

तथा पचासा रे वरस साधा रे लिखत कीधो, तिण मे एहवो कह्यो—"किण ही साध साधव्या रा ओगुण बोलने किण ही ने फारने मन भागने खोटा सरधावा रा त्याग छै। किण ही सू साधपणो पलतो दीसे नही, अथवा सभाव किण सू इ मिलतो दीसे नही, अथवा कपाइ बेंटो जाणने कोइ न राखे अथवा खेत्र आछो न बताया अथवा कपडादिक रें कारणें अथवा अजोग जाण ओर साधु गण सू दूरो करें अथवा आपने गण सू दूरो करतो जाणने इत्यादिक अनेक कारण उपने टोला सू न्यारो पड़ें तो किण ही साध साधविया रा ओगुण बोलण रा हूतो अणहूतो खूचणो काढ़ण रा त्याग छै।

तथा जिलो न वाघणो, सवत् १८४५ रा लिखत मे कह्या—टोला माहे पिण साधा रा मन भागन आपरे जिले करें ते तो महाभारी कर्मो जाणवा विस्वासघाती जाणवो इसडी घात पावडी करे ते ता अनत मसार नी माड छ। रोगिया वचे ता मभाव रा अजाग ने माह रामे ते भू डो छ या वोला री मर्यादा बाधी ते चोखी पालणी, लोपवा रा अनता सिद्धा री साख करन पचखाण छ। ए पचखाण पालण रा परिणाम हुवे तो आरे हुयज्यो। जिनै माग चालण रा परिणाम हुवे गुरु न रीझावणा हुवे ठागा सू टोला माहि रहिणो न छ। तथा पचासा रा लिखत मे तथा रास मे जिला ने घणो निषेध्यो छै, ते माटे जिला वाधवा रा त्याग छै।

तथा चोतीसा रा लिखत म आय्या रे मर्यादा वाधी ते कहे छै—टोला सू छूटक हुवा री वात माने त्याने मूरख कहीजे चार कहीजे, अनेक अनेक सूस करण ने त्यारी हुवे तो ही उत्तम जीव न माने एहवो कह्या।

तथा ५०सा रे लिखत म मयादा वाधी "दाप कोइ ग्रहस्थ कह जिण ने यू कहणो—म्हाने क्यान कहो के ता घणी ने कहा के स्वामी जी ने कहा ज्यू या न प्राछित दिराय ने सुद्ध करें नही कहा ता थे पिण दापीला गुरा रा सेवणहार छा। जो स्वामी जी ने न कहिसो तो था मे पिण वाक छ। थे मान कह्या काइ हुवें, यू कहिन त्यारा हुवें पिण आप वेंदा म क्यान परें। पेला रा दाप धारन भेला करें ते ता एकत मरपावादी अन्याइ छ। किण ही ने खेत्र काचो बताया, किण ही न कपडादिक मोटो दीघा, इत्यादिक कारणें कषाय उठें जद गुरवादिक री निंदा करण रा अवरणवाद वालण रा एक एक आगे वालण रा माहो माहि मिलने जिलो वाघण रा त्याग छै। अनता सिद्धा री आण छ। डाहा हुवे ते विचार जायजो। लुखे खेत्र ता उपगार हुव ता ही न रहे, आछें खेत्र उपगार देखे नही ता इ पर रह, त यू करणा नही, चोमासे ता अवसर देख तो रहिणो, पिण शेषें काल ता रहणाहीज। किण ही री खावा पीवादिक री सका पडें तो उण ने साघ कहे, वडा कष्टे ज्यू करणा, दाय जणा ता विचरें ने आछा-आछा माटा मोटा सालाकारिया लोलपी थका जावता फिरें गुर राखे तठें न रहे। इम करणा नही छ, घणा भेला रहितो दुखो, दाय जणा म सुखी, लालपी थका यू करणा नही छ, ए सव पचासा रा लिखत म कह्या छें।

तथा चोतीसा रें वश आय्यी रें मयादा वाघी तिण मे कह्यो—ग्रहस्थ आगे टाला रा साघ आय्या री निंद्या करें तिण ने घणी अजोग जाणणी तिण न एक मास पाचू विग रा त्याग छ। तथा तूकारा काढें त् मूसा री भागल तू भूठाबोली इत्यादिक रा प्राछित कह्या ते पालणा। तथा साघा न आय ने कहणो। गुर दवें ते दड लेणो। एहवो चोतीसा रा लिखत म कह्या तथा घणा दिन पछें दाप कह तिण न 'साघ सीखामणो' रा

दूहा मे अपछदो कह्यो। निरलज कह्यो। नागडो कह्यो। मर्यादा रो लोपणहार कह्यो। तिण री वात मूल मानणी नही। एहवो कह्यो। तथा घणा दिना पछे दोप कहे तिण टालोकर ने रास मे घणो निषेध्यो ते गाथा—

१ 'अवगुण सुण सुण ने समदृष्टी, या ने जाणे धर्म सू भिष्टी।
या रा बोल्या री परतीत नाणे, भूठ मे भूठ बोलतो जाणे॥
२ सगला श्रावक सरीषा नाहि, अकल जुदी जुदी घट माहि।
समदृष्टी री साची हुवे दृष्ट, या ने करे थोडा माहे खिष्ट॥
३ या ने न्याय सू देवे जाव, पाडे घणा लोका माहे आव।
या री मूल न आणे सक, या ने देखाड दे यारो वक॥
४ थे घणा दोप कहो गुरु माहि, घणा वरसा रा जाणा छो ताहि।
तो थे पिण साधू किम थाय, जाण-जाण भेला रह्या माय॥
५ जो या मे दोप घणा छै अनेक, कदा दोप नही छै एक।
ते तो केवल ज्ञानी रह्या देख, पिण थे तो वूडा लेइ भेप॥
६ जो या मे दोप कह्या थे साचा, तो ही थे तो निश्चे नही आछा।
जो झूठा कह्या तो विशेप भूडा, थे तो दोनू प्रकारे वूडा॥
७ थे दोषीला ने वाद्या कहो पाप, भेला रह्या पिण कहो सताप।
दोषीला ने देवे आहार पाणी, वले उपधादिक देवे आणी॥
८ हर कोइ वस्तु देवे आण, करे विनो वैयावच जाण।
दोपीला सू थे कियो सभोग, तिण रा पिण जाणजो माठा जोग॥
९ इत्यादिक दोपीला सू करत, तिण ने पाप कह्यो छै एकत।
ए थे जाण-जाण किया काम, ते पिण घणा वरसा लग ताम॥
१० घणा वरस किया एहवा कर्म, तिण सू वूड गयो थारो धर्म।
निरतर दोप सेवण लागा, हुआ व्रत विहूणा नागा॥
११ थे कियो अकारज मोटो, छाने-छाने चलायो पोटो।
थे तो वाध्या करमा रा जालो, आत्मा ने लगाया कालो॥
१२ थे गुर ने निश्चे जाण्या असाध, त्या ने वाद्या जाणी असमाध।
त्या रा हिज वाद्या नित पाय, मस्तक दोनू पग रे लगाय॥
१३ या सू कीधा थे वारे सभोग, ते पिण जाण्या सावद्य जोग।
सावज सेव्यो निरतर जाण, थे पूरा मूढ अयाण॥
१४ थे भण-भण ने पाना पोथा, चारित्र विण रह गया थोथा।
थे कहो अर्थ करा म्हे उडा, थे भण-भण ने काय वूडा॥

१ लय विनै रा भाव सुण-सुण गूजे।

१५ थे विहार करता गाम गाम, सिख मिखणी वधारण काम।
किण नें देता वधो कराय, किण न देता घर छोडाय ॥
१६ वले कर कर गुर रा गुणग्राम, चढावता लाका रा परिणाम।
वले थे गुर न खोटा जाणता ताहि, आरा ने क्यू नापता माहि ॥
१७ पोते पडिया जाणो खाड माय, तो आरा ने नापता किण न्याय।
ओरा ने डवोवण रो उपाय, जाण जाण करता था ताय ॥
१८ पच पद वदन मीखावत ताह्यो, तिण मे गुर रा नाम घरायो।
तिण गुर ने वदचा जाणता पाप, ओरा ने काय डवोया आप ॥
१९ ज्यू नकटो नकटा हुवा चाव, उसभ उद माठी मति आवे।
ज्यू थे डूवता दोपीला माहि, ज्यू आरा न डवावता ताहि ॥
२० ओरा सू करता एहवो उपगार, था रा भणिया रो ओहीज सार।
इसडो कूड कपट थे चलायो, था रो छूटका किण विघ थाया ॥
२१ जिण माग मे हुवा ठगो, थे दियो घणा न दगा।
ठग-ठग खाघा लोका रा माल, था रा हासी कवण हुवाल ॥
२२ आछी वसत हुती घर माहि, आहार पाणी कपडादिक ताहि।
थान गुर जाण हरप सू देता, सा थारा नीकल गया पता ॥
२३ म्हे थान वादता वारूवार, जद म्हान हुता हरप अपार।
थान जाणता सुद्ध आचारी, थे ता छान रह्या अणाचारी ॥
२४ म्ह थाने जाणता था पुरस माटा, पिण थे ता नीकलिया खाटा।
म थान जाणता उत्तम साघ, थे तो हाय नीवडिया असाध ॥
२५ थे जाण रह्या दापीला माहचा ठागा सू थे काम चलायो।
थे जीतव जन्म विगाडचो, नर नो भव निरथक हारचो ॥
२६ थे घणा दिना रा कहो छो दोप था री वात दीम छ फोक।
साच झूठ ता केवली जाणे, छद्मस्थ प्रतीत नाणे ॥
२७ थे हेत माहे तो दोपण ढक्या हेत तूटा कहता नही सक्या।
थारी किम आवें परतीत, था ने जाण लिया विपरीत ॥
२८ थे दापीला सू कियो आहार जद पिण नही डरिया लिगार।
ता हिवें आल दे तो किम डरमी या री परतीत मूख करमी ॥
२९ ए दोप वयान किया भेला थे क्यू न कह्या तिण वेला।
था मे माघ तणी रीत हुवें ता जिण दिन रा जिण दिन कहतो ॥
३० थे दोपीला सू कियो सभाग, थारा वरत्या माठा जाग।
थारी परतीत नावें म्हान, या रा दाप राम्या थे छान ॥

३१ थे तो कीधो अकारज मोटो, जिण मारग मे चलायो खोटो।
थारी भिष्ट हुइ मति बुध, हिवै प्राछित ले होय सुध॥
३२ उण री तो थारा कह्या सू सक, पिण थे तो दोपीला निमक।
इम कही उण ने घालणो कूडो, घणा वेठा देणी मुख चूडो।
३३ ज्यू कोइ वले न दूजी वार, किण रा दोप न ढाके लिगार।
दोप ढाक्या सू हुवे खुवारी, टाको भलै तो अनत ससारी॥
३४ सका सहित न राखे माय, ओर साधु दोपीला न थाय।
दोपीला ने जाणी राखे माय, तो सगला असाधु थाय॥
३५ इम कह्या या ने जाव न आवे, जव झूठी वात वणावे।
या रा दोप न कह्या म्हे तो डरते, गुर सू पिण लाजा मरते॥
३६ रखे करदे मोनें टोला वारे, मुदे तो ओहिज डर रह्यो म्हारे।
म्हे दोप सेव्या या रे कह्ये जाण, या सेव्या री न करी ताण॥
३७ कदे हू दे तो दोप वताय, जव मारी देता वात उडाय।
माहरी एकला री आसग न काय, तिण सू रह्यो दोपीला मांय॥
३८ हिवै तो हुआ म्हे दोय, दोप सेवण न दा कोय।
इसडी जोम[1] री वाता वणावे, मन माने ज्यू गोला चलावै॥
३९ जव या ने कहिणो एम, था रो सावपणो रह्यो केम।
थे तो डरता अकारज कीधो, तिणरो प्राछित पिण नही लीधो॥
४० कदा गुर काचो पाणी मगावत, तो थे डरता थका भर ल्यावत।
करावत पाप हर कोइ, तो थे डरता करता सोइ॥
४१ कदा गुर पिण भारी पाप करता, तो ही भेला रहिता डरता।
भागला माहे रहता खूता, पिण एकला कदेय न हूता॥
४२ इसडी थारी गीदडाइ, थे इज थारा मुख सूं वताइ।
इसडा प्राक्रम था माहे पावें, थारी आगा सू परतीत ना आवें॥
४३ साधा ने डरतो मूल न रहणो, दोप देखे सताव सू कहणो।
डरता न कह्या तो गीदड पूरा, हिवै किण विध होस्यो सूरा॥
४४ एकला होयवा स्यू डरते, दोप न कह्या थे लाजा मरते।
जो हिवै ढाकोला दोप अनेक, जाणे होय जावाला एक एक॥
४५ हिवै था दोया रे माय, कोइ दोप दे अनेक लगाय।
तो पिण चावा[2] न करो लाजा मरता, एकला होण सूं वले डरता॥
४६ एकला होण सू डरो दोइ, माहोमा देसो दोप लकोइ।
या देख लीधी थारी रीत, हिवै जावक नावै परतीत॥

---
१ भूठा अहकार। २ प्रगट।

४७ थारे ता माहो मा दोप देख, हिवे तो थे ढाकसो विशेष।
एकला होवण रो डर थान, माहो मा दोप राखसो छान ॥
४८ जो हिवै थेकह्या म्हे न राखा छाने, तो हिवै वात थारी कुण माने।
थे तो वेठा परतीत गमाय, था री मूरख माने वाय ॥
४९ किण ही चार रो हुवो उघाडा, फिट-फिट हुवो लाक मझारा।
घणा लाका जाणे लिया तास, पछ कुण करे तिणरो वेसास ॥
५० ज्यू थारो पिण हुवो उघाडो, दोपीला भेला काढ्या जमारा।
परगट न किया थे दाप, थे जनम गमाया फोक ॥

इम घणा दिना पछै दोप कहै तिण ने भीखणजी स्वामी निपेध्या छ। ते माटे टोला माहै तथा वारै नीकल्या घणा दिना पछ दाप न कहणा। दाप रा धणी ने तुरत कहणो। पिण परपूठ आर आगे न कहिणो।

पॅतालीसा रा लिखत मे एहवो कह्या—टोला माहि कदाच कम जाग टोला वारे पड तो टाला रा साध साधविया रा असमात्र अवणवाद वालण रा त्याग छ। या री असमात्र सका पडे आसता उतरे ज्यू बोलण रा त्याग छ। टाला मा सू फारने साथे ले जावा रा त्याग छ। उ आवे ता ही ले जावण रा त्याग छ। टाला माहै ने वारे पिणनीकल्या आगुणबोलण रा त्यागछ। माहामा मनफटै ज्यू बोलण रा त्याग छ। इम पॅतालीसा रा लिखत म कह्या। ते भणी सासण री गुणात्कीतन वात करणी। भागहीण हुवे सो उतरती करे, तथा भागहीण सुण, सुणी आचाय न न कह त पिण भागहीण। तिण न तीर्थंकर री चार कहणा, हरामखार कहणो, तीन धिरकार दणी—

आयरिए आराहेइ समणे यावि तारिसा।
गिहत्था वि ण पूयति जेण जाणति तारिस ॥
आयरिए नाराहइ, समण यावि तारिसो।
गिहत्था विण गरहति जेण जाणति तारिस ॥

इति 'दशवकालिक म कह्या त मयादा आना सुध आराध्या इहभव परभव सुख कल्याण हुव।

ए हाजरी रची सवत् १८१० जेठ विद ८ वार गुरु वपनगढ म

१ दशवैकालिक ५/२/४५,४०

ग्यारहवीं हाजरी

पाच सुमति तीन गुप्त पच महाव्रत अखंड अराधणा। ईर्य्या भाषा एषणा मे सावचेत रहिणो। आहार पाणी लेणो पडे ते पकी पूछा करने लेणो। सूजतो आहार पिण आगला रो अभिप्राय देखने लेणो। पूजता परिठवता सावधानपणे रहणो मन वचन काया गुप्ति मे सावचेत रहणो। तीर्थंकर री आज्ञा अखंड आराधणी श्री भीखण जी स्वामी सूत्र सिद्धात देखने आचार श्रद्धा प्रगट कीधी -- विरतधर्म ने अविरत अधर्म। आज्ञा माहि धर्म, आज्ञा वारे अधर्म। असजती रो जीवणो वछे ते राग, मरणो वछे ते द्वेष, तिरणो वछे ते वीतराग देवनो मार्ग छै तथा विवध प्रकार नो मर्यादा वाधी।

तथा सवत् १८४१ रे वरस भीखणजी स्वामी मर्यादा वाधी तिण मे कह्यो— किण ही साध ने दोष लागे तो धणी ने सताव सू कहणो, पिण दोष भेला करणा नहीं। तथा सवत् १८५० रा लिखत मे कह्यो - किण ही साध-साधविया रा ओगुण वोल ने किण ही ने फाडने मन भाग ने खोटा सरधावण रा त्याग छै। एहवो कह्यो। तथा अनेक कारण उपने टोला थी न्यारो पडे तो किण ही साध साधविया रा ओगुण वोलण रा हुतो अणहुतो खूचणो काढण रा त्याग छै। रहिसे – रहिसे लोका रे संका घालने आसता उतारण रा त्याग छै, एहवो कह्यो। तथा किण ही साध आर्य्या मे दोष देखे तो ततकाल धणी ने कहिणो अथवा गुरा ने कहिणो पिण ओरा ने न कहिणो घणा दिन आडा घालने दोष वतावे तो प्राछित रो धणी उहिज छै। तथा टोला माहे भेद पारणो नही। माहो मांं जिलो वाधणो नही। मिल मिल ने टोला सू मन उचक्यो अथवा साधपणो पले नही तो किण ही ने साथ ले जावण रा अनता सिद्धा री साख करने पचखाण छै, एहवो कह्यो।

तथा सवत् १८५२ रे वर्स आर्य्या रे मर्यादा वाधी तिण मे कह्यो—किण ही, साध-साधवी मे दोष देखे तो दोष रा धणी आगे कहणो के गुरा आगे कहणो पिण ओर किण ही आगे कहणो नही। किण ही आर्य्या दोष जाणने सेव्यो हुवे ते पाना मे लिखिया विना विगै तरकारी खाणी नही। कदाच कारण पड्या न लिखे तो ओर आर्य्या ने कहणो। सायद करने पछे पिण वेगो लिखणो। जिण रा परिणाम टोला माहे रहिण रा हुवे ते रहिजो। पिण टोला वारे हुआ पछे साध साधव्या रा अवगुण वोलण रा अनता सिद्धा री साख करने त्याग छै। वले करली — करली मरजादा वाधे त्या मे पिण अनता सिद्धा री साख करने ना कहिण रा त्याग छै। कोइ साध साधविया रा ओगुण काढे तो

१८ या री करता था केइ ताण, त्या रो गल गयो सगलो माण।
या री करता केइ पषपात, त्यारी पिण विगडे गइ वात॥
१९ या ने जाणता था केइ साचा, ते तो प्राछित ले हुवा काचा।
वले ताण यारी दूजीवार, तो ए पूरा मूढ गिंवार॥
२० आगे तो या री राखता परतीत, निज गुर सू हुआ विपरीत।
सुद्ध साधा ने कह्या वले भूडा, ते ता दोनू प्रकार बूडा॥
२१ जो यार बंधिया निकाचित कम, तो छूट जासी आ सू जिन धम।
जासी मानव रो भव हार, पडसी नरक निगोद मझार॥
२२ जो या रे न बध्यो निकाचित कम वदा पड जाय पाछा नम।
वदा आलोय ने मल काढे, निज काम सिराडे चाढे॥
२३ यारा थका हुता घणा गेरी, गण रा हुआ छा पूरा वरी।
सब साधा ने असाध सरधाया, त्या म हीज डड आद नें आया॥
२४ या ता च्यार तीथ रै माय, कीधो था घणा अन्याय।
पिण प्राछित ले आया माही, टाला री परतीत अणाइ॥
२५ घणा श्रावक हुआ निसक, यामेहीज जाणिया वक।
या तो दोष बताया माय, आतो झूठी कीधी वकवाय॥
२६ वार थका ता कहिता असाध, माह आए सरधे लिया साध।
इण विध बात्या विपरीत त्या री तुरत नाव परतीत॥
२७ टाला रा साध साधविया माहि, साधपणा न कहता ताहि।
इण वात सू भूडा घणा दीठा, पडिया च्यार तीथ म फीटा॥
२८ वदा गुरु ने पिण दापण लागे, ता कहिणा नही आर आग।
गुर न हीज कहिणा सताव घणा दिन नही राखणा दाव॥
२९ वले फाटा तादा री वात विण मू करणी नही तिलमात।
जिलो राखणा नही माहो माहि, फर माये न जावणा नांहि॥
३० पाचू पद विच दे आया माय, आलावणा प्राछित ठहराय।
श्रावणा मे राखणा रूडी रीत, पूरी उपजावणी परतीत॥
३१ आगा विनइ रहणा विनीत वाणी सब आगनी रीत।
इत्यादि पहली मठी ठहराय, पछ गण म लणा थाप्या ताय॥

अथ दुहा ज अवनीत री प्रकृत ओलखाइ गण म ता गुरा
रा गुन गावे, वार नीकली अवगुन बोल, पर रुद पाना ले दे माहै

आवे, कर्म जोगे वले वारे पड्यां अवगुण बोले ए अवनीत अजोग रा लखण न्यारो थया अवगुण बोले तथा मर्याद लिखत सुणी आप ऊपर खाचे।

वले रास मे एहवी गाथा कही—

३२ [1]विनीत सुण-सुण पामै हरप, पडे अवनीत रै मन धडक।
ते तो रहे चोर ज्यू राच, लेवे आपण ऊपर खाच॥

अथ अठे पिण इम कह्यो—विनीत गुण-सुण हरपे, अवनीत रे धडक पडे, पोता ऊपर खाच लेवे। आगे पिण वीरभाण जी हुओ तिण विनीत अवनीत री चोपी भीखणजी स्वामी जोडी तिका तिण पोता ऊपर खेची। साधा कने अनेक अवगुण वोल्या। फटावा रो उपाय कीधो। तिण ने भीखणजी स्वामी अवनीत अजोग जाणने टोला वारे कियो। ते विराधकपणे मूओ। जे कोइ इसडा लखण राखै तिण रा पिण एहवा इज हवाल हुवै तिण सू थोडा वरस रे काजे अनत सुख आत्मिक पुद्‌गलिक हारज्यो मती। भीखणजी स्वामी री मर्यादा सुद्ध पाल्या आराधक पद पावोला तिण कारण मर्यादा लोपजो मती।

तथा पेतालीसा रा लिखत मे कह्यो—टोला माहे कदाच कर्म जोगे टोला वारे परे तो टोला रा साव-सावविया रा अस मात्र अवर्णवाद वोलण रा त्याग छै। या री अस मात्र सका पड़े आसता उतरे ज्यू वोलण रा त्याग छै टोला मा सू फारने साथे ले जावा रा त्याग छै। उ आवे तो ही ले जावा रा त्याग छै। टोला माहे नै वारे नीकल्या पिण अवगुण वोलण रा त्याग छै। माहोमा मन फटे ज्यू वोलण रा त्याग छै। इम पेतालीसा रा लिखत मे कह्यो ते भणी सासण री गुणोत्कीर्तन वात करणी। भागहीण हुवे सो उतरती वात करे, तथा भागहीण सुणे, सुणी आचार्य ने न कहे ते पिण भाग हीण, तिण ने तीर्थंकर नो चोर कहणो, हरामखोर कहिणो। तीन धिक्कार देणी।

---

१ लय : म्हारी सासू रो नाम छै फूली।

आयरिए आराहइ, समणे यावि तारिसा।
गिहत्या वि ण पूयंति, जेण जाणंति तारिस ॥
आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्या वि ण गरहृंति, जेण जाणंति तारिम ॥

[1]इति दशवइकालिक म कह्यो ते मर्यादा अराध्या इहभव परभव म सुख कल्याण हुव ।

ए हाजरी रची सवत १९१० जेठ विद १० वार सोम वपतगढ मध्ये

---

[1] दसवेआलिय ५/२/४५ ४०

बारहवीं हाजरी

पाच सुमति तीन गुप्ति पच महाव्रत अखड अराधणा । ईर्य्या भाषा एषणा मे सावचेत रहिणो । आहार पाणी लेणो ते पकी पूछा करी ने लेणो । सूजतो आहार पाणी पिण आगला रा अभिप्राय देख लेणो । पूजता परठवता सावधान पणे रहणो । मन वचन काया गुप्ति मे सावचेत रहिणो । तीर्थंकर नी आज्ञा अखड आराधणी । भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धात देख ने आचार सरधा प्रगट कीधा—विरत धर्म ने अविरत अधर्म, आज्ञा माहे धर्म आज्ञा बारे अधर्म, असजती रो जीवणो वछे ते राग, मरणो वछे ते द्वेष, तिरणो वछे ते वीतराग देवनो मार्ग । तथा विविध प्रकार नी मर्यादा बाधी ।

सवत् १८५० रे वरस साधा रे मर्यादा बाधी तिण मे कह्यो—किण ही साध आर्य्या मे दोष देखे तो ततकाल धणी ने कहणो अथवा गुरा ने कहणो पिण ओरा ने न कहिणो । घणा दिन आडा घाल ने दोष बतावे तो प्राछित रो धणी उहीज छै ।

तथा संवत् १८५२ रे वरस मर्यादा बाधी, तिण मे कह्यो—किण ही साध आर्य्या माहै दोष देखें तो ततकाल धणी ने कहणो के गुरा ने कहणो पिण ओरा ने कहणो नही । किण ही आर्य्या दोष जाण ने सेव्यो हुवे ते पाना मे लिख्या विना विगै तरकारी खाणी नहीं । कोइ साध साधव्या रा अवगुण काढे तो साभलवा रा त्याग छै । इतरो कहिणो स्वामी जी ने कहिजो इमहीज पैंतालीसा रा पचासा रा लिखत मे अने रास मे जिला ने घणो निषेध्यो छै । माटे जिलो बाधण रा त्याग छै । तथा घणा दिना पछे दोष न कहणो रास मे वरज्यो छै । तथा 'साध सीखावण' ढाल रा दूहा मे घणा दिन पछै दोष कहे तिण ने अपछंदो कह्यो । निर्लज कह्यो । नागडो कह्यो छै ।

तथा सवत् १८३४ रे वरस आर्य्या रे मर्यादा बाधी तिण मे कह्यो—गृहस्या माहि आमना जणाय ने एक-एक री आसता उतारे तिण मे तो अवगुण घणाहीज छै । वले फतुजी ने मांहि लीधी तिको लिखत सगली आर्य्या रे कबूल छै । वले अनेक-अनेक बोला री करली मर्यादा बाधी ते कबूल छै । ना कहिण रा त्याग छै ।

तथा बत्तीसा रा पचासा रा गुणसठा रा लिखत मे कह्यो—उसभ उदै टोला बारे नीकल्या तिण ने साध सरधणो नही । च्यार तीर्थ मे गिणणो नही । एहवा ने वादे पूजे तिके पिण आज्ञा बारे छै ।

तथा पचासा रा लिखत म कह्यो—पेला रा दोप धार नें भेला करे ते तो एकत मपावादी अयाइ छै। किण ही ने सेत्र काचो वताया किण हीं नें कपडादिक मोटो दीधा इत्यादिक कारणे कपाय उठे जद गुरवादिक री निंद्या करण रा अवणवाद वालणरा एक एक आगे वालण रा माहो मा मिलनें जिलो वाधण रा त्याग छ। अनता सिद्धा री आण छै। कदा कम घका दोधा टोला सू टले तो टाला रा साघ साधव्या रा अस मात्र हुता अणहुता अवणवाद वोलण रा त्याग छ। टाला ने असाध सरधने नवी दिख्या लेवे तो पिण अठीरा साघ साधव्या री सका घालण रा त्याग छ।

तथा गुणसठा रा निखित मे पिण इमहीज कह्यो। वली कह्यो—टोला वारे नीकली एक रात उपरत सरधा रा खेत्रा म रहिवा रा त्याग छ उपगरण टोला माह करे परत पाना लिखे जाचे तें साथे ले जावण रा त्याग छ। तथा चोतीसा रा लिखत मे आय्या रे मर्यादा वावी तिण मे कह्यो ग्रहस्थ आगे टाला रा साघ आय्या री निंद्या करे तिण ने एक मास पाच विगै रा त्याग। जितरी वार करें जितरा मास पाचू विगै रा त्याग। तथा जिण आर्य्यां साथे मत्या तिण आय्या भेंली रह अथवा आर्य्या माहो माहि सेपे काल भेंली रह अथवा चोमासो भेला रह त्या रा दोप हुवे तो साधा सु भला हुवा कहि देणो न कहे तो उतरा प्रायछित उण न छ। तथा जिण आय्या ने ओर आर्य्या साथे मेल्या ना न कहिणो साथे जाणो न जाए ता पाचू विग खावा रा त्याग न जाए जित रा दिन। वले और प्राछित जठा वारे। एहवा कह्यो छ। तथा साधा रा मेलिया विना आय्या आर री ओर आय्या साथ जाए तो जितरा दिन रह जितरा दिन पाचू विगै रा त्याग वले भारी प्राछित जठा वारे। एहवा कह्या।

टाला सू छूट हुआ री वात माने त्याने मूख कहीजे। त्या ने चोर कहीजे। सू स करण ने त्यारी हुवे ता ही उत्तम जीव तो न माने ए सव चोतीसा रा लिखत म कह्यो।

तथा आग पिण गण वारे नीकली अवगुण वाल्या ते पिण भू डा दीठा। वीरभाण टोला वारे नीकली अवगुण वोल्या तिण री पिण विगडी। तथा चदू वीरा फतू आदि टाला वारे थइ जम विगाडचा। तथा वडा रुपचद चद्रभाण जी तिलाकचद जी आदि जे वेमुख हुआ त्यारा जम सुघरचा नही ते भणी उत्तम जीव वमुख री सगत न करे। तथा श्री भीखण जी स्वामी रास म अवनीत न भात भात करने आलखायो ते गाथा—

१ मद विपय कपाय वस आत्मा तिण सू विनो किया किम जाय।
तिण री वर्णे खरावी अति घणी त सुणजा चित ल्याय॥

२ [1]कोइ गण मे हुवे साध अहकारी, तिण सू थोडा मे हुए जाये खुवारी।
उण रा गुण कही पोगा चढावे, तो उ थोडा मे [2]फलफुल थावे॥
३ जो उण नै गुर गुरभाइ सरावे, तो मगज मे पूरो न मावे।
जव रहे टोला मे राजी, ठाला वादल ज्यू करे ओगाजी॥
४ इसडो अभिमानी दोप लगावे, तिण सू आलोवणी नही आवे।
इह लोक रो अर्थी मूढ वाल, सल सहित कर जाए काल॥
५ इसडा अभिमानी अवनीत, कदे चाले रीत कुरीत।
तिण ने गुर नवेदे घणा माय, तो उ गुर रो द्वेपी होय जाय॥
६ तिण झूठा ने कहे कोइ झूठो, तिण सू तो रहे नित रूठो।
खपे छै तिण रे देवा आल, जाणै टोला मा सू देउ टाल॥
७ या तो घणा साधा रे माय, म्हारी आव न राखी काय।
म्हारी आसता चोडे उतारे, तो हू क्याने रहू यारे सारे॥
८ त्या ने छोड ने होय जाऊ न्यारो, या रे पिण करू वोहत विगाडो।
या मे दोष परुपू भारो, जव खवर पडे या ने म्हारी॥
९ या रा चेली ने वले चेली, त्या ने फाड करू म्हारा वेली।
इसडी चितवे मन माय, मिले ओर साधा सू जाय॥
१० जिण विध गुर सू मन भागे, तेहवी वात करे तिण आगे।
जिण विध गुर सू जागे द्वेप, तेहवी वात करे छै विशेष॥
११ वले वोले आल पपाल, झूठा-झूठा दे गुर रे आल।
वले दोष अनेक वतावे, जावक खोटा सरधावे॥
१२ गुर गुरभाई ऊपर धेख, त्या रा अवगुण वोले अनेक।
ज्यूना[3] ज्यूना खुरट उखेलै, आप रे मन माने ज्यू ठेले॥
१३ वले आप रे स्वार्थ नावै, त्या मे दोष अनेक वतावे।
केका री तो परतीत नाणू, त्या ने थेट रा असाधु जाणू॥
१४ टोला माहे तो घणी ढीलाइ, कह्या ठीक न लागे काइ।
तिण सू म्हारे तो हुवणो न्यारो, या मे कुण विगाडे जमवारो॥
१५ जो हू इसडा जाणतो या ने, तो हू घर छोडतो क्याने।
हू तो घर छोड ने पिछताणो, म्हे तो खोटा खाधा अजाणो॥
१६ कलह लगावण री करे वात, जाणे फाड लेउ म्हारे साथ।
जव पेलो हुवे कान रो काचो, तो उ मान ले उण ने साचो॥

---

१ लय—विनै रा भाव सुण-सुण। २ प्रफुल्ल। ३ पुराना।

१७ जब ओ राखे इण री परतीत, ओ पिण बोले इणहीज रीत।
ओ तो किण ही मे दोष न जाणे, इण रा कह्या सू ओ पिण ताणे ॥
१८ जब ओ आप रो बेली जाण, पछे गुर सू झगडे आण।
या बेठाहीज उधो बोले, आगुणा रो पिटारा खोले ॥
१९ या आगे बोल्या तिणहिज रीत, गुरु आगे बाले विपरीत।
वले बोले अ्हापो अलाल, गुर न दवे यूठा आल ॥
२० जिण इण न घाल्यो थो यूठा तिण सू तो बेठा थो रुठो।
तिण मे दाप अनक वताव मन माने ज्यू गाना चलावे ॥
२१ हू तो थाने न जाणु साध, घर म थका रा जाणू असाध।
या रा महाव्रत पाचूइ भागा, सुमति गुप्त मे दापण लागा ॥
२२ या ने राखसो टोला रे माहि तो हू बार निकलसू ताहि।
थे तो यारी करा पखपात, तिण मू मानू नही थारी वात ॥
२३ वले घणी साधविया माहि साधपणो न जाण ताहि।
वले दोष घणा मे वताव विपरीतपणे सुणाव ॥
२४ हू घरती छाड परो नही जाऊ, या क्षेत्रा मे साथे लगो आऊ।
था साहमा उतरसू आणो ओर गया ज्यू मौने म जाणो ॥
२५ था रा दाप घणा ने सुणाऊ था ने चाडे असाध सरधाऊ।
इम वाले घणो विकराल, सके नही देनो आल ॥
२६ जिण सू वात वाधी थी भेली, तिण साय चेपी मैली।
कायक दोष ओ पिण काढे, उण न वल पोगा चाढे ॥
२७ इण री आगै इ कीधी पखपात यूठी साख भरी साख्यात।
जब इण नै इ नपेख्यो थो गाढो, तिण सू आ पिण वाले आडा ग्राडो ॥
२८ न्याय तणी नही वात, यूठी करवा लागा पखपात।
न्याय निरणा री हूती नीत, ता इण न नपद इण रीत ॥
२९ ओ तो ताम ही छ वाक, तू दापण राख्या ढाक।
आ तो लोप दीधी मरजाद, तू तो यूठा करे विपवाद ॥
३० घणा दिना काढ दाप ग्रनक तिण री वात न मानणी एक।
आपा रे छ इमडी मरजाद, हिव बयान करे विपवाद ॥
३१ इण न इण विध घाले कूडा घणा बठा घाले मुख धूडा।
पिण चोरा कुत्ती मिली तह त ता पाहरा किण विध दह ॥
३२ ज्यू मिलिया अवनीत सू जेह तिण न न निमेन्सी तेह।
जब गुर जाण्या इण रे सीहे[1], आ तो ग्रालता मूल न बीह ॥

---

१ पग।

३३ ओ तो दीसे छै भारीकर्मो, निरलज घणो वैसरमो।
इण ने परतप सूझी भूडी, जव गुर तो विचारी ऊडी ॥
३४ रखे छूट एकलो थावे, रखे सका घणा पर जावे।
रखे गूजे पाखडी अयाण, रखे जिण मत री पडे हाण ॥
३५ रखे घट जायेला उपगार, वेदो उठेला लोक मझार।
जो इण ने करला कहू इण वारो, तो ए छूट होय जायला न्यारो ॥
३६ ओ तो चढियो क्रोध अहकारो, तो हिवे करणो कवण विचारो।
जो नरमाइ किया ठाम[1] आवै, आलोय ने सुध थावे ॥
३७ इम जाणी की नरमाइ, परतीत पूरी उपजाइ।
किण रे सका न राखी काय, सगला ने दिया समजाय ॥
३८ जव ओ किण विध वोले उ धो, हिवै ओ पिण वोलियो सूधो।
अव तो जावजीव रहू माय, गण छोड़ण री न काढू वाय ॥
३९ इण दोपण काढ्या था अनेक, तिण री पाछी न पूछी एक।
किण ने थोडो घणो दड देणो, ते पिण नही कढियो वेणो ॥
४० वले घणी साधविया माहि, साधपणो न जाणतो ताहि।
त्या ने काढणी नही ठहराइ, त्या री वात न कीधी काइ ॥
४१ या ने छोड्यां रहू गण माय, तका पिणकाढी वात न काय।
टोला माहै कहतो थो ढीलाइ, तिण री पाछी नही चलाइ ॥
४२ सगली ढीली मेली दीधी वात, विनै सहित वोले जोडी हाथ।
हिवै आप घणो पिछतावे, गुरु ने वारूवार खमावे ॥

इम अठे पिण अनेक भाव कह्या ते सुण ने हलुकर्मी हुवे ते सरल प्रकृति करने आत्मा वस करे। अवनीत री सगत छोडे। मर्यादा सुद्ध पाले गुर री मुरजी प्रमाणे सर्व काम मे प्रवर्ते।

तथा पेतालीसा रा लिखत मे कह्यो—टोला माहे सू कदा कर्म जोगे टोला वारे पडे तो टोला रा साध साधव्या रा अस मात्र अवर्णवाद वोलण रा त्याग छै। माहो मा मन फटे ज्यू वोलण रा त्याग छै। या री अस मात्र सका पड़े आसता उतरे जिम वोलण रा त्याग छै। टोला माहे सू फाडने साथे ले जावा रा त्याग छै। उ आवे तो ही ले जावा रा त्याग छै। टोला माहे न वारे नीकल्या अंस मात्र अवगुण वोलण रा त्याग

1 स्थान पर।

छै। इम पैंतालीसा रा लिखत मे कह्यो। ते भणी सासण री गुणोत्कीतन वात करणी। भागहीण हुवै सो उतरती वात करे। तथा सुणे ते पिण भागहीण तथा सुणे आचाय ने न कहे ते पिण भागहीण। तिण ने तीर्थंकर नो चोर कहणो, हरामखोर कहणा तीन धिक्कार देणी।

आयरिए आराहइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि ण पूयति, जेण जाणति तारिस॥
आयरिए नाराहइ, समण यावि तारिसो।
गिहत्था वि ण गरहति, जण जाणति तारिस॥

इति [1]दशवैकालिक मे कह्या ते आना मर्यादा आराध्या उभय भवे सुख कल्याण हुव।

ए हाजरी रची सवत १६१० वार साम जठ विद ११ वपतगढ मध्य।

---

१ दसवेआलिय ५।२।४५, ४०

तेरहवीं हाजरी

पाच सुमति तीन गुप्ति पच महाव्रत अखड अराधणा। ईर्या भापा मे सावचेत रहिणो। आहार पाणी लेणो ते पकी पूछा करी लेणो। सूजतो आहार पाणी पिण आगला रो अभिप्राय देख लेणो। पूजता परठवता सावधान पणे रहणो। मन वचन काया गुप्ति मे सावचेत रहिणो। तीर्थंकर नी आज्ञा अखड आराधणी। भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धात देख ने श्रद्धा आचार प्रगट कीधा—विरत धर्म ने अविरत अधर्म, आज्ञा माहे धर्म आज्ञा वारे अधर्म, असजती रो जीवणो वछे, ते राग मरणो वछे, ते राग मरणो वछे ते द्वेप, तिरणो वछे ते वीतराग देव नो मार्ग।

तथा विविध प्रकार नी मर्यादा वाधी—सवत् १८४१ रे वरस भीखणजी स्वामी मर्यादा वाधी—ते साध-साध माहो माहि भेला रहे। तिहा किण ही साध ने दोप लागे तो धणी ने सताव सू कहणो। अवसर देखने। पिण दोप भेला करणा नही, धणी ने कह्या थका प्राछित लेवे तो पिण गुरा ने कहि देणो। जो प्राछित न ले तो प्राछित रा धणी ने आरे कराय ने जे जे वोल लिखने उण न सूप देणो। इण वोल रौ प्राछित गुर थाने देवे ते लीजो। जो इण रो प्राछित न हुवे तो ही कहिजो। थे गाला गोलो कीजो मती। जो थे न कह्यो तो माहरा कहिण रा भाव छै। म्है था रा दोपा रो आगो काढसू नही। सका सहित दोप भामे तो सका सहित कहि सू। निसक पणे दोप जाणू छू ते निसकपणे कहि सू। नही तो अजे ही पाधरा चालो इम कहि देणो पिण दोप भेला करणा नही। जो उ आरे न हुवे तो ग्रहस्थ पक्का हुवे त्या ने जणावणो। उण वेठाहीज कहिणो, पिण छाने न कहिणो। ए तो चोमासो वधियो काल हुवे जव छै। शेपे काल हुवै तो किण ही ने कहिणो नही। गुर हुवे जठे आवणो। पिण गुर कने वेदो घालणो नही। गुर किण ने साचो करे। किण ने झूठो करे। गुर तो इण वात मे नही। एलाण सू कदाच एक ने झूठो जाणे, एकण ने साचो जाणे। तो पिण निश्चे नही। ते किण विध प्राछित देवे आलोया विना। पछे तो गुर ने द्रव्य क्षेत्र काल भाव देख ने न्याय करणोहीज छै। पिण उण ने तो एक दोप थी दोय भेला करणा नही। घणा दोप भेला कर ने आवसी तो उ हाथा सू झूठो पडसी पछै तो केवली जाणे छदमस्थ रा व्यवहार माहे तो दोप भेला करे तिण माहे छै। लिखतू ऋप भीखण रो छै सम्वत् १८४१ चेत विद १३

अथ इहा पिण दोष रा धणी ने सताव सू कहणो कह्यो। एक थी दोय दोष भेला करणा नही घणा दोष भेला करे तिण ने झठो कह्यो।

तथा पचासा रा लिखत में पिण इमहीज कह्या—एक दोष थी बीजो दोष भेलो करे ते तो अन्याइ छै। माहो माहि मिल ने जिलो बाधण रा त्याग छै। गुरवादिक ने भेलो तो आप रे मुतलब रह। पछे आहारादिक रो कपडादिक घणा थोडा रा नाम लेइ अवण-वाद बोलण रा त्याग छै। वले इण सरधा रा भाया र कपडा रा ठिकाणा छ विना आना जाचण रा त्याग छ। आर्य्यां आगे हुवे जठ जाणा नही। जाय तो एक रात रहिणो। पिण अधिको रहिणो नहीं। कारण पडचा रह ता गाचरी का घर बाट लेणा पिण नित रो नित पूछणो नही। कने बेसण देणी नहीं। ऊभी रहिण दणी नही। चरचा वात करणी नही। वडा गुरवादिक रा कह्या थी कारण पडचा री वात न्यारी छ। सरस आहारादिक मिले तिहा आना विना रहणो नही। वल काइ करली मरजाद बाधा तिण मे ना कहिणा नही। आचार री सका पडचा थी बाध वले काइ याद आवे तो लिखा ते पिण सव कबूल छै, ए मरजादा लोपण रा अनता सिद्धा री साग कर न पचखाण छै, जिण रा परिणाम चोखा हुवे सूध पालण रा परिणाम हुवे ते आरे हायजा। सरमासरमी रो काम छ नहीं। एहवो पचासा रा लिखत में कह्यो।

तथा बावन रे वस आर्य्या रे मरजादा बाधी तिण म कह्या—किण ही साध आर्य्या माहे दोष देखे ता ततकाल धणी ने कहणो के गुरा ने कहणो पिण ओरा न कहणा नही किण ही आर्य्या दोष जाण न सेव्यो हुवे ता पाना म लिख्या विना विग तरकारी खाणी नही कोइ साध साधव्या रा ओगुण काढे ता साभलण रा त्याग छै। इतरा कहणा—'स्वामी जी ने कहीजे'।

किण ही आर्य्या मे माहा मा सका पड जाणे कारण पडचा विना कारण रा नाम लेने ओर आर्य्यां आगे सू काम करावे छै कारण रा नाम लेइ आपध मूढादिक उन्हो आहारादिक ल्यावे छै। इत्यादिक सका पड त सका मटण रो उपाय मर्यादा बाधी छ। जितरे गोचरी आप न उठे तिण सू विमणा उठणा विहार म बोझ उपरावे जित रा दिन विगै रा त्याग छ वल उण रो बाज विमणा उपाडणा। आछो आहार लेवे तो पाछा विमणा टालणा किण ही न खेत्र आछा वताया राग द्वप करन वात चलावा रा त्याग छ। खेत्र आछो कपडा आछो आहारपाणी आछो ओषध भेषध आछो वात चलावा रा त्याग छ। चोमासो कह तिहा चोमासा करणा सपा मान वडा कह तिहा विचरणो। ए सव बावना रा लिखत म कह्यो।

वले गुणसठा रा लिखत म कह्या—कम धका न्यिा टाला बारे निकले ता उण र टोला रा साध साधवियां रा अ स मात्र हुना अणहुना अवणवाद बोलण रा अनता सिद्धा री न पाधू पदा री आण छ पाचोइ पदा री साख सू पचखाण छ किण ही साध साधव्या री सका पड ज्यू बोलण रा पचखाण छ कदा उ विन्न हाय मूस भाग ता

हलुकर्मी न्यायवादी तो न माने। उण सरीपो कोइ विटल माने तो लेखा मे नही। किण ही ने कर्म धको देवे ते टोला सू न्यारो पडे अथवा टोला मू आप ही न्यारो पडे तो इण सरवा रा भाई वाई हुवे तिहा रहिणो नही। एक बाई भाई हुवे तिहा पिण रहिणो नही। वाटे वहितो एक रात कारण पड्या रहे तो पाचू विगै सूखडी खावा रा त्याग छै। अनता सिद्धा री साख करने त्याग छै। इत्यादिक अनेक लिखत जोड़ मे अवनीत ने निषेध्यो छै। अने विनीत ने सरायो छै। ते विनीत प्रतीत गुरा ने उपजावे ते गीत वताइ—

१ [1]अपछदा मे घणा छे दोष, छादो रूध्या सू पामे मोष।
उत्राध्येन चोथावेन मझारो, कोइ बुधवत करजो विचारो॥

२ गुर ने शिष री ऊपजे अप्रतीत, विनादिक मे जाणे विपरीत।
जो उ शिष हुवे सुवनीत, तो उपजावे गुर ने परतीत॥

३ जिण-जिण वोला री गुर रे सक, सका काढे नै करे निसंक।
करला-करला सूस खावे, गुर ने परतीत उपजावे॥

४ सूस कीवा इ परतीत नाणे, सूसा ने पिण लोपतो जांणे।
तो सूस लिख देवे कोरे पाने, ते किण सू न राखे छाने॥

५ हू इण लिख्या प्रमाणे चालू, आज्ञा लोप कदे नही हालू।
जो शिष हुवे सुवनीत, इम उपजावे परतीत॥

६ सूस लिखत री नाणे प्रतीत, आगे गुर ने घणी-अप्रतीत।
तो ही हाथ जोडे सुवनीत, विनय सहित वोले रूडी रीत॥

७ थे म्हारी परतीत मूल न राखी, तो हिवे च्यार तीर्थ देउ साखी।
म्हारा सूस कागद मे लिखाय, च्यार तीर्थ ने देउ वचाय॥

८ हू चालू इण लिख्या प्रमाणो, कदा चूक मे पडियो जाणो।
तो च्यार तीर्थ ने देजो जताय, ते मोने हेले निदे आणे ठाय॥

९ जो या रे कनै न चालू सूधो, तो मोने कर देजो गण सू जूदो।
पिण मो सू किरपा करो स्वामीनाथ म्हारे मस्तक राखो हाथ॥

१० हू मरजादा नही चूकू, आप रो सरणो नही मूकू।
आप रो छै मोने आधार, मोने उतारो भवपार॥

११ जव गुर कहे तू वोले सूधो, हिवै मूल न दीसे ऊधो।
रखे हुवेला तू विसासघाती, वावलिया रे वीज रो साथी॥

---

[1] लय -तू तो सुण हो राजा म्हांरी विनती।

१२ वावल वीज वाया पाणी पूगे, तो उ सूला लियाइज ऊगे।
वावल वीज सुहालो थो आगे, हिव ज्यू वधे ज्यू सूला लागे ॥
१३ ज्यू तू रह छै गण माहि, घणो विनो करै छै ताहि।
रखे साध साधविया न फारै, गुर सू परिणाम उतारे ॥
१४ पछे आल दे नीकले वारे, ओरा न ले जावेला लार।
पाछला न परूप असाध, करला घणो विपवाद ॥
१५ घणा जीवा र घालेला सक, लगावे ला मिथ्यात रो डक।
आ तो भारी अकारज माटो, इसडा मन म म राखज्यो खोटा ॥
१६ आ पिण सका छ थारी मान वार वार कहु हिवै ताने।
आ परतीत उपजावे गाढी, करला सू सादिक काढी ॥
१७ जा तू सरल छै नही अन्हापी[1], ता तू च्यार तीथ द साखी।
जा थारे रहणा छ गण माय, ता इण विध परतीत उपजाय ॥
१८ इम साभल न सुवनीत, विन सहित वोले रुडी रीत।
आप कहा तिण ने साखी देऊ, आप कहो तिको सू स लेऊ ॥
१९ कदा कम जागे परू न्यारा, तो ओरा न नही ले जाऊ लारा।
काइ आफे ही आवे मारी लार, तिण सू भेला नही करू आहार॥
२० गण म रहू निरदावे एकलो, किणसू मिल नही वाघू जिलो।
किण न रागी कर राखू म्हारो, एहवो पिण नही कर बिगारो ॥
२१ साध साधविया री वात, उतरती न करू तिलमात।
वले माहोमा कलह लागे, किण री नही कहू किण ही आगे॥
२२ इण विध रहू गण मझारा, किण रा आगुण न वालू लिगारो।
एहवा सूस करावो आप, च्यार तीथ न साखी थाप ॥
२३ कदा कम जाग परू न्यारो, तो हू मुख म न घालू आहारो।
ओ पिण सूस करावो माय, तिण रा साखी करा सहु कोय ॥
२४ च्यार तीथ न दा ये जणाय, मो छूटक री न मान वाय।
थाने हा दा सूस कराय पिण मोनै राखो गण माय ॥
२५ गुर ने उपनी जाणे अप्रतीत, ता इम उपजावे परतीत।
ज्या र मुगत जावा री छै नीत, ते गुर न आराघे इण रीत ॥
२६ जे समता रस मे रह्या भूल ते तो मरणो इ कर दे कबूल।
पिण गुरुकुलवासो नही मूके, विनादिक गुण नही चूके ॥

---

१ मायावी।

२७ सुवनीत गुरा ने अरावे, ते आतमा रा कारज सावे।
विनी कर गुर नै रीझावे, ते मुक्ति तणा सुख पावे॥

अथ इहा पोता री परतीत जमावण रो उपाय गुरा ने रीझावा रो उपाय स्वामी भीखणजी बतायो। तिण सू विनैवान हुवे ते ए सीख धारी गुरा ने अराधे। तेह नो इहभव परभव मे जस वधे। मर्यादा सुध पाल्या मुक्ति मिले। अवनीत अजोग री सगत न करे। टालो कर अनेक फेन फितूर करे आप री जमावण वास्ते अनेक उपाय घुनराइ कुवध केलवै।

तिण नै आछी तरै सू ओलख ने सगत करे नही। काला साप सरीपा किंपाक फल सरीपा जाणी सग छाड़े। ते भणी पैंतालीसा रा लिखत मे एहवो कह्यो छै टोला माहे सू कदाच कर्म जोग टोला वारे पड़े तो टोला रा साध साधव्या रा असमात्र अवर्णवाद वोलण रा त्याग छै या री अस मात्र सका पडे आसता ऊतरे ज्यू वोलण रा त्याग छै। टोला माहे सू फारने साथे ले जावा रा त्याग छै उ आवे तो ही ले जावा रा त्याग छै टोला माहे अने बारे नीकल्या पिण ओगुण वोलण रा त्याग छै। माहोमा मन फटे ज्यू वोलण रा त्याग छै। इम पैंतालीसा रा लिखत मे कह्यो। ते भणी सासण री गुणोत्कीर्तन वात करणी, भागहीण हुवै सो उतरती वात करै, तथा भागहीण सुणे, तथा सुणी आचार्य ने न कहे ते पिण भागहीण छै। तिण नै तीर्थंकर नो चोर कहणो। हरामखोर कहणो। तीन धिकार देणी।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि ण पूयति, जेण जाणति तारिस॥
आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था विण गरहति, जेण जाणति तारिस॥

इति [1]दशवइकालिक मे कह्यो ते मर्यादा आज्ञा सुध आराध्या इहभवे परभव मे सुख कल्याण हुवै।

ए हाजरी रची सवत् १९ सै १० जेठ विद ११ वार सोम देस मालवो वपतगढ मध्ये धारानगरी के जिला मे है।

---

१ दसवेआलिय ५।२।४५, ४०

चौदहवीं हाजरी

पाच सुमति तीन गुप्ति पच महाव्रत अखड आराधणा। ईर्य्या भाषा एषणा मे सावचत रहिणा। आहार पाणी लेणो ते पक्की पूछा करी ने लेणो। सूजतो आहार पिण आगला रा अभिप्राय देख नैं लेणा। पूजता परठवता सावधानपण रहिणो। मन वचन काया गुप्ति म सावचेत रहिणा। तीर्थंकर नी आना अखड आराधणी। भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धात दख न श्रद्धा आचार प्रगट कीधा—विरत धम न अविरत अधम, आना माह धम आना बार अधम। असजती रा जीवणो वछे त राग मरणा वछे ते द्वेष तिरणा वछे ते वीतराग दव नो माग छ। तथा विविध प्रकार नी मयादा बाधी।

तथा सवत् १८५० रे वस तथा ५२ रे वरस आय्या र मरजादा बाधी। तिण मे कह्या—किण ही साध आय्या म दोष दखे ता दाप रा धणी न कहणो। तथा गुरा ने कहणा। पिण ओर किण ही आगे कहणो नही। किण ही आय्या जाण न दोष सेव्यो हुवे तो पाना म निम्या विना विग तरकारी खाणी नही। काइ साधु साधव्या रा ओगुण काढ ता साभलण रा त्याग छै। इत रा कहणा 'स्वामी जी न कहीजा जिण रा परिणाम टाला म रहिण रा हुव ते रहिजो। कपट ठागा सू माहे रहिवा रा त्याग छ। टाला बारे हुवा पछ साध साधविया रा अवगुण बालण रा त्याग छै। अनता सिद्धा री साख करने त्याग छै।

तथा चातीसा र वस आय्या री मर्यादा बाधी—टाला रा साध आय्या री निंदा करे तिण न घणी अजाग जाणणी। तिण ने एक मास पाचू विग रा त्याग छ। जितरी वार करै जित रा मास पाचू विग रा त्याग छ। तथा पचासा रा गुणसठा रा लिखत म कदाच कम धक्का दिया टोला सू टले तो टोला रा साध साधव्या रा असमान हुता अणहुता अवगुण बालण रा त्याग छै। टाला नैं असाध सरधन नवी दिख्या लेवे तो पिण अठी रा साध-साधव्या री सका घालण रा त्याग छ। उपगरण टाला माह करे त परत पाना लिखे जाच त साथे ले जावण रा त्याग छ। इण सरधा रा भाई बाई हुव जिण क्षत्र मे एक रात उपरत रहिणा नही। ए मर्यादा उत्तम जीव हुवै त लाप नहीं। अवनीत न निर्पध्या गुणग्राही ता राजी छ। उधी प्रकृत वाला न ऊधा सूझे त द्वेष जाणे, सानीया[1] न दूध मिश्री मवली[2] न परगमे। आगे भीखणजी स्वामी पिण किण ही री प्रकृति री खामी जाणी तिण री गाढ मिटावा अनक उधवस्ती कीधी। मेणाजी र आख रो कारण

[1] सन्निपात म आय हुए का। [2] नही।

ते गोगूदे हुता त्या ऊपर भीखणजी स्वामी कागद लिख्यो सिथलपणो जाण्यो ने मिटावा अर्थे कागद भिक्षु री हाथ अक्षरा रा देखादेख लिखिये छै--

"—आर्य्यां मेणाजी वनाजी फूलाजी गुमानाजी गोगूदा माहे रहे तो वैसाख सुद १५ पछै चोपडी रोटी नै जावकसूखडी वैहरण रा त्याग छै। फूलाजी गुमानाजी रे घी रो आगार छै घी वैहरणो, पिण चोपडी रोटी न वैरणी मारगिया रै वरे आठ दिन टाल नै नवमे दिन जाणो एक रोटी तथा एक रोटीरो बाग्दानो' वहरणो पिण इधको न वैरणो इम मारगिया रे वरे च्यार पातरा टालजाणो। कदा पाणी री भीड' पडे तो दूजे पातरे जाणो। पाणी धोवणल्यावणो। पिणवीजो काई न ल्यावणो। फूलाजी गुमानाजी कहे जठे गोचरी जाणो। ए जाए जिण वात रो लिगार मातर जणावणो नही। 'या री दाय आवे जठे जाये' यू कहणो नही। अस मातर इण वात रो केतव करणो नही। ओलभो देणो नही, या री दाय आवसी जठै गोचरी जासी। अ समात्र कुलक भाव आणणा नही। अनुक्रमे गोचरी करणी। रोटी रा देवाल रो घर छोडणो नही। आखिया अवल हुवा पछै साधू सू भेला हुवा पछै साव आज्ञा देवे जद चोपडी रोटी नै सूखडी रो आगार छै। आगना दिया विना चोपडी रोटी नै सूखडी वैहरण रा त्याग छै। कदा मेणाजी गोगूदे वेस रहै तो फूलाजी गुमानाजी रै सूखडी रो आगार छै गोचरी फूलाजी गुमानाजी रै दाय आवै जरे ऊठसी। ग्रहस्थ नै जणावणो नही। ग्रहस्थ साभलता यू कहणो नही—म्हा रे पारणो आण दो। ग्रहस्थ कहे—आ ने पारणो आण दो जद मेणाजी नै यू कहणो—थे किण लेखे कहो छो साहमी म्हारी सका पडै, थे भला होवो तो म्हारा पारणा री थे कदे इ वात कीजो मती। मा साधा री साध जाणा। थे क्या ने विचे पडो छो।

गोगूदा सू विहार कर नै नाथदुवारे आवणो नही। काकडोली राजनगर, केलवे, लाहवे, आमेट, आवणो नही। सावा कनै आवे तो ओर क्षेत्रा मे वेह ने आवणो। कदा मेणाजी गोगूदे पर रहे तो आर्य्या ने किण ही गाम कपडा नै मेलणी नही। मही मोटो आवे जिसो गोगूदा माहे लेणो नै भोगवणो। मेणाजी धनाजी रै रागावेखो घणो देखो, कलेस कदागरो घणो देखो, माहोमाहि कजिया करता देखो, या रै सावपणो नीपजतो न देखो, था रै पिण कर्म वधता देखो, सावपणो नीपजतो न देखो, फूलाजी नै गुमाना या दोया सू आहारपाणी कीजो मती। थे दोनू जणी उरी आवजो। चोमासो हुवै तो चोमासो उतरचा उरी आयजो। पिण या रा कजिया मे थारो साधपणो खोइजो मती। या मे भारी दोप थका आहारपाणी भेलो कीजो मती। भेलो कियो तो था ने भारी प्राछित आवसी। पछै थारी थे जाणो। दोप लगावे ते भाया ने जणावजो। जित री वात हुवै दोष री ते सगली भाया नै जणायवो कीजो। ज्यू या नै पिण न्याइ अन्याइ री

१ श्रावको। २ सामग्री। ३ कमी।

खबर पड। ज्यू हिवै असमात्र वात भाया वाया सू छानी राखजो मती। वात तो विगर चुकी, हिवै क्याने छानी राखो। मेणाजी गोगूदे रह्या घणो फितूरो हुतो दीसै छै तिण सू जिण माहे दोप थाडो ही हुवै ते वाया भाया नै तुरत रो तुरत जणाय जा। आगो काढा तो थारे घणा घणो कजियो हुतो दीसै छ।

फूनाजी! गुमानाजी! थे पाधरा न चालीया तो था रो वमेप फितूरो ह्वे तो दीस छै। तिण सू थे घणा सावधान रहीजो। जेठ सुदि १५ पछ फूलाजी नै गुमानाजी र सुखडी रा आगार छै। मेणाजी रे साधा सू भेला हुवे जद साध आग या देवे जद आगार छै—चोपडी रोटी सुखडी रा। मेणाजी री पडिलेहण घनाजी गुमानाजी थे दान् जणा वारिया-सारिया करणी, हरकाइ काम वारिया सारिया करणो ओर आर्य्यां मादी ताती हुव तिण नै गोचरी उठावणी नही। पछै उण आगा सू कराय लणो। पिण मादी आगा सू काइ काम करावणो नही। उण रा पिण काम साजी हुव त्या कनै करावणो।

हिवै फूलाजी र वाल न्यारो—फूलाजी नै गोचरी जावक उठावणी नही। लिगार मात्र काम भलावणो नही। फूलाजी री तरफ सू गाढी साता हुवै तो फूलाजी र दाय आवे तो करसी। वीजी आर्य्यां ने यू कहणो नही—'थे करो नही काम फूलाजी री सेवा भगति करणी हुव तो फूलाजी नै राखजो। फूलाजी री सगत हुसी तो मन होसी तो करसी। फूलाजी रा दिन परता छै तिण सू ए करार कीधो छै। आसग हुवै तो राखजो। नही तर परी ले जावा। काइ फूलाजी न मेणाजी न यू कहे—म्हे थाने वेठी नै खवारा छा' इसी आमना पिण जणावे, तिण नै तेलो प्राछित कै जेतीवार तेला। मेणाजी रै सूखडी रा त्याग सवया-लापो सीरादिक रा साधा सू भेला हुवै जठा ताइ, घनाजी र छ ज्यू। जेठ विद ६।

अथ इहा भीखणजी स्वामी मेणाजी आख्या रा कारण सू गागूदे रह्या त्या री खामी मेटवा इमडी थधवस्ती कीधी। तो पिण साधपणा पालवा री दिप्ट तीखी राखी पिण मयादा लापी नही। अन दुप्ट आत्मा रो घणो अविनीत अजाग तिण रा स्वाथ अणपूगा किचत कष्ट थी टाला वारे नीकली भीखणजी स्वामी री मयादा लापी सूस भागी अवणवाद वोल, निरलज नागडा हाय जाव, परम उपगारी गुर सम्यक्त चारित्र पमाया सूत्र भणाया ते कीधा उपगार ते सव भूल नै कृतघन हाय जाय, मन मते खाटी परूपणा कर सव साधा नै असाध सरधाव, त ऊपर भीखणजी स्वामी कही ते गाथा—वनीत अवनीत री चौपी माहिली—

> १ 'त तो गुर सू पिण नही गुदरे, त्या रा कारज किण विध सुधरे।
> तिण न करै टाला सू न्यारा तो उ चार ज्यू कर विगाडो॥

---

१ लय—वूढ़ो डिग डिग करतो।

२ सगलां साधा नै कहे असाध, वले करै घणो विपवाद ।
सर्व साधा रो होय जाये वैरी, केइ एहवा छै अवनीत गेरी ।।
३ तिण नै लोक आरै करै नाही, तो उ प्राछित ले आवै माही ।
त्या नें असाध परुप्या मुख सू, त्या रा वादे पग मस्तक मू ।।
४ जो उ वले न चालै सूवो, तो उण नै वलै करदे गुर जुदो ।
जव अवनीत रै उवाहीज रीत, न्यारो किया वोलै विपरीत ।।
५ लोका नै साधा सू भिडकावे, आप वुगलध्यानी होय जावै ।
वले कूडकपट रो चालो, आतमा नै लगावे कालो ।।
६ उ तो अवगुण काढे अनेक, वुधवत न मानें एक ।
एहवा अवनीत छै गुरद्रोही, तिण आत्म पूरी विगोइ ।।
७ जो माने अवनीत री वात, त्या रा घट माहे आवे मिथ्यात ।
एहवा अवनीत अवगुणगारा, त्या सू वुद्धिवत रहमी न्यारा ।।

अथ इहा भीखणजी स्वामी पिण कह्यो—

"अवनीत री या हीज रीत, न्यारो हुवा वोले विपरीत ।

एहवा अवनीत रा लखण कह्या । ते अविनीत इह लोक मे फिट-फिट होवे अनै परभव मे नरक निगोद मे जाय अनत काल दुख भोगवै । भीखणजी स्वामी पिण अवनीत रा फल कडवा कह्या छै, अवनीत नै छोडया गुण कह्यो छै, ते गाथा—

१ [1]उज्झिया भोगवती नै घर सूपिया रे, तो करे खजानो खुराव रे । सुगण नर ।
ज्यू अवनीत नै गण सूपिया रे लाल, तो जाए टोला री आव रे । सुगण नर ।
भाव सुणो अवनीत रा रे लाल ।। ध्रुपद ।।

२ जिण टोला मे अवनीत छै, तिण सू आछो कदे मत जाण ।
तिण री खप करने ठाम आणजो, नही तो परहरो चतुर सुजाण ।।
३ ज्यू अवनीत नै छोडया थका, ज्ञानादिक गुण वधता जाण ।
मिट जाये कलेस कदागरो, त्या नै नेडी हुसी निरवाण ।।
४ ज्या रै सिखा रो लोभ लालच नही, ते तो दूर तजे अवनीत ।
गरगाचारज सारिपा, गया जमारो जीत ।।
५ केइ अवनीत नरके गया, केइ जाय पडया छै निगोद ।
आप छादे उधी अकल स्यू, ते गमाय नै समगत[2] वोध ।।
६ अवनीत मे अवगुण घणा, ते तो पूरा कह्या न जाय ।
तिण अनुसारे अनेक छै, ते वुद्धिवत देसी वताय ।।

---

१ लय—धीज करै सीता सती ।   २ सम्यक्त्व ।

७ अवनीत रा भाव सामली, घणो हरख पामे नर नार।
केइ भारीकर्मा उलटा पडे, त्या रे घट माहै घोर अधार।

अथ अठे पिण अवनीत री सगति तजणी कही। तथा पैंतालीसा रा लिखत मे कह्यो टाला माह कदाच कम जोगे टोला बारे पड तो साधु साधविया रा असमात्र अवगुण बोलण रा त्याग छ। या रा असमात्र सका पडै जासता उतरे ज्यू बोलण रा त्याग छ। टाला मासू फारन साथे ले जावा रा त्याग छै। उ आवै ता ही ले जावा रा त्याग छ। टाला माहे न बारे नीकल्या ओगुण बालण रा त्याग छ। माहा माहि मन फटे ज्यू बोलण रा त्याग छै। इम पैंतालीसा रा लिखत म कह्या। ते भणी सासण री गुणात्कीतन वात करणी। भागहीण हुव सो उतरती बात करे। तथा भागहीण सुणे, मुणी आचाय न न कहे ते पिण भागहीण। तिण न तीर्थंकर नो चार कहणा। हरामखार कहणो। तीन धिकार देणी।

आयरिए आराहइ, समण यावि तारिसा।
गिहत्था वि ण पूयति जेण जाणति तारिस ॥
आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसा।
गिहत्था वि ण गरहति जेण जाणति तारिस ॥
इति 'दशवेकालिक' म कह्यो। ते मर्यादा आज्ञा अराध्या

इहभव परभव सुख कल्याण हुव।

ए हाजरी रची सवत १९१० जेठ विद १४ वहस्पति वगतगटे[1]।

१ 'दशवैकालिक ५/२/४५,४०

पन्द्रहवी हाजरी

पाच सुमति तीन गुप्ति पच महाव्रत अखंड आराधणा । ईर्य्या भाषा मे सावचेत रहिणो । आहार पाणी लेणो ते पकी पूछा करी नै लेणो । सूजतो आहार पिण आगला रा अभिप्राय देख ने लेणो । पूजता परठवता सावधानपणे रहिणो । मन वचन काया गुप्ति मे सावचेत रहिणो । तीर्थंकर नी आज्ञा अखड अराधणी । भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धात देख नै श्रद्धा आचार प्रगट कीधा—विरत धर्म, अविरत अधर्म । आज्ञा माहे धर्म, आज्ञा बारे अधर्म । असजती रो जीवणो वछै ते राग, मरणो वछे ते द्वेष, तिरणो वछे ते वीत-राग देव नो मार्ग छै । तथा विवध प्रकार नी मर्यादा वाधी । पचासा रा लिखत मे कह्यो—किण ही साध आर्य्यां मे दोष देखे तो ततकाल धणी नै कहिणो, अथवा गुरा नै कहिणो, पिण ओरा ने न कहिणो, घणा दिना आडा घाल नै दोष बतावै तो प्राछित रो धणी उ हीज छै ।

तथा बावना रे वर्ष आर्य्या रे मर्यादा वाधी तिण मे इम कह्यो—किण ही साध आर्य्यां माहे दोष देखे तो ततकाल धणी नै कहणो, के गुरा नै कहणो पिण ओरा ने कहणो नही । किण ही आर्य्यां दोष जाण नै सेव्यो हुवै ते पाना मे लिखिया विना विगै तरकारी खाणी नही । कोइ साध साधविया रा ओगुण काढै तो साभलण रा त्याग छै । तथा घणा दिना पछै, दोष न कहिणा लिखता मे तथा रास मे ठाम-ठाम कह्यो छै । तथा 'साध सीखावणी' ढाल रा दूहा मे घणा दिना पछै दोष कहे तिण नै, मर्यादा रो लोपणहार कह्यो । कषाय दुष्ट आतमा रो धणी कह्यो छै । तथा चोतीसा रे वर्स आर्य्या रे मर्यादा वाधी तिण मे कह्यो—ग्रहस्थ आगे टोला रा साध आर्य्या री निंद्या करे तिण नै घणी अजोग जाणणी । तिण रे एक मास पाचू विगै रा त्याग छै । जित री वार करै जित रा मास पाचू विगै रा त्याग । जिण आर्य्या साथे भेली तिण आर्य्या भेली रहै अथवा आर्य्या माहो माहि भेली रहे अथवा चोमासे भेली रहे त्या रा दोष हुवै तो साधा सू भेला हुया कहि देणो, न कहे तो उतरो प्राछित उण नै छै ।

तथा पैतालीसा रा लिखत मे तथा पचासा रा लिखत मे तथा रास मे जिला ने घणो निषेध्यो छै तथा पचासा रा लिखत मे तथा गुणसठा रा लिखत मे कह्यो—उसभ उदै टोला सू न्यारो पडै तो किण ही साध साधविया रा ओगुण बोलण रा नै हुतो अण-हूतो खूचणो काढण रा त्याग छै । रहिसे-रहिसे लोका रे सका घाल नै आसता उतारण रा त्याग छै । टोला नै असाध सरध नै फेर नवी दिख्या लेवे तो ही अठीला साध साधव्या

रा ओगुण वालण रा त्याग छै। एहवो गुणमठा रा पचासा रा लिखत मे कह्या छ। जे टोला वारे नीकली पाता री समदृष्टि राखे, फेर टोला रा साध सावव्या रा गुण गाव, ते पिण विरला छ। भीखणजी स्वामी एकल रा चोढाल्या म कह्यो छै किण सू आचार पले नहीं, पिण समक्त राखे। गण छोडी एकलो हुव, पिण आरा म दोप काढे नही।

तथा आगे केइ अविनीत थया, त्या री भीखणजी स्वामी काण न राखी। वले नदूजी वनाजी री प्रवृत्ति अजोग जाणी त्या नै कागद लिख्या ते लिखिये छै—

आर्य्यां नद् जी वनाजी रतूजी सू ऋप भीखन रा वहण वाचजो। उप्रच था री कूक[1] घणी सुणी छै। भाया वाया वदणा छाडी सुणी छै। थे नै वनाजी मिली सुणी छै। रतु ने न्यारी कर राखो छा, माहो मा कलेस घणो सुण्यो छ। आहार पाणी रा कजिया घणा सुण्यो छ। आचार आश्री खामी घणी सुणी छै। दाप लगाया घणा ते सुण्या छ। आगन्या लाप ने सरधा रा खेत्रा म फिरिया छा, खेरवे चोमासा आगन्या विना कीधा छ, था नै आगन्या लोपणी न धी। हिवै था कनै धनाजी नै मेल्या छै। आचार गाचार पालिया आछी लागसी। आप र छद चाल्या आछी लागसी नही। आग दाप लागा रा प्राछित दणा छ। हिव च्यारो इ आय्या मिल न चालजा। सरधा रा क्षत्रा म रहिजा मती। म्हारे पिण वेगो आवण रा भाव छ। रतू ने था रा निकाला काढण रा भाव छ। थे रतू रा लोका म घणो फितूरो कीया छ। घणा गावा रा भाया वदणा छोडी सुणी छै। मेवाड मे पिण भाया वाया थारा घणो फितूरो कर छै। माधा न आलभा देवे छै। या न टोला माहे क्यू राखे छै। यू कह छ। वनाजी रतु जी सू वोले छै त नदूजी रा भेद मे कहै छ। खेरवा माह थारा फितूरा रा समाचार मा ताइ आयो छ। जावक साधपणा माह अन्याय करै छ, यू कहे छ। रतु ने दुख देवे इम कह छ। पिछेवडी आहारपाणी रा कजियो सुण्यो। भेपधारी मेवाड म ते थारा फितूर म्हा कन लाका मे कीधा। टाला री घणी हलकाइ लगाइ। साध सत्या रा मन था सू भागो छ। हिव थे चिंता कीजो मती। अब ही आलाय पडिकमी न सुध हाय न चाखा पालजा। लाका एक आर्य्यां मेलण रा जोर कह्यो, पिण काइ आर्य्या आवती जाणी नही। धनाजी नै था कनै मल्या छ। थे ना कह्या ता थारा आचार पालण रा परिणाम दीसे नही। तनाजी ने फारने आपणी कीधी जाणसा। तिण सू धनाजा भेला राखण रा ना कहीजा मती नै सरधा रा खेत्रा म चामासा करजो मती। थे घणा क्षेत्रा मे टोला रा फितूरो करायो तिण सू सरधा रा खेत्र वरज्या छै हिव च्यारा इ आय्या माहोमाहि घणा हत राखजो। खाटा खेटो कीजा मती। लिखतू ऋप भीखन स १८५८ जठ विद १२। चोपडी रोटी वहिरजा मती चापडी राटी री सका पडी। नदूजी रे विहार करवा री सवत न हुवै तो माहे चोमासा कीजा। वले अनर क्षेत्र चामासो करा तो मारग माह सरधा रा क्षेत्र टाल न विहार करजा। मा सू भेला हुवा पहली

[1] अपवाद।

प्राछित लिया पेहली विगै खायजो मती। च्यारु जणी। इहा पिण भीखणजी स्वामी खामी मेटवा अनेक सीखामण दीधी ते भणी सुवनीत हुवै ते समभाव सू खमे। अने खामी मेटे, विनय वधावे तो ए भव मे गुरा री मुरजी ववे। सुजश हुवे। परभव मुक्ति नेडी हुवै। तथा विनीत अवनीत री चोपी मे भाव विवध वताया ते कहे छै।

१ [2]जो अगन मे रुडी वस्त घाल्या थका, तो वल जल भस्म होय जाय हो।
ज्य अविनय रूपणी अगन सू गुण वले, अवगुण परगट थाय हो।।
श्री वीर कह्यो अवनीत नै अति वुरो।। ध्रुपद।।

२ कोइ वालक नाग जाणी नै खिजाविया, तो उ पामे उण सू घात।
इण दिष्टते गुर री हेला नद्या किया, पामे एकेद्रियादिक जात।।

३ आसीविष सर्प अतंत रूठो थको, जीव घात सू अधिको न थाय।
पिण गुर रा पग अप्रसन्न हुआ थका, अवोध नै मुक्ति न जाय।।

४ कोइ अग्नि प्रजलती ने चापे पग थकी, कोइ सर्प ने क्रोध चढाये जाण।
कोइ तालपुट विप खाये जीववा भणी, ज्यू गुर री असातन जाण।।

५ कदा अग्न न वाले मत्रादिक जोग सू, कदा कोप्यो ही सर्प न खाय।
कदा तालपुट विष न मारै खाधा थका, पिण गुर हेलणा सु मुगत न जाय।।

६ कोइ पर्वत वाछे सिरसू फोडवो, कोइ सूतोइ सीह जगाय।
कोइ भाला री अणी ने मारे टाकरा, ज्यू गुर री असातन थाय।।

७ कदा पर्वत पिण फोडे कोइ मस्तके, कदा कोप्योइ सीह न खाय।
कदी भालो इ न भेदे टाकरा, पिण गुर हेलणा सू मुगत न जाय।।

८ कोइ क्रोधी कुशिष्य अज्ञानी अहकार सू, वोले विगर विचारी वाण।
ते मायावियो धूरत ताणीजसी[1] ससार मे, काष्ट वूहो जाये पाणी मे जाण।।

९ अवनीत नै सीख दिये हेत जुगत सु, तो उ क्रोध करै तिण वार।
तो आवती लिखमी न ठेले डाडे करी, ते तो पूरो छै मूढ गिवार।।

१० केइ हाथी घोडा छै अवनीत आत्मा, त्या नै प्रत्यक्ष दीसै दुख।
अवनीत धर्म आचार्य तेह नो, ते किण विध पामे सुख।।

११ वले अवनीत आत्मा दुख पामे घणो, लोक माहे नर नार।
ते विकलेन्द्री सरीखा छै सुध वुथ वाहिरा, त्यारो विगडचो दीसै आकार।।

१२ अवनीत ज्ञान दर्शण चारित्र तणो, उ दिन-दिन पामे विणास।
उण नै ऊधो सूझे ऊधो ही अर्थ करै, वलै वुधि नै अकल रो होवे नास।।

१३ नकटी बूटी कुलखणी नार नै, तिण नै परहरी निज भरतार।
तिण विगड्यल नै जोगी भकडादिक आदरै, ते पिण जाये तिण लार।।

---

१ खीचताण,

२ लय . पूजजी पधारो नगरी सेविया

१४ नकटी नै आप मरीपा आए मिले, घणो हरख घर मन प्रीत।
ते इधको न वछ आपणपो खोविया, तिमहिज जाणो अवनीत ॥
१५ नकटी जाव जागो मकडादिके, ज्यू अवनीत जाय अजोग।
उसभ उद हुवै अवनीत र, ता मिल जाय सरीपा सजाग ॥
१६ कादा न सा बार पाणी सू धोविया, ता ही मिटे नहीं तिण री वास।
ज्यू अवनीत नै गुर उपदेस दियै घणु पिण मूल न लागे पास ॥
१७ कादा री ता वास घाया मुधरी' पडे, पिण निरफल अवनीत नै उपदेश।
जो छेडव तो अवनीत अवलो पड घणा, उण रे दिन दिन अधिक कलेस ॥
१८ कोइ गुर भगता छ सुवनीत आत्मा, गुर छादा रा चालण हार।
जो हत दखे तिण ऊपर गुर तणा, तो अवनीत द मुह विगाड ॥
१९ वनीत ऊपर हत हावे घणो गुर तणा, ता अवनीत नै दुख हुवै साख्यात।
जव अवगुण मूजै अणहूता गुर तणा, वन वाछे वनीत री घात ॥
२० अवनीत जाण विनीत मूआ थका, पछे माहरो हीज हुसी आघ।
एहवा परिणामा घात वछै सुवनीत री तिण लीधो कुगति नो भाग ॥
२१ वले ओषध भषध आहार पाणी तणी, उ जाण न पाडे अंतराय।
दुख न असाता वछ सुवनीत री अविनीत न आलखो इण न्याय॥
२२ आरा र अंतराय असाता दुख चिंतव्या तिण र वध महामोहणी कम।
सितर कोडाकोड सागर त्या लगे नहीं पामे जिण धम ॥
२३ जो पाप उद हुव अवनीत र इण भव, ता मगला ने लागे जेहर समान।
वने गमतो न लागै तिण रो वालिया आगै खुलसी दुखा री खान ॥
२४ गुर वारा म् आया उठ ऊभा हुवे, पग पूज नम सुवनीत।
अवनीत न इतरा ही करणा दोहिला, कदा कर ता ही भूडी रीत ॥
२५ पग पूज व्यावच करणी अवनीत न ते ता कठिण घणो छ काम।
काम पडया अवनीत टालो दिय, तिण र प्रवल अविना नै अभिमान ॥
२६ गुर भगता उपर धेष अवनीत रा, वलै इसका ने खदा अत्यत।
उण रा छिद्र जोवे उतारण आमता, तिण रा चरित जाण मतिवत ॥
२७ वलै करै वनीत सू मूढ वरावरी, पिण विनो किया मूल न जाय।
वल अवगुण न सूज अवनीत नै आपरा तिण सू दिन दिन दुखियो थाय ॥

इहा अवनीत नै भात भात ओलखायो छ। ते भणी अवनीतपणो उत्तम हुवै सो छाडे।

तथा पतालीसा रा लिखत मे कह्या—टाला माहे कदा टोला बारे पड तो टाला रा साध साधव्या रा अस मात्र अवणवाद वालण रा

१ मद।

त्याग छै। या री अस मात्र सका पडै आसता उतरे ज्यू बोलण रा त्याग छै। टोला सू फार नै साथे ले जावा रा त्याग छै। उ आवे तो ही ले जावा रा त्याग छै। टोला माहे न वारै नीकल्या अस मात्र अवगुण बोलण रा त्याग छै। माहोमा मन फटे ज्यू बोलण रा त्याग छै। इम पैंतालीसा रा लिखत मे कह्यो। ते भणी सासण री गुणोत्कीर्तन वात करणी। भागहीण हुवै सो उतरती वात करे, भागहीण सुणे। सुणी गुरा ने न कह ते पिण भागहीण। तिण नै तीर्थंकर नो चोर हरामखोर कहणो।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि ण पूयंति, जेण जाणंति तारिसं ।।
आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि णं गरहंति, जेण जाणंति तारिसं ।।

इति [1]दशवैकालिक मे कह्यो—ते आज्ञा मर्यादा आराध्या इहभव परभवे सुख कल्याण हुवै।

ए रची सं १९१० जेठ विद १४ वगतगढ।

---

१ दसवेआलिय, ५/२/४५,४०

सोलहवीं हाजरी

पाच सुमति तीन गुप्ति पच महाव्रत अखड अराधणा। ईर्या भापा म सावचेत रहिणो आहारपाणी लेणा त पकी पूछा करी नै नेणा सूजनो आहार पिण आगना रा अभिप्राय देख नै लेणो। पूजता परठवता सावधान पणे रहणा। मन वचन काया गुप्ति म सावचेत रहणो। तीर्थंकर नी आना अखड आरावणी भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धात देख नै श्रद्धा आचार प्रकट कीवा विरत धम ने, अविरत अधम। आना माह धम, आना बारे अधम। असजती रो जीवणा वछ ते राग मरणा उछ ते द्वेप तिरणा वछ ते वीतराग देव नो माग छ। तया विवध प्रकार नी मयादा वाधी।

तया सवत् १८५२ वरस आय्या रे मयादा वाधी तिण म एहवा कह्या—किण ही माय आय्या म दाप देखे ता ततकाल धणी न कहणा। तया गुरा न कहिणा। पिण और किण ही आगे कहणा नही। किण ही आय्या जाण न दाप सव्या हुवै त पाना में लिख्या विना विगै तरकारी खाणी नही। काइ साधु साधविया रा आगुण काढे ता माभलण रा त्याग छै। इतरा कहणा—'स्वामी जी नै कहीजा' जिण रा परिणाम टाला माहि रहिण रा हुवै ते रहिजा। पिण टोला बार हुवा पछ साधु साधविया रा अवगुण बोलण रा अनता सिद्धा री साख कर नै त्याग छै। वन करनी करली मरजादा बाधे त्या मे पिण ना कहिण रा अनता सिद्धा री साख कर नै त्याग छ।

तया चोतीमा र वम आय्या रे मयादा वाधी तिण म कह्या—टाला रा साध आय्या री निंद्या करै, तिण न धणी अजोग जाणणी। तिण न एक मास पाचू विग रा त्याग छै। जित री वार करै जित रा मास पाचू विगै रा त्याग छै। जिण आय्या साथे मेल्या तिण आय्या मेली रहे अथवा आय्या माहो मा गेपे काल भलो रह अथवा चामासे मेलो रहे त्या रा दाप हुव तो साधा सू भला हुव जद कहि दणा न कहै ता उतरा प्राय छित उण नै छ। टाला सू छट हुवा री बात मान त्या न मूरख कहोजे। त्या नै चार कहीजे।

तया पचासा रा लिखत म कह्या—ग्रहस्थ साधु-साधविया रो सभाव प्रकृति अथवा दोप कहै बताव जिण न यू कहणो—मा नै क्यान कहा, थे ता धणी नै कहा, क स्वामी जी न कहा। ज्यू या न प्राछित देन सुध कर, नही थेसो ता थे पिण दापीला गुरा रा सेवणहार छ। जा स्वामी जी न न कहिमा ता था म पिण वाक छ। थ म्हान कह्या

काइ हुवै । यू कहि नै आप न्यारो हुवै, पिण आप वेदा मे वयाने पट । पेला रा दोष धार नै भेला करै ते तो एकत मिरषावादी अन्याइ छै ।

तथा पचासा रा गुणसठा रा लिखत मे कह्यो—कर्म वको दीधा टोला मू टलै तो टोला रा साध साधव्या रा हुता अणहुता अवर्णवाद वोलण रा त्याग छै । टोला नै असाध सरध नै नवी दिख्या लेवे तो पिण अठी रा साध साधव्या री सका घालण रा त्याग छै । उपगरण टोला माहे करे ते परत पाना लिखे जाचे ते साथे ले जावण रा त्याग छै । तथा गुणसठा रा लिखत मे कह्यो—टोला सू टले तो इण सरधा रा वाई भाई हुवै जिण खेत्रा मे एक रात उपरत रहिणो नही—एहवो गुणसठा लिखत मे कह्यो । ते मर्यादा सुद्ध पालणी ।

टोला वारे नीकलो मर्यादा लोपे अवगुण वोले तिण री वात तो उण लखणो विकल माने पिण हलुकर्मी न माने आगे पिण टोला वारे नीकली अवगुण वोल्या त्या जमारो विगाड्यो भीखणजी स्वामी चदू नै टोला वारे काढी । तिण अवगुण वोल्या । ते भिखणजी स्वामी लिख लिया ते भिक्षु रा अक्षरा री देखादेख लिखिये छै । चदू नै टोला वारे काढ्या पछै चंदू लोका आगै आर्य्या रै आल देवे छै, अवगुण वोले छै, तेहनी विगत—

१ आर्य्या ढीली हालै तिण मू म्हानै टोला माहे किण विध रागे ।
२ भीखणजी रै कूड घणो, दगो कपट घणो, माहे काला वारे काला ।
३ पाच रोट्या हीराजी खाये, पाव पाव घी खाये, सिरियारी[1] मे चोखो-चोखो आहार मिले लोलपणा री घाली खेत्र छोडे नही ।
४ भीखणजी कोड कसाया विचे भारी, फतू वाई कह्यो ।
५ रूपाजी रे खेतसी जी भाई, नगाजी रे वेणो जी भाई, हीराजी मानती लाडकी, तिण सू या रो आघ आदर घणो,वीजा री गिणत काइ नही, वीजी वापरिया रोवती रहै छै, म्हारी किसी गिणत
६ माहो माहे आर्य्या रा थानक माहि वाया दोय वरस हुया "वासीदो देवे छै" ।
७ ग्रहस्थ रा परवा[2] कनै गुमाना जी सारी राति रोया ।
८ धनाजी कह्यो—म्हारो जीभ रो स्वाद छोडायो । पिण साधपणो तो स्वामी जी मे कोइ नही ।
९ वापरी धनाजी रोवे छै ।
१० नदू जी घणी रोवे छै ।
११ रतू जी घणी रोवे छै ।
१२ कुसाला जी रोवे छै । ए च्यार वोल पाली माहे वाया नै साधा वेठा कह्या ।
१३ मने पछेवडी काइ दीधी नही, वटको[3] इ कोइ दीधो नही ।

---

१ बुहारी निकालना । २ स्थान विशेप । ३ टुकडा ।

१४ कन पाच वासती थी पिण दीधी नही। कह्यो मा कनै का नही।

१५ म्हारी मादी री कोइ व्यावच किण ही कीधी नहीं।

१६ नगाजी री व्यावच कीधी, उण र भाइ वेणा जी छ त माहे छ तिण सू।

१७ रूपाजी रे भाइ मतसी जी छै तिण सू उण गी जत्न कर छै।

१८ लाला जी री वियावच करे छै। सो उण ग वेटा वहिरावै घणा तिण सू करै छ।

१९ पाच जणिया न अजाग जाण न त्या न माह क्यू राखे।

२० टोना रा भपधारी ज्यू ए ही चाले छ। एक थानक रा फेर छ।

२१ भप धारचा रै नै या रे एक थानक रा फेर छै विजू ता भेप धारचा विचे इ या र कपट घणो छ।

इम अनेक अवगुण गल्या ज्या री भीखणजी स्वामी गिणत रागी नही। इमहीज मव अवनीत जाणवा उण री सगत सू अनेक अवगुण प्रकट हुव। कुसोभा घणी हुवै। वन विनीत अविनीत री चोपी में एहवी गाथा कही त कहै छै—

१ 'काइ अवनीत आगममजिया ए जा उ राख उण री परतीत।
आरा री नही आसता है ता उणरी पिणआहीज रीत के॥
अवनीत एहवा ए॥ध्रुपद॥

२ अवनीत समझाव तेह न जा उ मान अवनीत री वात।
आरा सू रह आपरा, तिण र माह रह्या मिथ्यात॥

३ अविनीतन अवनीतश्रावकमिन, त पाम घणा मन हरप।
ज्यू डावण राजी हुव, नढवा न मिनिया जरक॥

४ डाकण जरख चढी फिर ज्यू अविनीतअविनीन रै साय।
डाकण मार मिनग न ज्यू ए कर गमकत री घात॥

५ डाकण चार राजा तणी, तिण न राजा मार एकवार।
अवनीत चार जिण तणा, त भव भव म गामी मार॥

६ क द काछ नपटो कुसीलिया, त न गिण जात कुजात।
पिषी पणा रूप रा, नाच घर जाय मास्यात॥

७ ते फिर फिटहुय गगली ग्यात म वल राजा दन दड।
कुजरयो' वणै पणी हुन देन विदगा मे भड॥

८ काछ नपटी री आपमा अवनीत न दीधी इम जाग।
प्रिषी पणा गाग रा, निण म कर अति ताण॥

---

१ भय—कंवरूपा म हाया डायबा।
२ दुष्ट।
गरावी।

८ उलास न आवे साधु दखिया, अनक गुणा री पड हाण।
दग्ध बीज दाधा-रीगो[1] हुव, तिण री सगत रा एफल जाण।।
९ जा सूस भागण डरतो थका, जा उ नही काढ तिण रा निकाल।
ता उ भ्रमण कर इण ससार म, ज्यू अरठ तणी घडमाल।।
१० मूस दिराय अवगुण कहै, काढण न दे निकाल।
एहवा अविनीत अजोग नै, बुद्धिवत जाण देमी टाल।।
११ कोइ अवनीत हुव साधु साधवी, तिण सू मिले मूढ जाय।
उ अणहुता अवगुण कहै तिके, त घीर रासे मन माहि।।
१२ त गुर कनै आय कहै नही, अवनीत रा नही कर उघाड।
वल अवगुण वालण कारण, तिण किया छ जम खुवार।।
१३ उ साच माने अवनीत रा, वलै कर तिण री पखपात।
सुध साधा री निंद्या करतो फिरै, तिण रे न मिटचा मूल मिथ्यात।।
१४ अवनीत नरमाइ कर उण कन, वल वाले मीठा मीठा वेण।
करै कुसामदी तेहनी, रोव घणा भर भर नेण।।
१५ पछ अवगुण वाले उण कनै गुर तणा, कइ एहवा छ दुष्ट अवनीत।
गरीब होय आपो छिपाय द, तिण री मूख माने परतीत।।
१६ जा साच मानै अवनीत री, घणा री न मान परतीत।
पखपात कर अवनीत री, ते चिहु गति होसी फजीत।।
१७ ए राग नै घप नो घालियो, कर रह्या कूडी पखपात।
एहवा अजोग श्रावक तणी कोइ मूख मानसी वात।।

इम इहा पिण अवनीत साध श्रावक न घणो आल लायो। निंद्या करै तेह न मति हीण कह्या। तिण री सगति सवथा न करणी। ते भणी पैंतालीसा रा लिखत म कह्या— टोला माहै कदाच कम जोगे टोला बार पड ता टोला रा साध साधविया रा असमात्र अवणवाद बोलण ना त्याग छ। या री असमात्र सका पड आसता उतरे ज्यू बालण रा त्याग छै। टोला सू फार नै साथे ले जावण रा त्याग छै। टोला माहे न बारे नीकल्या पिण आगुण बालण रा त्याग छ। माहा मा मन फट ज्यू बोलण ना त्याग छै। इम पतालीसा रा लिखत म कह्या। ते भणी सासण री गुणोत्कीतन वात

१ अग्र जनित।

सत्रहवीं हाजरी

पाच सुमति तीन गुप्ति पच महाव्रत अखड आराधणा। ईर्या भापा एपणा मे सावचेत रहिणो। आहारपाणी लेणो त पकी पूछा करी नै लेणा। सूजतो आहार पिण आगला रो अभिप्राय देख नै लेणो। पूजता परठवता सावधानपणे रहणो। मन वचन काया गुप्ति म सावचेत रहिणा। तीर्थंकर रा आज्ञा अखड आराधणी। श्री भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धात दख नै आचार श्रद्धा प्रगट कीधी—विरत धम, अविरत म अधम आज्ञा माहे धम, नै आज्ञा बार अधम। असजती रा जीवणा वछै त राग, मरणा वछ ते द्वेप, तिरणो वछै त वीतराग ना माग छै। तथा विविध प्रकार नी मयादा वाधी।

किण ही साध आर्य्या म दाप देख तो ततकाल धणा न कहणा, तथा गुरा न कहणा, पिण औरा न न कहणा। घणा दिन आडा घाल न दाप बताव ता प्राछित रो घणी उ होज छ।

तथा सवत १८५२ वरस आर्य्या र मयादा वाधी तिण म एहवा कह्यो—किण ही साध आर्य्या म दाप देख तो दाप रा धणी न कहिणा तथा गुरा नै कहणा आर किण ही आग कहणा नही। आर्य्या जाण न दोप सव्या हुव त पाना मे लिख्या विना विग तरकारी खाणी नही। काइ साधु साधविया रा अवगुण काढ ता साभलण रा त्याग छ। इतरा केहणो— स्वामी जी न कहीजा' जिणरा परिणाम टाला माह रहिण रा हुव त रहिजा। पिण टाला वार हुवा पछै साधु साधविया रा आगुण वालण रा अनता सिद्धा री साख कर न त्याग छ। वल करली-करली मयादा वाध त्या म पिण ना कहिण रा अनता सिद्धा री साख कर न त्याग छै।

तथा चातीमा रे वरस आर्य्या र मर्यादा वाधो तिण म कह्या—टाला री साध आर्य्या री निंदा कर तिण न घणो अजाग जाणणी। तिण नै एक मास पाचू विग रा त्याग छ। जिन री वार कर जित रा माम पाचू विग खावा रा त्याग छ। जिण आर्य्या साथे मेल्या तिण आर्य्या भली रही अथवा आर्य्या माहामाहि सप काल भली रह अथवा चामासे भेली रह त्या रा दाप हुव ता साधा सू भला हुआ कहि दणो न कहै ता उतरा प्राछित उण नै छ। टाला सू छूट त्याग हुआ री बात मान त्यान मूल कहीज।

तथा पचासा रा लिखत म कह्या—काइ ग्रहस्थ साधु साधव्या रा सभाव प्रकृत अथवा दाप काइ ग्रहस्थ कही बताव तिण न यू कहिणा—मान बयान कह्या, क ता धणी

ने कहो, के स्वामी जी नै कहो, ज्यू या नै प्राछित देने सुध करै, नहीं तो थे पिण दोपीला गुरा रा सेवणहार छो। जो स्वामी जी नै नहीं कहिसो तो था मे पिण वाक छे। म्हा नै कह्या काइ हुवै। उम कहि नै आप न्यारो हुवै। पिण आप भेदा माहे रयानै परै। पेला रा दोप धार नै भेला करै ते तो एकंत मृषावादी अन्याइ छै, एहवो कह्यो।

तथा पचाराा रा तथा गुणसठा रा लिखत मे एहवो कह्यो—कर्म धको दीधा टोला सू टलै तो टोला रा साध-साधव्या रा हुता अणहुता अवर्णवाद बोलवा रा त्याग छै। टोला नै असाध सरधै नै नवी दिख्या लेवे तो पिण अठी रा साध साधव्या री सका घालण रा त्याग छै। उपगरण टोला माहे करै ने परत पाना लिने जावे ते साथे ले जावण रा त्याग छै। तथा गुणसठा रा लिखत मे कह्यो—टोला सू टलै तो उण सरधा रा भाई बाई हुवै जिण खेत्रा मे एक राति उपरंत रहिणों नहीं। एहवो गुणसठा रा लिखत मे कह्यो। ते मर्यादा उत्तम जीव हूं ने लोपे नहीं। अवनीत नै निषेध्या गुणग्राही तो राजी हुवै अनै अवनीत अजोग हूं ते पोता ऊपर गाने। ऊधी परगमे। आगै पिण अवनीत अजोगा रा एहवाज लखण कह्या। वीरभाण अवनीत हुओ, तिण पिण अवनीत री जोड आप ऊपर खाची।

वीरभाणजी नी वारता भीखणजी स्वामी लिखी ते

गाम विठोडा माहे साधा नै विना रा भाव सुणाय नै सर्व साधा नै पूछी नै सर्व साधा मरजादा वाधी ते मरजादा पाना माहे। तिण उपर वीरभाण जी दिस्टत दीधो—हिवै राज तकरार हुई छै। सुमट्टी पाधरा चालिया ठीक लागसी। तठा पछै वीरभाणजी नै अणदेजी विहार कीधो। जेतावता रे गूटे गया। पछै अणदेजी वीरभाणजी नै विना री ढाल फेर सुणाइ। ते ढाला वीरभाण जी सुण नै अणदाजी नै कह्यो—हिवै तो स्वामीजी नै पूरी परतीत उपजावणी। म्हारी तो आगै साधा मे अप्रतीत घणी छै। ते परतीत उपजाइ ते अणदाजी नै कह्यो—म्हे चेला करण रा तो जावजीव पचखाण कीधा स्वामीजी कर दे तो आगार छै।

मारी तरफ सू तो जाव जीव लगै चेला करण रा त्याग छै। वलै परतीत उपजावा नै एक कागद लिख्यो। तिण मे अनेक बोल लिख्या। अणदाजी नै वचाय नै कह्यो—ए लिखत स्वामीजी नै सूपणो छै। वीजा री तो अप्रतीत उपना स्यू लिखत कराय-कराय लीधा छै, अनै हुतो स्वामीजी नै हाथा सू लिखत कर नै सूपस्यू। तिण लिखत प्रमाणे स्वामीजी चलावसी जिण तरै चाल सू। इत्यादिक अनेक परतीत कारिया वचन कह्या, लिख्या छै। विहार करता गाव रोयट मे महा विद १४ रे दिन गया। पना नै गाव सिरियारी आयो सुणियो। रोयट रा भाया नै पनो विनो नरमाइ स्वामीजी आगे घणो करै छै। तिवारै पछै महा सुध ६ अणदाजी आगे कह्यो—पना नै

तो स्वामीजी भिण्ट कीधा छ । म्हारे चेलो हुतो जाण नै । एक पिछोवडी मटुजी आगे एक वरस ताइ अधिकी रही छै, तें साधा रखाइ छै । तिणरो निकालो साच नायो तो म्हारे टोला माहि रहिण रा जावजीव त्याग छै । पछै अणदो जी कहै—मोनें फारण र वामतें स्वामीजी सु मन भागण रै वासते स्वामीजी रा अनक ओगुण वोल्या तेहनी विगत ।

हिव अनेक अवगुण अणदाजी आगै वीरभाण जी बोल्या । ते अणदेजी लिखाया त—

१ पना नै भिष्ट कीयो म्हारे चेलो वेतौ जाण नै
२ एक पछेवडी आर्य्या कनै इधकी रखाइ
३ धूरतपणो घणो छै
४ माया कपटाइ घणी । माया आगै क्रोध मान लोभ री ठीक पडै नही ।
५ भरत खेत्र म च्यार जीव भारी कमा छै । इण भेप मे रुघनाय, वसी, वखत-
   मल, देवकरण ज्यू पाचमा अ पिण भारी कमा दीसै छे ।
६ कमा सू डरता काइ दीसै नही । यह लोक रा अर्थी दीसै छ ।
७ विना री टाल कीधी त मा ऊपर कीधी छ उपसम्यो कलहो उदीरियो छ ।
   राग द्वेप रे वासते कीधी छ । दाय वरस ताइ न कीधी हुवेत ता हू हिल मिल
   जात, इण जाड विना काइ वीजा भाव थाडा था ।
८ विना री जाड ते सगली आप ऊपर खाची ।
९ म्हारे दाप लागा था तिण री आलावणा हाडाती मे कीधी पिण पूरी न
   कीधी । टाला माह आतमा अर्थी जावण नै रह्यो ।
१० या रा हु चला हुवा त वदणा कीधी त म्हारे कम घणा तिण सू चेलो हुवा ।
११ म्हे वीठाडा माह लिखत म मतो घाल्या ते सरमासरमी घाल्या छै ।
१२ पना रा अनेक गुण कीधा पना न घणो सरायो ।
१३ पना न दिम्या देने इणहीज खेत्र म फेरा पछ लोका नै पूछा—ओ देखो पनो
   विग म घटतो आचार पाले छ, इत्यादिक अनक गुण किया ।
१४ था न विगारिया ज्यू पना नै सूस कराय न भिष्ट कीधो छै ।
१५ अणदाजो न था न म्हारी आमता हुव म्हारा ओगुण काढजो मती अब थे
   पिण टाना माह रहता कोइ दीसो नहीं ।
१६ पाली रै वारणे वान कह्यो थे पाधी लेनै जाओ हू अठा सूइ परो जाऊ ।
१७ म्हारे माघा नै फटावणा नही तर अणदेजी कह्यो - थारा फटाया गुण फटे
   छ । तर पाछा कह्यो—डावरा (सुसराम जो) न अगे राम ।

१८ मानै आर्य्यां वैरागी कहै, पिण साध मोनै सरावै नही। वेराग कहे नही। आर्य्यां माहरा गुणग्राम करै, पिण साध म्हारा गुणग्राम करै नही।

१९ मोनै साध ढीलो जाणे, तिण सू म्हारा त्याग सरावै नही।

२० मोनै कह्यो थो अवै थारे नचित टोलो वाधो।

२१ आर्य्यां आगै कोठार माडचो छै।

२२ म्हारा विगै रा त्याग पच्पो मती, ए कहूछूज सू स कोय नही।

२३ विना री ढाला मे माहरा कानी-कानी घाटा[1] वाध्या छै।

२४ पना नै आमना[2] जणाय नै मोने वदणा छोडाइ छे।

२५ माहरी आगली वाता लोका आगै कहिता दीसै छै।

२६ विना री ढाला रै वाचण रो अणदाजी नै तिलोकचन्द कह्यो तै म्हारै वासते।

२७ अणदाजी नै कह्यो थे म्हारे साथ आवो तो कोइ अटके नही अखेराम तो आवै तो ठीक लागै नही।

२८ जो देवता आय नै कहै ए मोटा पुरुष छै तो मानू ।

२९ जव अणदेजी कह्यो– जो देवता आय नै कहै ढू ढिया मोटा पुरुष छै, तो मानो ? जव पाछो कह्यो ढू ढिया नै साचा न जाणू ।

३० इत्यादिक अणदेजी कह्यो। अनेक अवगुण वोल्या। मोने फाडवा ताइ और तो अवारू मोने याद आवै नही। पिण वोल्या घणा।

३१ जव अणदेजी कह्यो—थे या नै साध सरधो छो के नही ? जद वीरभाणजी कह्यो—असाध तो कहणी आवै नही। आगै ही सावा रा ढीला टोला चालिया छै।

३२ एक खोटो दृष्टात वली दीधो—पातसाई मे च्यार जणा ठागो कर नै पातसाइ चलाइ। च्यारू जणा ज्यू ए दीसै छै। ए सर्व वोल अणदाजी रा कह्या स्यू लिख्या छै लिखतू ऋप अणदा रो।

ए सर्व अणदेजी लिखाया। भीखणजी स्वामी लिख्या। त्यारा हाथ रो पानो छै। त्यारी देखा देख ए उतारचा छै।

इत्यादिक घणा ओगुण वोल्या। पछै विहार कर नै गाम चेलावास मे आया। भला हुआ। पाछली रात रा वीरभाण कने आय नै कह्यो—स्वामीजी माहरे तो आहार री सका परी, सो अवे ठीक लागै नही। एक पछेवडी आर्य्यां इधकी राखी, वरस ताइ साधा रखाइ। मटु कह्यो छै, जव म्हे कह्यो। इण वात रो इतरा दिन आधो क्यू न काँढचो। पिण भला अवेइ निकालो काढो। राखण रखावण वाला ने दड देस्या। जद

1 वन्दोवस्त करना। 2 गुप्त सकेत

वीरभाणजी कह्यो—स्वामी जी आगै तो पाच विसवा', अबै वीस विसवा अप्रतीत उपनी, थारा भेद मे रही छै। वले एक पना नै भिष्ट कीधो छै। जव हरनाथ जी बोल्या—पछेवडी रो अणहुतो वयाने झूठ बोलो। था रे मन मे तो ओर दीसे छै। पना न लेवा रा परिणाम दीस छ। ए अणहुता आल देतो जाण्या जव नखेद म दूरो कीया तिण सू वल अवगुण बोल्या—

१ म्हारे कम घणा तिण सु थारो चेलो हुओ।

२ थारा वचन री परतीत नही।

३ ए अवनीत री जोड मो ऊपर कीधी उपसम्यो कलह उदेरीया छै। अवारु वरस दाय ताइ अवनीत री जा॰ करणी नही छी।

४ म्हारो थान भय मिटियो नही माने अजाग जाण्या तिण सू जाड कीधी।

५ थारे मन माहि खोट था तरे मो कनासु लिखत करायो छ।

६ म्ह ता लिखत माह मता घालिया ते सरमासरमी थी घालियो छै।

७ अखेराम जी कना थी लिखत कराया ते लिखत अखेराम जी री सरधा लिखत पालण री। काइ हू लिखत कीधो ते पालू नही।

८ हू ता टोला माह रह्या ते आत्मा अर्थी जावा न, पिण दीठो नही,

९ पना न चेला करण रा मू स कराया तके पालू नही। इत्यादिक अगल डगल बोलवा लागो। जद मैं कह्या—ये अणहुता आल दे न केइ भाला आगे अवगुण बाल न सका घालसा। म्ह पिण था पाछ या क्षत्रा म आवण रा भाव छै इम कही न कमड कीधी। जद वीरभाण जी बाल्या—थे किम साथै आवा था रा अवणवाद बालण रा भाव काइ नही। कठै इ बोलू नही। इम प्रतीत उपजाय नै नीकल्या। ता ही सिरीयारी जाय नै दीपावाई आग अनक अवगुण बोल्या। साजत मे पिण अनैक आगुण बोल्या। तठा पछै ता ग्यानी जाणै।

ए वीरभाण जी री वारता भीखणजी स्वामी लिख राखी त्यारा हाथ रा अक्षरा री देख उतारया छै।

वीरभाण जी न अवनीत अजोग जाण न टोला बारे काढया ते वाहिर नीसरया पछ पिण अनक अवगुण बोल्या। सरधा पिण फिर गइ। विराधक होइ न मूआ दीस। अन दोनू इ जनम विगारया। वलि जे कोइ अवनीतपणा आदरे ला तिण रा ए हवाल हुवेला। तिण अवनीत रा लखण घणा खाटा मूढे मीठो परपूठे कटमी वात कर तिण अवनीत नै भीखणजी स्वामी निषेध्यो वनीत अवनीत री चापी मे तिण रा लखण आलखाया ते दूहा सहित ढाल री गाथा—

दूहा

१ टोला माहे रहिवा री आसा नही, क्रोधी अवनीत जाणे एम।
तिण सू छान लोका कनै, बोले थावरिया जेम।
२ गर्भवती नै कहे डाकोतरो, था रे होसी पुत्र अनूप।
पाडोसण नै कहे होसी डीकरी, ते पिण अतत कुरुप ॥
३ गुर भगत श्रावक श्रावका कनै, गुर रा गुण बोले ताम।
आप रै वस हुवो जाणै तिण कनै, अवगुण बोले तिण ठाम ॥
४ थावरिया डाकोत ज्यू, बोले अनेक विध कूर।
इह लोक तणो अर्थी घणो, वलि माने आपणपो सूर ॥
५ कनै रहे तिण साधू तणो, वैर बुद्धि ज्यू जाण।
खीटोर खोराई करै घणी, पग-पग ताणा ताण ॥

१ [1]कुह्या काना री कूतरी, तिण रै झरै कीडा राध लोइ।
सगले ठाम सू काढ़े हुड-हुड करी, घर मे आवण न दे कोइ।
धिग धिग अवनीत आत्मा ॥ध्रुपदं॥

२ कुती विगाडे रमणीक आगणो, न्हाखे कीड़ा राध लोही।
वास दुरगध आवै अति बुरी, तिण नै घुर-घुर करै सर्व कोई ॥
३ जेहवी कुह्या काना री कुतरी, तेहवा अवनीत नै अभिमानी।
तिण रो पाडवो सील नै मुख अरी, तिण सू सगला इ दे जाए कानी ॥
४ अवनीत रा मुख मा सू नीकलै, ते तो कुवचन कीडा सम जाणो।
रमणीक आगणा ज्यू सुध साध नै, पाप लगावै क्रोध उठाणो ॥
५ थिरकरण माहे राखे तेहनो, छिद्रग्रहे हुवै द्रोही।
तिण नै कुह्या काना री कुतरी ज्यू, गण बारे काढै सर्व कोइ॥
६ कण सहित कुडो छोड नै, भिष्टो भखे भडसूर।
तिण भंडसूरा री ओपमा, अवनीत नै दीधी वीर॥
७ ते अविनो छै भिष्टा सारिखो, तिण नै अवनीत आचर लीधो।
विनै धर्म सूं अलगो पड्यो, अनंत संसार आरै कीधो ॥
८ तिण भडसूरा नै मृग री, ते ओपमा अवनीत नै छाजे।
तिण रो विगड्यो इहलोक नै परलोक, तो ही निरलज मूल न लाजे ॥

1. लय : सल्य कोइ मत राख जो।

९ अवनीत न अवनीत मिल्या, अवनीतपणो सीखावे।
पछै बुटकना नै वलद ज्यू, दोनू जणा दुख पावै॥
१० कुशिप रो चेलापणो, जेहवो वेस्या रो घरवास।
खिण खिण आय विनो करे, खिण खिण हुवै उदास॥
११ ते वेस्या मुतलव आप रे, करै साले सिणगार।
पुरुप रिझाव पारका, ते किण री म जाणो नार॥
१२ ज्यू अवनीत वाह्य विनो कर, ते तो मुतलव रो छै यारो।
जा म्वाथ देखे असीजतो, तो खिण माहे होय जाय न्यारो॥
१३ वम्या सू ग्रहवासो करे, तके धन खूटा पछै पिछतावै।
ज्यू अवनीत न कन राखिया, ते तो काम पड्या सीदावै।
१४ वाध्यो काल्या री पाखती[1] गोरियो, वर्ण न आवै पिण लखण आव।
ज्यू विनीत अवनीत भेला रहे, तो उ कायक कुवधि सीखावे॥
१५ जवनीत दुखदाइ केहवो, जेहवो सोक वरते दुखदाइ।
ते छलछिद्र जावतो रहै, खुद्र परिणामा रहै सदाइ॥
१६ ज्यू सोक रा सोक लाका वनै, करै चावत नै वछै घात।
ज्यू अवनीत वरते गुर थकी, आहीज रीत विख्यात॥
१७ काइ जात कुजात री ऊपनी, भरतार सू लड रीसाव।
पछ ताके कुवा के वावडी, ओर साथे उठ जाव रे॥
१८ ज्य अवनीत गुर सू रूठो थको, कर सलेखणा माडे मरणो।
मरणो अवनीत नै दोहिनो, तिण सू ताकै अवरा रो सरणो॥
१९ तिणरो सथारो ज्यू कुवो वावडी तिण सू मरै तो ही वाल मरणो।
आर साथै उठ जाय अस्त्री, ज्यू ओ अवीन रो लें सरणो॥
२० 'सोर ठडा लाग मुख मे घालिया, अगन माहि घाल्या हुवै तातो[2]।
ज्यू अवनीत नै सोर री आपमा, सोर ज्यू अलगो पड जाता॥
२१ आहारपाणी वस्त्रादिक आपिया, तो उ स्वान ज्यू पूछ वहलाव।
करडो कह्या उठे सोर अग्नि ज्यू, गण छोड एकल उठ जाव॥
२२ सोर आप वले वाले अवर नै, पछ राख होय उड जाव।
ज्यू अवनीत आप नै पर तणा, ज्ञानादिक गुण गमाव॥
२३ सोर सोरीगर रा घर थकी, लाक वुधवत रहसी दूरा।
ज्यू अवनीत सू अलगा रह, तिके परमेसर रा पूरा॥

१ पास म। २ कलमी गोरा। ३ गम

२४ उतराध्येन पेहला अध्येन सू, अवनीत ओलखायो।
वलै तिण अनुसारे निपेधियो, ते ले ले सूतर नो न्यायो॥

इम विनीत अवनीत री चोपी री तीजी ढाल मे भीखणजी स्वामी ओलखायो।

तथा पैतालीसा रा लिखत मे एहवो कह्यो टोला माहे कदा टोला वारै पडै तो टोला रा साध साधविया रा असमात्र अवर्णवाद वोलण रा त्याग छै। या री अस मात्र सका पडै आसता ऊतरे ज्यू वोलण रा त्याग छै। टोला मासू फार नै साथै ले जावा रा त्याग छै। उ आवै तो ही ले जावा रा त्याग छै। टोला माहे न वारै निकल्या पिण अवगुण वोलण रा त्याग छै। माहो माहि मन फटै ज्यू वोलण रा त्याग छै। इम पैतालीसा रा लिखत मे कह्यो। ते भणी सासण री गुणोत्कीर्त्तन वात करणी। भागहीण हुवै सो उतरती वात करै। तथा भागहीण सुणे, तथा सुणी आचार्य नै न कहै ते पिण भागहीण। तिण नै तीर्थंकर नो चोर कहणो, हरामखोर कहणो, तीन धिकार देणी।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि ण पूयति, जेण जाणति तारिस॥
आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि ण गरहति, जेण जाणति तारिस॥

इति [1]दशवैकालिक मे कह्यो ते मर्यादा आज्ञा आराध्या इहभव परभवे सुख कल्याण हुवै।

ए हाजरी रची सवत् १९१० जेठ विद ५ वार वुध वखतगढ मध्ये।

१ दसवेआलिय, ५/२/४५, ४०

अठाहरवीं हाजरी

पाच समति तीन गुप्त पच महाव्रत अखड अराधणा । ईर्य्या भाषा एषणा मे-साव चेत रहिणो । आहार पाणी लेणो ते पूछा पक्की कर न लेणा । सुजतो आहार पिण आगला रो अभिप्राय देख लेणा । पूजता परठवता सावधानपणे रहणा । मन वचन काया गुप्ति म सावचेत रहिणो । तीर्थंकर री आना अखड अरावणी । भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धात देख नै श्रद्धा आचार प्रगट कीधा— विरत धम ने अविरत अधम । आग्या माहे धम, आना आज्ञा वार अधम । असजती रो जीवणा वछे त राग, मरणा वछे त घेष तिरणा वछे ते वीतराग देवनो माग । तथा विविध प्रकार नी मयादा वाधी ।

१८५२ रे वष मयादा वाधी तिण म एहवा कह्या—किण ही साध आय्या म दोष दखे ता ततकाल धणी न कहणो, के गुरा न कहणो और किण ही आग कहणा नही । किण ही आय्या दाष जाण न सेव्या हुवै ल पाना म लिख्या विना विगै तरकारी खाणी नही । काइ साधु सावविया रा आगुण काढ ता साभलण रा त्याग छ । उतरो कहणा— 'स्वामी जी न कहिजा जिण रा टाना माह रहिण रा परिणाम हुव त रहिज्या । पिण टाला वारे हुवा पछ साधु साधविया रा अवगुण काढण रा अनता सिद्धा री साख कर नै त्याग छ । वले करली करली मर्यादा वाध त्या म पिण ना कहिण रा अनता सिद्धा री साख कर न छ ।

तथा चोतीसा रे वरस आय्या रे मरजादा वाधी तिण मे कह्या - टाला रा साध आय्या री निंद्या कर तिण न घणी अजाग जाणणी । तिण रे एक मास पाचू विगै रा त्याग छ । जितरी वार कर जितरा मास पाचू विग रा त्याग छ । जितरी वार कर जितरा मास पाचू विग रा त्याग छ । जिण आय्या साथे मेल्या तिण आय्या भेली रह अथवा आय्या माहो मा मेषे काल भेली रह अथवा चामासे भेली रहै त्या रा दाष हुवै ता साधा म भला हुवा केह देणा न कह ता उतरा प्राछित उण न छै । टाला सू छूट हुवा री वात मान त्यान मूरख कहीजे । त्या नै चार कहीज ।

तथा पचासा रा गुणसठा रा लिखत मे कह्या—कम धका दीधा टाला सू टल तो टाला रा साध साधव्या रा हुता अणहुता अवणवाद बोलण रा त्याग छ । टोला नै असाध सरध न नवी दिख्या लेव ता पिण अठीरा साध सावविया री सका पट ज्यू सका घालण रा त्याग छ । उपगरण टाला माह कर ते परत पाना लिखे जाच न साथे ने जावण रा त्याग छ ।

तथा गुणसठा रा लिखत मे कह्यो-इण सरधा रा भाई वाई हुवै जिण खेत्रा मे एक रात उपरत रहिणो नही। वाटे वहिता रहै तो एक राति कारण पडिया रहे तो पाचू विगै ने सूखडी खावा रा त्याग छै। अनंता सिद्ध री साख करी नै छै। वलै टोला माहे उपगरण करै ते पडत पानडा लिखे जाचे ते साथे ले जावा रा त्याग छै। एक वोदो चोलपटो, एक वोदी पिछेवडी, वोदा रजूहरणा उपरत साथे ले जावण रा त्याग छै उपगरण टोला री नेश्राय साधा रा छै। ए मरजादा पाले ते पिण लाजवंत कहीजे। कर्म जोगे गण सू टले तो ही अवर्णवाद न वोले। गण सू सनमुखरहे, सासण रा गुण गावे, तो ही कर्मा सू भारी नहुवै। गणमाहे तो गुणवानपुन्यवान विवेकवानहुवै सो आग्या प्रमाणे सदा रहे अनै कला चतुराइ विनयादिक करी सतगुर नै रीझावे। तथा भीखणजी स्वामी पिण विनीत अवनीत री चोपी मे अनेक वाता कही। ते ढाल—

१ [1]पालै गुर री निरतर आगन्या, कनै राख्या हुवै हरपअपार जी।
वलै वरते गुर री अगचेष्टा, तिण सफल कियो अवतार जी।
श्री वीर वखाण्यो वनीत नै ।।ध्रुपदं।।

२ जिण अभितर छोडी कषाय नै, नही मुख तणो लवाल।
एहवा गुर समीपे रह्या थका, छता गुण दीपे रसाल ।।

३ तिण नै करड़े काठे वचनै करी, गुर सीख देवे किण वार।
तो उ खिम्या करै धर्म जाण नै, पिण नाणे क्रोध लिगार ।।

४ सुकमाल कठोर वचने करी, गुर दीधी सीखामण मोय।
सुवनीत हुवै ते इम चिंतवे, मोने हेत रो कारण होय ।।

५ वलै उपधादिक नौ जाचवो, इत्यादिक काम अनेक।
वलै देवो लेवो ओर साध नै, गुर आज्ञा विना न करै एक

६ उपवास वेलादिक तप करै, करै रसादिक परिहार।
ते पिण न करै गुरु आगन्या विना, वलै संलेखणा सथार ।।

७ करै व्यावच ओर साध नी, ओर पास करावै आप।
ते पिण गुरु आगन्या विना, एहवी जिन सासण री थाप ।।

८ असमात्र करणो करावणो, ते पिण आगन्या ले सुवनीत।
सर्व कार्य मे लेणी आगन्या, एहवी वाधी छै अरिहत रीत ।।

९ सुवनीत टोला में रह्या थका, ते तो सगला नै गमतो होय।
ओर साधा साथे मेल्या थका, तिण नै पाछो न ठेले कोय ।।

१० आतमा दम इन्द्रया वस करै, उपजावे साधा नै परतीत।
वलै लोक वतावे आगुली, एहवो न करै काम वनीत।

---

१ लय : आतो माठी रे गति छै नारनी।

११ विनीत सू गुर प्रसन हुवै, आपै ग्यान अमूल।
तिण सू सिव-रमणी वेगी वरे, रहै सासता सुख मे झूल ॥
१२ अगनहोत्री ब्राह्मण अगन नै, नमस्कार करै हाथ जोड।
घृतादिक सीचे मत्र भण, तिण न आराधे मान मोड ॥
१३ इण दिष्टते गुर नै आराधता, केवली थयो शिप सुवनीत।
ते पिण सेवा भगत कर गुर तणी, विनो साचवे आगली रीत ॥
१४ राज माह हाथी घोडा विनीत छै, ते तो सुख पामे रुडी रीत।
नर नारी रिद्ध सपति करी, सुखी दीसै छ सुवनीत ॥
१५ वल सुखी दीस छै दवी देवता, जयवत मोटा रिद्ध पाय।
जावजीव लग सुख भोगवै, लोका म जश कीरत थाय ॥
१६ जिके पाछल भव पुय बाधिया, तिके भोगव उद आया आप।
ते पिण प्रत्यक्ष दीस छै लोक मे, जाणे विना तणा परताप ॥
१७ ज्यू कोइ गुर न रीझावे विनो करी, कारज कर उपजाव सतोप।
तिण रा ग्यान दशण चारित वधै, वगो पावे अविचल मोख ॥
१८ के इ पेटभराइ कारणे, सीखे सिल्पकला विगनान।
ते तो भणे ससार रा गुर कने, ते पिण विना करै मूकी मान॥
१९ इहलोक तणा अर्थी थका भण राजादिक ना कुमार।
गुर करडा वचन कहै तेह नै देव डडादिक परिहार ॥
२० ते पिण तिण गुर रा पग पूज नै, देवे सतगुर नै सनमान।
वलै घणा सतोपे तेह नै, वलै देव पीतीदान ॥
२१ तो सिद्धात भणावे तेह नी, विनवत किम लाप कार।
ते ता गुर वचने लीनो घणा, तिण सफल किया अवतार ॥
२२ इहलोक ना गुर नो विनो किया, कदा सीय इहलोक काज।
पिण सतगुर रो विनो किया, पामे मुगत पुरी नो राज ॥
२३ मूल न खध थी वृप[1] नीपजे, पछ साखा पडसाखा वखाण।
पान फूल फल रस नीपज, ते उत्पति सहु मूल नी जाण ॥
२४ इण दृष्टते जिन धम वृप र विनय रूपीयो मूल वखाण।
समकत रुपीया थाणो तेह नै, धीरज रूपीया कद पिछाण ॥
२५ जस रूपीयो खध विनो वेदका, सील रूपीया गध पिछाण।
सुद्ध ध्यान रूपी छ कूपला, पच महाव्रत साखा जाण ॥
२६ प्रति साखा ते पचीस भावना, वहु गुण रूपीया छ फूल।
पच सवर रूप फल तेह नै, दया रूपीया रस अमूल ॥

१ वृक्ष

२७ मोख रूपीयो वीज तिण फल मझे, एहवो धर्म छै अखोभ।
ते समदृष्टि रे हिरदे विराजतो, विनै मूल सू रह्यो सोभ।।
२८ ज्यू विरख रो मूल सूका थका, सीखादिक सगला सूक जाय।
ज्यू विनै रूप मूल खिस गया, सगला गुण खय थाय।।
२९ गुर गुर भाइ नै टोला तणा, गुण वोले रूडी रीत।
लोक पिण गुण ग्राम करता थका, सुण-सुण हरपै सुवनीत।।
३० सिख सिखणी मिले ओर साध नै, मिले ओपधादिक अनेक।
वलै कठकला देखी ओर री, विनीत तो हरपे विशेप।।
३१ किणही साधा रो नही करै ईसको, सर्व साधा नै हुवै हितकार।
एहवा सुवनीत री वासावली, फेले तीनू लोक मझार।।
३२ गमतो लागै तीर्थ च्यार नै, जिण सासण रो सिणगार।
एहवै सुवनीत रे पासे रह्या, सीखावे विनै आचार।।
३३ ज्यारी जात माता री निरमली, पिता रो कुल छै निरदोप।
ते पिण लज्या करै सहीत छै, ते विनो करै लेसी मोप।।
३४ ते पिण मोह कर्म पतलो पड्या, सुद्ध रीत जाणे वुद्धिवान।
हाड मीजा रगी जिन धर्म सू, तिण नै विनो करणो आसान।।
३५ केइ क्रोधी अहकारी निरलजो, भेष पहरी करै कपटाय।
इहलोक तणा अर्थी घणा, त्या सू विनो कियो किम जाय।।
३६ अवनीत मे अवगुण घणा, ते तो जावक छोडे विनीत।
विना रा गुण सगला आदरै, ते तो गया जमारो जीत।।
३७ उतराध्येन पहलाध्येन मे, दसवीकालिक नवमे जाण।
वलै ओर अनेक सिद्धात मे, किया वनीत रा वखाण।।
३८ सतगुर तणा वनीत नै, गुण भाख्या श्री भगवत।
कोड जिभ्या करै वरणवे, पिण कहता न आवै अत।।

इम इत्यादिक वनीत रा गुणवर्णव्या, ते भणी विनयवत गुणवत ते सासण मे रगरता रहे। मुरजी प्रमाणे आखी उमर ताइ अनुकूलपणे प्रवर्त्ते। अवनीत री सगत न करै। तथा पैतालीसा रा लिखत मे कह्यो—टोला माहे कदाच कर्म जोगे टोला वारै पडे तो टोला रा साध साधव्या रा अस मातर सका पडै ज्यू अवर्णवाद वोलण रा त्याग छै। सका पडै आसता उतरे ज्यू वोलण रा त्याग छै। टोला माहे सू फार नै साथै ले जावा रा त्याग छै। उ आवै तो ही ले जावा रा त्याग छै। टोला माहे न वारै नीकल्या पिण ओगुण

वोलण रा त्याग छै। माहा मा मन फटै ज्यू वोलण रा त्याग छ। इम पैतालीसा रा लिखत मे कह्यो ते भणी सासण री गुणोत्कीतन वात करणी। भागहीण हुवै सा उतरती वात करै भागहीण सुणे तथा सुणी आचाय नै न कहै ते पिण भाग्यहीण। तिण नै तीथकर ना चार कहणा, हरामखोर कहणो, तीन धिक्कार दणी।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि ण पूयति, जण जाणति तारिस॥
आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि ण गरहति, जेण जाणति तारिस॥

इति 'दशवकालिक मे कह्यो त मर्यादा आना आराध्या इहभव मे सुख कल्याण हुव।

ए हाजरी रची सवत् १६१० जठ विद १४ वार बृहस्पति वखतगढ मध्ये।

दसवेआलिय ५।२।४५ ४०

६ चेली करणी ते साधा रा कह्या सू करणी। आना विना करणी नही।

७ मिपणी कीधा पछै पिण काइ साधपणा लायक न हुवै साधा र चित नै वम तो साधा रा कह्या सू दूर करणी।

८ साधा री इच्छा आवै जुदा विहार करावण री आर आय्या साथे जुदी-जुदी मेले ता ना कहिणा नही।

९ साध-साधविया रो कोइ खचणो दोप प्रकतादिक रा आगुण हुवै तो गुरा न कहणा। पिण ग्रहस्थादिक आगै कहणो नही। आहारपाणी कपटादिक म साधा नै लोलपणा री सका उपजे तो साधा न परतीत उपजे ज्य करणो।

१० अमल तमाखू आदि रागादिक रे कारण पडया नेवे पिण विस्न रूप लेणा नही। लोयाइज सजै ज्यू करणा नही।

११ वले मव साध साधव्या न आचार गाचार माह ढीला पडता देखे अथवा सका पडती जाणे जद समचे सव साध साधविया री करली मर्यादा वाध तो पिण ना कहिणा नही। इत्यादिक सीखावण चारित सघाते अगीकार कर लेणी। ते जावजीव पचखाण छ।

सवत् १८३३ मिगसर विद २ वार वुध ए लिखत वचाय अगीकार कराय नै समायक चारित्र अगीकार कराया छै। वले फेर छदापस्थापनो चारित्र दीधा, जद पिण लिखत वचाय न अगीकार कीधा छै, हरप सू च्यारु इ आय्या। अय इहा फतू जी नै एतलो करार करी नै टाला माह भीखणजी स्वामी लीधी। दिक्षा दीधी। अनै तेतीसा रा वरम म आर्य्या र मरजादा वाधी। तिण म कह्यो—

तथा चालीसा र वरस आय्या सव रा लिखत मे कह्यो—माहो माहि आर्य्यां-आर्य्यां ने तूकारा द तिण नै पाच दिन पाचू विग रा त्याग। जितरा तूकारा काढे जितरा पाच-पाच दिन रा विगै रा त्याग। प्रायछित आयो तिण रा मोमो बोले जितरा पाच-पाच दिन विग रा त्याग। ग्रहस्य आगे टाला रा साध आर्य्या री निंद्या करै तिण न घणी अजाग जाणणी, तिण नै एक मास पाचू विग रा त्याग जिती वार करै जितरा मास पाचू विग रा त्याग आय्या री माहि-माहि री वात कराय न उण रो परत वचन उण कन कह उण रो मन भागे जिमा कहि नै मन भाग ता १५ दिन पाचू विग रा त्याग, माहा माहे कहै तू सूसा री भागल छ। एहवो कहै तिण रो १५ दिन विगै रा त्याग छ। जितरी वार कर जितरा १५ दिन रो त्याग छ। आसू काढे जितरी वार १० दिन विगै रा त्याग छ। वे १५ दिन मे वेनो करणो। इत्यादिक करला काठा वचन कहै तिण न घणा जाग प्राछित छ। ए विग रा त्याग छ ते उण री इच्छा आव जद साधा मू भेला हुआ पछी टालणा। जा नहीं टाल तो वीजो आर्य्यां य कहिण पावै नही तू टाल

हीज। साधा नै कहि देणो साधा री इच्छा आवै तो द्रव्य क्षेत्र काल भाव जांण नै ओर डड देसी। अनै साधा री इच्छा आवसी तो विगै रो त्याग घणो करावसी। वलै आर्य्यां रे माहि २ साध साधविया नै न कल्पे, लोका ने अणगमती लागे, उण री जातादिक रो खूचणो काढणो, जिण भापा रो पिण साधा री इच्छा आवै जिता दिन देवे ते कबूल करणो छै। जिण आर्य्यां ने ओर साथे मेल्या ना न कहिणो। साथे जाणो न जाय तो पाच विगै खावा रा त्याग न जाय जितरा दिन। वले ओर प्राछित जठा वारै साधा रा मिलिया विना आर्य्या ओर री ओर आर्य्यां साथे जाअे तो जितरा दिन रहे जितरा दिन पाचू विगै रा त्याग। वलै ओर भारी प्राछित जिण आर्य्या साथे मेली तिण आर्य्या भेली रहे। अथवा सेपेकाल भेली रहै अथवा चोमासो भेली रहे त्या रा दोप ह्वे तो साधा सू भेला हुआ कहि देणो। न कहै तो उतरो प्राछित उण नै छै। पछै घणा दिन आडा घाल नै कहै तो साचो कहै तो झूठो कहै तो उवा जाणे, के केवली जाणे, पिण छदमस्थ रा ववहार मे तो घणा दिना री वात उदीरे, राग घेप रे वस आप रे स्वार्थ उदीरे, स्वार्थ न पूगा उदीरे, तिण री परतीत मानणी नही आवै। ग्रहस्थ माहे आमना जणाय नै माहो माहि एक एक री आसता उतारे तिण मे अवगुण घणाइ ज छै। वलै फतूजी नै माहि लीधी तिको लिखत सगलो आर्य्या नै कबूल छै। वलै अनेक-अनेक वोला री करली मर-जादा वाधे ते कबूल छै। ना कहिण रा त्याग छै। वलै कर्म जोगे किण ही सूइ आचार गोचार न पलै, माहोमा स्वभाव न मिलै, तिण नै साध टोला वारै काढे अथवा क्रोध वस टोला थी अलगी परै। तिका तो कर्मा रे वस अनेक झूठ वोले। कूडा-कूडा आल दे। अथवा भेपधारया माहे जाये तिण तो अनत ससार आरै कीनो ते तो अनेक विवध प्रकार रो झूठ वोलेइज। काइक नही पिण वोले एहवी भेप भडा री तो वात भेपधारी भारी कर्मा माने, पिण उत्तम जीव न माने। टोला सू छूट न्यारी हुवै री वात मानै त्या नै मूरख कहिजे, त्या नै चोर कहीजे। ते तो अनेक-अनेक आल दे सूस करण नै त्यारी हुवै तो ही उत्तम जीव तो न माने इत्यादिक अवगुण घणा छै। टोला माहे सू पिण टल्या पछै टोला रा अवगुण वोलण रा अनता सिद्धा री साख सू पचखाण छै। ए लिखत सगली आर्य्या नै वचाय नै पहिला कहवाय नै मर्यादा वाधी छै। ए लिखत प्रमाणे सगली आर्य्या नै चालणो। अनता सिद्धा री साख सू सगला रे पचखाण छै। जिण रा परिणाम चोखा हुवै, लिखत प्रमाणे चाले, ते मतो घालजो। सरमासरमी रो काम छै नही, जाव जीव रो काम छै।

सवत् १८३४ रा जेठ सुदि ९। हेटे आर्य्या रा अक्षर लिख्योडा छै। एहवो चोतीसा रे वर्स आर्या रे लिखत कियो, तिण मे कह्यो - फतू जी नै माहि लीधी तिको लिखत सगली आर्य्या रे कबूल छै। तिण फतूजी रा लिखत मे कह्यो—साधा री इच्छा आवै जुदो

विहार करावण री आर आर्य्यां साथे जुदी जुदी मेले तो ना कहिणो नही । ए आठमो वाल कह्या छ । तिण लेखे आचाय री इच्छा आवै ता सिघाडो राखे, इच्छा आवै तो जुदी जुदी मेले, सिंघाडो न राखे, तो पिण ना न कहणो, एहवो कह्यो ।

तथा साध साधन्या रो खचणो दोष प्रकृतादिक ओगुण हुवै तो गुरा नै कहिणो पिण ग्रहस्या आग कहणो नही । ए नवमा वोल मे कह्यो । ए पिण मयादा सव आर्या रे जाणवी ।

आहारपाणी कपडादिक मे साधा रे लोलपणा री मका उपज तो साधा नै परतीत उपज जु करणो ए दसमा वोल कह्या । ए पिण सव मर्यादा मव आय्या नै जाणवी । अमल तमाखू रोगादिक कारण पड्या लेणो पिण विसन रूप लेणो नही । लीया इ सजे ज्यू करणा नही । ए इग्यारमो वोल कह्या । ए पिण मर्यादा सव आर्य्या रे जाणवी । कारण विना तो अमल तमाखू लेणो नही । कारण मू लेव ते पिण गुर आज्ञा री वात न्यारो । वलै सव साधव्या न आचार गोचार माह ढीला पडता देखें अथवा सका पडती जाणे, जद मव समच सव साध साधविया री करली मयादा वाधे तो पिण ना कहिणा नही । इत्यादिक सीखावण चारित्र सघाते अगीकार कर लेणो, ते जाव जीव पचखाण छ । ए वारमो वोल पिण मर्यादा सव आय्या रे जाणवी । ए वारमा वोल रे लेखे आचाय करी मर्यादा वाधे तिण री पिण भीखणजी स्वामी आना दीधी । ते करली मर्यादा सव आर्य्या ने कवूल करणी, पिण ना कहिणो नही ।

तथा वली कह्यो आर्य्या रा विजाग पड्या न करप जद सलेखणा मडणो । साध कहै जठ चामासा करणा । साव कहै जठे सेपे काल रहणा । ए तीजो चाथा पाचमो वाल । ए पिण मर्यादा सव आय्या रे जाणवी ।

तथा वली कह्या ऊभी नै कीडा न सूजै जद सलेखणा मडणो । विहार करण री सगत नही जद सलेखणा मडणा । ए पहलो दूजा वोल ए मयादा सव आर्य्यां रे नही । ते इम मव भीरू लिखत । मर्यादा परम्परा सूत्र अनुसारे तथा वडा रा धारणा प्रमाणे जाण लेणा जीत ववहार वडा रा वाध्यो । आचाय री मयादा सव अखड पालणी ।

तथा पतालीसा रा लिखत मे एहवा कह्या—टोला माहे कदाच कम जाग टोला वारे पड ता टाला रा साध साधविया रा असमात्र अवणवाद वालण रा त्याग छ । या री अममात्र सका पड आसता उतरे ज्यू वोलण रा त्याग छै । टोला माहै सू फाड नै साथे ले जावा रा त्याग छ । उ आव ता ही ले जावा रा त्याग छ । टाला माहै न वारै नीकल्या पिण आगुण वोलण रा त्याग छ । इम पेना री परती कर नै माहो मा मन फटै ज्यू वोलण रा त्याग छ । इम पतालीसा रा लिखत म कह्यो । त भणी सासण री गुणा लीन वात करणो । भागहीण हुव सा उतरतो कर । तथा भागहीण सुण, सुणी आचाय

नै न कहै ते पिण भागहीण । तिण नै तीर्थंकर नो चोर कहणो, हरामखोर कहणो, तीन धिकार देणी ।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो ।
गिहत्था वि ण पूयति, जेण जाणति तारिस ॥
आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो ।
गिहत्था विण गरहति, जेण जाणति तारिसं ॥

इति [1]दशवैकालिक मे कह्यो । ते मर्यादा आज्ञा शुद्ध आराध्या इहभव परभव मे सुख कल्याण हुवै ।

1 दसवेआलिय, ५/२/४५,४०

बीसवीं हाजरी

पाच सुमत तीन गुप्त पच महाव्रत अखड अराधणा। ईर्य्या भाषा एषणा मे सावचेत रहिणो। आहारपाणी लेणो ते पक्की पूछा करी नै लेणो। सूजतो आहार पिण आगला रो अभिप्राय देख लेणो पूजता परिठवता सावधानपणे रहणो। मन वचन काया गुप्त मे सावचेत रहिणो। तीथकर नी आज्ञा अखड आराघणी। श्री भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धात देख नै आचार श्रद्धा प्रकट कीधी - विरत धम, अविरत अधम। आज्ञा माहे धम, आना वारे अधम। असजती रो जीवणो वछे ते राग, मरणो बछै ते द्वेष, तिरणो वछे ते वीतराग नो माग छै।तथा विवध प्रकार नी मर्यादा बाधी।

सवत १८३२ लिखत मे एहवो कह्यो सव साध साधवी भारमल जी री आना माहे चालणो। शेषे काल विहार चोमासो करणो ते भारमल जी री आगना सू करणो। विना आगन्या कठै इ रहिणा नही। दिख्या देणी ते पिण भारमल जी रे नामे देणी। दिख्या देन आण सूपणो। चेला री कपडा री साताकारिया खेतर री इत्यादिक अनेक वोला री ममता कर न अनता जीव चारित गमाय नै नरक निगोद माहे गया छै। वलै भेषधारया रा एहवा चेहन देख्या छै। तिण सू सिखादिक री ममता मिटावण रा नै नैं चारित्र चोखो पालण रो उपाय कीधो छ। विनै मूल धम न न्याय मारग चालण रो उपाय कीधो छ। भेषधारी विकला न भेला करै, ते शिषा रा भूखा, एक एक रा अवणवाद वोले फारा तोरो करै, माहो मा कजिया राड भगडा करै। एहवा चरित्र देख नैं साधा रे मरजादा वाधी छ। शिख साखा रो सतोष कराय न सुखे सजम पालण रो उपाय कीधो छ। साध साधव्या पिण इमहीज कह्यो—भारमल जी री आगना माहे चालणो। सिष करणा ते सव भारमल जी रे करणा। ओर रे चैला करण रा त्याग छै, जाव जीव लग। भारमल जी पिण चैलो करै ते पिण बुधवत साध कहै—ओ साधपणा लायक छै, वीजा साधा नै परतीत आव तेहवो करणो, परतीत नही आव तो नही करणो। कीधा पछै कोइ अजोग हुवै ता पिण वुधवत साधा रा कह्या सू छोड देणो। किण ही धेषी रा कह्या सू छोडणा नही। नव पदारथ ओलखाय न दिख्या दणी। आचार पाला छा तिण रीत चाखो पालणा। इण आचार माहे खामी जाणे तो अवारू कहि दणो, पण माहा मा ताण करणी नही। किण ही न दोष म्यास जाय तो बुधवत साध री परतीत कर लेणी, पिण खाच करणी नही। भारमल जी री इच्छा आवै जद गुर भाइ अथवा चेला न टोला रो भार सूपे जद सव साध साधव्या उण री आगन्या माहे चालणो,

एहवी रीत परपरा वाधी छै। सर्व साध साधवी रो मार्ग चाले जठा ताई। कदा कोइ उसभ कर्म रे जोगे टोला मा सू फारा तोरो कर नै एक दोय तीन आदि नीकले। घणी धुरताइ करै। बुगलध्यानी हुवै। त्या नै साध सरधणा नही। च्यार तीर्थ माहे गिणवा नही। या नै चतुरविध तीर्थ रा निंदक जाणवा। एहवा नै वादे ते जिण आगन्या वारै छै। कदा कोइ फेर दिख्या ले ओरा साधा नै असाध सरधायवा नै, तो पिण उण नै साध सरधणो नही। उण नै छेरविया तो उ आल दे काढे, तिण रो एक वात मानणी नही। उण तो अनत ससार आरे कीधो दीसै छै। कदा कर्म धको दीधा टोला सू टलै तो उण रै टोला रा साध साधव्या रा अ स मात्र हूता अणहूता अवर्णवाद वोजवा रा अनता सिद्धा री नै पाचो इ पदा रो आण छै। पाचोइ पदा री साख सू पचखाण छै। किण ही साध साधव्या री सका पडै ज्यू वोलण रा पचखाण छै। कदा उ विटल होय सू भागे तो हलुकर्मी न्यायवादी तो न मानै। उण सरीषो विटल कोई मानै, तो लेखा मे नही। हिवै किण ही नै छोडणो मेलणो परै, किण ही चरचा वोल रो काम हरै तो वुद्धिवान साध विचार नै करणो। वलै सरधा रो वोल पिण वुद्धवत हुवै ते विचार नै सचे वेसाणणो। कोइ वोल न वेसे तो ताणा ताण करणी नही। केवलिया मे भलावणो। पिण खाच अ स मात्र करणी नही। किण ही नै कर्म धक्को देवे ते टोला मा सुन्यारो परै। अथवा टोला वारै अथवा आप ही टोला सू न्यारो हुवै तो इण सरधा रा वाई भाई हुवै तिहा रहिणो नही। एक भाइ वाई हुवै तिहा पिण रहिणो नही। वाटे वाहितो कारण परिया रहै तो पाचू विगै नै सूखडी खावा रा त्याग छै। अनत सिद्धा री साख कर नै छै। वलै टोला माहे उपगरण करै ते पाना परत लिखे ते टोला माहे थका परत पाना पातरादिक सर्व वस्तु जाचे ते साथे ले जावण रा त्याग छै। एक वोदो चोलपटो, मु हपती, एक वोदी पछोवड़ी खडिया उपरत वोदा रजूहरण उपरत साथे ले जावणो नही उपगरण सर्व टोला री नेश्राय साधा रा छै। ओर अ समात्र साथे ले जावण रा पचखाण छै। अनता सिद्धा री साख करै छै। कोइ पूछै—या खेतरा मे रहिण रा सूस क्यू कराया तिण नै यू कहिणो—रागाधेपो वधतो जाँथ नै क्लेस वधतो जाण नै उपगार घटतो जाण नै ईत्यादिक अनेक कारण जाण नै कराया छै। इत्यादिक अनेक कारण जाण नै मर्यादा करी छै। इसो गुणसठा रा लिखत कह्यो।

तथा संवत् १८५० रे वरस भीखणजी स्वामी मर्यादा वाधी—किण ही साध आर्य्या मे दोष देखे तो ततकाल धणी नै कहणो। तथा गुरा नै कहणो, पिण ओरा नै न कहिणो घणा दिन भाड़ा घाल नै दोष वतायै तो प्राछित रो धणी उहीज छै।

तथा सवत् १८५२ रे वरस आर्य्या रे मर्यादा वाधी। तिण में एहवो कह्यो—किण ही साध आर्य्या मे दोष देखे तो ततकाल धणी नै कहिणो, तथा गुरा नै कहणो और किण ही आगे कहिणा नही। किण ही आर्य्या दोष जाण ने सेव्यो हुवै ते पाना मे लिख्या

बिना विग तरकारी खाणी नहीं। कोइ साधु साधविया रा ओगुण काढ तो साभलण रा त्याग छ। इतरा कहणो—'स्वामी जी नै कहीजो' जिण रा परिणाम टोला माह रहिण रा हुवै ते रहिजो, पिण टोला बारै हुआ पछै साधु-साधविया रा ओगुण बोलण रा अनत सिद्धा री साख कर नै त्याग छै। वलै करली-करली मर्यादा बाधी त्या मे पिण ना कहिण रा अनता सिद्धा री माख कर नै त्याग छै।

तथा चोतीसा रे वस आर्य्या रे मर्यादा बाधी, तिण मे कह्यो—ग्रहस्थ कनै टोला रा साध आय्या री निंद्या करै तिण न घणी अजोग जाणणी। तिण नै एक मास पाचू विगै रा त्याग छ। जितरी वार करै जितरा मास पाचू विग खावा रा त्याग छै। तथा वनीत अवनीत री चापी में अवनीत नै घणा निपध्या छ। तथा रास मे पिण विविध विविध कर नै ओलखायो। घणा निषेध्या। त गाथा –

१ [1]थे घणा दाप जाणा थे साख्यात, त्या न जाणे वाद्या दिन रात।
ता थे पूरा अग्यानी बाल, थे रुलसो कितो एक काल॥
२ एक दाप रो सेवणहार, तिण वाद्या वधै अनत ससार।
थे घणा दाप जाण्या त्या माय, त्या रा हिज वाद्या नित पाय॥
३ भागला रा वाद्या जाणे पायो, जिण मारग माह ठागा चलायो।
रह्या कूड कपट माह झूल, हिव थारो होसी कुण सूल॥
४ जो थे गुर माहे दाप वताया, घणा वरस थे राख्या छिपाया।
तिण नेरे पिण थे इज भूडा, ग्यानादिक गुण खोइ बूडा॥
५ जो थे दाप कह्या या म कूरा, जव तो थे जावक बूडा पूरा।
थे दिया अणहुता आल, हिव रुलसो किता एक काल॥
६ थे दानू विध बूडा इण लेख, साच झूठ ता कवली देखे।
छद्मस्थ ता या एहलाण, था न जावक झूठा जाणे॥
७ या कन पहिला अवगुण कहिवाय, पछ सिमट कर इण न्याय।
या रा वचन न सठा भान या न पग-पग झूठा थाने॥
८ ए ता अवगुण बाल अनेक, वुधवत न मान एक।
या न जाणे पूरा अवनीत, या री मूल नाण परतीत॥
९ अवनीता रा कर वेसास, तो हुव बोध बीज रो न्हास।
च्यार तीथ मू पडिया थाने, त्यारी वात अग्यानी मान॥
१० अवनीता रा कर प्रसग, ता गाधा मू जाए मन भग।
ए साधा न असाध गरधार, झूठा-झूठा अवगुण वतावै॥

[1] सब सगला साध सराया नाहि।

११ या रो जाय गुणे वखाण, तिण लोपी जिनवर आंण।
या री तहत करै कोइ वाणी, आ दुरगति नी एलाणी ॥
१२ किण रे उसभ उदै हुवै आण, ते करै अवनीत री ताण।
त्या झठा नै साचा दे ठहराइ, ज्या रै अनत ससार नी साइ ॥
१३ या नै कहि वतलावे स्वामी, तिण मे जाणजो मोटी खामी।
या नै ऊंचो करै कोइ हाथ, तिण रे निश्चे वधे कर्म मात ॥
१४ या रो जाय वखाण मडावे, वलै ओर लोका ने वोलावे।
इसडी करै कोइ दलाली, ते पिण धर्म सू होय जाये खाली ॥
१५ या नै च्यार तीर्थ माहि जाणे, ते पिण पहले गुणठाणे।
या री करै कोइ पखपात, तिण नै आय चूको मिथ्यात ॥
१६ या सू करै अलाप सलाप, तिण रै पिण वधे चीकणा पाप।
या नै वदणा करै जोडी हाथ, तिण रै वेगो आवै मिथ्यात ॥
१७ या री भाव भगत करै कोइ, वलै आदर सनमान दे सोइ।
तिण रे सरधा न दीसे साची, गुर री पिण परतीत काची ॥
१८ या सू करै विनो नरमाइ, तिण रे लागी मिथ्यात री माइ।
घणो घणो जो या कनै जावै, ते समकत वैगी गमावै ॥
१९ ए अवनीत नै भागल पूरा, वलै आल दे कूडा-कूडा।
त्या री मान लेवे कोइ वात, ते तो वूड चूका साख्यात ॥
२० कोइ भणवा रा लालच रो घाल्यो, त्या रे कनै जाए कोइ चाल्यो।
ते तो गुर रो न माने हटको, तिण रो हुतो दीसै छै गटको ॥
२१ चरचा वोल सीखे त्या आगै, तिण रे इक मिथ्यात रा लागे।
या रो सहसतो[1] परचो न करणो, या रो सग जावक परहरणो ॥
२२ समकत रा अतिचार सभालो, तो अवनीत सू दे जो टालो।
जोवो आणद श्रावक री रीत, राखो सूतर री परतीत ॥
२३ ए अवगुण वोले चिठाय चिठाय, किण ही भोला रे सक पड जाय।
जो उ न करै त्या री पखपात, तिण रो काढणो सोहरो मिथ्यात ॥
२४ त्या री गाढी झाले पख कोइ, ते नही छोडे झूठा जाणे तो ही।
ते वूडसी अवनीता रे लारे, त्या एहली दियो जन्म विगाड़े ॥
२५ कोइ लीधी टेक न मेलै, आप रे मन मान ज्यू ठेले।
जिण धर्म री रीत न जाणे, मूढ मूर्ख थको, यू ही ताणे ॥

१ सस्तव।

२६ या कनै करै पोसा सामाइ, या कन कर पचखाण जाइ।
तिण री पिण जाणजो मनि काचो, जिण मारग मे नही आछी॥
२७ जे अवनीत रा पखपाती, त्या री सुण-सुण वल उठे छाती।
अवनीता रो करै उघाड, जव पिण मूढो देवे विगाड॥
२८ कोइ गण मे हुवै अवनीत, तिण सू गाढी वाधे पीत।
ते पिण ओगुण वालावण रे काम, इसडा छ मेला परिणाम॥
२९ जिण रो घेप छ घण दिन पेलो, दुष्ट परिणामी जीव छ मेलो।
तिण रे उद हुवै कम मिथ्यात, ते तुरत माने त्या री वात॥
३० त अवनीता री कर पखपात, तिण रे आय चूको मिथ्यात।
खप कर त्या री करवा थाप, तिण रे उसभ उद हुआ पाप॥
३१ जाणे अभिमानी न अवनीत, तो ही राखे त्या री परतीत।
तिण रे परतख पूरो अधारो, वूडे छ अवनीत रे लारो॥
३२ जिण नै गुर रा अवगुण सुहावे, ते अवनीत न मूढे लगावे।
त्या कनै गुर रा अवगुण बोलावे, पछ लोका मे आप फैलावे॥
३३ करै जिण तिण आग वात, करै अवनीता री पखपात।
अवनीता न साचा सरधाव, गुर माह आगुण दरसावे॥
३४ वादे तो गुर न सीस नाम करै अवनीता रा गुण ग्राम।
ते होय वेठा अवनीता री लारी, वलै ओरा नखप करवा खुवारी॥
३५ गुर सू लोका रा परिणाम फाड, आप विगडचा आरा नै विगाडे।
इमडा श्रावक विश्वासघाती, ते पिण होय चूका मिथ्याती॥
३६ गुर री साची वात दे ठेली, अवनीता रो होय जाए वली।
हर कोइ अवनीत छूटे, तिण रा वेली आप होय उठे॥
३७ साधा रा अवगुण अवनीत वोले, तिण सू वात करै दिल खोले।
अवनीत न मिलिया अवनीत, त्या री तेहीज करै प्रतीत॥
३८ गुर सू पिण जावक नही ताडे, अवनीत सू पिण सटके नही जोडे।
घर पाधर रह्या छै देख, छल छिदर जोवे छ विशेप॥
३९ जो अवनीत न लोक न माने, तो आप पिण होय जाए काने।
अणसरने दविया रहे माहि, पिण लखण भदरलीया ताहि॥
४० केइ श्रावक दोपडपोटा, ते पिण पडिया या रे सग फीटा।
जो कोइ बध निकाचित पाडे, ते पिण अनत ससार वधारे॥
४१ केइ श्रावक भागल साख्यात, ते भागला री करै पखपात।
जाणे चार सू मिल गई कुती, झूठी वात करै अणहुती॥

५७ इसडा अनत हुआ नै होसी, परभव सामो विरला जोसी।
वलै आ रा अजूणा माहि, म्हे पिण देखलिया छै ताहि ॥
५८ ए भाव कह्या तिण माहि, कोइ वोल टलै छै ताहि।
के इ अनुसारे मेल्या छै न्याय, कोइ वोलो रो फेर छ माय ॥
५९ इत्यादिक या म ओगुण जाण, जव लागा छै जेहर ममाण।
या न निह्नव जाणे किया दूर, तिण मे मूल म जाणजो कूड ॥
६० सेंतीसै वरस समत अठार, काती सुध एकम सनीसरवार।
निन्हव भागल रो विसतार, कीधा पादू गाम मझार।

इम रास मे पिण स्वामी जी भीखणजी अवनीत न टाला-कर नै भात भात कर नै ओलखायो छ।

तथा पैंतालीसा रा लिखत मे एहवो कह्यो छ– टोला माहि कदाच कम जोगे टोला वार पर तो टोला रा साध साधवियां रा असमातर अवणवाद वोलण रा त्याग छ। या री अ समातर सका परै आसता उतरे ज्यू वोलण रा त्याग छ। टाला मा सू फार नै साथे ले जावण रा त्याग छै। उ आवै ता ही ले जावण रा त्याग छ। टोला माहै न वारै नीकल्या पिण ओगुण वोलण रा त्याग छ। इम पैंतालीसा रा लिखत मे कह्यो। ते भणी सासण री गुणोत्कीत्तन वात करणी। भागहीण हुवै सो उतरती कर, तथा भागहीण सुणे, सुणी आचाय नै न कहै ते पिण भागहीण तिण न तीर्थंकर नो चोर कहणो, हरामखोर कहणो, तीन धिरकार दणी।

आयरिए आराहइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था विण पूयति, जेण जाणति तारिस ॥
आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था विण गरहति, जेण जाणति तारिस ॥

इति [1]दशवइकालिक मे कह्यो। ते मयादा आज्ञा सुद्ध आराध्या इहभव परभव म सुख किल्याण हुव।

ए हाजरी रची सवत् १९१४ रा सावण सुदि ८

[1] दसवेआलिय ५।२।४५ ४०

इकीसवी हाजरी

पंच समिति तीन गुप्त महाव्रत अखड अरावणा। ईर्य्या भाषा एषणा मे साव चेत रहिणो। आहारपाणी लेणो ते पकी पूछा करी लेणो। सूजतो आहार पिण आगला अभिप्राय देख लेणी। पूजता परिठवता सावधान पणै रहणो। मन वचन काया गुप्ति मे सावचेत रहिणो। तीर्थंकर नी आज्ञा अखड अराधणी। भीखण जी स्वामी सूत्र सिद्धात देख श्रद्धा आचार प्रगट कीधा—विरत धर्म नै अविरत अधर्म। आज्ञा माहे धर्म, आज्ञा वारै अधर्म। असजती रो जीवणो वछै ते राग, मरणो वछे ते द्वेष, तिरणो वछे ते वीतराग देव रो मार्ग छै। तथा विविध प्रकार री मर्यादा वाधी।

सवत् १८५० रे वरस मर्यादा वाधी तिण मे एहवो कह्यो—सर्व साधा नै सुद्ध आचार पालणो नै माहो मा गाढो हेत राखणो। तिण ऊपर मर्यादा वाधी—कोइ टोला रा साध-साधविया मे साधपणो सरधो तिको टोला माहे रहिजो, कोइ कपट दगा सू साधा भेलो माहि रहै तिड नै अनता सिद्धारी आण छै पाच पदा री आण छै। साव नाम धराय नै असाधा भेलो रह्यां अनत ससार वधै छै। जिण रा परिणाम चोखा हुवै ते इतरी परतीत उपजावो। किण ही साध सावव्या रा ओगुण बोल नै किणही नै फार नै मन भाग नै खोटा सरधावण रा त्याग छै। किण सू इ सावपणो पलतो दीसै नही अथवा सभाव किण सू ही मिलतो दीसै नही अथवा कषाइ धेठो जाण नै कोइ कनै न राखे अथवा खेत्र आछो न वताया अथवा कपड़ादिक रे कारणे अथवा अजोग जाण नै ओर साधु गण सू दूरो करै अथवा आप नै गण सू दूर करतो जाण नै इत्यादिक अनेक कारण उपने टोला सू न्यारो पडै तो किण हो साध साधविया री निंद्या करण रा ओगुण वोलण रा हुतो अणहुतो खूचणो काढण रा त्याग छै। रहिसे-रहिसे लोका रे सका घाल नै आसता उतारण रा त्याग छै। कदाच कर्म जोगे अथवा क्रोध रे वसै साध साधविया नै असाध सरधे आप मे पिण साधपणो सरध नै फेर साधपणो लेवे तो पिण अठीरा साध साधव्या री सका घालण रा त्याग छै। खोटा कहिण रा त्याग ज्यू रा ज्यू पालणा छै। पछै यू कहिण रा पिण त्याग छै—म्हे तो फैर साधपणो लीधो, अवे म्हारे आगला सूसा रो अटकाव कोइ नही, यू कहिण रा पिण याग छै। किण ही साध साधव्या नै पिण साध साधव्या री आसता उतरै आर्य्या रो सका पडै ज्यूं असाधपणो सरधें ज्यूं वोलण रा त्याग छै। किण ही साध आर्य्या मे दोष देखा तो ततकाल धणी नै कहणो, अथवा गुरा नै कहणो, पिणओरा नें न कहिणो। घणा दिन

आडा घाल न दोप वतावै तो प्राछित रा घणो उहीज छ, प्राछित रा घणी नै याद आवै तो प्राछित उण नै पिण लेणा। नही लेवे ता उण न मुसकल छ। ए सव सवत १८५० रा लिखत में कह्यो।

तथा सवत् १८५७ रे वरस मर्यादा वाघी तिण म एहवो कह्या किण ही साघ साघवी मे दाप हुव ता दाप रा घणी नै कहणो, पिण आर किण ही आग कहणा नही। रहिसे रहिमे ओर भूडी जाणे ज्यू करणो नही। किण ही आय्या दोप जाण न सव्या हुव ते पाना मे लिख्या विना विग तरकारो खाणी नही। कदाच कारण पड्या न लिखै तो ओर आय्या न कहणा, सायद कर न पछै वेगो लिखणा, पिण विना लिख्या रहिणा नही। आय न गुरा न मूहड़ा मू कहणा नही। माहो मा अजाग भापा वालणी नही। जिण रा परिणाम टाला माह रहिण रा हुवैं ते रहिजो, पिण टोला वार हुआ पछै साघ साघविया रा अवगुण वालण रा त्याग छ। अनता सिद्धा री साख कर नै छ। कोई टोला वार नीकली री वात उण लखगा हुव ते माने, भेपघारा भागल जिण घम रा घपी हासी ते मानसी। पिण उत्तम जीव ता मान नही। वलि कोइ याद आव ते पिण लखणो। वलै करली करली मयादा वाघे त्या म अनत सिद्धा री साख करी न ना कहिण रा त्याग छ। ए मयादा पालण रा परिणाम हुव ता आर होइजो। सरमासरमी रो काम छ नही।

तथा जिला न वाघणो सवत १८४५ सा रा लिखत म कह्या—टाला माह पिण साघा रा मन भाग न आप आप रे जिले करै ते ता महाभारीकर्मो जाणवो विसवास घाती जाणवा। इसडी घात पावडी कर ते ता अनत ससार नी साई छ। इन मयादा प्रमाणे चालणी नाव तिण न सलखणा मडणो सिरे छ। धन अणगार ता नव मास माहै आत्मा रा कल्याण कीघा ज्यू इण न पिण आत्मा रा सुघारा करणा पिण अप्रतीत कारियो काम न करणो। रोगिया विचे ता सभाव रा अजाग नै माह राख्या भूडो छ। या वाला री मरजादा वाघी ते चाखी पालणी। अनता सिद्धा रा साख कर नै पचखाण छ। ए पचखाण पालण रा परिणाम हुव ते आर हुयजा। विन माग चालण रा परिणाम हुवै, गुरु नै रोभ्कावणा हुव साघपणा पालण रा परिणाम हुव, ते आर हुयजा ठागा सू टोला माह रहणो न छ। जिण रा परिणाम चाखा हुव ते आर हुयज्यो। आग साघा रे समचे आचार री मरजादा वाघी ते कवूल छ। वले कोइ आचाय मरजादा वाघे ते याद आव ते पिण कवूल छ। एहवो पतालीसा रे वस कह्या—

तथा पचासा रा लिखत म जिला न निपेध्या छ। ते भणी जिला ते तो सजम न टलो छ। विनीत न अवनीत री सगत सू विगाडा हुव ते भणी कुसगत उत्तम जीव कर रहो कुसगति सू अनेक अवगुण ऊपजे ते ऊपर स्वामी भीखणजी दिप्टत दिया ते गाथा—

१ [1]गलियार गधो घोड़ो अवनीत ते, कुटचा विग आघा न चाले रे।
तिण अवनीत नै काम भलाविया, कह्या नीठ-नीठ पार घाले रे।।
ध्रिग ध्रिग अवनीत आत्मा।।

२ गलियार गधो घोडो मोलवे, तो खाडेती घणो दुख पावै।
ज्यू अवनीत नै दिख्या दिया, पछै पग-पग गुर पिछतावे।।

३ बुटकने गधेडे दुराचारी, तिण कीधी घणी खोटाइ।
आप छादे रह्यो उजाड मे, एक बदल नै कुबद सिखाइ।।

४ तिण अवनीत बदल नै तुरकिया, मार गाडा माहि घाल्यो।
बुटकना नै आय जोतरचो, हिवै जाय उतावल चाल्यो।।

५ ज्यू अवनीत नै अवनीत मिल्या, अवनीत पणो सीखावे।
पछै बुटकना नै बदल ज्यू, दोनू जणा दुख पावे।।

इम इहा पिण कह्यो—अवनीत नै अवनीत री सगति सू अविनीतपणो वधे, ते माटे अवनीत री सगत घणी खोटी। सूत्र मे पिण अवनीत नै ठाम-ठाम ओलखायो छै। अवनीत नै उंधो ही सूजे, उंधो ही अर्थ करै।

१ [2]केइ विनीत अवनीत भण्या दोनू गुर कने, पिण विनय सहित भणियो विनीत हो। भवि०
तिण सू सूधो इ सूजे नै सुधो इ अर्थ करै, भण-भण नै उंधो पडै अवनीत हो।।
श्री वीर कह्यो अविनीत नै अति बुरो।।

२ ते विनीत अवनीत मार्ग मे जाता थका, हथणी रो पग देखी ताम।
अवनीत कहै हाथी गयो इण मारगे, उ वोल्यो निसग पणे आम।।

३ वनीत कहै हथणी पिण काणी डावी आख री, ऊपराजारी राणी सहित।
वलै पुतर रत्न तिण री कूख मे, विवरा सुध वोल्यो वनीत।।

४ वलै आगै गया वाई प्रश्न पूछियो, ते उभी सरवर पाल।
म्हारो पुत्र प्रदेश गयो मिलसी किण दिनै, जब अवनीत कहै कीधो उण काल।।

५ हूं काटू रे वाढू जीभडली ताहरी, तू विरओ वोले केम।।
तू घसको क्यू न्हाखै रे पापी एहवो, जब विनीत वोलै छै एम।।

६ वनीत कहै पुत्र ताहरो घर आवियो, आज मिलसी तोसू निसंक।।
इण रो वचन 'म' माने झूठ वोले घणो, इण रे जीभ वेरण रो वक।।

७ ए दोनू इ बोला मे अवनीत झूठो पडचो, साच उतरियो विनीत।
जब अवनीत धेष धरचो गुर ऊपरे, कहै मोने न भणायो रुडी रीत।।

१. लय—कोई मत राखज्यो।

२. लय—पूजजी पधारो नगरी सेविया।

८ एहवो उधी कर विचारणा, आय गुर सू झगडचा अविनीत।
कहै मो न न भणाया थे कूड कपट करो, वलै वाल्यो घणो विपरीत।।

६ अविनीत न वोल्या जाण बुरोतरे, तिण सू गुर पूछचा दाया नै विचार।
निरणो करै सका काढी अवनीत री, पिण उण रा तो उहीज आचार।।

१० इहलोक रा गुर रा अवनीत री, अकल विगड गइ एम।
तो धम आचाय रा अवनीत री, उधी अकल रो कहवा केम॥

इम वनीत अवनीत रा विचारणा रो फेर कह्यो। ते माटे अवनीत पणो छाडे, वनीतपणो आदरे।

तथा पतालीसा रा लिखत म एहवो कह्यो छै—टोला माहि कदाच कम लागे टोला वार पड तो टाना रा साध साधविया रा असमात्र अवण वाद वोलण रा त्याग छ। या री अ स मात्र सका पड आसता ऊनरे ज्य वोलण रा त्याग छ। टोला वारै फाड न साथे नै जावा रा त्याग छ। उ आवै तो ही ले जावण रा त्याग छ। टोला माह अन वार नीकल्या पिण आगुण वोलण रा त्याग छ। इम पैंतालीसा रा लिखत म कह्या ते भणी सासण री गुणात्कीतन वात करणी। भागहीण हुवै सा उतरतो वात करै। तथा भागहीण सुणे तथा सुणी आचाय न न कहै त पिण भागहीण। तिण नै तीर्थंकर ना चोर कहणो हरामखार कहणो, तीन धिकार दणी।

आयरिए आराहइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि ण पूयति, जेण जाणति तारिस॥
आयरिए नाराहइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि ण गरहति, जण जाणति तारिस॥

इति 'दशवइकालिक' म कह्या ते मयादा आज्ञा सुद्ध आराघ्या इहभव मे परभव मे सुख कल्याण हुव।

ए हाजरी रची सवत १६१४ रा सावण विद ७

१ दसवेआलिय ५/२/४५ ४०

बाइसवी हाजरी

पच समति तीन गुप्त पच महाव्रत अखड अराधणा। ईर्य्या भाषा एषणा मे साव-चेत रहिणो। आहार पाणी लेणो ते पक्की पूछा करी लेणो। सूजतो आहार पिण आगला री अभिप्राय देख लेणो। पूजता परठवता सावधानपणे रहणो। मन वचन काया गुप्ति मे सावचेत रहिणो। तीर्थंकर नी आज्ञा अखड अराधणी। भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धात देख नै आचार सरधा प्रगट कीधी—विरत धर्म नै अविरत अधर्म। आज्ञा माहे धर्म, आज्ञा बारै अधर्म। असजती रो जीवणो बछे ते राग, मरणो बछे ते द्वेष, तिरणो बछे ते वीतराग देव नो मार्ग। तथा विवध प्रकार नी मर्यादा बाधी—किण ही साध आर्य्या मे दोष देखे तो ततकाल धणी नै कहणो। तथा गुरा नै कहणो, पिण ओरा नै न कहणो। घणा दिन आडा घाल नै दोष बतावै तो प्रायछित रो धणी उ हीज छै।

तथा सवत् १८५२ रे वरस आर्य्यां रे मर्यादा बाधी तिण मे एहवो कह्यो—किण ही साध आर्य्या मे दोष देखे तो ततकाल धणी नै कहणो तथा गुरा नै कहिणो, और किण ही आगै कहणो नही। किण ही आर्य्या जाण नै दोष सेवे तो पाना मे लिख्या विना विगै तरकारी खाणी नही। कोइ साध आर्य्या रा अवगुण काढै तो साभलण रा त्याग छै। इतरो कहणो स्वामी जी नै कहिजो। जिण रा परिणाम टोला माहे रहण रा हुवै ते रहिजो। पिण टोला बारै हुवा पछै साधु-साधविया रा ओगुण बोलण रा अनता सिद्धा री साख कर नै त्याग छै। वलै करली-करली मर्यादा बाधे त्या मे ना कहिण रा अनता सिद्धा री साख कर नै त्याग छै।

तथा चोतीसा रे वर्स आर्य्यां रे मर्यादा बाधी तिण मे कह्यो—टोला रा साध आर्य्या री निंद्या करै तिण नै घणी अजोग जांणणी, तिण नै एक मास पाचू विगै रा त्याग छै। जितरी वार करै जितरी वार मास पाचू विगै रा त्याग छै। जिण आर्य्या साथे मेल्या तिण आर्य्या भेली रहै अथवा आर्य्यां माहो म ांहि सेषे काल भेली रहै अथवा चोमासे भेली रहे त्या रा दोष साधा सू भेला हुवा कहि देणो। नही कहै तो उतरो प्राछित उण नै छै। टोला सू छूट न्यारी हुवा री बात मानै त्या नै मूरख कहिजे, चोर कहीजे, तथा पचासा रा गुणसठा रा लिखत मे कह्यो—कर्म धको दीधा टोला सू टलै तो टोला रा साध साध-विया रा हुता अणहुता अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। टोला नै असाध सरध नै नवी दिख्या लेवे तो पिण अठीरा साध-साधव्या री सका घालण रा त्याग छै। उपगरण टोला माहे करै ते परत पाना लिखे जाचे ते साथे ले जावण रा त्याग छै।

तथा गुणमठा रा लिखत मे कह्यो किण ही नै कम धका देवे ता टाला सू न्यारा पड अथवा टाला सू आप ही न्यारा थयो। इण सरधा रा वाइ भाइ हुवै तिहा रहिणो नही। वाटे वहता एक रात, कारण पडिया रहै ता पाचू विग नै सूखडी खावा रा त्याग छ। अनता सिद्धा री साख कर न। कोइ टाला रा साध-सावविया मे साधपणो सरधो, आप माह साधपणो सरधा, तिका टाला मे रहिजो। कोइ कपट दगा सू साधा भेलो रहै, तिण न अनता सिद्धा री आण छ। पाच पदा री आण छ, साध नाम धराय नै असाधा भेलो रह्या अनत ससार वधे छ जिण रा परिणाम हुवै ते इतरी परतीत उपजाओ, किण ही साध-साधव्या रा ओगुण वोल नै किण ही न फार नै मन भाग नै खाटो सरधावण रा त्याग छ। किण ही रा परिणाम न्यारा होण रा हुव जद ग्रहस्थ आग पला री परती करण रा त्याग छै। जिणरो मन रजावध हुव, चाली तरे साधपणा पलता जाण नै रहिणा। आप मे पला म साधपणो जाण नै रहिणो ठागा सू माह रहिण रा अनता सिद्धा री साख सू पचखाण छै।

तथा गुणसठा रा लिखत म कह्यो—कोइ कम जागे टोला माहे सू फाडाताडो करी नै एक दोय तीन आदि नीकने धणी धुरताइ कर बुगल ध्यानी हुवै, त्या न साधु सरधणा नही। च्यार तीथ माह गिणवा नही। त्या नै चतुर विध तीथ रा निंदक जाणवा। एहवा न वाद पूजे ते जिण आगन्या वारे छ कदाच फेर दिख्या लेइ आर साधा न असाध सरधायवा न तो पिण उण नै साध सरधणो नही। उण न छेरविया तो उ आल ने काढे तिण री एक वात मानणी नही, उण ता अनत ससार आरै कीया दीसै छ।

इहा पिण टालाकर नै घणा निषेध्या छै। केइ कम वसै गण छोड न नीकले, कयक तो एकला ही नीसरे अन केयक दाय तीन आदि नीकल नै पछै एक एक फिरता रहै। अनक जनर उधी परुपणा करै। तिण न भाखणजी स्वामी एकल रा चोढाल्या म तथा एकल री चोपी मे एहवी गाथा कही—

दोहा

१ भला कुन री विगडी तिका जोवे विराणा साथ।
ज्यू साध विगडयो आचार थो, ते किण विध आव हाथ॥
२ आना लोपी मतगुर तणी, तिण म ओपमा छै गलियार।
आप छाद एकला भमे, ज्यू ढार फिरै रुलियार[1]॥
३ विगडया धान री पावती, वेठा दुरगध आय।
ज्यू एकल री सगत किया वुद्धि अक्ल पत[2] जाय॥

---

१ घर घर भटकन वाला। २ प्रतिष्ठा

४ जो एकल नै आदर दीये, तो वधै घणो मिथ्यात।
फूट पडै जिण धर्म मे, ते सुणजो विख्यात॥

१ जिण सासण मे आज्ञा वडी, आ तो वाधी रे भगवता पाल।
ए तो सज्जन असज्जन भेला रहे, छादे चाले रे प्रभु वचन सभाल॥
वुधवता एकल सगत न कीजिये॥

२ छादो रूध्या विण सजम नीपजै, तो कुण चाले पर नी आग्या माय।
सहु आप मते हुवै एकला, खिण भेला खिण विखर जाय॥

३ आप मते एकला हुआ, तो सासण मे पर जाए घमडोल।
एहवा अपछदा री करै थापना, ते पिण भूला भेद न पायो रहगी भोल।

४ वेराग घटै उण री पाखती, के उण सगत आवै मूल मिथ्यात।
के साधा सू उत्तर जाए आसता, साची सरध्या एकल री वात॥

५ ते तो भिडकावै साधा रा समदाय सू, आपस मे वोल्ने विरुवा वैण।
वलै छिदर घरावै एक एक नै, साधू दीठा वले अतरग नैण॥

६ नकटादिक चोर कुसीलिया, वधी चावै आप आपणी न्यात।
ज्यू भागल नै भागल मिलै, घणू हरखे करे मनोगत वात॥

७ चोरी जारी आदि खून अकारज किया, राजा पकडै करै छविछेदे खोड।
वलै देश निकालो दे काढिया, त्या नै राखै भील मेणादिक चोर॥

८ ते विगाड करै तिण देस मे, भील मेणा त्या नै आणी-आणी साथ।
दुःख उपजावै रेत[2] गरीव ने, धन ले जावै कर कर त्यारी घात॥

९ त्या नै असणादिक आदर दिया, लफरो लागै भाग्या राजा तणी आण।
कदा राय कोपे तो धन खोस ले, जीवा मारे तिण रा एफल जाण॥

१० इण दिष्टते साधा रा समदाय मे, दोपण सेव्या साधु काढै गण वार।
ते आप छदे एकला रहै, के भागल आगै पाछै फिरे लार।

११ ए तो साधा रा आवगुण वोलता, मुख मीठो खेले अतर घात।
ओछी वुद्ध वाला नै विगोवता, कूडी कथणी कूडी कर-कर वात॥

१२ त्या री भाव भगत सगति किया, तिण भागी भगवत नी आण।
ते तो दुःख खमे इण ससार मे, उत्कृष्टा अनत जन्म मरण जाण॥

१३ चोर नै तो आहार आदर दिया, इहलोके धन जीतव नो विणास।
भेपधारी नै भागल एक तणी, सगति कीधा कर्म तणी रास॥

---

१ लय—चोर हस अनै कुसीलिया।
२ प्रजा।
३ नही रहेगा।

१४ उसना कुसीलिया नैं पासथा, अपछंदा ससतादिक जाण।
त्या नैं तीथ में गिणवा नहीं, आ कर लीजा जिण वचन प्रमाण॥
१५ ए तो हलवा निंदवा जोग छै, कष्ट करवा तिण री नाता में साख।
त्या री सग परचो करणो नहीं, सूत्र माह भगवत गया भाख॥
१६ या ता अनत ममार आर कियो, इहलाके परलोके हुसी भण्ड।
तिण नैं आहारपाणी ओपद दिया, तिण नैं आव चोमासी रो डड॥
१७ भेला वेस सभाय करवो नहीं, नहीं करणा त्या रे साथे विहार।
या री सग परचा करता थका, ग्यान दरसण चारित रो विगार॥

इम एकल न ओलखायो। तिण की सगति सू समक्त आदि घणा गुणा रो नास हुव, अवगुण नीपजे। ठाम ठाम सूत्र मे एकला न रहणो वरज्यो छै। आचारग ववहार वेद कल्प आदि अनक साग्व छ। वल भीखण जी स्वामी पिण एकला न सफा वरज्यो छै। ते गाथा—

१ 'कका[1] सू तो भलो रहिणो नाव तिण मू फिरे एकला आप।
ते सुध साधा न असात्र पम्प वलै कर एकला रहण री थाप रे॥
भवियण जावा रे हिरद विचारी, थे ता अतर आख उघाडी र।
भवियण एकल छ जिण आगया वारी॥
२ ओ किण कारण फिरे छ एकलो, ते तो भाला न नहीं ठीक।
तिण रा कूड कपट न दोप सेवण री, कुण कर तहतीक॥
३ तिण एकल माह अनक अवगुण छ, वल कूड कपट रा भडार।
ते एकल रहे छै सगला सू डरता, रखे करेला म्हारा उघाड॥
४ तिण एकल रा सील आचार री तिण री भाला करसी परतीत।
केइ चतुर विचखण डाहा हासी त, एकल न जाणे विपरीत॥
५ केइ क्राधी कपाइ लालपी हामी, त ता फिरसी एकेला।
केइ विपे तण वस फिर एकला, एहवा एकल वदय न भला॥
६ ठाम ठाम सूत्र माह श्री वीर नपेध्या, साधु न एकला रहणा नाहि।
केइ एकल न साध सरधे न वाद, ते पिण पडिया माटा फद माही॥
७ इम साभल उत्तम नर नारी, एकल दूर तजीजे।
उत्तम साधु सुद्ध आचारी त्या न हरप सहीत गुर कीज॥
८ इण पचमे आर फिर एकला, त नेमाइ निदव भिष्टी।
विवक विकल जिण आगया वार त्या न साध न सरधे समदष्टि॥

---

१ सय—न ज कारण जिन-आज्ञा माहे छ।

इहा पिण एकल मे तो साधपणो बिलकुल नही तथा पैंतालीसा रा लिखत मे एहवो कह्यो—टोला माहि कदाच कर्म जोगे टोला बारै पडै तो टोला रा साध साधव्या रा अंश मात्र अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। या री अस मात्र सका पडै आसता उतरे ज्यू बोलण रा त्याग छै। टोला मा सू फार नै साथे ले जावण रा त्याग छै। उ आवै तो ही ले जावण रा त्याग छै। टोला माहे अनै बारै नीकल्या पिण ओगुण बोलण रा त्याग छै। माहो मा मन फटै ज्यू बोलण रा त्याग छै। इम पैंतालीसा रा लिखत मे कह्यो ते भणी सासण री गुणोत्कीर्त्तन बात करणी। भागहीण हुवै सो उतरती बात करै, तथा भागहीण सुणै, तथा सुणी आचार्य नै न कहै ते पिण भागहीण। तिण नै तीर्थंकर रो चोर कहणो, हरामखोर कहणो, तीन धिकार देणी।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि ण पूयति, जेण जाणति तारिस॥

आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि ण गरहति, जेण जाणति तारिस॥

इति [1]दसवइकालिक मे कह्यो ते मर्यादा आज्ञा सुद्ध आराध्या इहभव मे परभव मे सुख कल्याण हुवै।

ए हाजरी रची सवत् १९१४ रा सावण विद ६।

---

१ दसवेआलियं, ५।२।४५, ४०

तेईसवीं हाजरी

पच समिति तीन गुप्त पच महाव्रत अखड आराधणा। ईर्ष्या भापा मे सावचेत रहिणो। आहारपाणी लेणो ते पक्की पूछा करी लेणो। सूजतो आहार पिण आगला रो अभिप्राय देख न लेणो। पूजता परिठवता सावधान पणे रहणो। मन वचन काया गुप्ति म सावचेत रहिणो। तीर्थंकर नी आज्ञा अखड आराधणी। भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धात देख नैं आचार श्रद्धा प्रगट कीधा। विरत धम नै अविरत अधम, आज्ञा माहे धम, आना बारैं अधम। असजती रो जीवणो वछे त राग, मरणो वछ ने द्वेप, तिरणो वछ ते वीतराग देवनो माग छै। तथा विवध प्रकार नी मर्यादा वाधी। सव साधा नैं सुद्ध आचार ता पालणो। माहो मा गाढो हेत राखणो। जिण ऊपर मरजादा वाधी—कोइ टाला रा साध साधव्या मे साधपणो सरधो, आप माहे साधपणो सरधो, तिका टोला माह रहिज्यो। कोइ कपट दगा सू साधा भेल्यो रहै, तिण नै अनता सिद्धा री आण छ। पाचू पदा री आण छ। साध नाम धराय नै असाधा भेला रह्या अनत ससार वधे छै। जिण रा परिणाम चोखा हुवै ते इतरी परतीत उपजाओ। किण ही साध साधविया रा औगुण बोल न किण ही न फार नैं मन भाग नैं खाटा सरधावण रा त्याग छै। किण ही सू साधपणो पलतो दीस नही अथवा सभाव किण मू इ मिलतो दीसै नही अथवा कसायी घेटो जाण नै कोइ कनै न राखे अथवा खेत्र आछा न वताया अथवा कपडादिक कारण अथवा अजाग जाण नै और साध गण सू दूरो कर अथवा आप न गण सू दूरो करतो जाण नैं इत्यादिक अ क कारण उपन टाला मा सू ‍यारो पड ता किण ही साध साधविया रा ओगुण वोलण रा हुतो अणहुतो सूचणो काढण रा त्याग छ। रहिसे रहिसे लोका रे सका घाल नै आसता उतारण रा त्याग छ। कदा कम जागे अथवा क्राध वस साधा नैं साधविया न सव टोला न असाध सरधे, आप म पिण असाधपणा सरध नैं फेर साधपणा लेवे ता ही पिण अठीरा साध साधविया री सका घालण रा त्याग छ। खोटा कहीण रा त्याग ज्यू रा ज्यू पालणा छै। पछै यू कहिण रा पिण त्याग छै। म्ह ता फेर साधपणो लीधो, अवे म्हारे आगला सूसा रो अटकाव को नही, यू कहिण रा पिण त्याग छै, किण ही साध आर्य्यां न पिण साध आर्य्यां री आसता उतरे साध आर्य्या री सका पडै ज्यू असाधपणा सरधे ज्यू वोलण रा त्याग छै। किण ही साध आर्य्यां म दोप देखे ता ततकाल धणी न कहिणो, अथवा गुरा नैं कहणो, पिण आरा न न कहिणो घणा दिन आडा घाल नै दोप वतावै तो प्राछित रो धणी उहीज छ। किण ही

रा परिणाम न्यारा होण रा हुवै जद ग्रहस्थ आगै पेला री परती करण रा त्याग छै। जिण रो मन रजावध हुवै चोखीतरै सावपणो पलतो जाणे तो टोला माहे रहिणो। आप मे अथवा पेला मे सावपणो जाण नै रहिणो। ठागा सू रहिवा रा अनता सिद्धा री साख सू पचखाण छै। टोला माहे रहै जठा ताइ उण रा छै टोला सू न्यारो हुवै जद पाना टोला रा साधा रा छै। साथे ले जावण रा त्याग छै। परत पाना जाचे ते पिण वडा री टोला री नेश्राय जाचणा, आप री नेश्राय जाचण रा पचखाण छै। जे कोइ अजाणपणे जाचणी आवै तो पिण परत पाना वडा रा छै, टोलारा छै, वा नै पिण साथे ले जावण रा त्याग छै। पातरो लोट जाचे टोला माहे थका ते पिण वडा री नेश्राय जाचणो। वडा देवे ते लेणो, ते पिण टोला माहि छै जठा ताइ टोला वारै जाय तो साथे ले जावण रा त्याग छै। कपडो नवो हुवै ते पिण टोला वारै ले जावण रा त्याग छै। दिख्या देणो ते पिण वडा रे नामे देणी। आप आप रै चेलो करवा रा त्याग छै। आगै पानो लिखियो छै—तिण मे सावा रे मरजादा वाधी छै—तिण प्रमाणे सगला रे त्याग छै उवा मरजादा पिण उलघण रा त्याग छै। जो किण ही साध मरयादा उलघवो कीधो तो अथवा आगन्या माहै नही चलिया अथवा किण ही नै अथिर परिणामी देख्यो अथवा टोला माहै टिकतो न देख्यो तो ग्रहस्थ नै जणावण रा भाव छै। साध साधव्या नै जणावण रा भाव छै। पछै कोइ कहोला म्हारी लोका माहै टोला माहै आसता उतारी। तिण सू घणा सावधान पणे चालज्यो। एक-एक नै चूक परचा तुरत कहिज्यो। म्हा ताइ कजियो आणज्यो मती उठे रो उठे निवेरज्यो पूछया अथवा अणपूछया वीती वात कह देणी वाकी उठै ही निवेर लेणी। कोइ टोला मा सू टल नै साध साववियां रा दोप वतावै अवर्णवाद वोले तिण नै झूठा वोलो जाणणो। साचो हुवै तो ज्ञानी जाणे। पिण छदमस्थ रा ववहार मे तो झूठो जाणणो। एक दोष सू वीजो दोप भेलो करै ते तो अन्याइ छै। डाहा हुवै ते विचार जोयज्यो। लूखे खेतर तो उपगार हुवै ते छोड नै न रहे, आछे खेतर उपगार न हुवै तो ही पर रहै। ते यू करणो नही। चोमासो तो अवसर देखे तो रहणो, पिण सेपे काल तो रहणो ही किण री खावा पोवादिक री सका पडै तो उण नै साध कहै, वडा कहै ज्यू करणो, दोय जणा तो विचरे नै आछा आछा मोटा साताकारिया खेत्र लोलपी थका जोवता फिरै नै रहै, गुर राखे तठे न रहै, इम करणो नही छै। घणा भेलो रहितो दुखो, दोय जणा मे सुखी, लोलपी थको यू करणो नही छै। आप किण ही नै परत पाना उपगरण देवे ते तो आघाइज[1] देणा पिण न्यारो हुवै जद पाछा मागण रा त्याग छै। जिण री आसग हुवै ते देज्यो। आर्य्या सू देवो लेवो लिगार मातर करणो नही। वडा री आज्ञा विना आगै आर्य्या हुवै जठै जाणो नही। जाए तो एक रात रहिणो, पिण अधिको रहिणो नही कारण पडिया रहै तो

१. सम्पूर्णरूप से।

गोचरी रा घर वाट लेणा पिण नित रो नित पूछणा नहीं । कन उठण देणो नहीं, उभी रहिण दणी नहीं, चरचा वात करणी नहीं । वटा गरवादिक रा कह्या थी कारण री वात न्यारी छै । मरम आहारादिक मिल तिहा आग्या विना रहिणा नहीं वलै काइ करली मरजादा वाधी तिण में ना कहिणा नहीं । आचार रो मका पड्या थी वाधे, वलै कोइ याद आव ते लिखा, ते पिण सव कबूल छ । ए मयादा लोपण रा अनता सिद्धा री साख कर नै पचखाण छै । जिण रा परिणाम चोखा हुवै, मस पालण रा परिणाम हुव, ते आर होयज्यो । सरमामरमी रा काम छ नहीं । मवत १८५० रा लिखत मे ए वात कही । इम इत्यादिक मर्यादा अनक अनेक उधवस्ती मे रहै हरप सहित अगी करे अनेक-अनक त्याग सिद्धा री साख पच पदा री साख मु च्यार तीथ री साख मू अन्य मती देख्या पिण ते सव सोगन लाज छाड न भाग देवे । पछ आप मते फिरे अनेक-अनेक परूपणा करै घुनगाइ कर । यथा लो देखाउ करणी पिण कर । पिण टालाकर री सनघ न्ही लेखवणी इसी श्री भीखण जी स्वामी कही ते ढाल कहै छ ।

१ [1]घर छोडी ली गुर कनै दिख्या, के इ ट्र खदाइ हुवै चेला ।
गुर न उथाप हुवा छै अग्यानी, गण सू पडिया फिर अकेला ॥
ए टोला रा अवगुण वाले टालोकर, तिके प्रतक्ष साधा रा धेषी रे ।
जो किण रा मन माह मका हुव तो अम्बर ल्या दखो ॥ ध्रुपद ॥
२ साधपणो कहै म्हइज पाला ते हिया तणे वल वाल ।
कर्मा रे वस क्यू ही न सूजे, ए माह मिथ्यात मे टोले ॥
३ साग माध रो पिण अक्ल न काइ सीख दिया कर कजिया ।
रात दिवस करै छ निंद्या पूरी, वल छोडी लोका री लजिया ॥
४ अनक साधा री कर छै निंद्या पोने होय वेठा वाजे वैरागी ।
ते अपछदा जिण आग्या वार ज्यासू मुगत पुरी रही आघी ॥
५ जा सीत काल रहै सदा उघाडा वले लूखो खावै रोटी ।
पिण नद्या न छूटी सुद्ध साधा री, तिके भेप लेइ हुवा खाटो ॥
६ माम-मास कर पारणा कोयक, वलै सहै सूरज रो तापा ।
ता पिण गरज सर नहो काइ तिण खायो नद्या कर आपो ॥
७ छिद्रगवेपी नै दुष्ट परिणामी, तिण वरत किया नव कोटी ।
चूठ वोलण री पिण मक न राख तिण रे मोलप माटी ॥
८ क्रोध माह सदाइ रहै कनिया मान माह नहीं मावै ।
आप री कीरत आप कहै मूरख पटघा लाका म पमावै ॥

[1] लय चतुर विचार करी न देखो ।

९ देवालिया नै देवालिया सूजे, साहूकारा नै उडाव।
ते विगडायल भंप रा भारी कर्मा, मुद्ध साधा रो सुजश गमावै ॥
१० आप ने अणहुतो उतकष्टो थापै, वलै उतमा नै खोला[1]।
साध साधविया नै निजरा दीठा, त्यारा वलै आल्यारा डोला ॥
११ कदा पाणी छोड नै धोवण लेवै, वलै पच विगै देवै त्यागी।
पिण साधा री निंद्याकरणी न छूटी, तिणसू विपत रही नित लागी ॥
१२ कदा लकडी जिम जे काया मुकावै, पिण नद्या करणी नही छूटी।
वलै साधू ज्यू पूजावै लोका मे, ज्यारी हिया निलाडी री फूटी ॥
१३ अपछदा केइ पूत कुपात्र, घणी हिया माहे घातो।
दुखदाइ जीव जवा सरीपा, ज्या रे हुकारे मूहगी वातो ॥
१४ गुर निंदक महामोहणी वाधे, पाप समण ते पूरा।
दोय सूत्रा माहे पाठ उवाडा, निंदक लवाल ते कूडा।
१५ अलगा थइ नै अवगुण वोले, त्या री अकल गइ दपटाइ ॥
सपत आवता कुटी नै काढै, आ विपत नै नेडी वुलाइ।
१६ मूर्ख मन मे नही विचारे, मारै कह्या हुसी किम भूडो ॥
सघ उथाप नै धर्म रा घेपी, वलै माडे मुगत नै मूहढो ॥
१७ उलटवुद्धि अलखावणा वोले, अवगुण साधा रा गावै।
माठी गति रा पावणा पापी, एलै[2] जन्म गमावै ॥
१८ निंदक नीच उघाडा कूवा, जिण मे पडै मत अधा।
मूरख मोह अग्यान मे खूता, त्या रा पिण केइ होय वैठा वंदा ॥
१९ लख चोरासी मे गोता खासी, भमसी दडी[3] जिम दोटो।
उतकष्टो काल अनतो रुलसी, इण मत झाल्यो खोटो ॥
२० ज्या नै टाल दिया टोला सू दूरा, त्या मे अविनय रो ओगुण भारी।
त्या टोला मे टिकणो अति दोरो, गुर रा नही आज्ञाकारी ॥
२१ सतगुर री परतीत ज राखो, जो तिरिया चावो भव पारो।
ज्यू सुखे-सुखे सिवपुर मे जाओ, तिहा वरतसी जे जे कारो ॥

इम इत्यादिक अनेक-अनेक टालोकर रा अवगुण कह्या ते भणी तेहनी सगत न करणी।

तथा पैतालीसा रा लिखत मे एहवो कह्यो—टोला माहि कदाच कर्म जोगे टोला वारै पडै तो टोला रा साध साधवियां रा

---

१ शिथिल
२. अफल।
३ गेद।

अस मात्र अवणवाद वोलण रा त्याग छै। या री अस मात्र सका पड़ै आसता ऊतरे ज्यू वोलण रा त्याग छै। टोला मा सू फार नै साथ नै जावण रा त्याग छै। उ आव तो ही ले जावण रा त्याग छ। टोला माहै अनै वारै नीकल्या पिण आगुण वोलण रा त्याग छै। माहो मा मन फटै ज्यू वोलण रा त्याग छै। इम पतालीसा रा लिखत म कह्यो—ते भणी मासण री गुणात्कीत्त वात करणी। भागहीण हुव सो उतरती वात कर। तथा भागहाण सुणै तथा सुणी आचाय नै न कहै ते पिण भागहीण। तिण न तीर्थंकर रो चोर कहणो, हरामखोर कहणा, तीन धिकार देणी।

आयरिए आराहइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि ण पूयति, जेण जाणति तारिस॥
आयरिए नाराहइ, समणे यावि तारिसा।
गिहत्था वि ण गरहति, जेण जाणति तारिस॥

इति दशवइकालिक म कह्यो। ते मर्यादा आज्ञा आराध्या सुवपणे तो इहभव मे सुख कल्याण हुवै।

ए हाजरी रची सवत् १९१४ रा भादवा विद ६।

चोवीसवीं हाजरी

पच सुमति तीन गुप्त पच महाव्रत अखड आरावणा । तीर्थंकर आचार्य री आज्ञा सुद्ध पालणी । तथा भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धात देख सरधा आचार प्रगट कीयो—विरत मे धर्म, अविरत मे अधर्म । आज्ञा माहे धर्म, आज्ञा बारै अधर्म । असजती रो जीवणो वछै ते राग, मरणो वछे ते द्वेप, तिरणो वछे ते वीतराग देव नो मार्ग ।

तथा सवत् १८५० रे वरस भीखणजी स्वामी मर्यादा बाधी—किण ही साध आर्य्या मे दोप देखे तो ततकाल धणी नै कहणो, तथा गुरा नै कहणो, पिण ओरा नै न कहिणो । घणा दिन आडा घाल नै दोप बतावै तो प्राछित रो धणी उ हीज छै ।

तथा सवत् १८५२ वरस आर्य्या रे मर्यादा बाधी तिण मे एहवो कह्यो किण ही साध आर्य्या मे दोप देखे तो दोप रा धणी नै कहिणो, तथा गुरा नै कहिणो, पिण और किण ही आगै कहिणो नही । किण ही आर्य्या दोप जाणनै सेव्यो हुवै ते पाना मे लिखिया विना विगै तरकारी खाणी नही । कोइ साधु साधविया रा अवगुण काढै तो साभलवा रा त्याग छै । इतरो कहणो—'स्वामी जी नै कहिजो' जिण रा परिणाम टोला माहे रहिण रा हुवै ते रहिजो । पिण टोला बारै हुवा पछै साधु-साधविया रा अवगुण बोलण रा अनत सिद्धा री साख कर नै त्याग छै । वलै करली-करली मर्यादा बाधे त्या मे पिण ना कहिण रा अनंता सिद्धा री साख कर नै त्याग छै । तथा चोतीसा रा वरस आर्य्या रे बाधी तिण मे कह्यो—टोला सू छूट न्यारो हुवा री वात माने त्या नै मूरख कहीजे त्या नै चोर कहीजे ।

तथा पचासा रा लिखत मे तथा गुणसठा रा लिखत मे कह्यो – कर्म धक्को दीधा टोला सू टलै तो टोला रा साध साधव्या रा हुता अणहुता अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै । टोला नै असाध सरध नै नवो दिख्या लेवे तो पिण अठीरा साध साधविया री संका घालण रा त्याग छै । उपगरण टोला माहि करै ते परत पाना लिखे जाचे ते साथे ले जावण रा त्याग छै ।

तथा जिलो न बाधणो सवत् १८४५ रा लिखत मे कह्यो—टोला माहे पिण साधा रा मन भाग नै आप-आप रे जिले करै ते तो महाभारी कर्मो जाणवो, विसवासघाती जाणवो । इसडी घात-पावडी करै ते तो अनत संसार नी साइ छै । इण मर्यादा प्रमाणे चालणी नावै । तिण नै सलेखणा मडणो सिरे छै । घनै अणगार तो नव मास माहे आत्मा रो

कल्याण कीधो ज्यू इण नै पिण आतमा रा सुधारा करणा। पिण अप्रतीतकारियो काम न करणा रागिया विचै ता सभाव रा अजोग नै माहे राख्या भूडो छै या बोला री मर्यादा बाधी ते लिखी छै ते चोखी पालणी। अनता सिद्धा री साख कर न पचखाण छ। ए पचखाण पालण रा परिणाम हुवै ते आर हुयजा। विन मारग चालण रा परिणाम हुव गुरु न रीझावणा हुव साधपणो पालण रा परिणाम हुव त आर हुयजो। ठागा सू टोला माहि रहिणो न छै। जिण रा परिणाम चोखा हुव ते आर हुयजा आगै साधा रे समूचे आचार री मर्यादा बाधी ते कबूल छ। वलै काइ आचाय मयादा बाधे त याद आवै ते पिण कबूल छै। उण नै साधु किम जाणिये ज ऐकलो वेण री सरधा हुवै। इसडी सरधा धार नै टोला माह बैठा रहै। माहरी इच्छा आवसी जद एकला हुसू, इसडी सरधा सू टाला माह रहै ते तो निश्चे असाध छै। साधपणा सरधे तो पहिला गुणठाणा रा धणी छै। दगाबाजी ठागा सू माहै रह छ, तिण न माह राख जाण न त्या नै पिण महादाप छ। तथा वली पैंतालीसा रा लिखत म कह्या—वली कोइ करली मयादा बाधे तिण म ना कहणा नही, आचार री सका पडया थी बल काइ याद आव त लिखा ते पिण सव कबूल छै। ए मर्यादा लापण रा अनता सिद्धा री साख कर न पचखाण छ। जिण रा परिणाम हुव ते आर हायजा। सरमासरमो का काम छै नही।

तथा गुणसठा रा लिखत मे कह्या - टाला सू न्यारा हुव ता इण सरधा रा भाया बाया हुव तिहा रहिणा नही, एक भाई बाई हुव तिहा पिण रहिणा नही। बाट वहिता एक रात कारण पडिया रहै तो पाचू विग सूखडी खावा रा त्याग छ। अनता सिद्धा री साख कर न छै। ते भणी अवनीतपणा छाड मर्यादा सुद्ध पाले ते विनीत तथा सूत्र मे पिण वनीत नै सराया ते पाठ—

"एय ते मा होउ, एय कुसलस्स दसण —तद्दिट्ठीए, तम्मुत्तिए, तप्पुरक्कारे तस्स ना तन्निवेसणे, जय विहारी, चित्तनिवाती, पयनिज्झाइ, पलिवाहिरे" — आयारो १।५।५।

अथ इहा वनीत नै ओलखाया आचाय री दष्ट प्रमाणे दृष्ट राखणी। आचाय रा जाणपणा लार जाणपणा राखणो कह्या। इत्यादिक अनेक काय मे आचाय री मुरजी प्रमाणे विचरणो।

तथा सवत् १८४५ रा लिखत म कह्या -टाला माह मू कदा कम जोगे टोला वार पड तो टाला रा साध माधविया रा असमात्र अवणवाद बालण रा त्याग छै। या री अस मात्र सका पड आमता ऊतर ज्यू बालण रा त्याग छ। टाला सू फाड न साथे ले जावा रा त्याग छ। उ आव ता ही ले जावा रा त्याग छै। टाला माहै न वार नीकल्या पिण आगुण बालण रा त्याग छै। माहा मा मन फटै ज्यू बोलण रा त्याग छ। पैंतालीसा रा लिखत मे कह्या। ते भणी सासण री गुणोत्कीत्तन वात करणी, भागहीण हुव

सो उतरती वात करै, तथा सुणे ते भागहीण, सुणी आचार्य नै न कहै ते पिण भागहीण, तिण नै तीर्थंकर नो चोर कहणो, हरामखोर कहणो, तीन धिकार देणी ।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो ।
गिहत्था वि ण पूयति, जेण जाणति तारिस ।।

आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो ।
गिहत्था वि ण गरहति, जेणजाणति तारिस ।।

इति दशवइकालिक मे कह्यो ते मर्यादा आज्ञा आराध्या इहभव परभव मे सुख कल्याण हुवै ।

पच्चीसवीं हाजरी

पच समिति तीन गुप्ति पच महाव्रत अखड आराधणा। ईर्य्या भाषा एषणा मे साव-चेत रहिणो। आहार पाणी लेणो ते पक्की पूछा करी न लेणा। सूजता आहार पिण आला रो अभिप्राय देख नैं लेणा। पूजता परिठवता सावधानपणे रहणो। मन वचन काया गुप्ति म सावधान पणे सचेत रहणो। तीर्थंकर नी आना अखड अरावणो। श्री भीखण जी स्वामी सूत्र सिद्धात देख नैं आचार श्रद्धा प्रगट कीधी—विरत धम, अविरत अधम। आना माह धम, आना बार अधम। असजती रो जीवणा वछै ते राग मरणो वछै ते घेष, तिरणो वछ त वीतराग नो मार्ग छै। तथा विवध प्रकार नी मर्यादा वाधी। किण ही साध आय्या मे दाप देखे ता ततकाल धणी न कहणो, तथा गुरा नै कहणा। ओरा न न कहिणो घणा दिन आडा घाल न दोष वताव तो प्राछित रा घणी उहीज छै।

तथा सवत १८५२ रे वरस आर्य्यां रे मर्यादा वाधी तिण मे एहवो कह्यो—किण ही साध आय्या म दोप देखे ता दोप रा धणी न कहणा तथा गुरा नैं कहिणा पिण और किण ही आग कहिणो नहीं। आय्या जाण न दाप सेव्या हुव तें पाना मे लिख्या विना विगै तरकारी खाणी नही। काइ साधु साधविया रा ओगुण काढ ता साभलण रा त्याग छ। इतरो कहिणा—'स्वामी जी नैं कहिजा' जिण रा परिणाम टाला माहे रहिण रा हुव ते रहिजा, पिण टाला वार हुवा पछ साधु-साधविया रा ओगुण वालण रा अनना सिद्धा री साख कर न त्याग छ। वल करली-करली मर्यादा वाधे त्या म पिण ना कहिण रा अनना सिद्धा री साख कर नै त्याग छ।

तथा चोतीसारे वस आर्य्यां रे मर्यादा वाधी, तिण म कह्या—ग्रहस्थ करनैं टोला री साध आय्या री निंदा करै तिण न धणी अजाग जाणणी तिण र एक मास पाचू विग रा त्याग छ। जितरी वार कर जितरा मास पाचू विग खावा रा त्याग छ। जिण आर्य्यां साथे मल्या तिण आर्य्यां भली रहे अथवा आर्य्यां माहो माहि नेपे कान भेली रहे अथवा चामासे भेली रहे, त्या रा दाप हुवे तो साधा मू भला हुवा कहि देणा न कहे ता उतरा प्रायछित उण न छ। टोला मू छूट हुवा री वात मान त्या न ता सूरख कहीज, त्या न नार कहिजे।

तथा पचासा र निमत मे तथा गुणसठा रा लिखत म कह्यो—कम धका दीधा टाला मू टले ता टाला रा साध साधव्या रा हुना अणहुना अवणवाद वालण रा त्याग छ। टाला न असाध सरध न नवीं दिख्या लेव ता पिण अठीरा साध-साधविया रे सका

घालण रा त्याग छै। उपगरण टोला माहे करै ते परत पाना लिखे जाचे ते माथे ले जावण रा त्याग छै।

तथा गुणसठा रा लिखत मे कह्यो—किण नै कर्म धक्को देवे तो टोला सू न्यारो पडै अथवा टोला सू आप ही न्यारो थया इण सरधा रा भाई बाई हुवै त्या रहणो नही। वाटे वहतो एक रात कारण परिया रहै तो पाचू विगै सूखडी खावा रा त्याग छै। अनता सिद्धा री साख करै नै छै। कोइ टोला रा साध साधविया मे साधपणो सरधो आप माहे साधपणो सरधो तको टोला माहै रहिजो। कोइ कपट दगा सू साधा भेलो रहै तिण नै अनता सिद्धा री आण छै। पाचू पदा री आण छै। साध नाम धराय नै असाधा भेलो रह्या अनत ससार वधै छै। जिण रा चोखा परिणाम हुवै ते इतरी परतीत उपजाओ। किण ही साध साधव्या रा ओगुण बोल नै किण ही नै फार नै मन भाग नै खोटा सरधावण रा त्याग छै। किण रा परिणाम न्यारा होण रा हुवै जद ग्रहस्थ आगै पेला री परती करण रा त्याग छै। जिण रो मन रजावध हुवै चोखी तरह साधपणो पलतो जाणे तो टाला माहै रहिणो। आप मे अथवा पेला मे सावपणो जाणनै रहिण, ठागा सू माहि रहिवा रा अनता सिद्धा री साख सू पचखाण छै। तथा साध-सिखावणी ढाल मे तथ रास मे पिण तथा घणा लिखता मे जिला नै निषेध्यो छै। फाटा तोडो करै, आमी साहमी वाता कर नै साध साधव्या रा मन भाग नै मन फडावै ते तो महाभारीकर्मो जाणवो। दगावाज कपटी जाणवो। विसवासघाती जाणवो। तथा महा मोहणी रा ढाल मे पिण एहवो कह्यो, ते गाथा—

१९ [1]गुण वधिया गुर री नेसरा त्या सू दगो करै मन माय रे।
छल छिद्र जोवै चोर नी परै, शिप शिपणी लेवे फटाय रे॥
इम कर्म वधे महा मोहणी॥

२० साध साध्वी श्रावक श्रावका, त्या न फारण री करै उपाय।
गुर सू मन भागे तेह नो, झूठा झूठा अवगुण दरसाय॥

२१ करै विसासघात माहै थको, मुख मीठो खोटो मन माहि।
वलै जिलो वाधे और साध सू, आप रो कर राखे ताहि॥

२२ राजा नही तिण नै राजा कियो, राज दीधो मोटे मडाण।
ते तो उपगारी छै मूलगो, तिणनैइज दुख देवे जाण॥

२३ सर्पणी इडा गलै आप रा, अस्त्री मारै निज भरतार।
वलै चाकर मारै ठाकुर भणी, गुर नै शिष्य न्हाखे मार॥

---

१ लय—जीवा ! मोह अणुकपा न आणिये।

२४ मारे देश तणा नायक भणी, मेठ नैं हुणैं माठ ध्यान ॥
कोइ मार अधिकारी पुरुष न, कुल मे दीवा ममान ॥
२५ कोइ सत ऋपेस्वर मोटको, घणा जीवा रो तारणहार।
द्वीपा समान डूबता जीव नैं, त्या न हणे काइ घेपधार ॥
२६ कोइ चारित्र नेवा उठीयो, केइ चारित्र पाल ताय।
तिण चारितिया नैं चारित्र थकी, भिष्ट करवा कर उपाय ॥
२७ उत्कष्टा ग्यानी केवली त्या र सजम तप री समाधि।
ते तो प्रतिवाधे भव्य जीव नैं त्या रा बोले अवगुणवाद ॥
२८ न्याय माग छ सुघ मुगत रा तिण सू तपतो रहै दिन रात।
तिण माग सू चूकाय दे, खोटी सरधा हिया म घात ॥
२९ आचाय उवज्झाया त्या कनैं, माघु हुवा छाड मायाजाल।
वले भणियो सिद्धत त्या कन त्या नैं हीज निंद मूर्ख वाल ॥
३० आचाय उवज्झाया तह नी, न कर सेवा भगत मन सुध।
विनो वियावच पण करैं नही, अहमेव पणा री बुध ॥
३१ आचाय उवज्झाया त्या कन, ग्यान दशन चारित्र पाय।
त्या मू पिण मूढ करै वरोवरी, वल सनमुख भगडे आय ॥
३२ आचाय उवज्भाया त्या कनैं समझे कियो परत ससार।
वल मजम रे सनमुख किया त्या रा अवगुण वाले वारवार ॥
३३ आचाय उवज्झाया गण थकी अवनीत न दव दूर टाल।
जव अवनीत क्रोध तण वस, हूनें द दे भूठा आल ॥
३४ आचाय उवज्झाया तेह नीं, वदणा छुडाव मका घाल।
उत्तमा री उतार आमता, दुष्ट अवनीत री ए चाल ॥
३५ आचाय उवज्झाया उपर, कोइ पन्विज पूरा मिथ्यात।
तिण अवनीत न सवलो सूज नही, कर जाम[१] नैं गाढ[२] री वात ॥
३६ काइ वहुश्रुती नि नैं नही, ते कहै हु छू वहुश्रुती साघ।
मा वरोवर मुतर कुण भण्या, अभिमानी कर झूठा विवाद ॥
३७ काइ तपसी ता निदच नही, त कहै हु छू तपसी धार।
तिण न तीन लाक रा चार स उत्कष्टा कह्यो वीर चार ॥
३८ वाना तपसी गरढा ग्यान छ, त्या री न कर वयावच दग।
तैं छती मगत पेठा थका, वन राखे त्या ऊपर घेप ॥

---

१ अभिमान।   २

३९ वलै कपट केलव झूठो कहै, हु करू छू वैयावच ताय।
पिण दुष्ट परिणामा तेह नै, उलटी देवे अतराय ॥

४० कलह कारणी कथा कहै, वलै वान्नै माहि-माहि खेद।
आमी सामी करै लगावणी, पाडै च्यार तीर्थ मे भेद ॥

४१ चेला रो मन भागे गुर थकी, गुर रो चेला सू दे मन भाग।
या नै भेद घाली न्यारा करै, तिण पैर विगाड्यो साग ॥

४२ गुर मोटा उपगारी मुगत रा, त्या सू दूर करै भरमाय ॥
जीवै ज्या लग भैला हुवै नही, एहवी मोटी देवै अतराय ॥

४३ गण माहि वसै साध-साधवी, त्या मे पाडे विपेरो कोय।
चित्त भग करै या रो एहवो, कदे फेर मिलाप न होय ॥

४४ साधवी गण सू फाड नै, आप रा कर राखै ताहि।
गुर सू छानै-छानै वावे जिलो, मूर्ख चोरी करै गण माहि ॥

इम भेद पाडै, जिलो वावै, तिण नै घणो निपेध्यो छै।

तथा पैतालीसा रा लिखत मे कह्यो— टोला माहि कदाच कर्म जोगे टोला बारै पडै तो टोला रा साध साधवियां रा असमात्र अवर्णवाद बोलण रा त्याग छै। या री असमात्र सका पडै आसता ऊतरै ज्यू बोलण रा त्याग छै। टोला मा सू फार नै साथै ले जावण रा त्याग छै। उ आवै तो ही ले जावण रा त्याग छै। टोला माहै नै वारै नीकल्या पिण ओगुण बोलण रा त्याग छै। इम पैतालीसा रा लिखत मे कह्यो। ते भणी साम्रण री गुणोत्कीर्त्तन वात करणी। भागहीण हुवै सो उतरती वात करै, तथा भागहीण सुणे, तथा सुणी आचार्य नै न कहै ते पिण भागहीण। तिण नै तीर्थंकर नो चोर कहणो, हरामखोर कहणो, तीन धिकार देणी।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि ण पूयंति, जेण जाणंति तारिसं ॥
आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि ण गरहंति, जेण जाणंति तारिसं ॥

इति 'दशवैकालिक मे कह्यो[1] ते मर्यादा आज्ञा सुद्ध आराध्या इहभव परभव सुख किल्याण हुवै।

ए हाजरी रची सवत् १९१४ रा मृगसर सुध १४

१ दसवेयालियं, ५/२/४५/४०

छब्बीसवीं हाजरी

पच सुमति तीन गुप्ति पच महाव्रत अखड पालणा । आहार पाणी लेणो ते पक्की पूछा कर नै ताय तपाय न निरदाप लेणा । पिण गाला गोला सू लेणो नही । दातार नै पिण निरदोप देणा ।

तया भीखणजी स्वामी सूत्र देख सरधा आचार प्रगट कीधा—विरत म धम, अविरत मे अधम । आना माहै धम, आना वारै अधम न पाप । असजती रो जीवणो वछ ते राग, मरणो वछ त द्वेप, तिरणो वछ ते वीतराग देव रा मारग ।

तया सवत् १८५० रा लिखत म कह्यो—किण ही साध आय्या मे दाप देखे तो ततकाल घणी नै कहणा, तया गुरा न कहणो, पिण आरा नै न कहणो । घणा दिन आडा घाल नै दोप वताव तो प्राछित रो घणी उहीज छ ।

तया सवत १८५२ वरा आय्या रे मर्यादा वाधी, तिण म एहवो कह्या—किण ही साध आय्या म दोप दखे ता ततकाल घणी नै कहिणा, तया गुरा नै कहिणा, पिण और किण ही आगे कहणो नही । किण ही आय्या जाण न दोष सेव्यो हुवै ते पाना म लिख्या विना विग तरकारी खाणी नही । कोइ साधु साधविया रा ओगुण काढै तो साभलण रा त्याग छै । इतरो कहिणा—'स्वामी जी न कहिज्यो' जिण रा परिणाम टाला माहि रहिण रा हुवै रहिज्या । पिण टोला वारै हुवा पछै साध-साधविया रा ओगुण वालण रा अनता सिद्धा री साख कर न त्याग छै । वलै करडी मयादा वाघे त्या म पिण ना कहिण रा अनता सिद्धा री साख कर न त्याग छै । तया चातीमा र वस आय्या रे मर्यादा वाधी तिण मे कह्यो—टाला रा साध-साधविया री निंद्या कर तिण नै घणी अजोग जाणणी, तिण नै एक मास पाचू विग रा त्याग छ । जितरी वार कर जितरा माम पाचू विग रा त्याग छ । जिण आय्या साथ मेल्या तिण आर्य्यां भली रहै, अयवा आय्या माहो मा ापे काल भेली रहै अथवा चामाम भेली रहै, त्या रा दोप देखे ता साधा सू भेला हुवा कहि दणा । न कहै ता उतरा प्रायछित उण न छ । टाला सू छूटक ्यारा हुवा री वात माने त्या न मूरख कहिजे । त्या न चार कहिजे ।

तया पचासा रा तया गुणसठा रा लिखत म कह्यो—कम धक्का दीधा टाला सू टल टाला रा साध साधविया रा हुता अणहुता अवणवाद वालण रा त्याग छ । टोला रा साध साधव्या न असाध सरघ न नयो दिख्या लव तो पिण अठीरा साध साधवियां

री सका घालवा रा त्याग छै। उपगरण टोला माहि करै ते परत पाना लिखे ते जाचे ते साथे ले जावण रा त्याग छै।

तथा गुणसठा रा लिखत मे कह्यो—किणही नै कर्म धक्को दीधा टोला मू न्यारो परै अथवा आप ही न्यारो थया इण सरधा रा वाई भाई हुवे त्या रहिणो नही। वाटै वहैतो एक रात कारण पडिया रहै तो पाचू विगै नै सूखडी खावा रा त्याग छै। अनता सिद्धा री साख कर नै छै। टोला रा साध साधविया मे साधपणो सरधो, आप माहै साधपणो सरधो, तिको टोला माहै रहज्यो। कोई कपट दगा सू साधा भेलो रहै, तिण नै अनता सिद्धा री आण छै। पाचू पदा री आण छै। साध नाम धराय नै असाधा भेलो रह्या अनत ससार वधै छै। जिण रा चोखा परिणाम हुवै ते इतरी परतीत उप-जाओ। किण ही साध साधविया रा ओगुण बोल नै किण रो मन भाग नै खोटा सरधा वा रा त्याग छै। किण ही रा परिणाम न्यारा हुवण रा हुवै जद ग्रहस्थ आगै पेला री पडती करण रा त्याग छै। जिणरो मन रजाबध हुवै चोखी रीते साधपणो पलतो जाणो तो टोला माहि रहिणो। कोइ कपट दगा सू रहिणो नही। आप मे अथवा पेला मे साध पणो जाण नै रहिणो। ठागा सू माहै रहिण रा अनता सिद्धा री साख मू पचखाण छै। तथा भीखणजी स्वामी चदू वीरा नै अजोग जाण नै काढी ते ढाल—

१ टोला बारे काढी जद रोवती वोली, म्हाने मती काढो आप टोला बारै।
विलविलाट तो कीधा इण विविध प्रकारे, इण बोल्या मै साच न जाण्यो लिगार।
टोला री टालोकर रो सग न कीजै ॥ध्रुपद॥

२ मर्यादा वाधी ते तो लोप दीधी छै, सूस कराया ते पिण दिया उडाय।
अनत सिद्धा री आण पिण भागी छै पापण, तिण नै कुण राखसी टोला रे माय।

३ गुर-वैन ने फाड नै चैली कीधी छानै, ओ पण मोटो दोप चोरी लागो॥
वलै दोप अनेक चोडे धाडे सेव्या, तो ही टोला माहै रहिवा रो मन आघो॥

४ कूडा-कूडा आल साधविया नै दीधा, गुर-वैन ने चैली करवा रे ताइ।
तिण रो मन भाग्यो साधु-साधव्या थकी, तिण नै कुण राखसी टोला रे माहि॥

५ साध साधव्या नै असाध ठहराया, आप तो पोते साधवी ठैरी।
विकला आगै वणी छै कूकडधम ज्यू, एहवी जैन री विगड़ायल गैरी॥

६ हिवै साध आय काढी सगला री सका, आल दिया त्यारो काढ्यो निकालो।
जब लोका पिण झूठी जाणे लीधी तिण नै, इण पापण मूढो कर दियो कालो॥

७ फिट-फिट हुइ छै च्यारू तीर्थ मे, च्यारू तीर्थ मे जाणी खोटी वगेप।
कह्यो निरलजी नागड़ी लज्जा रहीत छै, या तो पैहर विगाड्यो साधु रो भेष॥

१. लय—आ अणुकंपा जिण आगन्या में

८ थोडी घणी जा या मे लाज शम हुव तो, सेंहदा लोका म मूढो नही दिखावे ।
पिण लाज न सम जावक छोड वठी, वले साघपणा रो नाम घरावे ॥
९ ए साघपणो तो खोय बैठी छै, वनै समकत पिण दीस छै खोइ ।
ए लौकिक रो पिण डर नही राखै, या नै हूटकण वालो न दीसै कोइ ॥
१० ए गामा नगरा रुलियाल ज्यू फिरती, साध साघविया रा अवगुण गाव ।
भूठा भूठा आल साधा न देइ काचा नै साधा सेती भिडकावे ॥
११ जे हीण पुनिया हीण-बुद्धि जीव छै, ते जाय वससी भागला रे पास ।
वले अशुभ कम उदै आया छै, ते करसी भागला रा विसवास ॥
१२ ए झूठा भूठा आल दव साधा रे, त्या भागला री कोइ मानसी वात ।
तिण रे पिण असुभ कम उदै आया छै, या री सगत किया सू आव मिथ्यात ॥
१३ त्या विकला कन कर सामाइ, त्या विकला कनै जाय सुणै वखाण ।
वलै हाव भाव कर त्या विकला सू त्या रै पक्का बूडण रा एहीजएहलाण ॥
१४ समदष्टी न या रो सग न करणा वल न करणी या सू पीत ।
ए अनत सिद्धा री आण करै तो ही या री तो मूल न करणी प्रतीत ॥
१५ अनत सिद्धा री आणता घणी वारभागी, त्या विकला री कुण राखसी प्रतीत ।
या रा सूस तणी परतीत राखै तो, ते पिण होसी घणा फजीत ॥
१६ या न मैंदी जाण या सू भलप राखै या सू मिल न कर कोइ वात ।
त्या रे समकत रा पजवा पड हीणा आवतो आवता आव मिथ्यात ॥
१७ ज्या रेसाधा रा अवगुणवालावणा होसी, ल तो विकला ने जाय वतलाव ।
सेणा समदिष्टी श्रावक हुसी ते त्या विकला कन क्या रे ताइ जाव ॥
१८ ए ता भागल लूटल भिष्ट हाय बैठी त्या विकला ने मूढे विकल लगाव ।
या रा माजना[1] रा या सू प्रीत वाध न, साध साघव्या रा अवगुण बोलाव ॥
१९ वनै आछो आछो आहारखावणरे वारण भेष घारचा रा श्रावका सू मिल जाव ।
साधा म लडण आव वाजार र माहि भषधारचा रा श्रावका न साथे ल्यावें ॥
२० जाणे माधा रा आगुण वाजारमे काढू, ता राजी हाय नै म्हानै आछो वहराव ।
पिण दोनू वाजार मे पड गया फीटा जव मूढा विगाड न पाछा जाव ॥
२१ जा या सरधा यारा घट माहै हुवै ता सरधा पमाड छ त्या रा गुण गाव ।
गमयत रो माहै मीचा[2] हुव ता, त्या राअवगुणवालणी विणविघआवै ॥
२२ सुघ साधा री वैरण होय उठी वनै भेपघारघा सू प्रीत वणावै ।
भेपघारघा पिण या न जाण लीघी छै तिण सू ए पिण या मै मूढ न लगाव ॥

---

१ उा जग हा । २ अा ।

२३ कहि कहि नै कितरोयक कहुं, यां रा चाला नै चरित्र विवध प्रकार।
पिण ए साधपणा लायक नही दीसै, तिण सू काढ दीधी छै टोला रे बार॥
२४ या विगड़ायला नै ओलखावण काजे, जोट कीधी खेरवा सेहर मझार।
संवत् अठारे नै वर्ष चोपने, सावण सुध सातम नै रविवार॥

तथा पैतालीसा रा लिखत मे कह्यो —टोला माहि कदाच कर्म जोगे टोला बारै पड़ै तो साध साधविया रा अस मात्र ओगुणवाद बोलण रा त्याग छै। या री असमात्र सका पड़ै ज्यू आसता ऊतरै ज्यू बोलण रा त्याग छै। टोला सू फाड नै साथे ले जावण रा त्याग छै। उ आवै तो ही ले जावण रा त्याग छै। टोला माहै न बारै नीकले तो पिण अवगुणवाद बोलण रा त्याग छै। माहो मा मन फटै ज्यू बोलण रा त्याग छै। इम पैतालीसा रा लिखत मे कह्यो। ते भणी सासण री गुण कीर्त्तन वात करणी। भागहीण हुवै सो उतरती वात करै, सुणे ते पिण भागहीण, सुणी आचार्य नै न कहै, ते पिण भागहीण। तिण नै तीर्थंकर नो चोर कहणो, हरामखोर कहणो, तीन धिरकार देणी।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि ण पूयति, जेण जाणति तारिस॥
आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि ण गरहति, जेण जाणंति तारिस॥

इति 'दशवैकालिक मे कह्यो ते मर्यादा आज्ञा सुध आराध्या इहभव मे परभव मे कल्याण सुख हुवै।

ए हाजरी रची द्वितीय जेठ विद ७ वार शुक्र सैहर वीदासर मध्ये।

---

१ दसवेयालिय, ५/२/४५/४०

सताईसवीं हाजरी

पच समिति तीन गुप्त पच महाव्रत अखड आराधणा। ईर्य्या भापा एपणा मे साव-चेत रहिणा। आहार पाणी लेणो ते पक्की पूछा करी लेणो। सूजतो आहार पिण आगला री अभिप्राय देख न लेणो। पूजता परिठवता सावधान पणे रहिणो। मन वचन काया गुप्ति में सावचेत रहिणो। तीथकर री आना अखड आराधणी। भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धात देख न श्रद्धा आचार प्रगट कीधा—विरत धम नैं अविरत अधम। आना माह धम, आना वारै अधम। असजती रा जीवणा वछे ते राग, मरणा वछे ते द्वेष, तिरणो वछे ते वीतराग देव नो माग। तथा विविध प्रकार नी मर्यादा वाधी।

किण ही साध आय्या मे दाप देखे तो ततकाल धणी नै कहणा, तथा गुरा न कहणा, पिण ओरा न न कहिणो। घणा दिन आडा घाल न दोप बतावै ता प्राछित रो धणी उ हीज छ।

तथा सवत १८५२ र वरस आय्या रे मयादा वाधी तिण मे एहवो कह्या—किण ही साध आर्य्या मे दाप दख तो ततकाल धणी न कहणा, पिण ओर किण ही आग कहणो नही, ओर किण ही आर्य्या दाप जाण नैं सेव्या हुवै ता पाना म लिख्या विना विगै तर-कारी गाणी नही। कोइ साध-माधविया रा अवगुण काढै ता साभलण रा त्याग छै। इतरो कहिणा—'स्वामी जी न कहिजा' जिण रा परिणाम टोना माहे रहिण रा हुव ते रहिजो। पिण टोला वार हुवा पछ साधु माधविया रा आगुण वोलण रा अनत सिद्धा री साग कर न त्याग छ। वल करली-करली मरजादा बाधा त्या मे पिण ना कहिण रा अनता सिद्धा रो साख कर न त्याग छ। तथा चातीसा रे वस आर्य्यां रे मरजादा वाधी तिण म कह्यो—ग्रहस्थ कन टाला रा साध आर्य्यां री नद्या कर, तिण न घणी अजोग जाणणी। तिण नैं एक मास पाचू विग रा त्याग छ। जितरी वार कर तिण न जितरा मास पाच विग खावा रा त्याग छै। जिण आय्या गाथे भल्या तिण आर्य्यां भेली रहै अथवा आर्य्या माहो माहि भेपकाल भेली रहै। अथवा चामास भली रहै। त्या रा दाप हुव ता गाधा गू मला हुवा कह देणा। न कहै ता उतरो प्रायश्चित उण न छै। टोला सू न्यारी हुवा री वात मान तिण न चार कहिजे, मूग कहीज।

तथा पचासा रा गुणसठा रा लिगत म कह्यो—कम धका दीधा टाला सू टल तो टाला रा गाध साधविया रा हुता अणहुता अवणवाद बालण रा त्याग छ। टाला नै असाध सरधन नवी दिख्या लेव ता पिण अठीरा गाध साधव्या रा सवा धालण रा त्याग छ।

उपगरण टोला माहे करै ते परत पाना लिखे जाचै ते साथे ने जावण रा त्याग छै। नथा गुणसठा रा लिखत मे कह्यो—किण ही नै कर्न धक्को देवै तो टोला सू न्यारो पडै। अथवा टोला सू आप न्यारो थया, इण सरधा रा बाई भाई हुवै त्या रहणो नही। एक बाई भाई हुवै तिहा पिण रहिणो नही। वाटै वहतो एक रात कारण पडिया रहै तो पाचू विगै ने मू खडी खावा रा त्याग छै। अनता सिद्धा री साख कर नै त्याग छै।

तथा सवत् १८५० रे वर्स कह्यो—कोइ टोला रा साध-साधव्या मे साधपणो सरधो, आप माहि साधपणो सरधो, तिको टोला मे रहिज्यो। कोइ कपट दगा सू साधा भेलो रहै तिण नै अनता सिद्धा री आण छै। पाचू पदा री आण छै। साध नाम धराय नै, असाधा भेलो रह्या अनत ससार वधै छै। जिण रा चोखा परिणाम हुवै ते इतरी परतीत उपजाओ। किण ही साध साधव्या रा ओगुण बोल नै किण ही नै फार नै मन भाग नै खोटा सरधावण रा त्याग छै। किण ही रा परिणाम न्यारा होण रा हुवै जद ग्रहस्थ आगै पेला री परती करण रा त्याग छै। जिण रो मन रजावध हुवै चोखी तरे साधपणो पलतो जाणे तो टोला माहे रहिणो, आप मे अथवा पेला मे साधपणो जाण नै रहिणो ठागा सू माहि रहिवा रा अनता सिद्धा री साख सू पचखाण छै। इम पचासा रा लिखत मे कह्यो। ते भणी पेली तो गण मे रहै जरे अनेक विनय भक्त करे गण री रीत सर्व साचवे मर्यादा पाले अनै सासण नै दिढावे। पछै स्वार्थ अण पूगा गण सू टलै नै अनेक अवगुण आल पंपाल फरमी भापा, चलित भापा, झूठी भापा आदि अनेक झूठ बोले तो तिण री वात एक लेखा मे नही। आगै पिण वीरभाण जी तेरा माहिलो नीकल नै अनेक अवर्ण फिरमा वचन बोल्यो, तिण उपर भीखणजी स्वामी जोडी ढाल उण री कहणं री वाता घाली उण रा चिरत पिण ओलखाया ते गाथा—

१ [1]'अनता सिद्धा री साख करै नै, चेलो करण रा किया पचखाण।
ते पिण सूस भागै चेला कीधा, तिण अनत सिद्धा री भागी है आण।
तिण नै साधु किण विध सरधी जे ॥ध्रुपदं॥

२ सूस भागे नै चेला करतो नही सकै, ते तो होयग्यो निश्चे इ भागल भिष्टी।
ते तो पड गयो च्यार तीर्थ नै वारै, तिण नै किण विध साध सरवे सम दिष्टी॥

३ सगला साध भेला होय मरजाद वाधी, तिण मर्यादा मे सूस किया छै अनेक।
ते पिण सूस सगला इ भाग्या, झूठ बोले मूढ विना विवेक॥

४ सगला साध मिल नै मरजादा वाधी, ते सूस लिख्या छै पाना रे माय।
तिण लिखत हेठे सगला आखर कीधा, अनत सिद्धा री साख ठहराय॥

५ ए सूस मर्यादा भागे तिण नै, गिणवो नही च्यार तीर्थ रे माही।
वलै तिण नै नदक जाणवो च्यार तीर्थ नो, तिण नै वादे त्या नै पिण आगन्या नाही॥

---

१ लय - मेघ कु वर हाथी रा भव मे।

६ इसडा सूस कर नै पाना मे लिखिया, अनता सिद्धा री साख कर नै ताय।
ते पिण मूस सगला इ भाग्या वल जाणी जाणी बोले मूसावाय ॥
७ कद तो कहै हु लिखत मे नाहि, कदै कहै म्हे लिखत आर न कीधो।
कद कहै म्हे लिखत म आखर न कीधा, कदै कहै म्हे एक ससा कर दीधो ॥
८ कदै तो कहै म्हे लिखियो सरमासरमी, लिखत हठे अक्खर कर दीया ताय।
कदहि कहै मोने कहि न कराया, कदै कहै म्है तो लिखिया साकडे आय ॥
९ कद कहै मा सू कपटाइ दगो करै नै, लिखत हेठे आखर कराया।
कदै कहै एकला हो ता जाणी नै म्हे डरते थके आखर कीया छै ताय ॥
१० कदै कहै या रा टाला मे रह सू, तठा ताइ म्हार छ पचखाण।
कदै कहै लिखत म्हारे ताई कीधा, ए सगला इ मा उपर कीधा मडाण ॥
११ कद कहै अविना री ढाला जाडी, ते सगली ढाला मा उपर कीनी छै ताहि।
चेला नै कह्यो ठाम ठाम कहा थे, हिवै किण विध रह मू टाला र माहि ॥
१२ इत्यादिक झूठ वाले छ अनेक प्रकारे, परभव रा डर मूल न आणे लिगार।
जाणी झूठ वोले अग्यानी, खोय दियो तिण सजम भार ॥
१३ अनता सिद्धा री साख कर सूस कीधा, ते सगला सूस भागे न हुवा एक्लो।
ते होय गयो अपछदो अवनीत, तिण न साघ सरध्या किम होसी भलो ॥
१४ सुद्ध साधा न ढोला कहि कहि अग्यानी, आप भागल थको उत्कृष्टो वाजे।
तिण नै च्यारू इ तीथ साघ न जाणे, तो पिण निरलज मूल न लाज ॥
१५ ज्या नै ढीला जाणे त्या रा टोला रा भागल, त्या भागला माहै मन जावण रा कीधा।
त्या सू नरमाइ कर कह्या मो नै ल्यो थे, त्या पिण तिण नै माहै नही लीवो ॥
१६ थे कहो तो दूर करू म्हारा चेला, थे कहो तो था न परतीत उपजाउ।
थे मो न चलावा जिण रीते चालू, थे मो न माहै त्या हु था माहै आऊ ॥
१७ दोय वार गयो त्या मे जावा नै काज, जाता अनेक कास रो पेंडो कीधो।
त्या नै अनेक वार कह्यो थे मो न माहै ल्यो, तो पिण तिण नै त्या माहै न लीधा ॥
१८ ज्या नै ढीला जाणे त्या रा टाला रा भागल उत्कृष्टो प्राछित छ त्या रे माय।
त्या भागला पिण तिण नै माहै न लीघो तिण भागल री भोलान खबर न काय ॥
१९ इसडा मोटा मोटा दाप जाणी न सेव तिण भिष्टी री भोला करसी परतीत।
तिण नै साघ सरघे तिक्खुत्तो कर वादे, ते पिण चिहु गति माहै हासी घणा फजीत ॥
२० सुध साघा न मूग ढीला परूपे, पोते भारी दाप सेवण लागा।
वल कूडा-कूडा आल देता नही सके, ते ता विरत विहुणा हाय गया नागो ॥
२१ तिण भागल न ओलखावण काज जोड कीधी नेणवा सहर मभार।
समत अठारे नै वरस अडताले, महा विद अमावस न सोमवार ॥

इम अनेक भात फिरमा वचन वाले, ए जिन माग रीत छै नही। ते माटे सवत १८५० रा लिखत मे कह्या—जिण रो मन रजावध हुव चोम्वी तर साघ

पणो पलतो जाणो तो टोला मे रहिजो आप मे अथवा पेला मे साधपणो जाण नै रहिणो। ठागा सू माहै रहिवा रा अनता सिद्धा री साख सू पचखाण छै।

तथा पैतालीसा रा लिखत मे कह्यो—उण ने साधु किम जाणियै। जो एकलो होण री सरधा हुवै इसडी सरधा धार नै टोला माहै बेठो रहै म्हारी इच्छा आवसी तो माहि रहिसू, माहरी इच्छा आवसी जद एकलो रहिसू, इसडी सरधा धार नै टोला माहै बेठो रहै ते तो निश्चे इ असाध छै साधपणो सरधे तो पेहला गुणठाणा रो धणी छै। दगावाजी ठागा सू माहे रहै तिण नै माहै राखै जाण नै त्या नै पिण महादोष छै। कदाच टोला माहै—दोष जाणै तो टोला माहै रहिणो नही। एकलो होय नै सलेखणा करणी। वैगो आतमा रो सुधारो करणो। आ सरधा हुवै तो टोला माहै राखणो, गाला गोलो कर नै रहै तो उण नै न राखणो उत्तर देणो, वारै काढ देणो, पछै इ आल दे नीकलै तो किसा काम रो। तथा पैतालीसा रा लिखत मे कह्यो छै—टोला माहै पिण साधा रा मन भाग नै आप रे जिलै करै ते तो भारीकर्मो जाणवो विसासघाती जाणवो। इसडी घात पावडी करै ते तो अनत ससार री साइ छै। इण मरजादा प्रमाणे चालणी नावै तिण नै सलेखणा मडणो सिरै छै। धनै अणगार तो नव मास माहै आतमा नो किल्याण कीधो। ज्यू इण नै पिण आतमा रो सुधारो करणो। पिण अप्रतीतकारियो काम न करणो। रोगिया विचै तो सभाव रा अजोग नै माहै राख्यो भूडो छै। ते भणी पैतालीसा रा लिखत मे कह्यो टोला माहै कदाचित टोला वारै पडै तो टोला रा साध-साधविया रा अस मातर अवगुणवाद बोलण रा त्याग छै। या री अस मातर सका पडै आसता उतरै ज्यू बोलण रा त्याग छै। टोला मा सु फार नै साथै ले जावण रा त्याग छै। उ आवै तो ही ले जावण रा त्याग छै। टोला माहै न वारै नीकल्या पिण अवगुण बोलण रा त्याग छै। माहो माहि मन फटै ज्यू बोलण रा त्याग छै। इम पैतालीसा रा लिखत मे कह्यो।

ते भणी सासण री गुणोत्कीर्तन वात करणी, भागहीण हुवै सो उतरती वात करै तथा भागहीण सुणै, तथा सुणी आचार्य नै न कहै ते पिण भागहीण, तिण न तीर्थंकर नो चोर कहणो, हरामखोर कहणो, तीन धिकार देणी।

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि ण पूयंति, जेण जाणंति तारिसं॥
आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि ण गरहंति, जेण जाणंति तारिस॥

इति 'दशवैकालिक मे कह्यो ते मर्यादा आज्ञा सुध आराध्या इहभव मे परभव मे सुख कल्याण हुवै।

ए हाजरी रची सवत् १६ से १४ रा वर्स द्वितीय जेठ सुध ३ नखत्र पुष्प। वार सोम।

१ दसवेआलिय, ५/२/४५,४०

अठाईसवीं हाजरी

पाच समति तीन गुप्ति पच महाव्रत अखड आराधणा। ईर्या भाषा एषणा म सावचेत रहिणो। आहारपाणी लेणा ते पक्की पूछा करी लेणो। सूजतो आहारपाणो पिण आगना रो अभिप्राय देख लेणा। पूजता परठवता सावधानपणे रहिणो। मन वचन काया गुप्ति मे सावचेत रहिणो। तीर्थंकर नी आना अखड आराधणी। भीखणजी स्वामी सूत्र सिद्धात देख न श्रद्धा आचार प्रगट कीधा—विरत धम न अविरत अधम। आना माहे धम, आना बारे अधम। असजती रो जीवणा वछै त राग मरणो वछै ते द्वेष, तिरणा वछै ते वीतराग देव नो माग। तथा विवध प्रकार नी मयादा वाधी।

सवत १८५० रे वरस मर्यादा वाधी सव साधा र तिण म कह्या—किण ही साध आय्या मे दोष दखे तो ततकाल धणी नै कहणो अथवा गुरा नै कहणा पिण आरा न न कहणो। घणा दिना पछै आटा धाल नै दोष वताव तो प्राछित रा धणी उ हीज छै। किण नै ही क्म धक्का देवै ते टोला मू न्यारो पडै तो इण सरधा रा भाई वाई हुव तिहा रहिणा नही। एक वाई भाई हुव तिहा पिण रहिणा नही वाट वहिता रहै ता एक रात, कारण पड्या रहै तो पाचू विग सू खडी खावा रा त्याग छै।

तथा पैंतालीसा रा लिखत मे कह्या-साधा रा मन भाग नैं आप आप रे जिले करै त तो महाभारी कर्मो जाणवो। विसवासघाती जाणवा।

तथा पचासा रा लिखत म तथा रास म पिण जिला न घणा निषेध्यो। तथा पैंतालीसा रा लिखत मे कह्यो—उण न साधु किम जाणिये जा एकला हुण री सरधा हुव, इसडी सरधा धार नै टोला माहे वेठो रहै म्हारी इच्छा आवसी ता माहे रहसू, म्हारी इच्छा आवसी जद एकला हुसू। इसडी सरधा सू टोला माहै रहै ते तो निश्चइ असाध छ। साधपणा सरधे ता पला गुणठाणा रो धणी छै। दगावाजी ठागा सू माहै रहै तिण नैं माहे राख जाण न त्या न पिण महादाप छ। कदाच टाला माहे दाप जाणे ता टाला माहै रहिणो नही। एकलो हाय सलेखणा करणी वगा आतमा रा सुधारो करणो। आ सरधा हुवै ता माहे राखणा। गाला गोला कर नैं रहै तो राखणा नही, उत्तर देणा, वार काढ दणा पछै इ आल दे नीकले ता किसा काम रो। इम इत्यादिक अवनीत वेमुख न आलखाया छ अन दुष्ट आतमा रो धणी अवनीत अजाग तिण रा स्वाथ अणपूगा किचत कष्ट थी पिण टोला वार नीकली भीखणजी स्वामी री मयादा लापी सूस भागी अवणवाद वोले। निरलज नागडो होय जावै। पम उपगारी गुर सम

कित चारित्र पमायो सूत्र भणायो ते कीधो उपगार सर्व भूल नै कृतघन होय जगत मे फिट-फिट होवै ।

तथा सूयगडाग भगवती आदि सूत्रे ठाम-ठाम कह्यो—जे कोइ समण माहण कनै धर्म रूप एक वचन पिण हीया मे धारे ते पिण गुर नो उपगार जाणी नै वादै, नमस्कार करै सतकार सनमान देवै । कल्याणीक मगलीक धर्मदेव चित अहलादकारी जाणी नै त्या गुर री सेवा करै, त्या रो उपगार कदै इ भूलै नही, जिण उपर एक द्रव्ये दिष्टत—

जिम कोइ एक मानवी नै मारवा सूली हेठे आण उभो राख्यो । सूली चढावा लागा इतले एक साहूकार आव्यो । जव चोर वोल्यो—सेठजी मो नै जीवा वचाओ आप राखो, आपका हुकम मे रहिसू, आपरी चाकरी करसू, आप रो गुण कदे इ भूलू नही, कनै इत्यादिक घणी नरमाइ कीधी । जव सेठ नै अनुकपा आइ जद कला चतुराइ अकल वुध उपाय करी जीवा वचाय लियो । पोता रे कनै राखै । अनेक कला चतुराइ सीखाइ । एकदा प्रस्तावे खामी पडचा सेठ करला वचन कह्या । जव ते लूणहरामी रीस मे आय सेठ कनासू निकल्यो । चोरपली मे आय रह्यो । चोरा सू जाय मिल्यो । चोरा सू मिल नै चोरा नै साथ लेने सेठ घरे सातो देवा चोरी करवा आयो । पहिला सेठ ने खवर पड गइ हुती ते लूणहरामी चोरा सू जाय मिल्यो है । सो कदा विगाड कर उभो रहै तिण कारण सेठ पहिला हवेली रे कनै चोकी पहरायत सावधान पणे राख्या । ते चोरा सहित लूणहरामी नै पकड़ लीयो । राजा नै सूप्यो । राजादिक सर्व लोक फिट-फिट करवा लागा । देखो ! सेठ तो इण नै सूली कनाथो जीवा वचायो, ते सर्व उपगार भूल नै ज्या रो हीज विगाड करवा लागो । सेठ तो इण सू क्यूइ अवगुण कियो नही । देखो लूण-हरामी कृतघनी हरामखोर नी चाल । ज्या जीवा वचायो ज्या सू हीज उपराठो हुवो, इम सर्व कहवा लागा । पछै राजा हुकम कियो—इण कृतघ्न नै कालो मूढो करी, गधै चढाय नगर मे उद्घोपणा करो–कृतघ्नपणो कियो जिण रा ए फल भोगवै । पछै राजा हुकम थी कालो मूढो करी गधै चढाय नगर मे फेर उदघोषणा करी भूडे हवाले मारयो । जे लूणहरामी रे साथै चोर आया त्या नै पिण भूडे हवाले मारया ।

इण दृष्टते कोइ मिथ्यादृष्टी हुतो तिण नै सतगुर मिल्या । त्या समजाय समक्त्व श्रावकपणो पमाय नै साधु कीधो । नरक निगोद रा अनत दु ख मेटचा एहवो उपगार सतगुर कियो । वले तिण नै कला सिखाई ते सिप मे खामी पडचा गुरा निषेध्यो तथा तिण रो स्वार्थ अणपूगा धैप मे आयो । छानै छाने साधा कनै अवगुण वोल फटावा रो उपाय करवा लागो । तिण सरीपा इ अविनीत तिण नै साथै लेइ टोला वारै नीकले, अवर्णवाद वोले, देखो अवनीत री रीत । गुरा समकित चारित्र पमाय सिद्धात भणाय अनंता नरक निगोद रा दु ख मेटचा ते सर्व उपगार विसारे घाल, त्या रो विनो भगत करणो तो ज्या ही रह्यो अपूठो किचत स्वार्थ रे वास्ते अवगुण वोले । तिण सू गुर काइ

अवगुण क्यो, गुरा तो अमजतो रो सजतो कीया, अनत काल नरक निगोद मे रुलता अनत भूख तिरखा सीत तप्त विवध प्रकार नी मार इत्यादिक दुख नो नास नो करणहार अमालक चारित्र तिण नै पमाया। जावजीव ताइ त्या र मूहडे आगै हाथ जाड सेवा करै ता त्या मू उरण नही हुवै। गुरा ता इण सू इमो उपगार कीयो। त्या रा हीज अवगुण बोलवा लागो। देखो[1] लूणहरामी कृतघनी री नीत। टाला माहै छना तो पच पदा म नाम घाले तिखुत्ते मू वदणा कर। लोका न वदना सीखाव। तिण मे गुर का नाम घरावै गुरा की गुणा री जाड कर न सुणावे अनै टाला वारै निक्ल्या अवगुण गावै। फेर पात दड लेइ पाछो गण मे आय नै गुर रा गुण गाव। कदा फर अजागाइ देन्या वार काढे कदा कम वस आफ ही नीकले, उलठपणा कर अवगुणवाद वोले पली मूस कीया ते सव भाजे, इहलोक परलोक री सव लाज मूकी विटल हुव। तिण री वात मानणी नही सगत विलकुल करणी नही भीखणजी स्वामी राम म वरज्यो त गाथा —

१ 'ए ता अवगुण वालै अनक वुधवत न मान एक।
या नै जाणे पूरा अवनीत या री मूल नाणे परतीत ॥
२ जो अवनीत रा कर विसवास ता हुवै वाघ वीज रा नास।
च्यार तीथ सू पडिया काने त्या री वात अनानी मान ॥
३ अवनीत रा करै परसग, ता साधा सू जाये मन भग।
ए साधा नै असाघ सरधाव, झूठा झूठा अवगुण वताव ॥
४ या रो जाय न सुणे वखाण, तिण लोपी जिनवर आण।
या री तहत कहै काइ वाणी, आ दुरगति नी एलाणी ॥
५ किण रे उसभ उदै हुव आण त करै अवनीत री ताण।
त्या थूठा न साचा दे ठेहराइ त्या रे अनत मसार री साइ ॥
६ या न कहि वतलावे स्वामी तिण म जाणजा मोटी खामी।
या नै उचा करै काइ हाथ तिण रे निश्चे वधे कम सात ॥
७ या रो जाय वखाण मडावै वल और लोका न वालाव।
इमडी काइ वर दलाली, ते पिण धम सु होय जाए खाली ॥
८ या न च्यार तीय म जाणे, ता पिण पहिल गुणठाण।
या री कर कोइ पखपात, तिण र आय चूका मिथ्यात ॥
९ या सू कर अलाप सलाप, तिण र वधे चीकणा पाप।
या न वदणा कर जाडी हाथ, तिण र वगा आव मिथ्यात ॥

---

१ सप मारी साधू रो नाम छ फूली

इत्यादिक भीखणजी स्वामी रास मे कही वल और पिण समास घणो है। ते रास मे जोय लेवा। इम जाण उत्तम जीव हुवै ते अवनीत री टालाकर री निंदक री वेमुख री वेपता री कलहगारा री सगत न करया समक्ते चोखी रहै। वलै पैतालीसा रा लिखत मे कह्यो—टाला माही कदाच कम जोगे टोला वारै पडै तो साधु साधविया रा अस मात्र अवगुणवाद वोलण रा त्याग छ। या री अस मात्र सका पड आसता ऊतरे ज्यू वोलण रा त्याग छै। टोला सू फार न साथै ले जावा रा त्याग छै। उ आव तो ही ले जावण रा त्याग छै। टोला माहै न वारै नीकल्या पिण ओगुण वोलण रा त्याग छै। माहो मा मन फटै ज्यू वोलण रा त्याग छ। इम पतालीसा रा लिखत मे कह्या। ते भणी सासण री गुणोत्कीतन वात करणी। भागहीण हुवै सो उतरती वात करै, तथा भागहीण सुणे, सुणी आचाय नै न कहै ते भागहीण। तिण नै तीथकर नो चोर कहणो हरामखोर कहणो, तीन धिकार देणी।

१ आयरिए आराहइ, समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि ण पूयति, जेण जाणति तारिस॥
२ आयरिए नाराहेइ, समण यावि तारिसा।
गिहत्था वि ण गरहति, जेण जाणति तारिस॥

इति [1]'दसवैकालिक' म कह्या ते मर्यादा आज्ञा अखड आराध्या इहभव परभव मे सुख कल्याण हुवै।

---

१ दसवेआलिय ५।२।४५ ४०

परपरा नी जोड

ढाल १

दूहा

१ परपरा ना वाल वहु, गणि बुद्धिवत री थाप।
दोष नहि छै तेहम, जीत ववहार मिलाप॥
२ आगम, श्रुत, आणा, धारणा,, जीत, पचमो जोय।
ए पच ववहारे वत्तता, श्रमण आराधक होय॥
३ ठाणाग[1] ठाणे पाच म, तथा सूत्र ववहार[2]।
भगवती[3] अष्टम शतक म, अष्टमुद्देशे सार॥
४ तिण सू जीत ववहार म, दोष नहि छ कोय।
नीतिवान गणपति तणा, वाध्यो जीत सुध जोय॥
५ सुध आलोची मुनि करे, असम्यक् पिण सम्यक कहिवाय।
आचारग अध्ययनपचम, पचम उद्देशे वाय[4]॥
६ भारीमाल युवराज पद, वत्तीसे गुणसठ वास।
भिक्षु पिण ते लिखत म, भाख्या एम विमास॥
७ वोल सरधा चरचा तणा, थाम थाम पइ किणवार।
बुद्धिवत न्याय विचार नें, सचे वखाणणो सार॥
८ काइ वाल वस नहीं, ताण न करणी रच।
केवलिया नें भोलावणो, अश न करणी खच॥

तथा—

९ पैंतालीसा रा लिखत म कह्यो, कोइ श्रद्धा आचार रा बोल ताय।
सूत्र रा अथवा कल्प रा वोल तणी मन माय॥
१० कदाच[5] समझ पड नहीं, गुरु तथा भणणहार[6] वाय।
कहै तिको मानणो कह्यो, नहितो केवलिया नें दणा भलाय॥

---

१ ठाण ५।१२४
२ ववहार १०।६
३ भगवई सत ८।३०१
४ आयारो ५।९६
५ कभी
६ बुद्धिमान

११ तथा जोडकिवाड्यातणी, चौपनै कीधा स्वाम।
तिण माहै पिण थापियो, जीत ववहार सुवाम॥

"भवियण[1] जोवो रे हृदय विचारी, म करो ताण हियारी रे भ०।
ताण कीधा सू घणी खुवारी।ध्रुपद॥

कोइ कहै किवाडियो कितोएक मोटो, तिण रो सूतर[2] मे नहि उनमान[3]।
इणरो उनमान तो जीत ववहार सेती, थाप[4] करसी बुद्धिवान रे॥

हाथ सवा रे आसरै लावो नें पेहलो[5], एहवो वाच्यो उनमान।
इण वातरो निश्चो केवली जाणे, उनमान सू जाणे बुधवान॥

ज्यू साध साधवी रे पिछो[6]वरी रो, पेहली तीन हाथ उनमान।
पिण लावी रो निकाल[7] तो नहीं सूतर मे, पाच हाथ थापी बुधवान॥

ज्यू किवाडिया लावा ने पेहला री, आ पिण थापकरी छै ताम।
ते निश्चो तो केवलज्ञानी जाणै, तिण रीखाचतणो नही काम॥

[आचार्य भिक्षु कृत किवाडिया री ढाल] [गा. २१ से २४]

तथा—

सूतर माही तो मूल न वरज्यो, परंपरा मे पिण वरज्यो नाहि।
तिण सू जीत ववहार निर्दोष थाप्या री, सका म करो मन माहि॥

जो कवाडिया री सका पडै तो, सका छै ठाम-ठाम।
ते कहि कहि ने कितराएक केहू, सका रा ठिकाणा ताम॥

साधु तो हिंसा रा ठिकाणा[8] टाले, छदमस्थ तणे ववहार।
सुध ववहार चालता जीव मर जाये तो, विराधक नही छै लिगार॥

जिण जिण वोला रो निकालो[9] नही छै, ते केवलिया ने भलावो।
कवाडिया री ताण करे ने, मत कोइ झूठ लगावो॥

मोनै तो कवाड्या रो दोष न भासे, जाणे नें सुध ववहार।
जो निशक दोष कवाड्या मे जाणो, तो मत वहरजो लिगार॥

किवाड्या रो दोष कहै तिण ऊपर, जोड कीधी पादू मझार।
संवत अठारह नें वर्ष चोपने, वैसाख विद दसम ने मगलवार॥

[गा ४७ से ५२]

---

१. लय—रे भवियण सेवोरे साधु सयाणा
२ सूत्र—आगम
३ परिमाण
४ स्थापना
५ चौडा
६ चद्दर
७ निर्णय
८ स्थान
९ निर्णय

इहा भीखणजी स्वामी आपणा ववहार मे जीत ववहार थापै तिण मे दोष न कह्यो। सुध ववहारे चालताजीव मर जावै तो पिण विराधक नही, तिम सुध ववहार जाण नें थाप्यो तिण मे पिण दोष नही। अन ते जीत ववहार मे पाछला ने दोषम्यासें तो छोड दणो। आगे निर्दोष जाण नें सेव्यो त्याने दोष न कहिणो। तथा रामचरित्र रे छेहडे दूहा स्वामीजी जोडया तिहा एहवा कह्यो

दूहा

"चले परपरा नी वात ने, मिलता देखी न्यायो।
सुध जाणो तो मानजा, झूठ दीजो छिटकाय॥"

अथ इहा पिण जीत ववहार मे परपरा नी वात सुध जाणो ता मानणी कही। असुद्ध जाण्या पछै छोड दणी कही। तथा सुयगडायग श्रुतस्कध दूजो अध्ययन पाचमा म एहवा गाथा कही—

अहाकम्माणि भुजति, 'अण्णमण्णस्स कम्मुणा'।
उवलित्ते त्ति जाणिज्जा, अणुवलित्ते त्ति वा पुणा॥
एएहिं दोहिं ठाणेहिं, ववहारो ण विज्जई।
एएहिं दोहिं ठाणेहिं, अणायार विजाणए॥

[सुयगडो २ अ० ५ गाथा ८, ९]

अथ इहा पिण कह्यो—आधाकर्मी[1] पिण सुध ववहार में निर्दोष जाणी नें भागवै तो पाप कर्म करि न लिपाव। तिम आचाय बुद्धिवत साधु आपणा ववहार में निर्दोष जाणी नें जीत ववहार थाप तिण म पिण दाप न कहिणो। तथा भगवती, ठाणाग, ववहार सूत्र में पाच ववहार कह्या ते पाठ—

कतिविह ण भते! ववहारे पण्णत्ते? गोयमा! पचविह ववहारे पण्णत्ते, त जहा आगमे, सुत, आणा, धारणा, जीए।

जहा से तत्थ आगम सिया आगमेण ववहार पटठवेज्जा। णो य से तत्थ आगम सिया, जहा

---

1 साधु के निमित्त बनाया हुआ।

से तत्थ सुए सिया, सुएण ववहारं पट्ठवेज्जा।

णो य से तत्थ सुए सिया, जहा से तत्थ आणा सिया, आणाए ववहारं पट्ठवेज्जा।

णो य से तत्थ आणा सिया, जहा से तत्थ धारणा सिया, धारणाए ववहारं पट्ठवेज्जा।

णो य से तत्थ धारणा सिया, जहा से तत्थ जीए सिया, जीएणं ववहारं पट्ठवेज्जा।

इच्चेएहिं पंचहिं ववहारं पट्ठवेज्जा, तं जहा आगमेणं, सुएणं आणाए, धारणाए, जीएणं।

जहा-जहा से आगमे सुए आणा धारणा जीए तहा-तहा ववहारं पट्ठवेज्जा।

से किमाहु भंते! आगमबलिया समणा निग्गंथा?

इच्चेतं पंचविहं ववहारं जदा-जदा जहिं-जहिं 'तदा-तदा' तहिं-तहिं अणिस्सि-ओवस्सितं सम्मं ववहरमाणे समणे निग्गंथे आणाए आराहए भवइ॥

[—भगवई—सत ८।३०१, ववहारं उ०१०, ठाण ५।१२४]

इहां पांच ववहार में धारणा ववहार अनै जीत ववहार पिण कह्यो। सुध सरधा आचार वंत साधु नों बांध्यो जीत ववहार में दोष नहीं। ते जीत ववहार ना केतला एक बोल कहै छै—

दूहा

१२ जीत ववहार ना बोल नों, आखूं छूं अधिकार।
दृढ समदृष्टि निपुण ते, नाणे संक लिगार॥

१३ नित्य पिंड सुखे न वहिरणो, दूजी वार वलि देख।
उण घर जाये गोचरी, तिण मे इतो विशेष॥

१४ जीत ववहार वडा तणो, सांभलजो नर नार।
भिक्षु स्वाम तणी भली, मर्यादा सुखकार॥

ए[1] तो स्वाम वडा सुखकारी रे, भिक्षु नी बुद्धि भारी।
बांधी दृढ मर्याद उदारी रे, सूत्र न्याय अनुसारी॥ ध्रुपदं

1 लय : एतो जिन मारग रा।

१५ ठाम[1] माहि मावे नही रे, धोवण पाणी जाय।
पाछो जाय नें ल्यावणो, दाप नही छ कोय॥

१६ जे किवाड माहि हुव तो, पाछा जाय नें ल्यावे।
आछ[2]-छाछ रे वासते, दूजी वार पिण जावै॥

१७ माथादिक रे कारणे रे, पाछे कीधा पाणी।
वचियो हुवै धावता ते, पाछे ल्यावै जाणी॥

१८ धोवण दालादि तणा रे, कदाइ नो तिणवार।
रागणादिक[3] ने कारखाना रा, ल्याव वारूवार॥

१९ मुजादिक ना वचिया हुव, कारी सलादिक जाणा।
गार गावर ना पछै नीपना, वार वार जइ ल्याणा॥

२० वले गावडिया[5] गाव मे, आयण[6] निपजता जाण।
गाढा-गाढ[7] कारण तिरखा[8] रा, दूजीवार जइ आणं॥

२१ कारण पडिया रागिया, नित पिंड लवै आहारो।
जीत ववहार वीर वच देखी, अतर भम निवारो॥

२२ विपम जायगा उलघता, नित पिंड समय सुजाणो।
पिण नहि छै ए सहज विहार मे, गाढा-गाढ पिछाणो॥
"आधाकर्मी ने मोल रालीधो, नहीवहरणा'करडें काम"।
निरदोपण नें नित पिंडआहार कारणपरचालेणोकह्या ताम॥
आधाकर्मी नें माल रा लीधा, आ ता निन्चे उघाडो' असुध।
नितपिंटतोढीला"परताजाणी वरज्या, आ तीथकरा नी वुध '॥

२३ सहजे और कारण गया, गहस्थ रे घर सोय।
गहस्थ अणचित्या धामे ता ते पिण लेणा जोय॥

२४ साधु गया पहिली नीपना, त पिण पछ लेवाय।
दाल खाखरा आदि माग ले, नही लालपणा मन माया॥

---

१ पात्र
२ छाछ का गम करन क वाद उसक ऊपर नितर कर आया हुआ पानी
३ रग आदि क कारखान
४ आटिया का धान क लिए वनाया हुआ
५ छाटे गाव
६ मायकाल
७ विशप रोगादि का स्थिति
८ तृपा।
९ कठिन परिस्थिति म
१० प्रत्यक्ष
११ शिथिल

२५ मुनि गृहस्थ रे घर गयो, वहिरावता ते भूलो।
पाछोआवता ते गृहस्थवोलावै, ते पिण लेणौ सूलो[1]॥
२६ वस्त्रादिक धोवण भणी, दिशा काज कुण चेहरे[2]।
दंत-मसूरादि कारण उदक, तमाखू पिण नित वेहरे॥
२७ सुखे समाधे एक धणी नो, अन्यक्षेत्रे नित्य आहारो।
जुदो क्षेत्र चूला नो अथवा, कहिए मोड़ा[3] वारो॥
२८ इत्यादिक अनेक वोल सुध, जाणी आचार्य थापै।
जीत ववहारतास जिन आणा, बुद्धिवत नांहि उथापै॥
२९ आगम श्रुत ने आणा धारणा, जीत पचमो साधक।
पच ववहार पणे प्रवर्त्या, आज्ञा तणो आराधक॥
३० एठाणाग भगवती ववहारसूत्रे, आख्यो एम जिणदा।
तोजीत ववहार उथापै ते तो, प्रगट जैन रा जिंदा॥
३१ भिक्षु स्वाम तणी ए वाधी, उत्तम वर मर्यादो।
विमल चित आराधे सुगणा, मेटी भर्म उपाधो॥
३२ उगणीसे चवदे विद नवमी, मास वैसाख मभारो।
जय जश गणपति सपति जोड़ी, लाडणू महा सुखकारो॥
३३ समण छतीस आर्जिका वाणु, च्यार तीर्थ रगरेला।
भिक्खु भारीमाल ऋषिराय प्रतापे, गणपति सपति मेला॥
३४ प्रथम ढाल ए वोल परपर, प्रगट सरस गुण गाथा।
जय-जश जोड़ करी सुध जाणी, गणपति सम्पति साता॥

---

१ अच्छी तरह
२ रोके
३ दरवाजा।

ढाल २

दूहा

१ सूत्र तणी अपेक्षाय वहु, बोल परम्पर माय।
रहिस[1] केयक नी समय मे, केयक बोल अपेक्षाय ॥

[2]भवियणजोवोरेहृदय विचारी, पाचववहारछैसुखकारी।
शक म राखो लिगारी ॥

२ नदी नावा री आगन्या दीघी, सूत्र मे जिनराय।
तिण री अपेक्षाय पथ्वी आदि पिण, जिनआगन्या कहिवाय रे ॥

३ प्राण वीज हरी पाणी ने माटी, छते रस्ते न जाणा ते पथ।
दूजे आचारग[3] तीजे अध्ययन, प्रथम उद्देशे तत ॥

४ खाडविपमभूमिकादा न मारग छते रस्ते जाणो नाहि।
दसवकालिक पचमे अध्ययन पहिला उद्देशा माहि ॥

५ विपम कादा ने मारग साध्वी पडती ने, साधु राखे हाथ सभाय।
वहत्कल्प[5] रे छठ उद्देशे, रस्ता नही ता विपम मारग जाय।

६ वहत्कल्प[6] र पहिले उद्देश, रात्रि सज्झाय दिशा अर्थे जाणा।
दिन रा मेहुम दिशा जावारी आज्ञा रात्रि नी अपेक्षाय पिछाणो ॥

७ साधुतीनहाथचोडीपछेवडीराख, साध्वी री अपेक्षाय।
साधु रे चोडीपछेवडी रो निणय, सूत्र मे दीस नाय ॥

८ दसवैकालिक रे तीजे अध्ययने[7], मदन किया अणाचार।
अ जन वमन स्नान मूह धोया, गला हेठला केश विदार ॥

९ वृहत्कल्प[8] रे पचमे उद्देशे, कह्यो कारणे मदन करणो।
अजन वमन स्नानादिक नो, न कह्यो कारण रो निरणो ॥

---

१ रहस्य
२ लय—रे भवियण जिन आगन्या सुखकारी।
३ आयार चूला ३।६ ७
४ दसवेआलिय ५।१।४
५ कप्पसुत्त ६।७ ८
६ कप्पसुत्त १।४५
७ दसवेआलिय ३।९
८ कप्पसुत्त ५।३८ ३९।

१० तिण मर्दन री अपेक्षाय अंजन घाल्या, कारणे नही दोष लिगारो।
वलि वमन करै जहर गोली गिलिया, कारण पडिया मूह धोवै सारो ।।
११ तिण मर्दन री अपेक्षाय स्नान पिण, कारण पड्या करै साध।
गला हेठला केश पिण कापे, थया गुवडादिक नी व्याध ।।
१२ कारण पडिया सुगंध पिण सूंघे, वलि आरिसा मे मुख देखे।
कावलादिक नो छत्र पिण राखै, कारण पडिया विशेखै ।।
१३ तीन कारण वाला अतर घर[1] मे वेसै, कह्यो दशवैकालिक[2] माय।
कारण पडिया रेच पिण लेवै, कारणे दत मसी लगाय ।।
१४ वासी राख्या अणाचार कह्यो छै, ते पिण मेहादिक कारणे राखै।
कह्यो नशीथ[3] रे इग्यारमे उद्देशे, पिण मुख माहे मूल न चाखै ।।
१५ विशेष कारण नित्यपिंड आहार वहिरे, सहज रे कारण औषध नित्यपिंड।
पहिला पोहर रो छेहला पोहर तणी, तथा मर्दन अपेक्षाय सुमंड ।।
१६ कह्यो आचारंग[4] दूजे श्रुतखधे, पचमे उद्देशे माय।
उचारादिक चालता लागे, लूहे तृणादिक थी मुनिराय ।।
१७ तृण काकरा थी लूहणो चाल्यो, पिण पाणी सू धोवणो न दाख्यो।
पाणी सू धोवै ते अपेक्षा वचन थी, शुचि लेणो नशीथ मे भाख्यो।
१८ शुचि नी अपेक्षाय और जागा पिण, उचारादिक टालै पाणी लगाय।
ए पिण अपेक्षा वचन थी मानो, तिम नितपिंडादिक कहिवाय।
१९ छत्र राख्या अणाचार कह्यो छै, ते पिण कारणे राखणो भाख्यो।
ववहार[5] सूत्र रे आठमे उद्देशे, साठ वर्ष ना स्थविर ने दाख्यो।
२० विहार करता माथे ओढै तो, साधु ने दंड मासीक।
नशीथ[6] सूत्र रे तीजे उद्देशे, इकोतरमो वोल तहतीक ।।
२१ छत्र नी अपेक्षाय कारण पडिया, माथे ओढ्या नही डंड।
तिम पहिला पोहर रो चोथे पोहर चाल्यो, तिणरी अपेक्षाय नित्य पिंड ।।
२२ साठ वर्ष ना स्थविर नें कल्पे, सूता पिण गुणवी नशीत।
ववहार[7] सूत्र रे पचमुद्देशे, वे तीन वार गुणे धर पीत ।।
२३ ते नशीथ री अपेक्षा और सूत्र गुणे तो, स्थविर ने दोष न दीस।
थिवर री अपेक्षाय अशक्तिवत साधु, सूता सूत्र गुणे सुजगीस ।।

---

१ शयनागार आदि
२ दसवे आलिय ३।५,९
३ निसीहज्झयण ११।७ ९
४ आचार चूला १।५१
५ ववहार सुत्त ८।५।
६ निसीहज्झयण ३।६९
७ ववहार सुत्त ५।१८

२४ वलि गाज वीज री असभाइ कही छ, ठाणाग[1] दशमे ठाण।
पिण आद्रा नक्षत्र थी चित्रा ताइ, न गिणें जीत ववहार थी जाण ॥
२५ नव रुपिया रा दाम रो लेणो, नवमे ठाणे[2] अथ मझार।
हाथ रा पना स्यू पनरे हाथ री, पछेवडी नी ए जीत ववहार ॥
२६ मास चोमास रह्या एक क्षेत्रे, वडा लारे वलि रहिणो।
ए पिण जीत ववहार भिक्षु नो, तिण मे दोप किम कहिणो ॥
२७ वीजी ढाल माहि वोल कह्या वहु, जाणी न सुध ववहार।
उगणीमे पनरे मगमर विद आठम जय जश हृप अपार ॥

---

१ ठाण १०।२०

२ ठाण ६।३०

ढाल ३

सं० १८५० मे रूपचदजी अखैरामजी ने भीखणजी स्वामी मे १५९ दोप निकाले। उनको स्वामीजी ने लिपिवद्ध कर लिया। उन दोपो से कतिपय दोपो का जयाचार्य ने निम्नोक्त गीतिका मे निराकरण किया है। दोप सख्यानुसार गाथाओ के पहले लिखे गये है। उनकी समग्र तालिका परिशिष्ट) मे देखे।

दूहा

१ रूपचंद अखैरामजी, अठारे पचासे पेख।
गण सू टली भिक्षु मझै, काढचा दोप अनेक॥

२ केयक वोल अछता कह्या, केयक वोल निर्दोप।
जाणी भिक्षु थापिया, त्या मे कह्या अणहुता दोष॥

३ सूत्र थी तथा जीत थी, सुव ववहार सुजाण।
केयक वोल त्या माहिला, आखू उद्यम आण॥

[१. रजूहरण सूं माखी उडावेंणी नहीं]

सुव[1] ववहार सुणो भवजीवा ॥ध्रुपदं॥

४ रजोहरण ने पूजणी सेती, काम पड्या साधु माखी उडावै।
ते पिण पक्की वायु री जेणा थी, तिण माहि दोपण किण विध थावै॥

[२. सूर्य उगां विण पडिलेहण करणी नहीं]

५ चक्र दीठै छतै करै पडिलेहण, जद कीडियादिक प्रगट दृष्टि मे आवै॥
तिण वेला आहार ओपध नहि लेणो, रवि प्रगट ववहार जाणी वहिर ल्यावै॥

[४ गोचरी नीकल्यां पछै ठिकाणे आयां पेहिलां कठेइ वैसणो नही]

६ गोचरी गया ठिकाणे आया पहली, अतर घर विण वेठा दोपण नाहि।
दगवैकालिक[2] पचमा रे पहिले उद्देशै, साधु ने आहार करणो कह्यो गोचरी माहि।

[५ वायां नें थानक मे वेसण देणी नहीं।
६ वायां सूं चरचा वात करणी नहीं।

---

1 लय—आ अनुकंपा जिन आगन्या मे। 2 दसवेआलिय ५।२।८२,८३

७ वाया साह्मो जोवणो नही ।

८ वाया नें वसाणे ते आछो खावा रे अर्थ]

७ वाया ने सीखाया दोप नहिं छै, सेवा कराया पिण दोप नही छै।
नवमें शतक भगवती[1] इक्तीस मे उद्देशै, सेवा करवा वाली ने उपासका कही छै।

[९ आर्या नें थानक मे वेसाणणो नहीं ।

१० आर्या सू चरचा वात करणी नही

११ आर्या नें सूतर री वाचणी देणी नहीं ।

१२ आर्या साह्मो जोवणो नहीं ।

१३ कारण विना आर्या नें आहार देणो नही ।

१४ वतकल्प मे जावक आर्यां नें साधा रे थानक वरज्यो छ १७ वोल
इम साधु नें पिण १७ वोल आर्यां रे थानक वरज्या]

८ असझाइ मे आर्ज्या नें साधु, सूत्र वचाव कह्या ववहार[2]।
आहार भोगवणो न वेसणो चाल्यो, सातमें[3] उद्देश वहु विस्तार ॥

९ वहत्कल्प मे सतरे वाल वर्ज्या, ते विकट[4] वेला अथ माहि पिछाणो।
ववहार पाठ में आगन्या दीधी, तिण सू विकट वेला रो अथ सुध जाणो ॥

१० सतरे वोला मे ऊभी रहिणी पिण वर्जी ते विकट वला सध्या पडघा कहाय।
तिण वेला सभाय आहार न कल्पे, सलग्न सतरे वोल कह्या जिनराय ॥

११ ऊभो रहिवो[1] वेसवा[2] सूयवा[3], निद्रा विशप निद्रा[4] चिहु आहार।
वडी[5] लघु नीत[6] वलखा[7] सेडा[8] परठवो, सझाय[9] ध्यान[10] काउसग्ग[11] पडिमा[12]
विचार ॥

१२ विकट वेला सतरे वोल न करणा विकट वेला विण दोपण नाय।
केयक वोला री आना पाठ मे, केयक वाल त्यारी अपेक्षाय ॥

१३ साधु रे स्थानक साध्वी आहार भागव, ए पिण ववहार सातमा[6] उद्देशा माय।
ते ऊभी रह्या विण आहार करे किम, विकटवेला रो अथ साचा इण न्याय ॥

१४ दशाश्रुतस्कध[7] दसमे अध्ययन, श्री वीर तणा समोसरण मझार।
साघ साधविया नियाणा कीघा, त्याने श्री जिनसुध किया तिणवार॥

---

१ भगवई ३१।६
२ ववहार सुत्त ७।१६
३ ववहार सुत्त ७।३
४ कप्पसुत्त
५ सूर्यास्त के वाद
६ ववहार सुत्त ७।३
७ दसासुयक्खधो १०।२२ ३४

१५ आर्ज्या ने आहार देणो पिण चाल्यो, चोथे ठाणे[1] दूजा उद्देशा माय।
ऊभो रह्या विण आहार दीयै किम, विकट वेला रो अर्थ साचो इणन्याय ।।
१६ साधु ने सभोगी[2] कह्या छै, सातमे उद्देशै सूत्र ववहार।
आहार माहोमा देवै लेवै ते सयोगी, ऊभो रह्या विण किम लियै-दियैआहार ।।
१७ आर्या ने दिक्षा देणी पिण चाली, प्रायश्चित देइ ने सुध पिण करणी।
ववहार सूत्र रे सातमे उद्देशै, ऊभो न रहणो तो दडदीक्षा किमवरणी।।
१८ पेहला छेहला पोहर विण ओर काल मे, सूत्र कालिक री नकरणी सझाय।
साधु री नेश्राय आर्या ने कल्पै, सातमो उद्देशो ववहार[3] माय ।।
१९ आर्या रे स्थानक साधु जाये तो, खखारादिक किया विणनही जाणो।
सूत्र नशीथ[4] उद्देशे चोथे तिण सू, विकट वेला रो अर्थ सुध पिछाणो।।
२० असझाइ साधु रे तथा साध्वी रे, ववहारे[5] कह्यो वाचणी देणी माहोमाय।
ऊभो रह्या विण वाचणी किम देवै, विकटवेला रो अर्थ मिलतो इण न्याय ।।
२१ साधु रे स्थानके साध्वी ने वेसणो, ए पिण ववहार सातमा उद्देशा माय।
ते उभो रह्या विन किम दिने वेसणो, विकट वेला रो अर्थ साचो इणन्याय ।।
२२ उदक तीर साधु साध्विया ने, ए सतरे बोल वरज्या जिनराय।
वृहत्कल्प[6] रे पहिले उद्देशै, एतीर पाणी स्यू निकट कहिवाय।।
२३ उदक तीर ऊभो रहणो कह्यो छै, आचारग[7] तीजे अध्ययन रे दूजे उद्देश।
ए तीर पाणी सू दूर जाणवो, दूजे आचारग पाठ मे रेस।।
२४ तिम सतरह बोल साधु रे स्थानक समणी ने, वर्ज्या ते विकट वेला आसरी जाण।
सझाय वेसण ने आहार नी आज्ञा, अविकट वेला रो पाठ पिछाण ।।

[१५. रातरी आर्या नें नेरी उतारे]

२५ आर्या साधा सू नेडी उतरे, तिण माहे दोष कहे छै अजाण।
ते किण ही सूत्र माही वर्ज्यो नही छै, पिण ऊधमती करे उलटी ताण।।
२६ एकण जायगा कारण विण रात्रि न रहणो, पिण नेडी अलगी रो न दाख्यो वैणो।
पाच कारण सू रात्रि पिण भेलो रहणो, पाचमे ठाणे[8] दूजे उद्देशै जोय लेणो ।।
२७ दिन रा साधु रे स्थानक आर्या ने, सुखे आहार वेसण री आज्ञा दीधी।
तिण मांहि दोष परुप्यो अज्ञानी, तिण प्रत्यक्ष खाच गला मे लीधी ।।

---

१ ठाण २।२७४
२ ववहार सुत्त ७।३
३ ववहार सुत्त ७।१६
४ निसीहज्झयण ४।२२
५. ववहार सुत्त ७।१९
६. कप्पसुत्त १।१६
७ आयारचूला ३।३७
८ ठाण ४।१०७

२८ ए सूत्र ना वचन उथापे अनानी, पाठ रो न्याय न जाणे अघा।
त्यानें सूत्र शस्त्रपणें प्रणम्या, त्रिगडायन्त जैन तणा जे जिंदा॥
२९ कहै आर्यां रा सग परचो कीधा, स्नेह भाव कम वधन रा टाणो[1]।
तिणर लेखे आहार विगय भोगव साध, इहा पिण लालपणा रीलहर रा ठिकाणो।
३० वले माँहि वहुमोला कल्पता वस्त्र भोगविया ममता री ठिकाणो।
तिणरे लेखे वस्त्र पिण न भोगवणा, भोगवे ता पातारी भाया रा अजाणो॥
३१ राग भाव ममत लालपणा री, लहर आवे तिण री नही थाप।
ते तो छै सव आलोवण खाते, पिण ते काय री आज्ञा दीधी जिन आप॥

[१६ रातरी वाया नें थानक मे वसारे (नाय दुवारे)]

३२ रात्रि समय वाया[2] थानक माहि, दूजे खड रही सुणे वखाण।
तिण माहि दाप साधु न न लागे, एक खड रह्या पहिली वाडरी हाण॥

[गृहस्थ साथे विहार कर]

३३ गहस्थ साधु नें प हुचावण आव, अथवा दाम दिया विन अन्य पठावे।
तिण रो साधु नें दाप न लागे, सावद्य आमना[3] नाहि जणावे।
३४ फलाणे[4] गाम जाणा छ म्हारे, काई जाता हुवें ता साथ बतावा।
जद गृहस्थ पाते आव तथा मेल दूजा नें निज कुशल वछै पिण सावद्य रा नहि भावो॥
३५ आदमी नें थे दरमण करावा, इम नहि वोलणो सावद्य वायो।
तिण रा मावद्य चालणा तो वछ, निजकुशलवछ भाखा सुमति जणायो॥
३६ भापा सुमति स्यू वीर प्रभु जिण, न्यातीला ने सीख दीधी विख्यात।
आचारग[5] दूजे श्रुतस्कधे, पनरमाध्ययन माहि कहि वात॥
३७ काल किया भापा सुमति स्यू साधु, स्वजनादि गहस्थ भणी जणाय।
छठ[6] ठाण कह्या-आना न उलघ, औरभापा समिति पिण तेहनी अपेक्षाय॥
३८ गही नें सप खाधा कोइ झाडा देव छ, मुनि पिण जाय राख तिहा काय।
ववहार[7] सूत्र रे पाचमे उद्देगे, निजकुशलवाछै पिण झाडो वछ नाय॥

[२२ गृहस्थ साथे गोचरी जाए।
२३ गृहस्थ जागा जोव।]

---

१ अवसर।
२ वहनें।
३ आना।
४ अमुक।
५ आयार चूला १५।३४
६ ठाण ६।३
७ ववहार सुत्त ५।२१

२४. गृहस्थ आय ने जागा बतावै ।

२५. गृहस्थ आय ने कहै अमकडियै घर अनादिक छै]

३९ गोचरी रा घर पूछ्या गृहस्थ ने, साथे आय गृहस्थ घर बतावे ।
उतरवा री जायगा देख आय उतारे, तिण माहि दोष साधु ने न थावे ॥

४० गृहस्थ घरा माहि देख आवी कहै, अमकडिया घर असणादि पाणी ।
साधु वहिरे सुध भिक्षा वछी, सावद्य गमन न वछै जाणी ॥

[२६. रोगीया ने निर्तपिड न लेणो ।

२७ खेतसीजी रे आथण रा तीन च्यार दिस दाल ने जाता ।

२८. रोगी रै वासते आण्यो ते वधै तो बीजा नै खाणो नही ।

२९. छते पाणी रोगीया रे खातर निर्तपिड ल्यावै]

४१ रोगी अर्थे नितपिंड पिण लेणो, दालादि अर्थं बहु दिशि जावै ।
काइ चरकी फीकी कठै मिलै ते कारण, पिण बीजा अर्थं जाणी अधिक न ल्यावै ॥

४२ रोगी अर्थे नितपिंड आण्यो, बधे तो बीजा ने करणो आहार ।
तिण माहे दोष कोइ मत जाणो, बीजा अर्थं तो जाणी न ल्यावै लिगार ।

[३१. पातरा रंगणा नही ।

३२. रोगन लगावणो नही ।

३३. सुगंध रो दुगंध करणो नही ।

३४. सुवर्ण रो दुवर्ण करणो नही ।

३५. हींगलू धोवणो नहीं]

४३ तीन पुसली[1] उपरत तेलादिक, अथवा वर्ण इम जाणो विशेष ।
पात्रा रें लगाया डड चोमासी, नशीथ[2] सूत्र रे चउदमे उद्देश ॥

४४ वर्ण रे कहिवे रंग पिण आयो, रोगान परपरा थी जाणो ।
ते पात्रा रे लगावै नै वासी राखै, तिण माहि दोष कोइ मत माणो ॥

४५ ममता सू लेप लगावणो नाहि, फाटवादि कारण थी रग लगावै ।
ते तीन पुसली उपरत वर्ज्यो छै, नशीथ चवदमे उद्देश कहावे ॥

[३६. आर्या नें मेली पछेवरी देणी नही]

४६ साधु आर्या ने देवै ओढी पछेवडी, ते धोया विन भोगवणी नाहि ।
साधु माहो माहि देवै ने लेवै, ते पछेवडी धोवणी नहि काइ ॥

---

१ चुलू । २ निसीहज्झयण १४।१४,१५, १८, १९

[३८ पडला रे बदले कपडो राखे]

४७ पडला[1] रे बदले कपडो राखै, ते कारण विन ओढणा नाहि।
कप घटया ततु दुलभ जाण तो आढया पहिरया दोष न दीसै काइ।

[३९ स्याही उघाडी मुकाव]

४८ स्याही उघाडी मूकाव तावडै इमहिज हिंगलू नें पिण जाणा।
माछरादिक नी जो जाण अजयणा जद ता न मेल उघाडी पिछाणा॥

[४० सुधिया पडिलेहण करै]

४९ चाया पोहर लाग्या करणा पडिलहण, चक्र सूय जठा ताइ ववहार।
अछाया पिण लागती नहीं दीस रवि अदष्ट पिण तप्त पुदगल तिणवार॥

[४१ सुधिया पडिक्कमणो करै]

५० रत्रि अघ विच म पाणी नही पीणा, तठा पछ तुरत माड पडिक्कमणा।
तिण माहि पिण दोष मूल न दीस मुहूर्त रात्रि गया ताइ करणो॥

५१ दिवस रात्रि नें विचालै पडिक्कमणु करणा ए उत्कृष्ट पणा कहिवाय।
अनुयोगद्वार[2] म पाठ उघाडा, तिण रा वृद्धिवत जाणै न्याय॥

५२ अर्धविच पडिक्कमणा माड, ए उत्कृष्ट भागे छै ताय।
इमहिज सूय उग जठा ताइ पडिक्कमणा कीधा दोषण नाय।

५३ एक मुहूर्त रात्रि पाछली हूवै जद पडिक्कमणा माड्या दोषण नाय।
शीघ्र क्रिया रात्रि रहै थाक्ती[3] तिण म पिण दोष नहि जणाय॥

५४ इमहिज रात्रि पाव घडी गया सू पडिक्कमणा माड्या दोष न कोय।
मुहूर्त रात्रि ताई कर मपूरण, तिण माह दोष किसो पर होय॥

५५ पहिला मुहुत न छेहला मुहूर्त, रात्रि ना, ए ता छै काल पडिक्कमणा रा ताय।
तिण वेला पडिक्कमणो किया दोष नहीं छ ओर सूतर नी न करणी सज्झाय॥

५६ प्रथम चरम पाहर रा पगा सू छाया मापा कह्या छ उत्तराध्ययन माय।
विचला दोय पोहर रा काल होय जितरा पहिला छेहला पाहर रा पिण
इतरा कहिवाय॥

५७ ज्या लग सूय दृष्टि आव काल जितरा, पहिलो छहला पाहर जा आछा जाणा।
सूय अदष्ट इतरा काल दिवस छ तिणस्यू दिन रात्रि मध्य पडिक्कमणा ठाणो॥

५८ रवि कार दवी जाणी पाणी न पीणो ए पिण जाणज्या सुध ववहार।
पिण अपकाय री अजयणा न दीसे पडिक्कमणा पिण माड्या नहीं दोष लिगार॥

---

१ बिछौने के ऊपर बिछाया जाने वाला वस्त्र।
२ अनुओगद्दार सूत्र २८ गा २।
३ अवशिष्ट
४ उत्तरज्झयणाणि २६ १ ।।१८

[४२ पडिलेहण करे जठा तांइ जावक वोलणो नहीं ।
४३ गोचरी सूं आयां पछै सझाय करणी]

५९ उपधि पडिलेहता वोलणो नही छै, थभी वोल्या नहि दोप लिगार।
गोचरी स्यू आवी जघन्य[1] सभाय करने, सुखे समाधे करणो आहार ।।

[४४. पाहर पोहर री च्यार। काल री सझाय करणी]

६० पहिले छेहले पोहर दिवस रात्रि मे, जघन्य सभाय पाच गाथा[2] नी ताय।
उपयोग सहित करणी सुखे समाधे, राई पडिकमणो चउवीसत्थो सभाय ।।

[४५. पोहर सूं इधिकी नींद लेणी नहीं इधिकी लेवे तो अठारै पाप रो सेवणहार छै। माठा माठा सुपना आवै पांच वैरी जागै छै]

६१ आहार किया पहिला दिन रा मूड ने, सुखे निद्रा लिया दोष नही छै।
जीमी सुखे सूइ निद्रा न लेणी, वाल वृद्ध रोगी री वात न्यारी कही छै।
६२ इमहिज पोहर रात्रि ताइ जाणो आचारग तीजा अध्ययन पहिले उद्देशे।
टीका मे कह्यो आचार्य री आज्ञा सू, दूजा पोहर सू नीद लेणी ए रेस ।।

[४८. खंडिया धोवण ने नित पांणी ल्यावै ।
४९. स्याही रै खातर पाणी ल्यावै वधै ते पीयै ते नित (नितपिंड)]

६३ खंडीया धोवण पाणी नित्य ल्यावे, स्याही आदि निमित्त नित्य ल्यावे।
'लेई' करवा निमित रोटी पिण ल्यावैं, तिण माही दोप कह्यो किम थावै ।।
६४ सेज्यातर पिंड ग्रह्या डड भाख्यो, सेज्यातर पिंड भोगविया पिण दड।
नशीथ[3] सूत्र रे उद्देशे वीजे, प्रगट वे पाठ कह्या छै अखड ।।
६५ राजपिंड ग्रह्या प्रायश्चित कह्यो छै, राजपिंड भोगविया पिण दड।
नशीथ[4] सूत्र रे उद्देशे नवमे, इण रा पिण वे पाठ कह्या छै अखंड ।।
६६. नितपिंड भोगविया प्रायश्चित कह्यो छै, नितपिंड ग्रह्या दड न दाख्यो ।।
नशीथ[5] सूत्र रे उद्देशे दूजै, पाठ एक श्री जिनवर भाख्यो ।।
६७ सेज्यातर रा दोय पाठ कह्या छै, राजपिंड ना पिण पाठ छै दोय।
नितपिंड रो एक पाठ कह्यो छै, तिण सू धोवादिक कारणे ग्रहणो सोय।

१ कम से कम
२ वत्तोस अक्षरो का एक गाथा होता है
३ निसीहज्झयण २।४५, ४६
४ निसीहज्झयण ९।१,२
५ निसीहज्झयण २।३१-३५

[५४ पातरो कपडो कारण पडिया पिण दोड मास सु इधिको राखणो नहीं]

६८ साधु जो वस्त्र आप रे निमत्तें, दोड मास स्यू अधिको न राखे।
नशीय[1] सूत्र रे पहिले उद्देशे, और साधु काज राख्या दोप कुण दाखे।

६९ प्रमाण थी अधिक पात्र अलगी दूर थी, आणणो आचार्यादिक रे काज।
तिण माह आहार भोगवणा चाल्या छै, ववहार[2] आठमे उद्देशे समाज ॥

७० तीन तीन पात्रा पोता रा कल्प मे, कोइ फूटो तथा रग लगाया।
कल्प मे घट जितरे पात्र भागवणो, तिण मू भोगवणा कह्या दिसे जिनरायो ॥

[५५ कोइ नवो दिख्या ले तिणरै वास्ते पिण न राखणो]

७१ नवो दिक्षा कोइ लेणहार छै, तिण रे अर्थे पिण दोड मास उपरत।
वस्त्र पात्र जा अधिको राखे, तिण मे पिण दोप न कहे मतिवत ॥

७२ आचार्यादिक अर्थवस्त्र पात्र आणें, गणी पिण साधु साध्विया काज।
दशन करवा आवै त्यार अर्थे, दाड मास सू अधिक राख सुख काज।

[५६ दिख्या ले तिणरे रोगान हींगल बधै तो लेणो नहीं, इधिको लेवै छ]

७३ दीक्षा ले तिण र काजे माल लेवै, वस्त्र पात्र रग रोगान।
बीजा साधु अर्थे माल लेव ता, ते नहीं बहिरे मत सुजान ॥

७४ दीक्षा वाला अर्थे वस्त्र पात्रादिक, दिक्षा लिया पछे जे माल लीधा।
ते पिण कल्प नही मुनिवर नें पहिला माल लिया कल्प छै सीधा।

[६० जिण मे जाणपणों थोडो तिण नें दिख्या दै]

७५ जाणपणा सिखाय ने दीक्षा दणी सक्षेप रुचि सम्यक्त कही सार।
अठावीसमे उत्तराध्ययन[3] मे आख्यो, तिण माह दाप म जाणो लिगार।

७६ स्वाम भिग्गु विस्तार रुचि नी, सम्यक्त साल कला जोड कीधी।
द्रव्य क्षेत्र काल भाव निक्षेपा, जाण्या विस्तार रुचि प्रसिद्धी ॥

[५८ केलू री जायगा मे चोमासो कर।
६५ थान आखों राखै।
६६ विना फारया राखै]

७७ केलू री जायगा चोमासा कीधा तिण मे पिण दाप काइ मत जाणो।
देश बाड फाडया आखो थान नाहि, ए पिण न्याय हिया म पिछाणा ॥

[६७ चिलमिलि राख]

७८ वे तीन साधा म एक चिरमली, च्यार पाचा म चिरमनी दाय।
छ सात साधा मे तीन चिरमली, इम अनुक्रम राखणी अवलोय ॥

१ निसीहज्झयण १।५४
२ ववहार—सुत्त ८।१६ पाठातर
३ उत्तराज्झयणाणि २८।२६

७९ तीन च्यार पाँच साध्वियां मे, एक चिरमली ने उर्यां एक।
छ सात आठा मे दोय राखणा इम अनुक्रमे जाणो सुविवेक॥
८० चिरमली रे वदले ततु राखे, ते गणि विण पहिराणो ओढणो नाय।
गणी आणा कारण री वात न्यारी, तथा कल्पघटचा दुलभ जाणी ने ताय॥
८१ चिरमली रा कल्प रो ततु न पहिरणो, सूत्र मे इम चाल्यो नाय।
तिण स्यू गणी गणपति नी आज्ञा स्यू, भोगव्या दोप न दीसे काय॥
८२ चिरमली रा कल्प मे ततु राख्यो, ते भोगवे गणी तथा गणी नी आण।
एक चोलपटो तीन पछेवड़ी उपरंत, एक साथै नही भोगवै जाण॥

[६८ पाणी ठारै]

८३ ठारणीया[1] स्यू पाणी ठारे जयणा स्यू, ए पिण भिक्षु नो जीत ववहार।
तिण माहे दोप कोइ मत जाणो, रक्तानादिक[2] रा कल्पगे ठारणीयांमार॥

[६९ ऊची जायगा रहे]

८४ पगथ्या[3] री नाल ऊची जायगा रहिणो, निसरणी वाली अतलिख न रहिणो।
तिणजायगा तो रहिणो वर्ज्यो आचारग[4]मे, वली अतलिख जायगा रो आहार न लेणो॥

[७० सेज्यातर भोगवै]

८५ जे साधु जेहनी जायगा रात्रि सूवे छै, तिण घर रो ते साधु ने नही लेणो आहार।
वीजी जायगा सूवे ने साधु वेहरी लेवे, तिण मे दोप नही छै लिगार॥
८५ दोय हाटा जोडे[5] दोय धणी री, आमा-सामा साधु सूवे नित्य जोय।
तो वेहु घर टालण रो काम नही छै, जायगा छोड्या सेज्यातर[6] नही छै कोय।
८७ नित प्रते सूवे ते सेज्यातर रो, अजाणे वहिरचा भोगव्या दड आवै।
जायगा छोडण रो काम नही छै, वहिरचा पछै जाणे तो एकत परठावै॥
८८ वारह प्रकार रो परठणो चाल्यो, सेज्यातर पिंड कह्यो तिण माह्यो॥
अजाणे वहिरचा पछै खवर पडे तो, आहार परठे पिण जायगा छोडे किण न्यायो॥
८९ अजाणे आहार सेज्यातर रो वहिरचो, जायगा छोडवा री धारी भोगवै आहार।
तो पिण अजाण रो प्रायश्चित आवै, जायगा न छोडे तो परठणो सुविचार॥

---

१ जल को ठडा करने के लिए पात्र पर लगाया जाने वाला वस्त्र।
२ जल पात्र को ढकने का वस्त्र।
३ पेंडिया।
४ आयारचूला १।८७, ८८
५ पास-पास।
६ जिसके मकान मे रात्रिवास हो उसे शय्यातर कहा जाता है।

[७८ आर्या वेठा मात्रा करै]

९० पचमी सुमति तणा ज काय, साधु कर आर्या रे ठिकाण।
आया कर साधु रे स्थानक, तीजी सुमति ज्यू पचमी जाणे॥

९१ गवषणा[1] ग्रहणा[2] भोगपणा[3], ए तीन भेद तीजी सुमति रा ताय।
साधु रे स्थान समणी आहार भोगवे, तिम हिज पचमी सुमति जणाय॥

[८० मायो डाक ने चालै]

९२ दिशा गोचरी न विहार करता कारण विन माथा आटी नहीं चाले।
व्यावच कीधा कराया निजरा, दशाश्रुतस्कध सपदा सुगुण निहाले॥

[८७ कवाडी रो आहार लै]

९३ सुध ववहार किवाडया करा, खोलाय न वहिरया दोषण नाहि।
पवन ओषधि अर्थे खोल जयणा स, पातरी बारी पिण खोले दिन निशि माहि॥

[९२ मेह वरस रह्या तुरत उठ]

९४ मेह बरसे ठेहड धीमा पडे छ कायक बूद पड पछ थभे।
तिण सू मेह वष रह्या तुरत उठ छ सुध ववहार जाणी अवलवे॥

[९३ फुहरा (परठ)]

९५ फुहारो एकत जयणा सू परठ प्रथम उद्देशा आचारग[6] माय।
प्रत्यक्ष दृष्टि आव पाणी म वृम निजरा दर्शी न लीय मुनिराय॥

[९४ गुठली आवा री आवली री परठै]

९६ गुठली आवारी नें आवली केरी बहु आहार सहित वहिरया दोष नाहि।
घणा न्हाखणा पडे थोडा खाणा पड ता त आहार वर्ज्यो आचारग माहि॥

[९६ आमना जणाव सामाचार री]

९७ सावद्य आमना नाहि जणाव, पूछया रा जाव सुध निरवद दव।
असमकडिया पासे थे दीक्षा लेवा, आशाच्चा केवली[8] पिण इम कहव॥

[१०० घणा साध साधवी भेला रहै]

९८ घणा साधु साध्वी रह भला तिण म, दोष कहे त मूड वाला।
पूछो निसक जाणी सुध लेणा, दशवकालिक पाचम अध्ययन सभाला॥

---

१ प्रारम्भिक खोज।
२ भाजन में [illegible] ग्रहण करना [illegible] जाए।
३ भाजन आदि के [illegible] म [illegible]।
४ दशाश्रुतस्कन्ध ४[illegible]३
५ पाला म [illegible] सूक्ष्म [illegible] जाए।
६ आचाराग सूत्र १।१।
७ आचाराग सूत्र १।१[illegible]३ १[illegible]४।
८ [illegible] ग पम श्रवण [illegible] बिना ही सहज
[illegible] ग [illegible] ज्ञान प्राप्त [illegible]वान।
९ दशवैकालिक ५ १।१६

९९ घणा सत भेला रह्या दोप वतावे, ते कर रह्या मूर्ख कूडी रुढो।
अणहुतो दोप परुपै अज्ञानी, वूडो रे वूडो निकेवल वूडो॥
१०० घणा साधु -साध्वी रहे गुरु पासे, ते तो अधिक वैरागी अमूलो।
तिण माहे दोप कहै कोई मूर्ख, ते भूलो रे भूलो निकेवल भूलो॥
१०१ घणा साधु-साध्वी रहै गुरु पासे, त्या अधिक जीम्या वस कीधी अपूठी।
उत्कृष्ट गुण ने अवगुण थापे, त्यारी फूटी रे फूटी अभ्यतर फूटी॥
१०२ दोय कोस ताइ करे गोचरी, शीत उष्ण कष्ट सहे अपूठो।
तिण निर्जरा धर्म नें अधर्म थापे, ते झूठो रे झूठो निकेवल झूठो॥
१०३ आधाकर्मी आदि रो नाम लेइ ने, दोप कहे मूढ विना विचारो।
पूछी निसकपणे लिया मुनि ने, दोप न लागे मूल लिगारो॥
१०४ घणां भेला रह्या में दोप वतावै, विवेक रो विकल धर्म रो वेखी।
लोलपी के कष्ट खमणो दुर्लभ तसु, प्रकृति रोगी के उलठ[१] विशेखी॥
१०५ गुरु छदे रह्या शीख सुमति वृद्धि हुवै, निर्मल चरण नी धारण होवे।
प्रकृति वश हुवे नित्य गुरु वच सुण, ए प्रत्यक्ष गुण नें तो मूढ न जोवे॥
१०६ वाणी सुणी ने केइ सल्य काढे, दोप निर्दोप वहु वोल धारे।
सपति गणि नी वलि सारण वारण, इत्यादि गुण ते मूढ क्यू न विचारे॥
१०७ द्रव्य क्षेत्र काल भाव जाणे, आचारज अवसर देख घणा भेला राखे।
अवसर देखे तो अल्प ठाणें रहे, पिण मूर्ख विच मे पडी काइ चाखे॥

[१०१ चिणा रा होला नै सेक्या मकीया रा कण लै।
१०३ गोघूंदा मे ओपद री लकरी वासी राखी।
१०६ पाछली रात रा पग मात्रा सू छाटै चोपडै]

१०८ चणा रा होला मकिया रा कण लेणा, शरीर रे राख मसले निशि माहि।
रात्रि लघु नीत स्यू कर धोवे, तप्त मिटावा ने तन रे पिण लगाहि॥

[१०७ डावडो पडेला आमना जणाइ खेतसीजी]

१०९ ऊची जायगा साधु उतरिया, डावडा[२] ने कहै या नही रहणो।
ते पिण हेला निंदा टालवा काजै, तिणरो जीवणो वछी न वोलणो वेणो॥

[११० लिखत करावणौ नही]

११० लिखत करावै ते दृढ मर्यादा, तिण माहे दोष कहै ते अयाण।
आचार्य नी आणा धारणा वर्तवो, प्रथम उद्देशे पंचमे ठाण[३]॥

१ उद्दड
२ छोटा वच्चा
३ ठाण ५।१६७

१११ आचार्य ने दष्टि चित्त केडे वर्तवु, सर्व कार्य म आगल तसु करणा।
प्रथम आचारग[1] पचमध्ययनें, चोथा उद्देशा माहि ए निरणा।।

[११३ कपडो विना पडिलेह्या न वेहरणो।

११६ आर्या रे कपडो कह्यो ज्यू पनों राखणो इत्यादिक घणा कह्या]

११२ कपडो जाचे ते उपर स्यू पडिलेहणा, आया रे पछेवडी च्यार।
तीन हाथ रा पना री च्यारू, राख्या मे दाप न दीसे लिगार।।

[१२० आहार किती वार री मरजादा नहीं]

११३ आहार किती वार करणो साधु ने, वृहतकल्प[2] रे पचम उद्देशे न्याय।
सूय उग्या थी वृत्ति आहार री, आयम्या सुधी कही जिनराय।।

[१२१ आहार नें घी सू चूरे तो सवाद आवे।

१२२ कोरी रोटी न भावे तो तरकारी ल्याव।

१२३ दूध सू रोटी मसलणी नहीं]

११४ रोटी घी स्यू चूरे तथा दूध म मसले, सहजे खाड आया घाले खीर रे माय।
कारण विना विगय तरकारी, मागी नें नही ल्याव ऋषिराय।।

[१२४ किवाड जडे जठे रहै]

११५ किवाड जडे तठे साधु रह ता लघु वडी नीत री जायगा माहि हाय।
तो साधु न दोष काइ मत जाणा, मुनि किंवाड जडे उघाडे नही कोय।।

[१२८ दोय साधा नें न रहिणो चौमासा माहै।

१२९ तीन आर्या नें रहिणो चोमासा माहै।

१३४ नसीत वाच्या विना चौमासो कर]

११६ दाय साधु तीन आया न, सेसे काल चोमासे कल्प ताम।
नशीथ वाच्या विन मत सत्या नें, दायरात्रिउपरतनही रहणो एकणगाम।।

[१३० आर्या ने आडो न जडणो क्वाड]

११७ तालो किवाड जयणा सू गोलाया, आया उतर अवलोय।
पोत पिण खोनें तो दाप नही छ, कूची असूजती न मगावणी कोय।।

११८ साधु पिण साधविया रे काजे, ताला खोले ता दाप न कहणो।
शील रा कारण श्रमणी किवाड जड छ, कवाडनहुवता पछेवडी बांधी न रहणो।।

[१३८ गाम मे धोवण पाणी वहिर नें विहार कीधा पाछो आय तो त्यारो वेहरणो नहीं]

१ आयारा ५।६८ २ कप्पसुत्त ५।६

११९ धोवण पाणी वहिरी विहार कीधो छै, पूठा आवे तो ने घर रो आहार।
पछे नीपनो ते पिण लेवे, दूजे दिन आया तो नहीं लेणो लिगार॥
१२० विहार करता आहार पाणी लेवे छै, असूझतो घर हुवै तिणवार।
पाछो आवे तो ते घर रो न लेणो, बुद्धिवंत न्याय मूं लीज्यो विचार॥
१२१ रात्रि साधु सती जे ग्राम रह्या छै, आहार वहिरचा तथा अणवहिरचा सोय।
पर गाम गोचरी जइ पाछा आवे तो, पाछे रह्या री रीत ज्यूं यारी पिण होय॥
[१३९ ईर्या जोवतो वहरावण आयो पाछो जातो अजंणा करे तो वहिरणो नहीं]
१२२ ईर्या जोवता वहिरावण आयो, पाछो जावता जो करे अजयणा।
तिण ने असूझतो हुवो किम कहिजे, वहिरावता अजयणा करे तो नहीं लेणा॥
१२३ रुपचंदजी ने अखेरामजी, स्वामी भीखणजी मे काढ्या दोप।
त्यां माहिला वहु बोला रो उत्तर, सांभल धारज्यो आण संतोप॥
१२४ स्वाम भिक्षु दोया ने समझावी, प्रायश्चित देइ लिया गण माय।
यां मांहिला कोई दोप वतावे, ते विवेक रा विकल कहीजे ताय॥
१२५ सुध ववहार नी ढाल तीजी ए, भिक्षु भारीमाल ऋपिराय प्रसाद।
उगणीसे पनरे तीज सुद मगसर, जय जश गणपति नपति लाध॥

ढाल ४

दोहा

१ बाल गोचरी ना हिवे, आखू छू अधिकार ।
छदमस्थ ना ववहार मे सुध जाण किया अगीकार ॥

२ सुध जाणो ता सेवज्यो, ए गणपति आणा ताय ।
असुध जाणी कोई बोल ने तो दीज्यो छिटकाय ॥

[1]महामुनिराया रे ।
मुनिवर ने सुखकार । म० । काइ कह्या पच ववहार । म० ।
काई सूत्र भगवती मभार ।म०। काई शतक आठमे सार । म०।
काई अप्टमुद्देश मभार । महा० ॥ ध्रुपद ॥

३ [१] पथ्वी हरी लगाय नें मुनिराया रे, न जाणो गाम पर गाम । महामुनिराया रे।
ऊभा पग मेलण जायगा हुव मु०, ता दोप नही छ ताम । म० ॥

४ जाणे सचित रज लागती, तो रात्रि रहिनें प्रात ।
आहार पाणी जाची करी, आणे इण विध वात ॥

५ [२] करी गागुदा थी गाचरी, आया रावलिया गाम ।
रावलिया सत आगे हूता, ते आहार भोगव ताम ॥

६ रावलिया सत आगे हूता, ते दूजे दिन ताय ।
जावे गोगुदे गाचरी, दाप नहि तिण माय ॥

७ [३] तथा रावलिया थी गोचरी त्या मेल्या गोगुद ताय ।
पूठे सत आया नवा, काई गाम रावलिया माय ॥

८ नवा सत आया छ तेहनें, काई दूजै दिन पिण आम ।
मल गागूदे गाचरी, तो पिण दोप नही छ ताम ॥

९ [४] तथा गाम न्हाना जाणी करी काई वहु सता ने ताम ।
गोगुदे रात्रे सही, काइ घर फरसावण काम ॥

१० नित्य-नित्य गोगुदा थकी, काइ इक इक मुनिवर आय ।
तेहनो वहिरया सहु भणी, कल्प रावलिया माय ॥

---

१ लय—आज आनदा रे ।

२६ रावलिया गोगूदा तणो, काइ ओलखायो नाम।
इण अनुसारे जाणवा, काइ अपर नगर पुर गाम॥
२७ इमहिज गाम माह मुनि केइ रहे पुर बार।
गागूदा रावलिया ना कह्यो, तिमहिज जाणो सार॥
२८ विहार करी चामास नो, पुर वाहिर कल्पे मास।
तिण कारण पर गाम ज्यू, पुर बाहिर न्याय विमास॥
२९ मास मास कल्पे अछ, पुर वाहिर ने माय।
प्रथम उद्देगे पखल्यो, वहत्कल्प[1] मे न्याय॥
३० [१४] विहार गोगूदा थी करी 'मेमटाल' रे माय।
करी गाचरी आविया, 'रावलिया' मे ताय॥
३१ कदाच जो दूजे दिने, 'सेमटाल' ते आय।
पहिले दिन घर फर्शिया, तसु कल्प ते नाय॥
३२ अपर सत साथे हुवै, ते फर्शे घर जेह।
तसु वहिर्या अन्य मुनि भणी कल्प मुनि दत्त एह॥
३३ [१५] सत मुनि किण गाम थी, घर फर्शी तिणवार।
विहार किया विन भोगव्या अथवा भोगव विहार॥
३४ शकुनादिक ना जाग स्यू, कदाच पाछा आय।
त घर पाछे नीपना, ते पिण कल्पे ताय॥
३५ पहिला घर हुवा असूझता, विहार करी फिरी आय।
ते घर तसु कल्प नहि, घर असूजता रे न्याय॥
३६ पहिले दिन घर फर्शिया, दूजे दिन करी विहार।
फिर आया कल्प नहि, नित्य पिंड दोषण धार॥
३७ [१६] विहार तणी मन धार नें, घर फरस्या ते मुन्न।
कदाच विहार हुवे नहि नहि कल्प पछ निपन्न॥
३८ विहार तणी मन धार नें, घर फरस्या अणगार।
केइक विहार कियो सही, केइक रह्या तिवार॥
३९ विहार किया पुर वार थी, फिर आया किण जोग।
पछे नीपना ते घने, कल्प तास प्रयाग॥
४० [१७] सत बहु किण गाम म, काइ सहज कारणीक साय।
कल्प उण आयण[2] तसु नित्यपिंड न कल्पे कोय॥

१ कप्पसुत्त १/७ २ गायकाल

४१ [१८] प्रथम दिवस घर फरसिया, नही कल्पे दूजे दीह।
सत आया पर गाम सूं, तसु कल्पे सुध लीह॥
४२ त्या नित्यपिंड प्रभाते फरसिया, सुखे आवण कल्पे नाय।
कारणीक त्यागे हुवे, तिण अर्थे कल्पाय॥
४३ आगे मुनि माहे हुता, सहुज कारणीक जेह।
तसु अर्थे नित्यपिंड घर तणो, नवा नत आणेह॥
४४ [१९] अधिक कारण हुवै तेहनें, तो नित्यपिंड अन्नपाण।
नवा आगला मुनि विहु, काइ वहुरी आपे आण॥
४५ [२०] सहज कारण में भोगवे, नित्यपिंड औषध सार।
गोली चूरण लवग ने, हरडे सूंठ उदार॥
४६ अचित काली मिर चने आवला, काई जीरो मेथी जाण।
अजमो ने आमाल्नियो, धाणा-नूण पिछाण॥
४७ नेत्र रक्षा रे कारण लिये, घृत ने मिरच विदाम।
आद देइ वहु जाणवा, गणि आणा सु ताम॥
४८ वाय मेटवा ने लिये, काई मेथी लकार[1] आदि।
गरमी मेटण कारणे, माखण चरण-समाधि॥
४९ अधिक कारण पच नित्य लिये, करवाली[2] रच[3] आदि।
जीत ववहार भिक्षु तणो, तिण मे नाहि उपाधि॥
५० [२१] किण ग्रामे वहु मुनि रहे, केइ राख्या पुर वार।
उत्कृष्ट वे कोस लगे सही, तास गोचरी न्यार॥
५१ इक-इक नित्य वोलाय ले, घर फरसावण काज।
तो पिण दोष दीसे नहि, कल्प जू जूओ साज॥
५२ मास कल्प वारै रहे, मास रहे पुर माय।
कल्प एह पर गाम ज्यू, तिण सू दोपण नाय॥
५३ [२२] किण गामे वहु मुनि रहे, केइ राख्या पुर वार।
पुर रहे ते घर फरसता, थयो असूजतो तिण वार॥
५४ पुर वाहिर थी वोलाय ले, तथा अपर गाम थी सोय।
तो पिण दोष दीसे नही, जुदी गोचरी जोय॥
५५ [२३] विहार करी वहु मुनिवरू, केइ आया पुर माय।

१ लड्डू, २ रोटी ३ दलिया आदि।

वहिरता त्यारे हुवो, असूजतो घर ताय ॥
५६ पूठे मुनि पर गाम नी, अथवा ते पुर वार।
करी गोचरी आविया, तसु ते घर कल्प सार ॥
५७ [२४] त्या वीच गोचरी ना करी, घर असूजता जेह।
पुर आया कल्पे नहि, साथ विहार करेह ॥
५८ [२५] साथ विहार घुर न् कियो, केइ मुनि रहयाज लार।
केइक पुर वाहिर रह्या, नहि करी गोचरी सार ॥
५९ केइक पहिला गाम मे, करी गोचरी आय।
पछ नीपना आहार ते, पछला ने कल्पे नाय ॥
६० [२६] किण ही गाम मुनि हुता, थया असूजता वहिरन्न।
अथवा पाछ नीपनो तथा कर्यो पहिले दिन ॥
६१ ए तीनू कल्पे नही, नवा आया न निहाल।
तसु वहिरया वीजा भणी, कल्प मुनि दत्त भाल ॥
६२ [२७] विहार करे दूज दिनें, विण भागव्या नवा मुनीश।
त्या पहिन दिन फरसिया कल्प आगला न जगीश ॥
६३ [२८] विहार किया दूजे दिन, केइक नवा पिछाण।
केइक नवा तिहा रह्या, नहि कल्प सहु न जाण ॥
६४ [२९] किण ग्राम वहु मुनि हुता त्या करी गोचरी सार।
तठा पछे मुनि आविया, त्या नहि वहिरया आहार ॥
६५ पिण तसु दीघ भागव्यु दूज दिन आगला विहार।
कल्प त्या मुनिवर भणी, त्या फरस्या घर ना आहार ॥
६६ [३०] किण गाम वहु मुनि हुता वलि आया नवा अणगार।
पछ करी आगला गोचरी, नवा न वहिरया आहार ॥
६७ पिण तसु दीधा भागव्या दूज दिन आगला विहार।
नहि कल्प त्या मुनिवर भणी, त्या फरस्या घर ना आहार ॥
६८ [३१] किण गामे मुनिवर हुता नवा मत वलि आय।
चाविहार तप तहनें, पिण ग्रहवा रा कल्प जणाय ॥
६९ मत आगला र तिके नितपिडादि त्रिहु जाय।
नवा मत आण दिया तसु दोष न दीस काय ॥
७० भागवण रा तसु त्याग छ पिण ग्रहिवा रा नहि त्याग।
तिण सू अन्य मुनि कारणे, वहिर त महाभाग ॥

७१ [३२] साध्वियां पर गाम थी, आहार उदक वस्त्र ताय ।
आणै सिर मथ धर करी, इर्या गहीत सुखदाय ॥

७२ [३३] तथा साध ने साधवी, विहार गोचरी मांय ।
श्रमणादि विहु कर ग्रहे, तो पिण दोषण नाय ॥

७३ पाछे बोल कह्या तिके, भिक्खु भारीमाल ऋषिराय ।
तसु वारे पिण रीत थी, तिण सूं दोष नहीं तिण मांय ॥

७४ उगणीसै पनरे समे, विद फागण तीज पिछाण ।
जयजश गणपति लाडणूं, करी जोड़ी सरस सुजाण ॥

७५ ढाल चतुर्थी नें विषे, कह्यो जीत ववहार सुजान ।
भिक्खु भारीमाल ऋषिरायथी, जयजश हर्ष विनाण ॥

ढाल ५

दोहा

१ बोल गोचरी ना वलि आखू छू अधिकार।
जीत ववहार छठा तणा, पचमी ढाल उदार॥

'अखिल आचार हिये धरणा रे सुध आचार हिये धारणा।
जीत ववहार तणी जिन आणा ताम अगीकरणा ॥ध्रुपद॥

२ नाज सघट गहस्थ बेठो रे, वदन जर्थ ऊठ मुनि पद प्रणमत चित सेठा।
हिवे वहिरावण मन हीसे रे, ताम हाथ स्यू लीधा मुनि ने दोप नही दीसे॥
प्रथम वहिरावण रे काजे रे, सचित्तसघटा थी ता नही उठया पूछया भ्रम भाजे।
निमक करन मुनि वर वहिर रे सुध ववहार प्रवर्ते तिण ने उत्तम कुण चेहरे॥
वली गणपति वह ज्यू करणा रे॥ जीत०॥

३ पृथ्वी पाणी रा मघट थी, वदन ने उठया तो पिण नही लेणा तसु कर थी।
सूक्ष्म रज जाणी न टाल, अपरवात आणा गणपति नी तन मन सुध पाले॥
वलि मुनि आवता देखी, राटी फर तथा लकडी चूला म द पेखी।
तया वलि अपर सचित्त जाणी निज पाता र निमत्त अलग मेल्या ते पहिछाणी॥
ताम कर सू पिण परहरणा॥

४ मुनि गाचरी गया पहली, असूझतो ज वस्तु हुव ने सत निमित्त वहली।
सूजती करे का अयाणा, किण हि क्षेत्र म त वस्तु तिण दिन नहि ले स्याणा॥
तेहिज क्षेत्रे पिण तसु कर स्यू, अय चीज पिण नहि लेणी ते असूजतो घुर स्यू।
अय क्षेत्रे तेहने हाथे, वस्तु अनरी नीवा दाप दीस विधि वाते॥
असूझतो घर नहि उच्चरणा॥

५ किण हि क्षेत्रे मुनि वहिरता, असूजतो जे वस्तु हुई त नहि ले गुणवता।
अय क्षेत्रे पिण ते टाले, अयचीज अय क्षेत्रे ताम कर लिय आण पाले॥
जास घर असूजता थाया तिण क्षेत्रे हर थाइ वस्तु नहि ले मुनिराया।
अय क्षत्रे वस्तु चीज नेहज घर्णी नी चीज लिया दापण मुनि न नही जो॥
जवा क्षत्रा ना कर निरणा॥

---

१ सब—अमरापुर का पथ सदा था जन घम ।

६ हवेली माहे इक जाणो, मोडा बाहिर चोको प्रमुख जुदो ते पहिछाणो ।
हाट घर जुदो प्रत्यक्ष दीसे, नोहरा नो निकाल जुदो ते पिण न्यारो कहीसे ॥
धणी वे इक घर वेहचाणो, ते पिण खेतर जुदो जुदो छै न्याय हिये आणो ।
वली मेडी ओरो भाडै, ने पिण खेतर जुदो जाणवो गणि आणा सारै ॥
हिवे चूला[1] ना उच्चरणा ॥

७ हवेली एक माहि जाणो, दाय चूला पिण सगला रो जीमण भेलो माणो ।
विहू चूला रो इक खेत, हिवे चूला नो जुदो क्षेत्र साभलज्यो समचेतं ॥
हवेली एक वधव च्यारो, इक कोठी नो धान खावे चिहु चुल्ला तसु न्यारो ।
प्रथम दिन ले इक वधव नो, वोजे दिन वीजे चूले ले तास तथा पर नो ॥
असूजता मे इमहिज वरणा ॥

८ गृहस्थ घर दोय तणा ज्याही, करत रसोइ इक चूले जल नूण भेलो त्याही ।
एक दिन इक घर मुनि फरसे, दूजे दिवस लिये वीजा नो दोषण ना दरसे ॥
एक घर असूजतो होयो, तिण कर तिण चूले वीजा नी वस्तु ले जोयो ।
एक नी जायगा उत्तरीया, सेज्यातर मे वेहु टालणा लवण पाणी भिलिया ।
निमल ववहार हिये धरणा ॥

९ सेठ ने दोप लिया जाणी रे, एक हवेली जुदी जुदी रहे जुदो क्षेत्र माणी ।
सेठ जीमे वारे वारे, इक दिन ल्होडी रे ले वीजे दिवस वडी तारे ॥
एक रे असूजतो हूवो रे, तो वीजी रे वहिरे मुनिवर क्षेत्र जाण जूवो ।
सेठ सेज्यातर जो होयो रे, तो दोनू रो आहार न लेणो धणी एक जोयो ।
वहु विध है एहना निरणा ॥

१० भरत श्रेणिक प्रमुख रायो रे, वहु अतेउर जुदा जुदा रहिवास तास थायो ।
मुनि वहिरता अन पाणी रे, असूजता ने निर्तपिड नी इक रीत क्षेत्र माणी ॥
बारह व्रत धारक वहु राणी रे, व्रत वारमो निपजावा मन अधिक हर्ष जाणी ।
इत्यादि न्याय वहु पेखी रे, क्षेत्र जुदा नो जीत परम्पर जाणो सुविशेखी ।
ढाल पचमी अदल निरणा ।

---

१ चूल्हा ।

ढाल ६

दोहा

१ असूजता घर किम हुवे, तसु विवरा कहिवाय।
असूजतो घर ना हुवै, ढाल छठी म न्याय॥

२ [१] गयो गोचरीये मुनिराज, गहो घर असणादिक काज।
सचित्त स्यू कर खरड्या के नाय इसडी साधू रे मन माय॥

३ साधु वर्ज्यो नहि त प्रस्ताव, तुज कर सू लेवा रा न भाव।
थोडा घणा हलावी हाथ गृहस्थ दिखावे मुनि न विख्यात॥

४ साधु हाथ देख्या अवनाय, सचित्त रज खरड्या कर जोय।
हुवा असूजता घर तेथ तिण दिन वहिरणा नहि ते मेत॥

५ आहार पाणी आदि वस्तु वरणी, वाजाटादिक राख कतरणी।
तिणरी वस्तु त क्षत्र मभार, तिणहिज दिवस न लेणी लिगार॥

६ [२] हुवो असूजता त खेत, तिहा दूजा री वस्तु सचेत।
तिण हिज दिन मुनिवर नेवे तिण माय दोष कुण केहवे॥

७ [३] सचित स्यू खरडया के नाय मुनि कह तू हाथ मति हलाय।
वर्ज्यां पछे गृह हाथ हलाय, साधु नें बताव ताय॥

८ साधु सचित्त स्यू खरडचा कर जाण तिणरा कर स्यू न लेव पिछाण।
तेहिज असूजता हुवो साय, घर असूजता नहि काय॥

९ मुनि गही नें असूजता देख, हा ना न कह्यो सुविशेख।
तिणरा कर स्यू लेवा रा न भाव 'आर'[1] किया नही त प्रस्ताव॥

१० वहिरावा नें उठया घर मन्न तेहिज असूजता तिण दिन्न।
घर असूजता मत जाणो आर न किया त न्याय पिछाणो॥

११ [४] किणरे मनुष्य घणा घर माय एकण नें आरे कीधा ताय।
बीजा नें ता आर नहीं कीधा सहु उठया वहिरावण सीधा॥

१२ ज्यारे सचित्त रा संघटा होय तहिज असूजता अवलाय।
तिण दिन त्यारा हाथ सू न लेणा पिण घर असूजता नहि कहणा॥

---

१ सच—विना रा भाव सुण सण गृज। २ स्वीकृति नहीं दी।

१३ [५] गृही घर गयो वहिरण मुनिराज, गृहस्थ उठ्यो वहिरावण काज ।
साधु हा ना कह्यो नहि चाव, सूजतो छै तो लेवा रा भाव ॥

१४ साधु जायगा पडिलेही विमास, हेठे सचित्त निकल्यो तास ।
घर असूजतो थयो ताय, काङक आरे कीधो इण न्याय ॥

१५ [६] गयो गृही घर वहिरण मुनिंद, तिण ने पहिला वरज्यो तज धंध ।
तू ऊठे मत कदाचित सोय, थारे हेठे सचित्त जो होय ॥

१६ तिण सू चोफेर जायगा पडिलेह, तथा और कने आहार लेऊ ।
इम वरज्यो तिण ने ऋषिराज, गृही उठ्यो वहिरावण काज ॥

१७ हेठे सचित्त निकल्यो पिछाण, तेहिज असूजतो थयो जाण ।
घर असूजतो थयो नाय, आरे कीधो नही मन-माय ॥

१८ [७] घर वाहिर मुनि ने देख, गृहस्थ उठ्यो वहिरावण विशेख ।
हेठे सचित्त देखी मुनिराय, तेहिज असूझतो थयो ताय ॥

१९ [८] घर वाहिर मुनि ने देख, अजयणा करी वस्तु विशेख ।
आघी पाछी करे कोइ गृहस्थ, अशुद्ध थया दातार ने ते वस्त ॥

२० [९] घर मे आया देखी मुनिराज, असयति गृही साधु रे काज ।
साध ना ना करता जोरी दावे, सचित्त सघटा स्यू वस्तु उठावे ॥

२१ थयो असूजतो ते दातार, वले वस्तु असूजती धार ।
घर असूजतो नहि कहीज, किण ही क्षेत्र न लेणी ते चीज ॥

२२ [१०] मुनि ने खवर नही ते टाणे, साधु ने वहिरावण वस्तु आणे ।
आवता सचित्त सघटीजे, ते दातार वस्तु असूजती कहिजे ॥

२३ [११] साघु आरे कीवो तिण वार, वहिरावण उठ्यो दातार ।
सचित्त रहित पुरुप रो जोय, चालता सघटो हुवो सोय ॥

२४ सचित्त रो सघटो हुओ नाहि, किलामना न उपनी काई ।
तिण ने असूझतो नही कहेणो, सुध ववहार जाणी ने लेणो ॥

२५ [१२] साघु दातार ने कियो आरे, सचित्त सहित पुरुप नो तिवारे ।
सघटो थया हुई जीव घात, इम असूझतो घर थात ॥

२६ किण ने कियो मुनि आर, वहिरावा ने चाल्यो दातार ।
इतले किण ही मूला री दीधी, तथा और सचित्त री प्रसिद्धी ॥

२७ [१३] तथा वहिरावण जाता सागो, मेहादि जल नी छाटा लागी ।
घर असूझतो थयो तेथ, तिण दिन लेणो नही ते खेत ॥

२८ [१४] कछोटी[1] रे मघटै बठी बाई, तिण रे सरीर लागे छ ताहि।
जल लाटया[2] लूण रा ठाम[3], कछाटी रे सघट पडघा ताम ॥

२९ तिण र हाथ सू आहार न लेणा कछोटी हाल्या होय अजेणा।
कछोटी र मघटे तन जाण कछोटी हालवा री ठिकाण ॥

३० [१५] तया कछोटी र पलो लागे, सचित्त कछोटी र सघटे छै सागे।
देता अजयणा न जाणे लिगार, लेवे देखी शुद्ध ववहार ॥

३१ [१६] लूण पाणी रा ठाम छ सागे सघटे वेठा तथा पलो लागे।
तिण रा हाथ स्यू न लेणा आहार, लूण पाणी सूक्ष्म विचार ॥

३२ [१७] साधु गोचरी गया तिवार दातार नें कीधो आरे।
वहिरावत हाथ सवा हाथ, ऊचा स्यू पडी वस्तु विख्यात ॥

३३ ते वस्तु म्हानी फारी[4] जाणे अजयणा न म्यासे तिण टाण।
तिणरा कर स्यू आहार पाणी वेहरे जाण ववहार ना नही चेहरे ॥

३४ नान्ही फारी वस्तु किण न कहिये आचाय कहै ते सरधहिये।
त पिण वुद्धिवत स्यू मिल थाप तिण न उत्तम नही उथापे ॥

३५ [१८] सवा हाथ थकी उपरत एक चावल ऊचा थी पडत।
जद असूझता घर थायो इमहिज राध्या मूग मोठ तायो ॥

३६ [१९] आडा छावल्या धान भरया पत्त ऊपर वस्त्र स्यू ढावयो विशेख।
वस्त्र[5] पला लागा वहिरात इम असूजता घर थात ॥

३७ [२०] धान भर्‌या आडा ऊपर पत्त, माटी वस्त्र री गाठ छै एक।
वहिरावता गाठ पला लागत, अजयणा न जाण्या लिये सत ॥

३८ [२१] वलि आडा धान समेत तथा ऊपर वस्त्र गाठ तेथ।
वहिरावता तन फरसाव ता असूझतो घर थावे ॥

३९ [२२] अमयति गृहस्थ तिण वार, वहिरावा काज खाल्यो किवाड।
न रस्त गोचरी न जाणो वीजे रस्ते निर्दोष पिछाणो ॥

४० [२३] घर माहि आरा रा किवाड, वाइक वहिरावी खोल्यो तिवार।
जव ता असूझता घर थायो, पहिला आरे कीधा इण न्यायो ॥

४१ वाइक वहिरी वलि वहिरावत, मुनि वजत किवाड खोलत।
वस्तु किवाड माहली लीह दातार असूझतो ते दीह[6] ॥

---

१ कछोती
२ लोटा
३ बतन
४ अयतना
५ इत्या
६ दिन।

४२ [२४] एक पोल मे घर दोय च्यार, तिण माहिने एक खोल्यो द्वार।
मुनि वहिरावा भाव आणो, तिण रस्ते पिण घर नही जाणो ॥
४३ लोग आया गया तिण पथ, एक मुहूर्त पाछे संत।
पोल मे दूजा रे घर तिहा जायो, दूजा तो किवाड नही खोलायो ॥
४४ [२५] एकपोल मे घर दोय च्यार, सगलाइ खोलायो किवाड।
तिण रस्ते सगला रे न जाणो, बीजे रस्ते निर्दोप पिछाणो ॥
४५ [२६] साधु अर्थे खोल्यो है किवाड, किवाड वारली वस्तु ले सार।
रस्तो असूजतो सद्दहिये, घर असूजतो नहि कहिये ॥
४६ [२७] धणी रा कह्या विना किवाड, दूजे खोल्यो मुनि अर्थे धार।
तिण रस्ते इक मुहूरत ताई, वहिरावा काजे जाणो नाहि ॥
४७ लोक आया गया निजकाज, एक मुहूर्त पछे मुनिराय।
जावे तिण घर वहिरण ताइ, घर रो धणी खोलावा मे नाहि ।
४८ धर्म द्वेपी दूजा रो किवाड, खोल्यो कलुप भाव मन धार।
जो एइण घर वहिरण जाय, तो हू निदसू लोका माय ॥
४९ तेहनी पिण पूर्व रीत, लोक आया गया सुवदीत।
एक मुहुर्त्त पाछे पिछाण, जाए गोचरी तिण मग जाण ॥
५० [२८] शेषे काल चोमामे ताम, गोचरी कल्पे पर गाम।
दोय कोस ताइ मुनिराज, जाए आहार पाणी रे काज ॥
५१ [२९] गुरुआदिक रा दर्शन काज, चोमासा मे जाय मुनिराज।
सुखे दोय कोस उपरत, तो तिणहिज दिन पाछो आवंत ॥
५२ [३०] वले गाम तथा पर-गाम, गोचरी करता गुण धाम।
सचित्त लगाय ने नही जाणो, हिवै तिणरो न्याय पिछाणो ॥
५३ उभा पग देवे जितरी है जाग[1], तो दोप नही तिण माग।
उभा पग देता जो लग जाय, ते उपयोग री खामी जणाय ॥
५४ [३१] इम हिज चौमासे दर्शन काज, सचित्त टाली जावे मुनिराज।
सेखे काल जइ रहै रात, तिण री तो जुदी छै वात ॥
५५ [३२] वाजरी माल[2] ने समलाइ[3], सामो चीणो[4] मलेचो[5] कहाइ।
इत्यादिक या स्यू मिलता पेख, न्हाना धान कह्या सुविशेख ॥
५६ एहवा नान्हा धान रो जाण, आटो छाण्यो अछाण्यो पिछाण।
तिण रे सघटे न लेणो आहार, तिणरो बुधवत न्याय विचार ॥

१ जगह। २, ३, ४, ५ एक प्रकार के सूक्ष्म दाणे वाले धान्य विशेष।

५७ [३३] ए न्हाना धानतणो आटा ताय, पडियो है कछौटी रे माय।
ओसणियो तथा अणओसणियो, कछाटी माटा माहि धरियो ॥

५८ तिणरे पलो लागो वहिरात, लीधा दोपण नही जणात।
जो सघटो सरीर नो लाग, नहि लेणो असणादिक रागे ॥

५९ [३४] गेहू जव मक्की चणा जवार इत्यादिक मोटा धान विचार।
यारो छाण्यो आटो वहिरत अछाण्यो नही लिये सत ॥

६० [३५] आहार थोडो जाणें ता सुचग, मोटा धान रो आटा ले मग।
ओसणियो तथा अणओसणियो, राग द्वेप रहित अनुसरियो ॥

६१ तिण मे नीसरे धान रो दाणा, ता घर असूझतो हुवो जाणो।
सुध ववहार जाणी ते लेवे, तिण मे वुद्धिवत दोप न केहवे ॥

६२ [३६] घत तेल दूध दही माहि, धान रो दाणा नीसरे ताहि।
तो घर असूजतो नही थाय, तिण रा फश स्यू अचित्त जणाय ॥

६३ [३७] मुनि कीधो दातार नें आरे, छीक उवासी आइ तिण वारे।
नाकस्यू सू सू कियो ने खासी, घर असूजतो नही थासी ॥

६४ [३८] आरे किया पछे दातार, अजयणा स्यू थूके तिणवार।
घर असूजतो जद कहणा जेणा स्यू थूक्या तसु कर सू लेणो ॥

६५ [३९] आरें किया पछे मन रगे, अजयणा सू तमाखू सूघे।
तो असूजतो घर केहणो जयणा सू सूघ्या तसु कर लेणा ॥

६६ [४०] दातार रे मूढा मे जाण, छोल्या साठा रा गट्टो पिछाण।
तिणरा करस्यू लिया दोपण नाय छाल्या गट्टो अचित कहिवाय ॥

६७ साधा ने वहिरावता सोय, साठा नो गट्टो छूहा जोय।
तिण ऊपर जा पग लागे, तिण रा कर सू वहरी लिये सागे ॥

६८ [४१] आधो पागुलो छ कोइ भाई अथवा पूरे मासे छै वाई।
इत्यादिक ग्हूवा कारण वालो मूजतो वेठो तिण कालो ॥

६९ कोइ सूजतो लेइ आहार, ज्यारा मूढे आगे म्हले सार।
तिणरा हाथ सू ले मुनिराय, तिणम दापण कहीजे नाय ॥

७० [४२] सूजती पूरे मासे वाई, साधु ने वहिरावा ताई।
दूजो सूजतो आहारलेवा ने, गयो तसु कर स्यू वहिरावा ने ॥

७१ पूरे मासे वाई वेठी जेहने सहजे सचित्त आवी लागे तेहने।
घ र असूजता न कहाय, वहिरावा रो काय जद नाय ॥

७२ [४३] तिणरा मुख आगल मेलवा ने, कोई गयो वरतु लेवा ने।
सचित लागा असूजतो थायो, पहिला आरे कीधो मुनिरायो ॥

७३ [४४] साधु वर्जता पिण दातार, वहिरावण उठ्यो तिण वार।
सचित्त ऊपर लागो पाय, तेहिज असूजतो कहिवाय ॥

७४ तिण उपाड्यो धोवण रो ठाम, साधु ने वहिरावण काम।
सूजती रोटी आदि उपाडी, साधु ने देवा री मन धारी ॥

७५ पिण तिण पगलो न भरियो तिवार, तिणरा कर स्यू न लेणो लिगार।
अनेरा ना हाथ सू ते चीज, लीधा दोष किसो पर कहीज ॥

७६ [४५] वस्तु उठाय ने पग भरियो, साधु ने देवा मचरीयो।
तो ते वस्तु अनेरा[1] ने हाथ, वहिरे नही मुनि विख्यात ॥

७७ [४६] साधु वरजता पिण दातार, वहिरावा उठ्यो तिण वार।
सचित्त वस्तु छै तिणरे पाहि[2], तेहिज असूजतो कहिवाहि ॥

७८ तिण उपाड्यो धोवण रो ठाम, तथा ढाकणी अलगी करी ताम।
तथा रोटी कर सू सघटाय, अन्य कर स्यू पिण ते लीये नाय ॥

७९ तिण ने आरे न कीधो सोय, घर असूजतो नहि होय।
आरे किया असूजतो थाय, विचार जोवो मन माय ॥

८० [४७] साधु गोचरी गयो तिवार, वोल्या वे त्रिण च्यार दातार।
सहु देस्या थोडो-थोडो आहार, सहु ने आरे किया अणगार ॥

८१ सहु वाहिरावता एकण रे, सचित्त सघटो हुवो तिण रे।
घर असूजतो इम थाय, आरे कीधा तिण न्याय ॥

८२ [४८] साधु गोचरी गयो तिवार, वोल्या वे त्रिण च्यार दातार।
म्हारा सहु रा वहिरावण रा भाव, साधु वोल्या ते प्रस्ताव ॥

८३ अमकडीया[3] रा कर स्यू सोय, मुज वहिरवा रा भाव होय।
ओरा ने तो आरे नही कीधा, सहु उठ्या वहिरावण सीधा ॥

८४ आरे न किया सचित्त सघटाय, घर असूजतो नहि थाय।
सचित्त लागो आरे कियो जिण रे, घर असूजतो हुवो तिण रे ॥

८५ [४९] जल लोट्या रे सघटे वेठी वाई, दूजी वहिरावण वाली आई।
वहिरावण वाली कनै वाल, सघटे वाली ने सूपे ते काल ॥

८६ तो पिण तिणरा कर स्यू न लेणो, आरे कीधा असूजतो केहणो।
पहिला वरज देवे मुनिराय, तो तेहिज असूजतो थाय ॥

८७ छठी ढाल वहु न्याय समागम, उगणीसे सोलह महाविद आठम।
भिक्षु भारीमाल ऋपिराय, सुख सपति जय जश पाय ॥

---

१ अन्य २ पास ३ अमुक

ढाल ७

दोहा

१ कुण-कुण वस्तु हाथ सू, लेवे महा मुनिराय।
ढाल सातमी ने विषै जीत परपर माय॥

२ [1]धोवण उष्णोदक, कर स्यू ले मुनिराय
जल इक्वीस जात नू वलि तसु मिलतो ताय॥

३ आचारग[2] दूजे प्रथमध्ययन पिछाण।
सप्तम अष्टम उद्देशे वारू श्री जिण वाण॥

४ कर स्यू ले आछण इक्वीसा मे ताम॥
वर अर्थे अनूपम, आछण एहवो नाम॥

५ उन्ही छाछ उपरली मुनि निज कर स्यू उतारी।
आछण ले तेह मे दाप न मुघ ववहारी॥

६ वलि माड चावल नो, ते पिण कर स्यू लेव।
इक वीस जात मे, न्याय विवेकी वेव॥

७ वलि आपघ भेपज कर स्यू लेवे ताम।
दान चवदे प्रकार मे, न्यारा तेहना नाम॥

८ हिव विगत आपघ नी, कहु कितायक नाम।
अचित्त मीरच नें जीरा, एलायची नें विदाम॥

९ वलि अचित्त सिघाडा, नाजा, पीस्ता दाख।
खारक, सापारी, इसवगुल, अभिलाख॥

१० अजमा आसाल्या, मेथी ने खुरमाणी।
वलि अनारदाणा, अचित्त किया ले जाणी॥

११ वलि लवण, जायफल, पवोडी[3] कृगा पत्र।
कर स्यू ले विराली, अचित्त किया सुविनेत्र॥

---

१ लय नमू अनत चोवीसी।
२ आयार चूला १।१०१
३ अरगा क बीज
४ इमली क बाज

१२ लवंग, सूठ, गूद, वलि, कस्तूरी ने कपूर।
वलि अचित्त नीवझर, गोली चूरण भूर
१३ वलि अचित्त पीपल ले, हलद, लोद, ले हाथ।
वलि कुटक चीरायतो, नीवू अचित्त विख्यात॥
१४ वलि दालचीनी ले, जावत्री ने खटाई।
कायफल ने फिटकडी, मेदा लकडी ताई॥
१५ दाडिम नो छोडो[1], अमल, तमाखू जाण।
मुरवा रा आवला, गुलकद, सेत[2] पिछाण॥
१६ हरडे, वेहडा, आवला, सोनामुखी, नसोत॥
खेरसार एलियो, ओषध अर्थ सुहोत॥
१७ इत्यादिक वस्तु, ओषध अर्थे जाण।
कर स्यू ले मुनिवर, वलि मागी ले पिछाण॥
१८ ए सगली वस्तु, ओषध विन मुनिराय।
कर स्यू नही लेवे, वली मागी ले नाय॥
१९ नित सूघण खावण, लिये तमाखू आद।
अजन कर स्यू ले, वलि तनु-लेप सवाद॥
२० ए सगली वस्तु, पाडियारी मुनिराय।
जो पाछी देवे, तो पिण दोषण नाय॥
२१ लूग, सूठ आद जे, गृहस्थ घामे जोय।
कारण विन मुनिवर, कर स्यू न लिये कोय॥
२२ लवग, सूठ आद जे, ओषध निज कर लेवो।
हिवै कुण वस्तु, ओषधकर स्यू न ग्रहेवो॥
२३ गुल, खाड, पतासी, दूध दही पकवान।
घृत, ओषध अर्थे पिण, कर स्यू न लिये जाण॥
२४ लाडू मेथी ना, खाजा, साकुली आद।
ओषध अर्थे पिण, कर स्यू न लिये साध॥
२५ माखण ने वूरो, केरीपाक तरकारी।
ओषध अर्थे पिण, कर स्यू न लिये लिगारी॥

१ छिलका
२ शहद

२६ कपडा रे लगावा, तेलादि पहिछाण।
कर स्यू नही लेवे गणि आणा भगवाण ॥
२७ तन मरदन काजे, कर स्यू लेवे तेल।
पिण घृत नही लेवे, एसुगुरुआणशिष्यझेल॥
२८ वस्त्र तन रे लगावा, मेण, गुगल कर आण ॥
ओघादि धावण, गूद आणे निज पाण।
२९ गृहस्थ री आना स्यू गूवडादिक तन काज।
आटा ले कर थी, वलिमलमचरण सुखकाज॥
३० पात्रा रे लगावा, तेल अनें रोगान।
कर स्यू नही लेणो, जीत ववहारे जाण॥
३१ लखारादिक अयमति, तेह तणी ए रीत।
जो हरख धरि कहै, ल्यो थे कर सू नचीत॥
३२ दृढ श्रावक वले रागी, तेहना कर सू ल्यावै।
चावै सो लेइ, ते दिन पाछो ठावै॥
३३ पाडियारो कही ल्याया, पिण ते दाय[1] न आयो।
निशि राख्या विण सूप, ता पिण दापण नाया॥
३४ कपडा निज कर स्यू पाडियारो मुनि ल्यावे।
पछे गृही ना कर स्यू, वेहरी ने वरतावे॥
३५ गृही ने कर जाची, पाडियारा जा ल्याव।
पछे धारी फाड द तो पिण दाप न थाव॥
३६ गृही कर थी ततु आघो कदाचित ल्यावे।
पछे धारी न दणी न कल्प्या परठावे॥
३७ स्याही नें हीगलू, गाली सपेता जगाल[2]।
इत्यादि रग बहु कर स्यू ले मुनि माल॥
३८ पात्रा रे लगावा, साजी गावर छार[3]।
वलि और कारण ए कर स्यू ले सुविचार॥
३९ डोरा सूत नें डाडी, पाटी पूठा पेख।
कर स्यू ए लणा, जीत ववहार सुलख॥

१ पसद
२ एक प्रकार का रगविशेष
३ राख।

४० राव छाछ ने रोटी, अपर वलि अन्य जात ।
कर स्यू नहि लेणा, ए परपर वात ॥
४१ मकिया रा कण पिण, कर स्यू खेर न लेणा ।
रस ने वलि होला¹, इत्यादिक इम कहणा ॥
४२ ए वस्तु कही छै, तेह तणे अनुसार ।
केइ कर स्यू लेणी, केइ न लेणी लिगार ॥
४३ कहि कहि कहु कितरो, वस्तु वहु जग जाण ।
गणि आणा आपे, तेहिज करज्यो प्रमाण ॥
४४ कारण विन मुनिवर, विगय व्यजन तरकारी ।
मागी ने न लिये, वलि मिरचादि विचारी ॥
४५ कारण स्यू मुनिवर, विगय व्यजन तरकारी ।
मागी ने लीधा, दोप नहीं छै लिगारी ॥
४६ पाणी छाछ आछ ने, आटो रोटी आदि ।
क्षुधा मेटण ने, मागे भाव समाधि ॥
४७ वलि क्षुधा मेटण ने, राव मागी ने ल्याय ।
काठा री कोर नी, राव व्यजन मे जणाय ॥
४८ छाछ राव तणी परे, मागी इखु रस ल्यावे ।
पिण लोलपणा नी, चित नी लहर मिटावै ॥
४९ भिक्षु भारीमाल, ऋपिराय सुपसाय ।
जय जश सुख सपति, गण वृद्धि हरख सवाय ॥
५० चालीस निनाणु, सत सत्या रा मेला ।
वर शहर लाडणू, गणि सपति रग रेला ॥

---

१ कच्चे भुने हुए चने ।

लघु रास

दोहा

१ क्रोधी मानी लोलपी, वलि अविनय कपट अथाय।
[तिण री]वणी खुरावी अति घणी, त सुणज्यो चित्त लाय॥

चौपाई

२ 'पट अवनीत'[1] तणा अधिकार, ते साभलज्या वहु विस्तार।
मूलगा नाम अट तमु ताही, ते तो इहा नही कहिवाई॥
३ अधिक अवनीत दूजो तीजा ताम, चौथो पाचमो छठो ए नाम।
एहिज नाम भना थी जाणी ते आलख नीज्यो पहिछाणी॥

हिवै अधिक अवनीत वणन

अपछदा[2] अविनीत टालाकर हासी घणा फजीत॥ ध्रुपद॥
४ गण माहि एक अधिक अवनीत, तिण दुष्टी री खाटी रीत।
स्वाय पूगता जाण्यो तिवार जद गण मे अधिक हुसीयार॥
५ स्वाय काज गुरु नै अधिक रीझावै गण गणपति रा गुण गावै।
जाण आचाय-पदवी म्हारै घरे आसी, ओ तो पुदगल सुखना प्यासी॥
६ तिण सू गण मे रहै घणु फनियै नै फूल्या ओ ता आपरै स्वाय मूल्यो।
वले साधा न डरावी कहै इम ताम, थार पडसी म्हासूइज काम॥
७ परम भक्ता गुरु रो अति पूरो निज स्वाग्थ काज सनूरो।
सासण नै आ तो अधिक दिटावै, गुर रा गुण पिण अति गाव॥
८ मुझ वधव न पदवी आसी तो म्हारा कुडव-काण वध जासी।
मुझ घर पदवी आसी अमाल तिण सू म्हारो पिण रहिसी ताल॥
९ वधव र तो मजम नीं नीत इण र स्वारथ री छ प्रीत।
पछ स्वाय पूगता जाण्या नाही जव कलुप भाव मन माहि॥
१० जिम जिम स्वारथ देख्यो हीन तिम तिम हाय गया दीन।
जिम जिम स्वारथ घटतो दीठो तिम तिम क्राघ अगीठा॥
११ जिम जिम स्वारथ घटता देखी, तिम तिम क्रोघ विगेपी।
जिम जिम स्वारय दीठा अधरा तिम तिम विगड्या नूरा॥

---

१ छागजी धनुभु ज जी आदि। विस्तत जानकारी क लिए—
देखें—'शासन समन' भाग ६ (मुनि नवरत्नमलजी लिखित)

२ सय—पुण्यवतो जीव पाछिल

१२ जिम-जिम स्वारथ अण सोझतो, तिम-तिम मन खोजतो।
ओ स्वार्थ अर्थे बाह्य सुविनीत, इण रै गणिका वाली प्रीत ।
१३ मन माहे हुतो मोटकी आम, ते तो जावक हुओ निरास।
मन री मनोरथ इण री न फलियो, जब अधिक द्वेप परजलियो ॥
१४ गणपति ऊपर पूरो द्वेष, इण रै कर्म तणी काली रेख।
छानै-छानै गण गणपति केरा, ओ तो अवगुण बोलै घणेरा ॥
१५ छानै-छानै गृहस्थ आगै विसेख, गुरु रा अवगुण बोलै अनेक।
हाजरी मे नित्य त्याग करतो, छानै-छानै अवगुण बोलतो ॥
१६ गृहस्थ कहै थानै बोलणो ना ही, जद कहै म्हे तो ओलखाई।
ग्राम परग्राम रा भाई आवै, त्यारै आगै पिण अवगुण गावै ॥
१७ साधा आगै पिण कहै छानै-छानै, जिण रै अनुभ उदै ते मानै।
खबर पडी गणपति नै तिवार, जब निखेद्यो परपद मझार ॥
१८ अविनीत पणा रो अवगुण देखी, गुरु चोडै निखेधै विसेखी।
या तो सर्व साधा रै माही, म्हारी आव न राखी काई ॥
१९ वले आसता इण विधि चोडै उतारै, तो हू क्यानै रहू यारै सारै।
यानै छोडी नै हू हुय जाउ न्यारो, यारै पिण करू बहुत विगाडो ॥
२० दोप परूपू यामे भारी, जब खबर पडै यानै म्हारी।
वलि परिचादिक री मरजादा कीधी, ते अविनीत खाच गलै लीधी ॥
२१ गुरु साकडी[1] विविध मरजादज करता, किण ही सू मूल न डरता।
वले अगवाण नही विचरावै, सकडाइ मे रहणो किम आवै ॥
२२ एहवो विचार अधिक अवनीत, महा कपटी खोटी नीत।
एकला री आसग नही आवै, जद बीजानै वेली उठावै ॥
२३ ओ तो आगै गण थी टलियो न हुतो, पिण इण रासा मे ओ धुर जूतो।
और फटावण मे ओ अगवाण, तिण सू अधिक अवनीत पिछाण ॥

इति अधिक अवनीत वर्णन

२४ गण माहै केइ आगै निकलिया, दण्ड लेइ पाछा वलिया।
पिण अवर्णवाद स्वभाव छै ज्यारो, अविनय रोग मिट्यो नही त्यारो ॥
२५ ते पिण प्रतिकूल गणपति केरा, मन वेदै कष्ट घणेरा।
परचादिक रो रोग ज्यारै भारी, वले लोलपी क्रोधी अहकारी ॥
२६ एहवा अवनीता सू मिलियो जाय, त्या सू बाधी प्रीत सवाय।
यारै पिण गुरु सू अ तरग धेख, अधिक अविनीत मिलिया विसेख ॥

१ कठिन।

२७ चोर मू जाणै मिल गइ कुत्ती, झूठी वाता करै अणहुती।
तिण अधिक अवनीत भणी अगवाण, कीधो त्या अविनीता जाण ॥
२८ शिकारी स्वान नै करै अगाडो, तिण इण नै कीधो अविचारी।
द्वेष तण वस अवली सूझै, ते दिन दिन अधिक अलूझै ॥
२९ परचो निखेध्या अधिक दुख पावै, विरुद्ध बोलता लाज न आवै।
माहो माहि हुआ अवनीत भेला, एक स्थान बैसी करै हेला ॥
३० छान-छानै गुरु में अवगुण बतावै, मन मानै ज्यू झूठ चलावै।
तिण चोरपली कोइ जाय अजाण, तिण नै पिण न्हाखै फद मे ताण ॥
३१ अवनीत-अवनीत मिल बाधै जिलो, तिण नै कर्मा दीधो टिलो।
सुगुरु कहै तिण न वच सूधो, तो पड जाये मूरख ऊधो ॥
३२ इण सू बीजा अवनीत मित्या त्यारी वात, साभलजो अवदात।
दूजो अवनीत ते दशक वास, तीना साथ निकलियो तास ॥
३३ राजनगर थी लक्ष्मीचद ध्यायो, ग्राम मजेरै जइ समझायो।
दोय तो पाछा नाया गण माय दूजा अविनीत न समझाय ॥
३४ लेइ आयो ऋषि माणक पाहि, दड ओढ आयो गण माहि।
स्वामीजी दड देसी ते लेसू रुडी रीत हिवै रहसू ॥
३५ गुरु प समाचार कहिवाया तास, भलाया माली ऋषि प चउमास।
ए दूजो अविनीत आवी गण माय, चउमासा करि गुरु प आय ॥
३६ जनवद माहि माट शब्द रायो, कहै मानै कर्मा डुवोयो।
हाथा मे हथकडी पगा म वडी, वलि घालै गल तोख घणेरी ॥
३७ हूतो एहवा छू मोटो अपराधी, गण नो अवणवादी।
म्हे अवगुण आपरा बोल्या अनक, पूरा कहिणी न आव विशेष ॥
३८ एम कहीनै लिखत करायो, विविध त्याग तिण माहयो।
जावजीव गण थी टलवारा जाण, पचपद नी साखे पच्चखाण ॥
३९ और नै साथे ले जावा त्याग, अनत सिद्धा री साखे ए माग।
टोला वारै टल अवणवाद, हुता अणहुता विराध ॥
४० तीथकर गणधर केवली जाण, त्यारी साख थकी पच्चखाण।
किचित लै र मे वाले जोय, ता भव भव मे रक्तपीती होय ॥

---

१ दुर्गिष्या कुग्रहाश्चव मिलिता यत् परस्परम्।
अनर्थायव जायत गुप्यन्ति न पश्यति ॥

४१ त्याग जिलो वाधण रा कीधा, घणै हरष सहीत प्रसीधा।
क्षेत्र मे एक रात्रि उपरत, त्याग कीधा घर खत ॥
४२ वतीसै पैतालीसै मर्याद, वावी पचासै गुणसठै वाद।
सर्व मर्याद लोपण रा पच्चखाण, अनत सिद्धा री आण ॥
४३ लिखत हेठै अक्षर कर दीवा, घणै हरष अगीकार कीधा।
गणपति साधा नै पूछी वाय, एहनै प्राछित कितरो आय ॥
४४ तीजो[1] अविनीत वोल्यो वाय, इण नै प्राछित दसमो आय।
तीजै अवनीत पानै लिख्यो एम, ते साभल जो धर प्रेम ॥
४५ लिखिया वीजा अवनीत तणा कर्म ताय, ते साभल जो चित्तल्याय।
फाडा-तोडा री वाता अनेक, घणा सावा सू कीधी विशेष ॥
४६ गुरु सू वेमुख ह्वैवा री वात, घणा साधा सू कीधी साख्यात।
गण वारै लेजावण घणा साधानै, घणा दोष वताया त्यानै ॥
६७ साधा नै सूस दराइ विशेष, अवगुण वोल्या अनेक।
स्वामीजी नै वात कही तौ जाण, थानै अनत सिद्धा री आण ॥
४८ स्वामीजी नै शासण नै सरधावा असाध, इण विध वोल्यौ विराध।
दोय पाट सुद्ध चाल्या लूकारै, हिवै गाला गोलो घणो यारै ॥
४९ अै तो राग द्वेष सू भरिया सोय, यांमे सावपणो किम होय।
फलाणोजी त्यारफलाणो छै त्यारी, घणा साधा नै कह्यो तिवारी।
५० वले कह्यो म्हेतो धार वैठा कदेई, वले अमकडियो मो साथेई।
कोरा असाधु ए तो छै मोय, दलदरचा नै परा छोडो जोय ॥
५१ ए ढीला चालै छै छोड देवो यानै, इह विधे आख्यो सावानै।
कही भेदपाडणवाता विविध प्रकारी, पिण सावा तो यारी न धारी ॥
५२ वले मोनै पदवी रो लोभ वतायो, पिण म्हे तो न मानी वायो।
थे किम नही मानो छो ताय, जद हू वोल्यो इमवाय ॥
५३ स्वामीजी रा साधु लेइ जाउ लारो, तो लोक कहै पाड्यो इण धाडो।
हुतो इसडो कामनकरू मलीन, जव काया[2] होय निकलिया तीन ॥
५४ खोटी-खोटी वाता कीधी अनेक, इण रै आचारज सु द्वेष।
तिण सू सिद्धातरा वचना रै लेख, इण रा कर्म देखता विशेष ॥
५५ एहवा मोटा दगादार नै ताय, प्राछित दशमो आय।
पछै तो गुरु नै भ्यासै ते खरी छै, इमपाना मे लिखि उच्चरी छै ॥

१ कपूरजी।
२ खिन्न।

५६ दूजा अवनीत री वात प्रसिधी, तीज अवनीत इम लिख दीधी।
पछै तीनू टल्या मदोय नाया तत्य, कही दूजा अवनीत री वत्त ॥

इति द्वितीय अवनीत वणन

५७ हवे नीकल्या जदतीज अवनीन, पोता री उपजावण प्रतीत।
गुरुन कहे गण थी नीकलवा रा जाण, म्हार जावजीव पच्चखाण ॥
५८ ए हिज मत ए हिज अज्जासार एहिज मारग उदार।
इण हिज मारग मे मर पूरा देऊ, पिण गण थी जुदो नहीं ह्वेऊ ॥
५९ और न साथ ले जावा रा त्याग इम पचख्या हरप अयाग।
और भेनो पिण जावा रा त्याग वाल्या इह विधि घर अतिराग ॥
६० आप निखत करा म्हारी राखा प्रतीत इत्यादिक घणा कह्यो सुरीत।
इम कही कराया लिखत्त अनूप, त साभलजा धर चूप ॥
६१ जावजीव रहिणो गणपति आण, सयारा करि करणो कल्याण।
पच पदा री साख थी जाण, गण थी टलवा तणा पच्चखाण।
६२ अनत सिद्धा री साख थी जाण, साथै ले जावण रा पच्चखाण।
अनन सिद्धा री साख थी एम और साथ जावा रा नम ॥
६३ गण त्यार व भेला रहिवा रा जाण, पच पद नी साखे पच्चखाण।
ऊ आव ता ही राखण रा एम अनता सिद्धा री साखे नेम ॥
६४ गण थी टल हूता अणहुता जाण, अवगुण वालण रा पच्चखाण।
गणधर तीर्थकर केवल नाणी, त्यारी साख थी ए त्याग जाणी ॥
६५ गण थी नीकल विचितल हर म वान, ता भव भव म रक्त पीती झोले।
रलन रक निगाद म अनत ससार, एह वीज छ अधिक उदार ॥
६६ तिण म किंचित मात्र पिण जाण, अवगुण वालण रा पच्चखाण।
गण म असाधु सरधा नवी दिशा ल जाण, ता पिण अवगुण वालण रा
पचखाण ॥
६७ हिवनवाम्ह चरणलाया धर भाव, हिव मूमारो नहीं अटकाव।
इम पिण महिण तणा पचखाण त्याग ज्यू ग ज्यू पानणा जाण॥
६८ नीवन नैं पूछया अणपूछया जाण, ल र म पिणवालण रा पच्चखाण।
इक निणि उपरत क्षेत्रा र माहि, रहिवा रा त्याग छ ताहि ॥
६९ गण थी नीकल पाथी पाना पिछाण नहि जावा तणा पच्चखाण।
टाना माहै तथा टन नै तम, किण र गम पानण रा नेम ॥

७० जिलो वावण रा पिण छै नेम, मन भागण रा पिण एम।
खोटा सरधावण रा पच्चखाण, पच पदनी साख सू जाण ॥
७१ वलिअनत सिद्धा री साखसू माग, खोटा सरधावण रा त्याग।
इणपचमा काल रै माहिअवार, भारीकर्मा जीव वहु धार ॥
७२ निज स्वभाव आत्म वस नाही, दोहरो परच्छद रहिणो त्याहि।
जद दूजा रा अवगुण सूझै अपार, असाधु सरव हुवै न्यार।
७३ वोले वहु विधआलजजालअयाण, इम करिवा रा पच्चखाण ॥
पच परमेश्वर सिद्ध भगवान, त्यारी शाख सू ए पच्चखाण।
७४ जावजीव गणपति आण, काइ लोपण रा पच्चखाण।
अनत सिद्धा री शाख सू जाण, ए त्याग भागण रा पच्चखाण।
७५ मर खपणो सूस भागणा नाही, ए तो त्याग जावजीव ताई।
मनतीखो हुवै तो आरे होय जो ताम, नही सरमा सरमी रो काम ॥
७६ मूहढै और नै और मन माहि, इम तो साधा नै करणो नाही।
पछै और रो औरवोलणो नाहि, और वोल्या घणो दुख थाहि ॥
७७ गणवारै निकल अवगुणवोलै सोय, तो भव-भव मे रक्तपीती होय।
भूडै हवाल मरै दुख पावै, वले नरक निगोद मे जावै ॥
७८ तिण सू भिक्षु नी रजा सुमाग, जावजीव लोपण रा त्याग।
वतीसै पैतालीसै पचासै साधी, वले गुणसठै मर्याद वाधी ॥
७९ ते रजा लोपण रा जाण, पच पद नी साखे पच्चखाण।
वले अनत सिद्धा री साखसू जाण, मर्याद लोपण रा पच्चखाण ॥
८० वलि गणपति करली मर्याद, वाधै घर अहलाद।
ते पिण नटवा रा पच्चखाण, अनत सिद्धा री आण ॥
८१ गणथी टलीनै किंचित् पिण जाण, लै'र मे वोलण रा पच्चखाण।
अरिहत सिद्ध गणधर भगवान, पच पदनी साखे पच्चखाण ॥
८२ उगणीसै दशै नै फागुण मास, सुदि नवमी ए लिखत प्रकास।
तीजै अविनीतए लिखत करायो, हेठै अक्षर लिख दीया ताहचो ॥
८३ एलिखत वाची नै दशकत कीधा, इम लिख दिया अक्षर सीधा।
सुध परिणाम दीसै तिण वेर, वर्ष किते लियो मोह घेर।
८४ इणरै पिणपरचारो रोग विख्यात, तिणसू इणरी पिण विगडी वात।
गणपति परचो करवा दै नाय, जव अवगुण सूझै अथाय ॥
८५ जिभ्या रो लोलपी अधिकाय, सकडाइ मे रहिणी न आय।
अविनय रोग अधिक प्रगटियो, वल चरण पालण थी घटियो ॥

८६ ज्या सार्थ मेल्या त्या उत्तरदीधा, जद नीकलवा मन कीधो।
वालपणा रो अविनय न्हालो, स्वामी हम कह्यो गोसालो॥
८७ वचनत्यारो न्हाली किणविधजाय, ओ तो साप्रति मिलियो आय।
पोत दशामा प्राश्चित लिम्या था पानैं, तिण न नेइलीक्लीया छान॥
८८ तेरा' र वष विह्व मिल भेला, नीकलन करी गुरु नी हेला।
अवगुण वाल्या अनक प्रकार, तुरत कहिता न आवै पार॥
८९ आसरै तीनमास त्यारा रह्चा ताय, तिण म कीधा घणी वकवाय।
श्रावक आर करता दीम नाहि, जद प्राछित आढ आया माहि॥
९० आलोवण करणी थापी ताय, प्राछित देणी तें लणी ठहराय।
तिण रा शाखी गहम्य ठहराय, तथा पछैं लीया गण माय॥
९१ टोला रा साध माधवी माहि किण र प्राछित ठहराया नाहि।
किण ही प्राछित मूल न लीधो, मिच्छामि दुक्कड नहीं दीधो॥
९२ किण ही मे नहीं काढचा वक, सहुनैं कर दीधा निसक।
प्राछित विण दीया आया माहि, सगला न सुध जाणो ताहि।
९३ यारी तरफ सु चोखा जाण, गुरु र पगा पडीया आण॥
जा अं दोप जाण किण माहि, तो अं आधो काढै जिसा नाहि।
९४ दोपण ज्याम कह्या था मुख मू, त्यारा वादीया पग मस्तक सू।
त्यानै तो प्राछित मूल न दीधो उलटा आप दड ओढ लीधा॥
९५ ज्यारा महाव्रत कह यो था भागा, त्यारइज पगा आय लागा।
ज्यानै कया था लाका म खाटा, त्यानइ ज लखव लीया माटा॥
९६ ज्याम काढया था दाप अनेक, ते ता छाड दीधी सव टेक।
उलटा आपर दड ठहराय, इण विधि आया गण माय॥
९७ ज्यानै ढीला कहिता ताण ताण, त्याराइज पग वाद्या आण।
ज्यासू लाका नैं देता भिडकाय, त्याराइज पग वादीया आय॥
९८ ज्यानै अणाचारा मुखसु आख्यात, तिका पाछी न पूछी वात।
ज्याम दापण कहिता आप, त ता जावक दीया उथाप॥
९९ उलटो आपर दड कराय, गण माहि वैठा छ आय।
ज्यामैं कहिता कपट न झूठ, ह्ना निद्या करता पर पूठ।
१०० उत्तम पुरुष त्यान ठहराय, प्राछित ओढ आया त्या माय।
ज्यान खाटा सरधावण ताय, कीधा था अनेक उपाय।

१ गा० १९१३।

१०१ त्यानै तिरण तारण ठहराय, प्राछित ओढ आया त्या माय।
यानै जाणता था केइ साचा, ते तो 'प्राछितनें'[1] हूआ काचा ।।
१०२ वले जो ताणै यारी दूजीवार, तो अै पूरा मूढ गिंवार।
न्यारा थका हूता घणा गैरी, गण रा हुआ था पूरा वैरी ।।
१०३ सर्व साधा नै खोटा सरधाया, त्यामैइज दड ओढ आया।
या तो च्यार तीर्थ रै माय, कीधो थो घणो अन्याय।
१०४ प्राछित लेइ आया गण माही, टोला मे प्रतीत अणाई।
श्रावका आगै कह्या ते हुआ निसक, यामैईज जाणीयो वक।
१०५ यातो दोप वताया माय, आ तो झूठी कीधी वकवाय।
टोला रा साधु साधवी माहि, दोपण कहिता ताहि ।।
१०६ इण वातसू तो भूडा घणा दीठा, पडिया च्यार तीर्थ मे फीटा।
अै तोप्राछितले गणमाहे आया, सगला साधा नै सुध ठहराया ।।
१०७ गणपति रा गुणनी बहु जोड, अै तो करवा लागा घर कोड।
ऊभा होय परपद मे आतम निदै, गया काल रो पाप निकंदै।
१०८ कहै कर्म जोगै म्हे वारै नीकलीया, पिण भाग्य जोगे पाछा मिलीया।
वलि निज अवगुण जोडा करिताहि, अै तो कहै परखद रै माहि ।।
१०९ वलि जोड मे गणि गुण गावै अथागै, आप स्वाम सीमधर सागै।
तिण हिज टाणै एक वलि टलियो, विहार मे विण पूछ्या नीकलियो।।
११० तीजा अवनीत रो ए वहिनोइ, तिण नै कर्मा दीयो विगोइ।
आसरै दोय मास रहि सीधो, इण पिण माहि आवी दडलीधो ।।
१११ ओ पिण ऊभो रहि परपद माहि, निज आतम निदै ताहि।
अैं गण सू नीकल नै पाछा आया माय, केइ वर्ष कर्म उदै आय ।।

इति तृतीय अविनीत वर्णन

११२ अविनय रोग वध्यो अधिकाय, वले लोलपी अधिक अथाय।
दूजा तीजा अविनीत रै सोग, इण रै परचा रो पिण अति रोग ।।
११३ परचो निषेध्या घणो दुख पावै, मन मे अति सीदावै।
टालोकर नै निषैधै सोय, तो वेदल विलखा होय ।।
११४ सकडाइ मे रहिणी न आय, यारै पुद्गल सुख नी चाय।
आगैवाण पिण नही विचरावै, ते पिण दुख बहु पावै ।।
११५ वलि स्वार्थ नही पूगै जिणा रा, जद अवगुण वोलै गुरा रा।
अविनय रोग वध्यो अधिकाय, सग अविनीता रो सुहाय ।।

---

१ प्रायश्चित लेने पर।

इति चतुथ अविनीत वणन

११६ एव' वले अविनीत थो ताहि, तिण री प्रकृति कठोर अथाय।
ज्या साथै मेलै त्यानै दुखदाइ, ते पिण सूपै गुरु नै आई॥

इति पचम अविनीत वणन

११७ अधिकअविनीतपहिलो कह यो ताहि गण म अधिकाई री मन माहि।
तिणरी आसा वाछा पूगी नही काय जद मिलियो च्यारा सू जाय॥

११८ यार पिण हुतो अविनय रो रोग, आय मिल्यो सरीखा सजोग।
पाचूइ मिलनै बाध्यो जिल्लो, यानै कर्मा दीधो टिल्लो॥

११६ विनयवान भाइ' गुणवान सू तोडी, मूढ अविनीता सू प्रीत जोडी।
अधिक अविनीत रै कपट अपार, परपच तणो नही पार॥

१२० एकदा निशि वहु साधा रै माय, तीजो' अविनीत बोल्यो वाय।
म्हानै दिक्षा लिया नै थया घणा वास, छाटा लारै विचरू तास।

१२१ कुडव कायदो म्हारो नही कोय ते हू मन म जाणू छू सोय॥
रखे ससार घणो वघ जाय, नहीं तो कर देखाउ ताय।

१२२ गुरु कहै थारै याही मन माय ता हु साधा नै लेउ बोलाय।
थे करता थका दखालोला कवही, हू कर देखा लू अवही॥

१२३ इम सुण डरनै बाल्यो इम वाण, हू तो छू कीडी समाण।
हू कहिता और नीकल गया और इह विधि बोल्या तिण ठौर॥

१२४ घणा साधु कहै आ थे सू कहि वाय, इम बोल्या वहु मुनि राय।
तठा पछै आसरै मास ताइ अ पाचू रहया गण माही॥

१२५ गुरु नै वादै तिक्खुतारो पाठ गुणा नै, गुण कीर्त्ति अधिक थुणी न।
आप तीयकर देव समान, वेहु टक तज मान॥

१२६ मुख ऊपर तो कर गुण ग्राम, छानै-छानै जिलो बाध ताम।
गणपति रै मुख ता गुण गावै, छानै-छान अवगुण दरसाव॥

१२७ मुख ऊपर तो बालै राजी राजी, छान-छान कर दगाबाजी।
गणपति नै वाद जोडी हाथो, पगा मे देव नित्य नित्य माथो॥

१२८ वदन करत कर गुण ग्राम, सारा पहिली ल गुरु रो नाम।
पच पदा री वदणा मे कहैवै, तिण में गुरु रा नाम नित्य लेव॥

---

१ पांचवां सपु छोगजी।
२ बड़ा छोगजी (छोगा भाई)।
३ कपूरजी।

१२९ लोका आगैइ करै गुण ग्राम, पिण मन रा मैला परिणाम ।
हाजरी नित्य प्रति लिखनै वतावै, ऊभा परषद माहै सुणावै ॥
१३० ते हाजरी तणी कहू छू वात, साभल जो विख्यात ।
हाथ जोडी नै आप सू ताम, अरज करू छू स्वाम ॥
१३१ भिक्षु भारीमाल ऋपिराय, वलि जय आचार्य ताय ।
यारी वाधी मर्याद अमूल्य, म्हारै छै सर्व कवूल ॥
१३२ खोली मे सास रहै जठा ताइ, ज्या लग जीव रहै तिण माहि ।
अनत सिद्धा री शाख थी जाण, म्हारै लोपण रा पच्चखाण ॥
१३३ आप छो महा दयाल कृपाल, वलि परम पूज्य छो गोवाल ।
प्रभु गणपति रा गुण कह्या छतीस, त्या गुणा सहित छो जगीस ॥
१३४ पच महाव्रत ना छो पालक, च्यार कषाय ना टालक ।
पच आचार पच समिति वत, वर तीन गुप्ति घर तत ॥
१३५ पचेन्द्रिय जीपक महा गुणधारी, नववाड़ सहित ब्रह्मचारी ।
तारण तिरण एहवा गुण धाम, हु आपनै जाणू छू स्वाम ॥
१३६ साधु साधवी तुम गण माहि, पालै आपरी आज्ञा ताहि ।
वीर थका चवदै सहस छतीस, हू जाणू छू तास सरीस ॥
१३७ साधुपणो सुध सरधू सारा मे, वलि सजम सरधू म्हामे ।
आप तणी आज्ञा जे सोय, लोपी टालोकर होय ॥
१३८ तास अढाइ द्वीपना चोर, तेहथी अधिको जाणू घोर ।
अवर्णवाद रो वोलण हारो, महा मोटको पापी विकारो ॥
१३९ महा मोहणी नो वाधण वालो, भागल भृष्ट अन्याइ न्हालो ।
तेह ससार अनत वधारै, अनत जन्म मरण विस्तारै ॥
१४० नरक निगोद जो जावण वालो, एहवो जाणू छू दु:ख आलो ।
तास वात मानै तसु चोर, झूठावोलो जाणू छू घोर ॥
१४१ म्हारै एहवो काम करवारा त्याग, जावजीव ताइ ए माग ।
और नै साथै ले जावा रा जाण, जावजीव पचखाण ॥
१४२ उलि टालोकर भेलो तेम, आहार करिवारो नेम ।
पुस्तक नै वलि पाना अनेक, ले जावण रा त्याग विशेष ॥
१४३ इक निशि उपरत श्रद्धा रा खेत्र, तिहा रहिवारा त्याग छै तेथ ।
अस अवगुण वोलण रा पच्चखाण, उले अनत सिद्धा री आण ॥

१४४ पच पदा री साख सू जाण, अवगुण ना पच्चखाण।
घणं मन तीख राजापा सू जाणी, लिख्या घणो हप दिल आणी॥

१४५ सरमा सरमी थी लिम्या नहो छ, हठै निज अक्षर सवत् सहो छ।
निज निज करते लिखी न सत, ऊभा नित्य प्रति सहु वाचत॥

१४६ उगणीसै चवदा रा सव थी सावी, जय गणि मर्यादा ए वाधी।
नित्य तल मिति लिखि निज नाम, परपद मे मुनि वाचै तमाम॥

१४७ उगणीसै वीसै माघ सुदि जाणी, आ तो वारस तिथि पिछाणी।
परपद म सहु मुनिवर भेला, ऊभा पाचू वाची तिण वेला॥

१४८ इण विधि नित्य प्रति त्याग करता, घणा हरप सू लिखिया कहता।
तेरस गणपति कियो विहार, वहु सता तणं परिवार॥

१४९ अधिकअविनीतविण च्यारु[1]टलिया, छानै विण पूछ्या निकनिया।
साधाजाण्यो रह्या ह्वैला माग गाम, दूजै दिन पिण नाया ताम॥

१५० अधिक अवनीत कपट करि साय पहिला छानै पाना सूप्या जोय।
ओ ता लार रह्यो निजमतलव जान, पाछिलो दखवा वत्तमान॥

१५१ अधिक अविनीत कहै हू जाउ, उणा कन म्हारा पाना ल्याउ।
समय तिण न ल्याउ समभाय, इम कही गुरा नैं वाय॥

१५२ किणही कह या चरण रा नही परिणाम, टलियो सहजेइ कचरो ताम।
जद कहै एक तिर तो ही आछा, हु समभाव ल्याउ पाछा॥

१५३ पछ तीसरे दिवसपटमहोच्छव माय, निज जाड गणि गुण गाय।
पद युवराज तणा घर काड, गुण गाया गाया जाढ॥

१५४ पछं दोय[2] जणा न सुगुरु पठाया, घणा कास च्यारू प आया।
दूज सत तो निपेद्या सीधा, अधिकअविनीतता डरा दीधा॥

१५५ समभावता पाचूइ वाल, अवगुणा रो पिटारा सोल।
वाला रा जाव देई समभाया दूज दिन पाचू ठाय आया॥

१५६ क्षेत्र मलाश्रा कहिजा गुरु न साय, मगसिर माहि दगण करा दाय।
कह्या पाच पद मे घालसा नाम, वले आया पाहचावा ताम॥

१५७ कह्यो छ रात्रि वार रह्या तमु दड, गुरु दसी ते लेम्या अगह।
गण म दाप कह्या ते अनेक, छाड दीधी वाला रो टक॥

---

१ कमूम्वी स निकर—जीवोजी कपूरजी सताजी छागजी (लघु)।

२ चतुभु जजी और हगराज जी को।

१५८ ते बोल छोडणा ठैहराया नाहि, गण मे दड ठैहरायो न काइ।
उलटो दड पोतै ओढनै आया, टल आवरू अधिक गमाया ॥

१५९ समझाय साधु[1] आयो गुरु पास, समाचार सुणाया तास।
नागोर नो चोखलो गुरा भलायो, जद त्या पाछो कहिवायो ॥

१६० मन मान्या क्षेत्रा माहि विचरस्या, स्वामी जी रै नामै शिष्य करस्या।
दिख्या देइ नै सूपा नही ताय, जद गुरु नही मानी वाय ॥

१६१ गण[2] मे आय नव दिन घाल्यो नाम, पछै बारै नीकलिया ताम।
इण विधि इण मे आवा हूवा त्यारी, जब दोष न रह्या लिगारी ॥

१६२ गणपति नही किया अ गीकारी, जब चाल्या मूह विगाडी।
अपछन्दा अविनीत, टालोकर होसी घणा फजीत।

---

१ मुनि हसराज।

२ नव दिन तक पच पदवदना मे गुरु का नाम बोल।

ऋषि हसराज कृत—

१ 'टालाकर च्यारू हुआ गण बारो, लधिव अवनीत वाल्या तिवारा।
इण रा जावण रा परिणाम, जव गुरानी वाल्या तिण ठाम॥
२ गुरु मू बोल्या जोडी हाथ, म्हारी अरज सुणो स्वामीनाथ।
म्हारा पाना हुता ते सार, ले गया गण सू बार॥
३ आपरी आणा हू चाहू, म्हारा पाना नइ न आवू।
कोइ समझ जाय सारा, तिण न पिण ले आउ लारा॥
४ आ तो घणा मीठा बोलै साईं म्हारै साधु साथ भला थाइ।
जिण रा भला हाय जावै, तो लाभ आप नै पाव॥
५ आ तो वेनव कपट न कूर, गण सू हुवा दूर।
गुरु न खबर नहीं छ ताम इण रा दुष्ट घणा परिणाम॥
६ जव गुरु बोल्या तिण वार म्हार भावना नहीं लिगार।
तू अज घर वारवार ऋषि हस मेला धारी सार॥
७ मन मे तो कपट छ भारी इणा परिणामा नू हुय गुवारो।
ऋषि हस न मजर न थाय आ तो दमडा कर छ अन्याय॥
८ भजत करि न गया त्यां धनाय ऋषिहस ता आग जाय।
भागत बठा छ साथ देखी नै उदासी हाय॥
९ म्हे थारा ल्याया नांय, मार मार आया छा थाय।
दूजा गुण छ थारी मार नाम गुणन हरख्या तियार॥
१० इतर अणिक अविनीत आय गगला भागन ऊभा थाय।
मन म तो गगना हरखाय दूजा री गरजगू बातनी आवं नाय॥
११ ऋषि हस कहै गुणिनारा, पे थाय लगायो आनमा न थामा।
द गुरु आण म हूया थारो, थाय ल्यिा गजम भारा॥
१२ जव अ कहै म्हार मना पटो मार इतरा बात कहा ता जाय।
अन्तर हरख बोल्या तिण वार त्यां म मुद्ध ना छ लिगार॥

१ मन्द। [illegible] ² दूत।

१३ जब म्हे कह्यो क्यानै करो सोरो[1], थे तो हुआ गुरा रा चोरो।
थे तो वुढापै जमारो खोयो, धोला मे धूल नखायो॥
१४ हाजरी मे ऊभा राखै महाराज, म्हानै आवै घणेरी लाज।
म्हे कह्यो सुविनीत ऊभा रहै आय, थानै लाज क्यू आय॥
१५ किण रा बाप ऊपर बीजली पडी हुवै सोय, बेटो पिण डर राखै जोय।
ज्यू म्हे हुआ गण बारो, म्हे म्हा ऊपर धारा सारो॥
१६ स्वामीजी परचो उडावै, म्हानै दुख घणेरो थावै।
ऋषिराय तणो वरतारो, म्हेतो याद करा वारवारो॥
१७ ऋषि हस कहै परचो खोटो, तिण सू पड जाय जावक तोटो।
स्वामीजी कहै सो न्याय, थे दुख वेदो थारै रोग घट माय॥
१८ दूजो तीजो बोल्यो तिण वारो, म्हारै बोल रो करो निरधारो।
म्हारे हीयै देवो बैसायो, मान लेसा थारी वायो॥
१९ पिण म्हारै रहिवा रो ठिकाणो नाहि, दुख आहार पाणी रै ताहि।
घणा भेलो रह्यो नही जाय, तिण सू गण बारै म्हे थाय॥
२० म्हे यानै निपेद्या भात भात, ते तो जाण रह्या जगनाथ।
अधिक अविनीत बोल्यो नाहि, निपेद्यो तो पिण गमै नाहि॥
२१ बोला रा दीया जाव, ते तो मान लिया सताव।
मन री तो खवर नही कोय, व्यवहार देख लियो सोय॥
२२ सर्प नै दूधज पाय, तो तुरत जहर हुय जाय।
थानै स्वामीजी दीधी साता, थे तो होय गया ताता॥
२३ अधिकअविनीत नै पूछ्यो तिवारो, थारा परिणाम काइ धारो।
जब बोल्यो पाचमा सू प्यारो, हू तो नही रहू यासू न्यारो॥
२४ लिखत कर दियो सोय, हाथ काट दिया छै जोय।
एक मास पछै च्यारू आहारो, भोगवणा नही लिगारो॥
२५ हंस कहै त्याग करता अनेक, थे तो मानो नही छो एक।
खोटा त्याग थे पालो, साचा इतरा क्यूनी सभालो॥
२६ इम कह्या रो जाव न आयो, मून झाल रह्यो मन माह्यो।
विविध वैराग विविध सुवातो, कही घणी विख्यातो॥
२७ अधिकअविनीत कहै वाता कही साची, पिण म्हारी मति होय गइ काची।
माठी गति रो आउखो वंध्यो म्हारो, किण रो टाल्यो न टलै लिगारो॥

---

1 हो हल्ला।

२८ म्हे कह्यो गार साता री चावना पूरी, तो गुरु री आज्ञा पालो रूडी।
थे शासण सन्मुख थाय, कदा नागोर री पटी देवैं भलाय॥
२९ इम सुण न सगला जिवारो, नेवरा खावै वारवारो।
इण विधि निभजासा सोय, जो गुरु नी आज्ञा होय॥
३० म्है छ दिन रह्या गण वारो, तिण रो प्राछित देसी सारो।
हरप घरी आदरसा, गुरु नै पाए पडसा॥
३१ म्हे विचारया तिवारो, यारो सुधर जाय जमारो।
कपट री खवर नहीं मोय, व्यवहार देख लिया सोय॥
३२ हाथ जोडी नैं ऊभा ह्वेवो, पूव साहमो मूहढो कर देवा।
मिच्छामि दुक्कड थारं सोय, स्वामीजी प्राछित दसी जोय॥
३३ म्हे कहा छा मान मोड, वदना गुरा नैं कर जोड।
वदणा मे घालसा नाम म्हारा जाण जो दढ परिणाम॥
३४ ए ता वोल्या सगला सीधा, घणा लोका नै सायद कीधा।
म्हे विहार कीधो जिवारो, पहुचावण आया लारो॥
३५ गुरा नै आय कही सव वात, जव आज्ञा दीधी साम्यात।
नागोर री पटी म रहीजो, चौमासो ऊतरया दाय दशन कीजो॥
३६ यारा निभाव करण साइ, ए आज्ञा दीधी जोइ।
त्यान कह्यो वे गहस्थ जाय, कम उदा सू मान्यो नाय॥
३७ वले निकलीया गणवारा, ओ तो हार दियो जमारो।
ओरा रा नाम लेवण लागा, हुआ व्रत विहूणा नागा॥
३८ कोइ आपरो टापरो देव लगाय ओरा री चिंता किम थाय।
या लगाया आतमा नै कालो, यारं मूठ रो नही छ टालो॥
३९ डाकण मे नीला काटा मे वाल जिवारो, जव वा करे सोर अपारो।
माटा कुल री रा नाम वताव, कुलवत सैणा[1] रै दाय न आवै॥
४० ज्यू भृष्ट भागल हुआ छैं तेह, ते अवरा रो नाम लेह।
समझू ता दसी जाव, पाडसी घणा लोका म आव॥
४१ इम माहो माहि हुइ वात, सक्षेप कही विस्यात।
ऋपि हस उगणीस इक्वीसे सारा, जाड्यो भागल नो अधिकारो॥

१ मन्त्रवादी।

१६३ [1]टालोकर पाचू टल्या गण बार, उदै आया असुभ अपार।
मन चाहा देश तणी दीसै हाम, पिणपडसी विपत्ति अपूठो ताम ।।
१६४ रसतै ठाकुर नै मिल्यो एक डूब, गुण दूहो कह्यो पग लूब।
जोडो पगरखी रो ठाकुर दियो, आगै जाय डूब चिंतवियो ।।
१६५ विण माग्यो ए दीधो जोडो, माग्यो ह्वै तो दे घालतो घोडो।
लारै जाय कहै पुन्यवत छो आप, मोनै घोडो देवो मा बाप ।।
१६६ ठाकुर कोरडा री दीधी बे च्यार, जब चाल्यो मूह बिगाड।
तिम जाण्यो दीसै पहिलाक्षेत्र भलाया, अब कै देसी मन चाह्या ।।
१६७ आपद पडसी अपूठी आय, तिका बात सुणो चित्त ल्याय।
नवी दिक्षा आवै जिसा बाया या बीज, तिका आगल बात कहीज ।।
१६८ त्या थी पाचू जणा चाल्या आघा, हुआ व्रत विहूणा नागा।
दोय सौ इकवीस ठाणा सू तोडी, निकलिया गण छोडी ।।
१६९ तीर्थ च्यार थकी पिण तूटी, दुख वेदनी लीधी आकूटी[2]।
विपत रूप कर लीधी कुहाडी, चरण रूप सपदा उखाडी ।।
१७० चरण रूप लक्ष्मी नै भगाइ, लीधी आपद नैज बुलाइ।
चरणचिन्तामणि निज कर आयो, ए तो अहलै[3] साटै गमायो ।।
१७१ गणपति ना अति अवगुण गावै, मन मानै ज्यू गोला चलावै।
गुरु उपगार कियो थो भारी, या तो घाल्यो सर्व विसारी ।।
१७२ कृतघ्न कीधो उपगार न जाणै, यानै मोह कर्म अति ताणै।
गुरु उपगार कियो अधिकाय, त्यारी यारै न दीसै तमाय ।।
१७३ आचार्य उवज्झाया ना वैरी, अै तो अतरग माहै गैरी।
लोका नै भर्म माहि ए पाडै, ए तो आसता चोडै उतारै ।।
१७४ गणपति पै भणै अवगुण गावै, महा मोहणी कर्म वधावै।
कह्यो समवायग दशाश्रुतखध, ते पिण जाण्यो नही मोह अध ।।
१७५ समक्त्व चारित्र ना दातार, त्यानै किम घालीजै विसार[4]।
एक वचनसीखै समणमाहण पास, त्यानै वादै पूजै सुविमास ।।
१७६ पचमै ठाणै आचार्य सोध, त्यारा अवगुण बोल्या दुरबोध।
अपछदा पडिया गण सू जूआ, च्यार तीर्थ मे फिट-२ हूआ ।।

---

१. लय : पुन्यवन्तो जीव पाछल भव।
२ जाणबूझ कर।
३ निष्फल।
४ विस्मृत।

१७७ पश्चिम थली में आया चलाय, तिहा अवगुण बोल्या अथाय ।
हर काइ मनुष्य या पास आवै, जब गुरु माहि दाप बतावै ॥
१७८ निद्या तिक्रोइज यारै मान, यारै निद्या तिकोइज ध्यान ।
श्रावक हुता ते चतुर सुजाण, यान वदणा छोडी खोटा जाण ॥
१७९ किणही पूछ्यो गणम सरधा काई, बोल्या चरण सरधा गण माही ।
छठो गुणठाणो तो कहिता जावैं, वले अवगुण पिण दरसाव ॥
१८० बारोटिया[1] जिम देश उजाड, जाणे म्हान ठिकाणे बैसाडे ।
तिण विधि यारै दीसै मन माय, मन माया द दश भलाय ॥
१८१ अथवा सिंघाडो कर देव म्हारो, मन एहवा दीसै छ यारा ।
गुलहजारी को लेव नाम त्यानै दश भलायो ताम ॥
१८२ तिण सू एहवा दीस परिणाम, निश्च तो ग्यानी जाणै ताम ।
विगडायल अै जैन रा पूरा, पडिया च्यार तीथ सू दूरा ॥
१८३ लाज सम त्या अलगी मेली, भखधारी भागल त्यारा चेली[2] ।
साधा म अ बहु दोप बतावैं, भेखधारचा र मन भाव ॥
१८४ ठढी कीधी भखधारचा री छाती अै पिण हुआ त्यारा पखपाती ।
नीव अमाता वेदना री दीधी भेखधारचा र खरची कीधी ॥
१८५ पिण इण खरची सू हामी खुराब, जासी भव भव माहै आव ।
भेखधारी ता आगेइ देता था आल, ते झूठ रा बया न काढ नीकाल ॥
१८६ आ ता सहजेइ पडचो चूठ पान हिव अ क्यान राख छान ।
भेख धारचा रा श्रावक आव, त्या सू ता घणा मिल जावै ॥
१८७ मीठ वचन करि त्यान बालाव, गुरु माहै दाप बताव ।
अै पिण या सू राजी होय जाव, असणादिक आछी रीत बहिराव॥
१८८ वले अ पिण यान पागा चढावै वार वार अवगुण बालाव ।
किण नै कहै म्हामै आसी उदार, किण न कहै आसी मुनि च्यार ॥
१८९ किण न कहै आसी सत तर किण न कहै आसी तीन फेर ।
किणन कहै आव्या रा सिंघाडाएक, म्हारा थका छै विशेप ॥
१९० बहु विध एम कर बकराल माहै कम थी किलाल ।
लोका साधा नै कह्या आय अै ता वाल इण विध वाय ।
१९१ ऋषि हरखचद न आसाढ मझार मिल्यो अधिक अविनीत तिवार ॥
हरख कहै ये आ काइ कीधी जद या कह्या हाणहार सीधी ।

1 छापामार (परभनी) 2 गाथी ।

१९२ वीर छद्मस्थ गोसाला नै सीस, कीधो तो म्हारो काइ जगीस।
म्हे तो या जाणी नही थी काइ, गण बाहिर रहिसा ताहि॥
१९३ छोगजी लारा सू आय ले जासी, ते पिण ना या विमासी।
स्वामीजी पिणमुनि मेल्या नकोइ, घणी वाट नागोर मे जोइ॥
१९३ पछै तो घणी खच मै जाणी, बात पडी पहिछाणी।
हरख कह्यो अवैइ ताय, पड़ो स्वामीजी रै पाय॥
१९५ जद कह्यो बोलपच चिहुतथा दोय, छोड्या गण मे आवणो होय।
जब हरखकह्यो वोलएक पिणज्याही, छूटतौ दीसै नाही॥
१९६ कह्यो वोल छूटा विण गण माहि, सर्वथा आवा नाही।
देश-देश लोका मे बात, प्रसिद्ध हुइ विख्यात॥
१९७ लोक कहै बहु दोष वताया, वोल छोडाया विण आया।
तिणसू बोल छोड्या विणआवा सोय, आछी न लागै कोय॥
१९८ रूप ऋषि कह्यो इसडो मान, न करणो साधु नै जान।
अधिक अवनीत बोल्यो जद बाणो, दाय आवै ज्यू जाणो॥
१९९ हरख कह्यो इसडो मान करीनै, क्यू हूवो खुराब टलीनै।
इण रै अशुभकर्म उदै हुआ आण, मुखसू पिण नीसरै खोटीवाण॥
२०० वेमुख हुवै जो एक बलाइ, ते पिण करै विगाडो जाइ।
म्हे तो पच छा इण विध आखी, मूढामूढी साधा नै भाखी॥
२०१ दूजै अवनीत सता नै एम, सुद्ध वात कही धर प्रेम।
गण मे सत अज्जा तपसी छै, ते म्हारै शिर ऊपरसही छै॥
२०२ थानै असाधु कहै कोइ ताय, तिणसू चरचा करा म्हे जाय।
पिण करा काइ गला ताइ भरिया, तिण कारण म्हे नीसरिया॥
२०३ सत कहे—मुख गणपति अज्जा, त्यासू थारै छै द्वेष अकज्जा।
जद कहै थे तो जाणो छो जी, पाछो मुनिनै एम कह्यो जी॥
२०४ म्हे तो घणोइ कह्यो दलद्रीया नै, पश्चिमथली कानी जावो क्यानै।
उठी रह्याहुता तो इतिहुती क्यानै, कोइ जाणै न जाणतो म्हानै॥
२०५ पहिला म्हेवारै नीकल्या था ताहि, किणहि जाण्यो किणहि नाहि।
इह विध दीन पणै भाखत, बारै टलिया रा फल चाखत॥
२०६ गुरु यारी तिथ[1] न कीधी काय, यानै जावक दिया छिटकाय।
देश-देश रा श्रावक जाण, यानै जाण्या जै'र समाण॥

१. खोज खबर।

२०७ चतुर विचक्षण श्रावक सोइ यारी अर्द्न राग्र कोइ।
हुती मन माया क्षेत्र विचरवा री आस, ते पिण हुआ निरास ॥
२०८ जाण्यो अधिक मास हुआ दिक्षा आय, इम तीना विचार्‌या ताय ।
जिम जिम दिवस नैडा अति आव, तिम तिम अधिक सीदावै ॥
२०९ पाचू अविनीत चौमासै ताम, तीन[1] सत हुता तिण गाम ।
गाउ[2] ऊपर इक सैहर उदार, तिहा चउमासे सत च्यार ॥
२१० जोधाणै गणपति पास तिवार, आया कागद म समाचार।
स्वामीजी म्हारो करै सिघाड, दड देसी ते लेसा धार॥
२११ पूछा नो उत्तर गणपति दीघो लिखी न सिखायोज सीधो।
करार सिघाडा रो करिनै जाण, माहै लेवा रा पचखाण ॥
२१२ इम लेवा री आना नाहि, वले वाल न छोडणो काइ।
बोल छोडी नै सता नै ताहि लेवा री आना नाहि।
२१३ आतम रो यार करणो कल्याण, ता गण माहै लैणा जाण ॥
आतम कल्याण जो करणो नाहि तो अै जासी यारी कमाई ॥
२१४ किण रै गरज है इम लिखि पानै, गुरु सीखाय दिया श्रावका नै ।
ए कागद सुण नै ढीला पडिया, मरम टल्या रा गलिया ॥
२१५ जद एक विनीत श्रावक नै ताहि, या घाल्यो विष्टाला[3] माहि ।
ते श्रावक कहै साधा पै आय, मोनै टालोकर कही वाय ॥
२१६ वोल चाल री ता म्हार न काइ, दाय[4] कहै म्हान लेवो माही ।
नवी खेचल[5] म्हानै नही देवै, खातरी रा अक्षर लिखणा कहिव॥
२१७ सिघाडा री न बोल री न कोय, नवी खेचल नही द मोय।
जव सुद्ध परिणाम जाण्या तिणवार साधा अक्षर लिखीया जिवार॥
२१८ लिखता वले वोल्यो करी नरमाय इम म्हारी आछी लागै ताय।
अरज स्वामीजी सू करन ताय, वोल चाल री देसी मिटाय ॥
२१९ घणी नरमाइ करिनै एहवा, अक्षर लिखीया तहवा।
खेचल आश्री वोल ए ताम, साधा तो लिख्यो इण परिणाम ॥
२२० वोल छोड लेवा री आना नाहि, समाचार गुरा रा पहिलाइ।
त्या वोला री मान किम सत, तिण सू खेचल रा वाल मानत ॥

---

१ इज्जत।
२ तजपाल जी आदि जसोल म।
३ कोण।
४ मुनि हरपचद जी आदि।
५ प्रपच।
६ चतुर्भुज जी छागजी (लघु)
७ तकलीफ।

२२१ स्वामीजी जिको देसी तिको दड, अ गीकार म्हे करसा अखड ।
इण विध दड धारी नै सोय, आयो पहिलो पचमो दोय ।।
२२२ दूजी वार निकलीया नै हुआ छमास, जद गण माहि आया तास ।
भाद्रवा विद तेरस तिथि ताहि, आया दोनू जणा गण माहि ।।
२२४ टोला रा साधु साधवी मुवस, त्यारै दड ठैहरायो न अस ।
उलटो आपरै दड ठैहराय, इण विध आया गण माय ।।
२२४ ढीला ज्यानै कह्या गण माही, त्यारै दड ठैहरायो न काइ ।
गण माहि दोप कहिता था अथायो, तिण रो दट किंचित् न ठैहरायो ।।
२२५ दोप कहिता गुरु प्रमुख माही, तिण रो दड ठैहरायो नाहि ।
दोप कहीनै निकलीया वार, कियो दड पोते अंगीकार ।।
२२६ वलि जो दोप कहै वीजी वार, तो अं पूरा मूढ गिवार ।
ज्या माहै दोप कह्या था थूल[1], तिण रो दड न ठैहरायो मूल ।।
२२७ ज्या माहि दोष कह्या था अनेक, त्यारै दड न ठैहरायो एक ।
ज्या माहि दोप कह्या भारी, त्यारै न ठहरायो दड लिगारी ।।
२२८ अवगुण ज्यामै कहिता दिन रात, त्यारै दड री न कीधी वात ।
दोय रात्रि रही पचमो अवनीत, साधा नै वोल्यो इण रीत ।।
२२९ म्हारै जू न्हाखवा री श्रद्धा सोय, इम कही निकलियो जोय ।
जावा लागा दूजा चौथा माहि, त्या पिण लीधो नाहि ।।
२३० पछै वे कोश गाम जइ पाछो आयो, पाणी लीला री अजयणा अथायो ।
पछै जू न्हाखवारो दोप कही नै, गण मे आयो एक रात्रि रहीनै ।।
२३१ हिवै तीजा अवनीत री वात, साभलजो अवदात ।
सवा छ मास नीकलिया वार, जद मन मे कियो विचार ।।
२३२ अधिक दिवस थया सु अवधार, देवैला नवो चरण उदार ।
वदणा मे नाम घाल करू साखी, ज्यू रहै इसी विधनाकी ।।
२३३ तेजसी नै साखी करि कहै आम, हू घालू वदना मे नाम ।
आचार्य चौमासो तिण दिशि लीनी, तिखुतो गुण वदना कीनी ।।
२३४ पचम पद मे घालेसु नाम, ते पिण थारी साख छै ताम ।
इण विध प्रतीत पूरी उपजाइ, ते छानी न राखी काइ ।।
२३५ सवत्सरी ना दिन नी ए वात, हिवै आगै सुणो अवदात ।
गाउ[2] सैहर तिहा चौमासै सत, एक गृहस्थ आवी भाखत ।।
२३६ तीजा अविनीत तणा समाचार, ते साभलजो विस्तार ।
त्या कह्यो पाच वोल करो अ गीकार, तो हू गण मे आवू इण वार ।।

१ वडे-वडे ।
२. गव्यूति-दो कोश ।

२३७ १ मान तप देवै पिण छेद न दवै, २ म्हारा पोथी पाना नही लेव।
३ स्वामीजी भेला वहु साधा माहि, वे निशि थी अधिक राखै नाहि॥
२३८ ४ आग वगसीमज्यू री ज्यू राख, काम वाज प्रमुख री न आखै।
५ माहि लेइ न न छोडै मोय, तो हू गण मे आवू सोय॥
२३९ तिण गहस्थ नै साधा कही वात, छेद तप ता स्वामीजी रै हाथ।
दाय रात्रि उपरत री ताणै ते पिण स्वामीजी जाणै॥
२४० दाप विना तानै छाडै नाय, वोल वीजा री अरज कराय।
इण विधि गण मे आवा री धारी, दाप री नहीं रही लिगारी॥
२४१ अधिक अवनीत पचमों जाण, हिव तास वतत पिछाण।
छमास वारै रही गण माहि आया, त्यारा घट माहि अधिकी माया॥
२४२ गण म वे मास रही नै ताम, वले कर उदगल आम।
दूज गाम जइ इक साधु फटाय चौमासा म ले आया ताय॥
२४३ इण विध चौडै पाडयो तिण धाडा, ते पिण वाजार मझारो।
ते पिण धाडो चौमासा माह्या वीजा गाम थकी ले आयो॥
२४४ साधा जाण्या ए दगादार पूरा, जद कर दिया गण थी दूरा।
वहु विध कपट कियो गण माहि घणा लाका जाण लिया ताहि॥
२४५ वीजा, तीजा चौथो तीनू भेला था दूठा[1], आहार पाणी तीजा सू तूटो।
धुर पचम छठो या तीना मू ताय, तीजा अविनीत मिलियो आय॥
२४६ छठा गुणठाणा फिरिया सरधीयो, तिणमू आहारपाणी किम कीयो।
ए पिण विकला र नही छ विचार किया आख मीचन अधार॥
२४७ छठो गुणठाणो ता फिरगया पहिला, दिक्षा विण किया सभोग वहिला।
रसे अधिक दिवस थया छठो फिरजाय, तिण भयमू पात आया माय॥
२४८ दानू तीजा अविनीत सू सभोग कीधा पिण नवा चारित्र नही दीधा।
दिक्षा दिया विण किया सभोग तिण सू लागा जाग न राग॥
२४९ ता ए छठा फिरियो तिण सू सभाग करता मन माहै मूल न डरता।
गण मे आया पछ दोनू न आम, काइ पूछा कर तिण ठाम॥
२५० थया तीना नै साढा छ मास उपरत याम चरण पावै क न हुत।
जद तो कहै छठो नही पाय, तो टलिया पछ किम थाय॥

---

१ छोगजी (लघु)।
२ वस्तूरजी का हरपचन्द जा स्वामी क पास स आया।
३ दुष्ट।
४ कपूरजी से।

२५१ गणमे थका रो श्रध्यो छठो फिरियो, तठा पछै नवो न उच्चरियो।
त्यानै गृहस्थसरीखा जाण्या भेषधार, तिण सू दिक्षा विण किम कियो
आहार ॥

२५२ गणमे थका री श्रद्धा जाणै साची, जद तो भेला थया मत काची।
कै असाधु श्रध्या ते श्रद्धा जाणो झूठी, तो थानै दिक्षा आवै अपूठी ॥

२५३ रह्या साढा छमासथकी अधिकवार, तिण मे चरण सरघो इह वार।
तो वे मासताइ न सरध्यो चरित्त, इण लेखै थारै ग्रायो मिच्छत्त ॥

२५४ थारै लेखै साधु नसरध्यो असाध, थारै लेखै सम्यक्त्व विराध।
कुदेव नै देव सरवै वे मास, नवो चरण आवै तास ॥

२५५ सरधै अजीव नै जीव वे मास, नवो चरण आवै तास।
सरधै अधर्म नै धर्म वे मास, नवो चरण आवै तास ॥

२५६ थारै लेखै साधु नै असाधवे मास, सरध्या नवो चरण आवै तास।
गणनी श्रद्धा नै खोटी कह्या ताय, थानै नवो चरण इम आय ॥

२५७ जो गणमे छता री श्रद्धा सुद्ध कैहणी, तो नवी दिख्या त्यानै देणी।
रह्या साढा छ मास थकी उपरत, त्या नै नवी दिख्या आवत ॥

२५८ ए सुद्ध श्रद्धा जाणो सूत्र न्याय, तो नवी दिख्या यानै आय।
ए श्रद्धा सुद्ध नो सभोग नकरणो, असुद्ध जाणो तो थानै उचरणो ॥

२५९ थे नवी दिख्या यानै नही दीधी, तथा पोतै पिण नवी न लीधी।
थे वहु विघन्याय निरणो नवी धारचो, सभोग कियो अविचारचो ॥

२६० यासू नवी दिख्या विणसभोगकीधो, जग माहै अपजश लीधो।
छठो[1] अविनीत रही दिन दोय, जिहा हुतो तिहा आयो सोय ॥

२६१ दड ओढ आयो गण माहि, त्यारा समाचार कह्या ताहि।
जू न्हाखवा री श्रद्धा छै यारै, घणो ढीलापणो छै तीना रै ॥

२६२ पछै हू गयो वीजा[2] चोथा[3] रै ठिकाण, त्या मुझनै कही इम वाण।
थे काइ कीधो ए भागल भृष्टी, महा कपटी अन्याइ दुष्टी ॥

२६३ ऊतो शासण मोटो छै तसु छोडी, क्यू आयो भागला मे दोडी।
जू न्हाखवारी श्रद्धा छै या रै, महा दगादार कपट्या रै ॥

२६४ जूआ न्हाखै जिणनै म्हे कह्या ताय, मास गाय नो खाय।
इण विघयासू कहिणी आवै नाहि, तिण सू क्यू रहै तू या माहि ॥

---

१ कस्तूर जी वापस गण मे आ गए। २ जीवो जी।
३ सतोष

२६५ या तो चउरासी बोलपरुप्या दोष, पाछा सेलभेल किया फोक।
त्या माहिला बोल घणा सेव एह, त्या म दोष पिण नही सरवेह ॥
२६६ कैतो रहिणो उण शासण माय, क म्हार सैमल होय जाय।
कच्छ गुजरात मे एकात जाय, सारा आत्म कारज ताय ॥
२६७ इत्यादिक कही बहु विध वाय, जिण सू पाछा आयो गण माय।
हिवै अधिक अविनीत तीजा पचम जाण, अ तीनूइ भेला पिछाण ॥
२६८ दूजो अविनीत नै चोथा बे भेला, जूओ-जुओ सभोग न मेला।
तीजो अविनीत हरप ऋषि पास, काती सुदि चौथ कह्यो तास ॥
२६९ पचपदा मे घाल्यो नाम, दिवस घण अभिराम।
घालसू नाम बने हू सदाई, प्रतीत हरप नै उपाई ॥
२७० बोलचाल रो तो रह्यो नही कोय, थारै ज्यू म्हारैइ होय।
ऋषि ज्ञान भणी कहै गुरु छै थारै, ते पिण गुरु छै म्हारै ॥
२७१ मगसिर विद नवमी[1] तेजसी नै कह्यो छ, सब सावत बात सही छ।
चौमासो उतरया मुनि राया गुरु रा दर्शण करिवा आया ॥
२७२ छठो अविनीत कहै गुरु आगै, साभलजो अनुरागै।
हु वे दिन त्या रही गणमाहि आया घणी ढीलाइ देखी त्या माह्यो ॥
२७३ विविध वरीत जाण्यो त्यारो ठागा, तिण सू पाछा पगा आय लागो।
काती सुदि ग्यारस नदी रै माह्यो, तिहा नाम चचा रै ले आयो ॥
२७४ मोनै कह्यो थे माना म्हारी वात, नही तो मरमू करी अपघात।
नागलो लेइ न पासा लीधो, मुझ देखता प्रगट प्रसीधो ॥
२७५ नागला लेइ न तिरछा नडीया, पछ दाढ देइ अडवडीया।
जद दया आइ म्हार मन माह्यो, वचन दियो जावा रो ताह्यो ॥
२७६ छठ कही ए अधिक अविनीत री वात, ओछी अधिकी जाणै जगनाथ।
म्हारै पिण वैहम पडया मन माय, तिण सू चित्त विभ्रम अथाय ॥
२७७ पिण तीनू मे जावा रा पचखाण दूजा चौथा म जासू जाण।
कदा ए फेर दिक्षा लेवै जाण, तो पिण याम जावा रा पचखाण।
२७८ वले क्षेत्र मे रहिवा तणा नेम उतरती पिण करवा रा एम ॥
आचाय र मूहढै ए जाण, किया जावजीव पचखाण।
२७९ गुरु कह्यो त्याग भाग ए साय, तो भव भव म रक्तपीती होय।
पछ गुरु न वादी न गण सू निकलिया विच अधिक अविनीतज मिलियो ॥

---

[1] कातिक विद नवमी होनी चाहिए।

२८० तिण लेवा रा किया अनेक उपाय, दिन इक निशि खप करी ताय।
तिण रै तो मैमल हुओ नाय, मिलियो दूजो चोथा सु जाय ॥
२८१ अधिक अविनीत पूठा थी ध्यायो, ते तीना कनै चल आयो।
त्या भेलो थावा रो उपायज कीधो, पिण त्या तिण नै माहि न लीधो ॥
२८२ दूजो चोथो छठो विहार करीनै, गया कोश अनेक चली नै।
'धुर तीजो पचम'[1] तिण वेलो, आहार पाणी तीना रै भेलो ॥
२८३ तीनूइ गुरु दिश कियो विहार, गण मे आवा री धार।
इह अवसर गणपति रै पायो, ओ तो 'वाव' थकी चल आयो ॥
२८४ मूलजी कछी कुलवी जाण, मुनि वेस श्रावक पहिछाण।
गुरु रो दर्शण करि वोल्यो ताम, आयो आपरा दर्शण काम ॥
२८५ विच माहि मिलिया तीन अविनीत, म्हासू वाधी अधिक प्रीत।
मोनै दिख्या देवा उपदेश दीधो, कहै कार्य हिव तुम सीधो ॥
२८६ आपरा अवगुण वोल्या अनेक, पूरा कहिणी न आवै विशेष।
पोल घणी जाणै निज माय, तिण सू हाजरी नित्य लिखाय ॥
२८७ साधा नै ऊभा राखै मुख आगै, इम लोका मे आछी न लागै।
साध-साधवी घणा रहै भेला, निज कीर्त्ति काज स मेला ॥
२८८ म्हानै न्यारा विचरावै नाहि, वहु दोप अछै गण माहि।
तिण कारण गण सू निकलिया, विहार मे विण पूछया टलीया ॥
२८९ जद म्हे कह्यो दोप जाणो इण माहि, तो चरचा करवी स्वामीजी सू त्याहि।
पिण छाना मांना भागवो नही भोर, छानै भागता थेईज चोर ॥
२९० जिनमत मे भागवो नही छानै, चोडे पूछवा वोल गुरा नै।
जद कहै वोल म्हे पूछा जिवारै, म्हानै वोलवा न दै तिवारै ॥
२९१ गलो ग्रहै हाजरी रै माहै, म्हानै ऊभा करदै ताहै।
करै फजीत लोका रै माहि, तिण सू डरता पूछी सका नाहि ॥
२९२ पूर्व भव मे स्वामीजी आप, कोइ तापस था महा ताप।
साधा ऊपर तो दया नही आलै, ऊभा कर देवै तडकै उन्हालै ॥
२९३ अज्जा नै तो खमा-खमा कहै छै, त्यारा कैहणा मे आप रहै छै।
वले कह्यो स्वामीजी तो परमाधामी छै, साधा ऊपर दया नही छै ॥
२९४ तीजै अविनीत कह्यो वले एम, ऋषिराय वरतारै खेम।
जुदा-जुदा लेइ नै सिघाड, विचरता हुता अणगार ॥

१ चतुर्भुज जी, कपूर जी, छोगजी, (लघु)।

२६५ पचपदरा निसा क्षेत्रा मे तास, करता दाय ठाणा चउमास।
तिहा वठा सीखावा म्ह बाया भाया नै, ए बात म्हारै मन मानै ॥
२६६ वले मन माया विचरता खेत्त, वाइ भाइ मेवा करता तय।
आग अम्हे एहवी अैसा करता, अब ता रहा छा डरता॥
२६७ साधा रा ता भाग न्हाम्या सिघाडा, किम विचर हूस कर यारा।
इत्यादिक अवगुण बोल्या अनक, जद म्ह कह्या आण विवक ॥
२६८ दशा रै साल हू जाया मेवाड, जद थे अवगुण वात्या अपार।
म्हार पिण कम वधाव्या अपारी, ते हू याद करू वारुवारी ॥
२६६ ते दिन थी तुम्हन हू साय, साधू न सरधू कोय।
स्वामीजी न सुद्ध साधू जाणू थारी प्रतीत न आणू॥
३०० पछ कमर बाध हू आवण लागो, मान लेग्या दुकास म आघो।
अधिक अविनीत कह्या मुख आग, तुम्ह जावो सो आछी न लागै ॥
३०१ तुम्ह आधारभूत छो अम्ह नै कह्यो करी सजल लाचन नै।
कह्या नरम रुप वच मरागकारी पिणम्ह ता न माया लिगारी ॥
३०२ गण माहि आवा तणी हूस राख वल अवगुण इण विध आख।
त्यान विवेक रा विकल कहीज, त्यारा काय किम विध सीझ ॥
३०३ गुरु रा दशण करवा श्रावक एक आय कह्या सुगुरु न विशेष।
हू आवतो दशण करिवा काम तीज अविनीत मुझ कह्यो ताम॥
३०४ वाल चाल गै तो म्हारै न काय, म्ह पिण पगा पडा छा जाय।
गण माहै दोप जाण ए ताय, ता इम कहि किम माहि आय ॥
३०५ जददिक्ष्या दिया विण नेवा रा त्याग जय गणि कीधा सुद्ध माग।
तीनूइ गणपति ना समाचारा साभलिया तिण वारा ॥
३०६ दिक्ष्या दिया विण पाचा न जाण, माहि लवा रा पचखाण।
छठा न बाल थाम्या थयो जास तिणसू मिलिया पड ठोकतास ॥
३०७ ए त्यागसुणी थया अधिक उदास त्यारा मन री न पूगी आस।
तिण मेहर थकी इक वाइ आइ, तिण गणपति न वात सुणाइ ॥
३०८ कह्यो तीजा अविनीततणा अवदात, मान मिलिया कही तिण वात।
आप त्याग किया त साभल कान, मान इण विध वान्या वान ॥
३०९ देखा अमक दिया री मार्जी स्वामीजी दिक्षा दिया विण आखडी[1]
लीजी।
म्ह ता गण म आवा री धारी, देखा स्वामीजी काय विचारी ॥

[1] प्रतिज्ञा।

३१० इतला दिन रह्या इण गाम, गग मे आवा रै काम ।
देखो असकड़िया री माजी प्रसीधो, म्हे तो बाल पणै चरण लीवो ॥
३११ वर्ष इता चरण पाल्यो ताह्यो, म्हासू नवो लियो किम जायो ।
एक घड़ी ताइ ऊभा विख्यात, वाइ कह्यो म्हासू करो वात ॥
३१२ पचपदरै पोस विद माय, तीनूइ तिहा आया चलाय ।
जय गणपति रै पास जिवार, आयो तीजो अविनीत तिवार ॥
३१३ सन्मुख वदना कीधी जोड़ी हाथ, घणा देखता प्रगट विख्यात ।
म्हे तो वंदना रो सभोग कीवो, घणा दिवस तांइ नाम लीवो ॥
३१४ मुणियो दिख्या विण नही लै माहि, तठा पछै वदना छोडी ताहि ।
म्हानै नवी दिख्या आवै किण न्याय, हिवै जय गणपति कहै वाय ॥
३१५ गृहस्थ पिण वदना मे घालै छै नाम, कारण वनणा रो नही ताम ।
चउमासा माहि मुनि था त्यासू, संभोग न कीवो ज्यासू ॥
३१६ साढा छ मासे नाया गण माय, नवी दिक्षा आवै इण न्याय ।
बोल्यो आपनै म्हामै तिको करो सोय, न करू आपसूं चरचा कोय ॥
३१७ वले कहै हूतो छू कीडी समान, आप हाथी समान सुजान ।
जय कहै—सम्यक्त्व राखजो सोइ, बोल्यो सम्यक्त्व चारित्र दोइ ॥
३१८ जय कहै—चरण सरवै आप माहि, तो सम्यक्त्व पिण रहै नाहि ।
जद कहै-कदै मार्ग रहै नाहि, नीकल्या चरण किम न कहाइ ॥
३१९ जय कहै-नीकल्या मे चरण कहीजै, तो पाछला नै स्यू सरधीजै ।
इम कह्या पाछो जाव न आयो, पछै आयो जिण दिशि जायो ॥
३२० पहलै दिन सिरदाराजी पूछ्यो ताहि, म्हांनै साधु सरधो कै नाहि ।
दिख्या विण न त्या म्हारै ए मर्याद, जद कहै हूं तो सरधू साध ॥
३२१ किण ही नै कही दीसै छै वात, तिण आय पूछी साख्यात ।
या वदणा माहै नाम घाल्यो हुलासी, ते वदणा थारी यू ही जासी ॥
३२२ जय गणि कहै—यूहीं किम जाय, तिण री हुई निर्जरा ताय ।
अविक अविनीत सिरदाराजी पाय, बोल्यो इह विध वाय ॥
३२३ इतरा दिवस रह्या उण ग्राम, ते माहि आवण रै काम ।
गणपति नाहि किया अगीकार, जद कर गया तीनू विहार ॥
३२४ हिवै वार[1] अविक अविनीत, वेहुनै मेल गयो अनीत ।
त्या तीना कनै जावा भणी प्रसीधो, अनेक कोसा रो पैडो कीधो ॥

१ अलग ।

३२५ त्या तो तिण नैं आदरिया नाय, जद छठा नैं लेग्यो फटाय।
घुर अविनीत गयो तिहा थी आघो, घणा लाका जाण लियो ठागो ॥
३२६ हिवैं तीजो[1] पाचमो[1] वलि गणि पैं आय, माहि आवा करी नरमाय।
महा विद वारस तिथि वदीत, गुरु न मिलियो तीजो अविनीत॥
३२७ लोका सुणता कहै ए गुरु म्हारा, म्हे चेला छा यारा।
जय कहै—गुरु तो कहै छै साख्यात, तो क्यू न करै ऊचा हाथ॥
३२८ बोल्यो आहार पाणी री सभोग न काइ तिण सू वदणा करा म्हे नाहि।
जो करैं आहार नो सभोग उदार, तो म्ह वदणा करा इह वार॥
३२९ जय कहै—पहिला वदणा कीधी जोग, जद पिण न हुतो सभोग।
वदणा तिहा कीधी घर प्रेम, ता इहा करैं नही केम॥
३३० कोइ कहै—म्हारी माता वाझ तेम, गुरु कही न वाद ते एम।
लोक कहै एतो ओलभो साचो, खराखरी ए जाचो॥
३३१ पचम[1] अविनीत गुरु पैं आय, गण म आवा रा किया उपाय।
गुरु कहै दिख्या दीया विण सोय, म्ह तो माहै न ल्या कोय॥
३३२ कहै आप दिख्या विण त्यागज लीधा, पिण सरूपचदजी न कीधा।
जय कहै—सव साधा रै नेम दिख्या विण ल केम॥
३३३ महा सुदि नवमी ताइ सुविशेष इम वाता हुइ अनक।
इण विध गण मे आवण आघा, बले दोष बतावण लागा॥
३३४ साढा इग्यार मास लग ताहि, चारित्र सरध्या गण माहि।
तठा पछैं ता जाणैं सव नानो, पिण ए ता प्रत्यक्ष पिछानो॥
३३५ अधिक अविनीत रैं सभोग या सू, तिण सू श्रद्धा जूदी की त्या सू।
गणपति हाजरी लिखत सुणाया, ज्यारा हाथ रा अक्षर दिखाया॥
३३६ घणा गामा मे वदणा रा त्याग कराया, ते सुण न द्वेप भराया।
लोक पूछ्या बोल आल पपाल, झूठा देवैं वहु विधि आल॥
६३७ साधा मे दोप कहै अविवेक, त्यार कम तणी कालो रख।
साधा मे दोप बतावै मूढ, ते कर रह्या कूडी रूढ॥
३३८ साधा मे अणहुता दोप बताव, त तो गाला रा गोला चलावैं।
किण न कहै अक्षर कीधा, त डरता थका लिख दीधा॥
३३९ कोरडा नी मार मता घाल तेम, म्ह पिण अक्षर किया छैं एम।
किण न कहै मिक्षु स्वाम निकलीया, तिम म्हे पिण यासू टलिया॥

१ वपूरजी। २ ३ छोगजी (लघु)।

३४० किण नै कहै ए ढीला चालै, दोष सेवता नै कुण पालै।
किण नै कहै सेलक नै ढीलो जाणी नै, चेला गया छोडी नै॥
३४१ किणही पूछ्यो छानै क्यू नीसरीया, पूछी नै नही टलिया।
जाव करवा री आसग न काय, तिण सू छानै नीसरिया ताय॥
३४२ किण नै कहै चेला री प्रतीत न गुरु नै, ज्यू गुरु री प्रतीत न शिष्य नै।
किण नै कहै मोटा भाडा छोत न लागै, इम दृष्टान्त दे लोका आगै॥
३४३ किण नै कहै पडै किण वेला कोपरीयो[1], कदे राय[2] पडै कदे मडीयो[3]।
इम पडता-पडता पड जाय वघारा, इम जाण नै हुय गया न्यारा॥
३४४ तिण नै बुद्धिवंत ह्वै ते पाछो कहै एम, दोष जाण्या पछै रह्या केम।
एक दोष सू बीजो भेलो करै ताही, लिखत पचासे कह्यो अन्याई॥
३४५ किण नै कहै दोष जाणै रह्या क्यानै, दोष जाण्या पछै छोड्या यानै।
इण विधि झूठ बोलै जाण-जाण, तिण रो नही कठेई प्रमाण॥
३४६ दड लेई माहि आवण साजै, वलि दोष कहिता नही लाजै।
दंड लेई माहि आवण वैठा, वलि दोष वतावै घेटा॥
३४७ दड लेई माहि आवा री हाम, हिवै दोष कहे किण काम।
दड लेई माहि आवा नै त्यारी, वलि दोष कहे छै गिवारी॥
३४८ दड लेई माँहि आवण पूरा, वले दोष कहे छै कूडा।
दड लेई माहि आवत तुठा, वले दोष वतावै झूठा॥
३४९ दड लेई माहि आवै जाणी, वलि दोष कहै छै अनाणी।
दिक्षा विण और दड जो देवै, जव तो गण मे आवी लेवै॥
३५० दिक्षा लेवा रा नही परिणाम, तिण सू वोलै वहु विधि ताम।
'दिक्षा विण त्याग कीया' सहु जानै, ते प्रगट पिण नही छानै॥
३५१ लहडा[2] रै पगै पडणो काठोकाम, तिण सू दोष तणो लेवै नाम।
ओ पिण झूठ वोलै साख्यात, घणा वर्सा री कहै छै वात॥
३५२ दोष जाणै तो वदणा मे नाम, क्यू घाल्यो घणा दिन ताम।
वदणा तणो म्हे कीधो सभोग, सवच्छरी सुभ जोग॥
३५३ पछै दोष री वात रही क्यूही, झूठा दोष वतावै यूही।
किणही पूछ्यो थे दाप कहो गण माहि, थे पिण सेव्यो घणा वर्स ताई॥
३५४ घणा वर्स रह्या असाधा माय, तिण सू नवी दिक्षा त्या नै आय।
जद कहै नवी दिक्षा नावै म्हानै, दोष जाण्या पछै यानै॥

१ पत्थर का टुकडा। २ तरेड। ३ छोटों के।

३५५ दोष न जाण्या म्हारो न थारा, न गयो साधुपणो सगला रो।
त्यानै कहिणो थे इता वस ताइ दोष न जाण्या काइ ॥
३५६ तिण सू थारो थे सावुपणो थापो, थारो थे काय उथापो।
ए पिण दोष हिवडा जाणै नाय, तो थारो सजम किम जाय ॥
३५७ घणा वसा रो चरण इम थारो तो इमहिज चरण इणा रो।
इतरा वसा रा सजम गयो नाहि निर्दोष जाण सेव्या ताहि ॥
३५८ हिवडा पिण बोल तेहिज छै तेम, थारो चारित्र जाव केम।
बोल आगै हुता हिवडा तेहीज तो चारित्र किम न कहीज ॥
३५९ न्याय दृष्टि करि मन मे विचारा, म करा आख मीच नै अधारो।
घणा वसा रा चरण पोता मे सरध कहै प्रगट पिण नही पडद ॥
३६० इतरा वसा रो चरण गण मे पिण थापै, ता हिवडा काय उथाप।
इतरा वसा रो चारित्र थारा न थारो, दाप सेव्या ता न गया किणा रा ॥
३६१ थे गण म थका निर्दोष जानता, जद टालोकर दोष कहता।
पिण थे निर्दोष जाणी सेव्या जव ही, तिणम तिका सजम सरधो अवही ॥
३६२ ज्यू हिवडा सत दोष न जाणे या सरीखा टालाकर ताणे।
पिण सत निर्दोष जाणी नै सेवै तिणस त्या म दोष कुण केहव ॥
३६३ तेह टालोकर दोष कह्या थी थारा सजम न गया सेव्या थी।
ज्यू हिवडा टालोकर दोष वतावै तो म्हारो सजम किम जाव ॥
३६४ गया काल रा टालाकर जेह, वर्त्तमान रा छेह।
दोनू टालोकर सरध्या मे तत्य, थारा सरधा गया काल रा चारित्त ॥
३६५ तिमहिज हिवडा वर्त्तमान काल, म्हे सवा निर्दोपण म्हाल।
थे दानू टालोकर दोष वताया, ता म्हारा चारित्र किम जाया ॥
३६६ बोल थाप गण मे गय काल त्यारो चारित्र सरधा विशाल।
हिवडा ते ही वाल थाप पिण तेह तहिज मत गुणगह ॥
३६७ बोल थाप हिवडा तेहीज, ता चारित्र किम न कहीज।
चरण पहिला तिका हिवडा पिण थाय, हिवडा नही सरध्या पहिलाई
नाय ॥
३६८ निजरा हत छाड जे वाल, पिण जाण निर्दोष अमाल।
दोष न जाण्या बोल छ तहवो छाड या पिण नही छाड या जेहवो ॥

३६९ स्वाम भिक्खु पिण इम कही वात, लिखत पैंतालीसै अवदात।
सरधा आचारकल्प रो वोल, तथा सूत्र नो वोल अमोल ॥
३७० गुरु तथा भणण हार कहै जाण, करवो तिमज साधु नै प्रमाण।
नही वैसै तो केवलिया नै भलायो, पैंतालीसै भिक्षु फुरमायो ॥
३७१ एवचनधारया सम्यक्त्व नै नही जोखो, ज्यू पामै अविचल मोक्षो।
ए भिक्षु वचअगीकार करीजै, मन नी ले'र मेटीजै ॥
३७२ पच ववहार भगवती मझार, वले ठाणाग नै ववहार।
जीत ववहार पचमो दाख्यो, तिण सू वीर आराधक भाख्यो ॥
३७३ आख्यो आचाराग माहि जिनेश, पचमध्येन रै पचमुदेश।
सम्यक सुद्ध जाणी मुनि सैवै, जिन असम पिण सम कहिवै ॥
३७४ तेरै अंतर कह्या भगवती माय, सका राख्या मिथ्यात वेदाय।
श्री जिन भाखै ते सत्य निसक, इम धारी तजै मन वक ॥
३७५ तास आज्ञा नो आराधक कहीजै, ए वचन अंगीकृत कीजै।
तथा वले आचारंग कह्यो जिनेस, पचमध्येन रै चउथै उद्देश ॥
३७६ तद्दिट्ठीए—आचार्य नी दृष्टि देखी, प्रवर्त्तै सुविनीत विशेखी।
तम्मुत्तिए—आचार्य नै अभिप्राय, तन्मय पणै रहै ताय ॥
३७७ तस्सन्नी—गणपति जाणै ते ज्ञान, तिमहि जाणै सुजान।
तप्पुरक्कारे—गणपति नै जाण, करै सहु कार्य मे अगवाण ॥
३७८ इहा कह्यो जाणपणो गुरु नो होय तिम पोतै जाणवू सोय।
कार्य सर्व माहि अगवाण, करै आचार्य नै सुजाण ॥
३७९ ए वचन देखता जिनेश्वर आप, करी आचार्य नी थाप।
वुद्धिवत विनयवत मिलि जेह, गुरु थापै ते अगीकरेह ॥
३८० गण माहि सेव्या सतरा वर्स वोल, थारो न गयो चरण अमोल।
ज्यू म्हे पिण हिवडां निर्दोष जानता, म्हांमै दोष क्यूं ताणता ॥
३८१ जव कहै म्हे दोष जाणा तिण लेखै, थामै दोष सरधा सुविशेखै।
थे निर्दोष जाणी सोय, पिण म्हारै लेखै दोष होय ॥
३८२ तिण नै कहिणो थे सेव्या इता वर्स ताइ, थाँरै लेखै दोष था माही।
थानै इतरा वर्सा रो दोष न लागै, निर्दोष जाण सेव्या सागै ॥
३८३ म्हे पिण निर्दोष जाण ए वोल, तो म्हारो चरण अमोल।
थारो गयो काल म्हारो वर्त्तमान, ए दोनू सरीखा पिछान ॥

३८४ गया काल रो साधुपणो न्यारो, ज्यूं वर्त्तमान रो म्हारो।
ज्यूं थे पिण महाच्छत्रादिक करता, तिणम टालोकर दोष कहता ॥
३८५ पिणये दोष जाण न सेव्यो कोय तिण सु दोष न सरधो सोय।
ज्यूं थे पिण हिवडा दोष कहेह पिण म्हानै दोष न न्यासेह ॥
३८६ थारै गया काल रा टालोकर तेह, ज्यूं हिवडा टालाकर थेह।
ते पिण कहिता छोड्या म्हे टीला नै, ज्यूं थे पिण कहा छोडया थानै ॥
३८७ ते पिण कहिता आगो नो चिमतकार, ज्यूं थे पिण कहो इणवार।
ते पिण कहिता साधा म दोष ज्यूं थे पिण कहा छो फाक ॥
३८८ ते पिणगणनो निंदा अति करता थ पिण इम पिंड भरता।
क्षेत्रे रहिता त पिण नाणता सक, थामै पिण याहिज वक ॥
३८९ त्या पिण निखत सू स दीया भाग, थारा पिण आहिज साग।
उणा री थारी सरीखी वात ते प्रगट दीसै विख्यात ॥
३९० ते विखर गया मूआ भू डी रीत, ज्यूं थे पिण हासो फजीत।
एक भाई साधा नै कह्यो एम, म्हे समझाया घर प्रेम ॥
३९१ दात साभ छ मू हटा रै माय, पिण बार पड्या न साझाय।
जद कहै और भारी दड दीजै, पिण नवी दिक्षा किम लीज ॥
३९२ किणन कहै अवरा नै ता अ घेर, पिण चेला नै क्यू न अवेरै।
एक श्रावक कह्यो साधा न आय, तीजा अविनीत री वाय ॥
३९३ इण विधि मानै कह्या त्या जाण, पाट विराजत पाण।
दानू माया चितव्या मन माहि, भामियापणा राखणा नाहि ॥
३९४ पाथी पाना मत न अज्जा, सहु गणपति ना छ सकज्जा।
मत मत्या कहै राखणा नाही, तिण सू ममत भाव न वधाई ॥
३९५ हाकम नी पर राखणा हर, रहै सत सती इम जेर।
ना गुरु कहै जठै करै चउमास, वने शष काल सुविमास ॥
३९६ चौमासा उतरिया पछ तेह वगा दशण करै जेह।
तिण कारण पाथी पाना मुनि अज्जा, ले लीया सव सकज्जा ॥
३९७ ए ता माल छ सहु गणपति रो और नही छै किण रो।
मुरजी आव तो म्हलै चउमासो मुरजी विण न फल आसो ॥
३९८ भरती माहि पडिया रह एम, जार न लागै तेम।
वडो गहु भणिया गुणिया हाय तिण न छोटा लार म्हलै सोय ॥
३९९ ते पिण मुरजी हूवै तो म्हेलीज, मुरजी विण काय न सीझै।
कदा सिघाडा करी विचराव, तो वधवस्ती वोलण री करावै ॥

४०० बोलै तो पाछी हाजरी लेवै, याद इती किम रहेवै।
इम बधवस्ती सू गण माही, रह्या बारै वर्ष ताइ ॥
४०१ घणा दोहरा दिन काढ्या ताही, कोइ मढावालो[1] मिलियो नाही।
एकलो टलवा रो नही देख्यो टाण[2], तिण सू इम दिन काट्या जाण ॥
४०२ बीज इती बधवस्ती माय, कवण रहै दुख पाय।
तीजा अविनीत तणा ए धार, एक श्रावक कह्या समाचार ॥
४०३ इण विधि सकडाई रै माहि, रहिणी न आवै ताहि।
तिण कारण न्यारा निकलिया, तो दोप कहै क्यू अलीया[3] ॥
४०४ दूजो अविनीत काती मे ताय, साधा कनै कही इम वाय।
छमास उपरत हूआ इण नै, तिण सू दिक्षा विण न लेणो तिण नै ॥
४०५ दिक्षा विण माहि लेसो अन्यावो, थे पिण ठागा सू काम चलावो।
वलि गणपति पास जोधाणै आय, एक गृहस्थ बोल्यो इम वाय ॥
४०६ दूजा अविनीत तणो ले नाम, मो पासै कहिवाया ताम।
थे जोधाणै जावो स्वामीजीनै कहिजो, दिक्षा विण यानै माहि म लीजो ॥
४०७ छमास थी अधिक थया है इण नै, तिण सू दिक्षा विण न लेणो तिण नै।
त्यारै जू न्हाखवा री श्रद्धा छै ताम, तिण सू सम्यक्त्व रो काठो काम ॥
४०८ थया छमास थी अधिक विशेपो, दिक्षा विण गण मे किम लेसो।
इण नै दिक्षा विण माहि न लेसै, तो बाप दादा रो घर गिणैसै ॥
४०९ जो दिक्षा विण लेसो इणवार, तो जाणसा भरत म थयो अधार।
म्हारो गण मे आवा रो मन होय, तो दिक्षा ले आसा जोय ॥
४१० म्है तो कपूत सपूत उणारा, पिण नही अवर किणा रा।
उतावलो बोली नै वात आखी, इम गृही गणि पै दाखी ॥
४११ इण लेखै नवमास गण मे रही आयो, दिक्षा विण किम लै माह्यो।
या नीकल्या पछै छठो अवनीत, गण मे रह्यो नवमास सुरीत ॥
४१२ तिणनै दिक्षा विण या माहि लीधो, वले आहार पाणी भेलो कीधो।
जो साधुपणो जाणै गण माहि, तो पोता मे चारित्र नाही ॥
४१३ जो गण मे कहै छठो गुणठाणो, तो न्यारा रह्या दोप जाणो।
गण मे असाधु सरवैजो ताहि, तो छठा अविनीत नै लेणो नाहि ॥
४१४ साधु पणो सरधै गण माय, तो पोतै जुदा रहै काय।
दोनू प्रकारे वध मे आय, साप ग्रही छछुदरी न्याय ॥
४१५ जो साढा छमास तणी मर्याद, न मान्या ए अपराध।
किती काल रहै असाधा माहि, तथा आज्ञा बारै रह्या ताहि ॥

१ साथी। २ अवसर। ३ झूठा।

४१६ ता साधुपणा तिण नैं देणो सुवद, किता काल पछै तप छद।
रहै इतरा कात अमाधा माय, तठा ताइ छेद तप आय ॥
४१७ तेहथी अधिक चारित्र आपो, थारै किसी छै थापो।
इम हिज जुदा रह्या पहिछाण, चरण छेद तप जाण ॥
४१८ साढा छमास नीं थाप है म्हार, कहो कवण थाप है थार।
इम कह्या सुद्ध जाव नहीं आवै, तव पग पग झूठा थावै ॥
४१९ स्म नामन वारै नीकल सोय, ज्यार इण विधि दोघट होय।
वात वाल माहि नहीं छ सध, त्यारी वाली मे नहीं वध ॥
४२० तिलो करीपाचू नीकल्या साथ, पछ जू जूआ हूआ साख्यात।
फट फजीती इण विधि हाय, फल प्रत्यक्ष देखो सोय ॥
४२१ परभव नरक निगाद निवास, इण भव आपद पास।
इम जाणो शासन गै वार, काई म हाज्यो लिगार ॥
४२२ अ जू जआ हूआ ते प्रश्न पूछीज, प्रभु तीथ किण माहि कहीजै।
थाम थाम क म्हामै उदार, इण रो उत्तर दवा विचार ॥
४२३ प्रवचन सूत्र पिण तीथ सार, कह्यो रैसी इक्वीस हजार।
तिण री तो पूछा करी नही काय, पूछा चरण तीथ री जोय ॥
४२४ कदा कहै म्हा टलिया साढा पटमास, तठा ताइ तीथ गण मे तास।
साटा छमास पछ गण माहि, चरण तीथ कहै नाहि ॥
४२५ तिण न कहिणा थे अविनीत हुय गया जूआ गण मे असाधु किहा थी हूआ।
थे टलिया पछै साढा छमास ताई जो चरण तीथ गण माहि ॥
४२६ ता तठा पछ पिण चारित्र तेही, थाप वाल मुनि जेहो।
थ टलिया त पिण हूआ जू जूआ ताहि हिव चरण तीथ किण माहि ॥
४२७ कदा जाप आप मे कहि दीय मूट, निज मत री राखण रूढ।
पिण समदृष्टी मान नहीं काय, यानै झूठाबोला जाणा सोय ॥
४२८ कद चरण तीथ उण माहि जाय, कदा दूजा मे पाय।
इम उटता फिर धारा तीथ असार तिण म कद नहीं भली वार ॥
४२९ भला हाय वल हाय जाव त्यार यारै ए पिण नहीं छै विचार।
विविध प्रकार त्याग दिया भाग, वनै टलिया पछै हूआ साग ॥
४३० आगा नाप न्आ अपछदा, विगडायल जन रा जिंदा।
स्वाम भिगु नी वाधी मर्याद, त पिण लोपी अगाध ॥
४३१ नित्य नित्य त्याग करता था अनव, त पिण भाग्या विनाप।
सकडाई म रहिणी न आया, तिण सू ओ ठागो वणाया ॥

४३२ ते पिण ठागो जाणै लियो सोय, फिट-फिट करै वहु लोय।
एहवा झूठाबोला रै माय, चरण तीर्थ किम थाय॥
४३३ चरण तीर्थ गण शासण रुडो, तिण सू तो पडिया दूरो।
शासण नदन वन उपमान, तिण मे च्यार तीर्थ गुणखान॥
४३४ हिवै किसो गण शासण मानो, प्रभु पथ किसो जानो।
ए गण चिन्तामणि कल्पवृक्ष, अवगुण वोलवै छोडी पक्ष॥
४३५ हिवै शासण गण किमो गिणेसो, सरण किसै हिव रहेसो।
शासण सकल कल्याण निकेत, तिण सू थे थया अचेत॥
४३६ हिव थारै कवण मदर सुखम्थान, थारै ए पिण नही छै पिछाण।
शासण गण मे थे भणिय' गुणिया, टलनै अवगुण थुणिया॥
४३७ थानै भणावा रो ओही प्रताप, प्रगट दिखायो आप।
गण मे थया थारै आछा थोक, त्यासू इन द्वेप नो फोक॥
४३८ इतरा वर्स पाल्यो संजम भार, गण गुरु नै आधार।
हिवै नीसर नै अवगुण ताणै, सुण उत्तम स्यू जाणै॥
४३९ जिम तरु छाया वैठो सुख पावै, ऊठी उखारवो चावै।
गुरू भणी कहिता सीमधर सागै, आप भिक्षु जिम आगै॥
४४० तिण हिज जीभ सू अवगुण वोलै, इम द्वेप तणै वस झोलै।
गुरु नै कहिता तीर्थंकर जेम, विहु टक मे धर प्रेम॥
४४१ त्यारा पिण लोका मे अवगुण गावै, थानै ए पिण लाज न आवै।
छतीस गुणा सहित कहता, त्यांरा अवर्णवाद वदता॥
४४२ दिवस पहिलै कह्या सुद्ध आचारी, हिवै कहिवा लागा अणाचारी।
पहिलै दिवस तो जाण्या पुरस मोटा, पछै किसै दोप थया खोटा॥
४४३ टालोकर नै कहिता नित्य खोटा, हिवै किण विध जाण्या मोटा।
अवगुण रा नित्य त्याग करता, हिवै तेहिज त्याग भागता॥
४४४ क्षेत्रा मे एक रात्रि उपरत, नित्य रहिवा रा त्याग करंत।
अस अवगुण वोलण रा त्याग, अै तो नित्य करता धर राग॥
४४५ पाना ले जावण रा पचखाण, ते पिण भाग्या जाण।
सहु अनत सिद्धा री साखे पचखाण, वले पचपदा री आण॥
४४६ घणा हरख सू लिख्यो म्हे जाणी, वदता इम नित्य वाणी।
सरमा सरमी थी लिख्यो नही काइ, इम नित्य लिखता त्याही॥

४४७ ए सहु त्याग किया चकचूर, ते गया वहती र पूर।
एक ही त्याग भागे दिल व्यापी, तिण नै कह्यो महा पापी॥
४४८ तो नित्य नित्य त्याग भागो वहुवार, थारो किम होसी निस्तार।
एहवा मूसा रा भागला माय, चरण तीथ किम थाय॥
४४९ आम विंदु जिम नर भव जाणा, आ तो तिरवा रो दुलभ टाणा।
किंचित कष्ट वेदी विप्रतारचो, मानव भव काय हारचो॥
४५० नरक निगोद ना दुख अगाद, क्यू नवी कीधा अ याद।
जनम मरण रा दुख वीमरिया, थे तो उलट मारग पडिया॥
४५१ सम्यक्त्व चरण अमोलक पाया, ते तो अहल साटे गमायो।
तुज मति ए किम ऊपनी माटठी, थारी छाती हुई किम काट्ठी॥
४५२ सतगुरु नै ता अनुकपा आवै, अ कमा सू भारी क्यू थाव।
शासण सू ता जगत तिर छ, ए पाप पिंड क्यू भर छै॥
४५३ स्वाम भिक्षु सत अधिक सनूरा, ए वापडा क्यू पडया दूरा।
शिव सुख हतु गण सुखदाई, यान कुमति ईसी क्यू आई॥
४५४ शासण वन मुनि फूल्या न फलिया, अ जवासिया काय टलिया।
काल अनत भ्रमत मग पायो या सहज म काइ गमायो॥
४५५ सम्यक्त्व चरण दश व्रत आय, अ तीनू छै आपरै हाय।
इह विधि गुरु न कहिता वहुवारी ते पिण घाल्या वीसारी॥
४५६ इण वात रा म्हान अचय आया, या चारित्र केम गमायो।
ए पिण जिण तिण न नही सोहरी, थारै ए पिण दीम दोहरी॥
४५७ सतगुरु सीख सहु साभलजो, या जिम काइ म रलजो।
सत सत्यारा गुण उच्चरजो, अवणवाद म करजो॥
४५८ ए सा वात न छ कोइ सार, कम वलवत पछाडै।
वीर प्रभु नो जमाइ जमाली, कम करी मति काली॥
४५९ वीर छद्मस्थ नो शीस गोसाला, थया कम वमै मत वालो।
दिशाचरा[1] षट कम प्रतापा, किया गोसाला थी मिलापा॥
४६० तो ए ता वापडा छ तृण रक, यान कमा लगाया कलक।
कम वटक भाग्नो समसेर यान चिहु दिशि लीधा घर॥
४६१ तिण कारण यानै सवनी न सूप, दिन दिन अधिक अलूपै।
कदाचित कम विवर जा[2] देव, फिर पाछी गवली वेवै॥

१ भगवई शत १५। २ पथ।

४६२ गुरु पै दिक्षा लई सल्य काढै, निज काम सिराडै चाढै।
हिवडा तो कर्म तणै वश डोलै, चढिया मोटे चखडोलै॥
४६३ विविध प्रकार ना अवगुण बोलै, मोह कर्म झकझोलै।
विविध प्रकार ना दोप बतावै, यानै लाज सरम नही आवै॥
४६४ अवर दड लेइ नै टोला मझारी, अै तो हुता आवा नै त्यारी।
जद दोपरी वात न रही सोय, यानै ए पिण समझ न कोय॥
४६५ दिक्षा दिया विण न लिया माय, तिण सू करै बकवाय।
आगै टालोकर हूआ अनेक, त्या पिण अवगुण बोल्या विशेप॥
४६६ भिक्षु स्वाम त्यानै रास मझार, ओलखाया सुविचार।
ए रास नी गाथा कहू छू केई, साभलजो चित देई॥

भिक्षु कृत रास नी गाथा

"१ अवगुण सुण-सुण नै समदृष्टि, यानै जाणै धर्म सू भृष्टी।
यारो बोल्या री प्रतीत न आणै, झूठ मे झूठ बोलता जाणै॥
२ सगला श्रावक सरीखा नाहि, अकल जुदी-जुदी घट माहि।
समदृष्टि री साची हुवै दिष्ट, तो यानै करै थोडा मे खिष्ट॥
३ तो यानै न्याय सू देवै जाव, पारै घणा लोका माहै आव।
यारी मूल न आणै सक, यानै देखाल दै यारो वक॥
४ थे घणा दोप कहो गुरु माहि, घणा वर्सा रा जाणो छो ताहि।
तो थे पिण साधु किम थाय, जाण-जाण भेला रह्या माय॥
५ जो यामै दोप घणा छै अनेक, कदा दोप नही छै एक।
ते तो केवल ज्ञानी रह्या देख, पिण थे तो बूडा ले भेप॥
६ जो यामै दोष कह्या थे साचा, तोही थे तो निश्चै नही आछा।
जो झूठा कह्या तो विशेष भूडा, थे तो दोनू प्रकारे बूडा॥
७ थे दोषीला नै वाद्या कहो पाप, भेला पिण रह्या कहो सताप।
दोपीला नै देवै आहार पाणी, वले उपधादिक देवै आंणी॥
८ हर कोई वस्तु देवै आण, करै विनय वियावच जाण।
दोषीला सू कोइ करै सभोग, तिण रा जाणो छो माठा जोग॥
९ इत्यादिक दोपीला सू करत, तिण मे पाप-कहो छो एकत।
अै थे जाणे सारा किया काम, ते पिण घणा वर्सा लग ताम॥
१० घणा वर्स किया एहवा कर्म, तिण सू बूड गयो थारो धर्म।
दोष निरतर सेवण लागा, हूआ विरत विहूणा नागा॥

११ ओ थे कीधो अकाय मोटो, छानै छानै चलाया खोटो।
वाघ्या थे तो वहु कम रा जाला, आतमा न लगाया कालो ॥

१२ थे गुरु न निश्च जाण्या असाध, त्याने वाद्या जाणी असमाध।
त्याराइजवाद्या नित्य नित्य पाय, मस्तक दानू पग रै लगाय ॥

१३ यासू कीधा थे वार मभोग ते पिण जाण्या सावद्य जोग।
सावद्य सेव्या निरतर जाण, थे पूरा मूढ अयाण ॥

१४ थे भण भण नै पाना पाया, चारित्र विण रहि गया थोथा।
थे कहो अय करा म्हे गूढा, तो थ भण भणनै काय बूडा ॥

१५ विहार करता थे गाम गाम, शिष्य शिष्यणी वधारण काम।
किण न देता उधो कराय, किण न दता घर छोडाय ॥

१६ वले कर कर गुरु रा गुण ग्राम, चढावता लाका रा परिणाम।
जब गुरु न खाटा थे जाणता ताहि, औरा न क्यू न्हाखता या माहि॥

१७ पोनै पडिया जाणी खाड माय, ता औरा नै डवावण रो उपाय।
[जाण २ करता था ताय]

पाच पद री वदणा सीखावता ताह्यो तिण मे गुरु रा नाम घलायो॥

१८ तिण गुरु न वाद्या जाणता पाप, ता औरा न काय वाया आप।
ज्यू नकटा काईनकटा हूआ चाहै, असुभ उदै माठी मति आव ॥

१९ ज्यू थे डूबता दापोला माहि तिम औरान डवावता ताहि।
औरा सू करता एहवा उपगार, थारा भणिया रा माहिजसार॥

२० इसडा कूड कपट चलाया, थारा छूटको किणविधि थायो।
जिण मारग मे हूआ थे ठगा, थे ता दीया घणा न दगो ॥

२१ ठग ज्यू साधा नाका रा मान, थारा हासी कवण हवाल।
आछी वस्तु हुता घर माहि आहारपाणी कपडादिक ताहि॥

२२ थानै गुरु जाणे हरप सू दता, मा थ थारा नीक नगया पता।
म्हे थान वादता वारवार जद म्हानै हुता हरप अपार ॥

२३ थान जाणता सुद्ध आचारी थ छान रह्या अणाचारी।
म्हे ता थान जाणता पुरुप माटा पिण थ ता हायनाकल्या माटा ॥

२४ म्हे थान जाणता उत्तम साध थ ता हाय नीवडीया असाध।
जाण रह्या दोगीला मांह्या, थे ठागा सू काम चलाया ॥

२५ थे ता जीतव जाम विगाडया नर ना भव निरथक हारया।
घणा दिना रा म्हा दे दाय, थारो बात दीस छ पाक ॥

२६ साच झूठ तो केवली जाणै, छद्मस्थ प्रतीत न आणै।
थे हेत माहे तो दोपण ढक्या, हेत तूटै कहिता नही सक्या ॥
२७ किम आवै थारी परतीत, थानै जाण लिया विपरीत।
दोपीला सू थे कीधो आहार, जद पिण नही डरिया लिगार॥
२८ तो हिवै आल देता किम डरसी, थारी प्रतीत मूर्ख करसी।
अै थे दोप क्यानै किया भेला, अै थे क्यू न कह्या तिण वेला॥
२९ जो थामै साध तणी रीत ह्वंतो, जिण दिन रो जिण दिन कहीतो।
दोषीला सू कियो सभोग, थारा वरत्या माठा जोग॥
३० थारी परतीत न आवै म्हानै, यारा दोप राख्या थे छानै।
थे तो कियो अकार्य मोटो, छानै-छानै चलायो खोटो॥
३१ भृष्ट हुइ थारी मति सुद्ध बुद्ध, हिव प्राछित ले हुय सुद्ध।
उणा री तो थारा कह्या सू सक, पिण थे दोपीला निसक॥
३२ इम कहि उणनै घालयो कूडो, घणा वैठा देणी मुख वूडो।
ज्यूं कोई वले न दूजी वार, किणराई दोप न ढाकै लिगार॥
३३ दोप ढाक्या हुवै घणी खुवारी, टांको झेलै तो अनत ससारी।
सका सहित नै राखै माय, तो और साधु दोपीला न थाय॥
३४ थाप रा दोषीला नै जाणी राखै मांय, तो सगला असाधु थाय।
इम कह्या यानै जाव न आवें, जव झूठी-झूठी वाता वणावै॥
३५ यारा दोष न कह्या म्हे डरतै, गुरु सू पिण लाजा मरते।
रखे करदै मोनै टोला वारै, मुदै तो ओहिज डर रह्यो म्हारै॥
३६ म्हे दोष सेव्या यांरै कह्य जाण, या सेव्या री न कर ताण।
कदे देतो हु दोप वताय, जव म्हारी देता वात उडाय॥
३७ मो एकला री आसग नही काय, तिण सू रह्यो दोखीलां माहि।
जव यानै पाछो कहिणो एम, थारो साधुपणो रह्यो केम॥
३८ थे तो डरता अकारज कीधो, तिण रो प्राछित पिण नही लीधो।
कदाचित गुरु काचो पाणी मगावत, थे डरता थका भर ल्यावत॥
३९ करावत पाप हर कोई, थे तो डरता करता सोई।
कदा गुरु पिण भारी पाप करता, तोही थे तो भेला रहिता डरता॥
४० भागला माहै रहिता खूता, पिण थे एकला कदेय न हूता।
ईसडी थारी गीदडाई, थेज थांरा मुख सू वताई॥
४१ इसडा प्राक्रम थां माहै पावै, थारी आगा सू परतीत नावै।
साधा नै डरतो मूल नही रहिणो, दोपदेख्यां सताव सू कहिणो॥

४२ डरता न कह्या ता थे गीदड पूरा, हिव किण विध हासो थे सूरा।
एकला होयवा मू थे उग्न, दाप न कह्या लाजा मरतै॥
४३ तो हिव ढाकाला दोप अनेक, जाण होय जावाला एक एक।
थारै तो माहामा दाप दख, हिव ला टावमो थे विनेप॥
४४ एकला हायवा रा डर थानै, माहामा दाप रालमा छान।
जा हिव कहा म्ह न राग्वा छानै, तो हिवै ञात थारी कुण मान॥
४५ थे ता वठा प्रतीत गमाय थांरी मूग्ग मान वाम।
जिम किणही चोररा हूआ उघाडो, फिट फिट हुआ मैहर मझारो॥
४६ धणा लोका जाण लीया ताम पछ कुण कर तिण रा विश्वास।
ज्यू थारा पिण हूओ उघाडा, लोपीना भेला वाढ्या जमारो॥
४७ प्रगट न किया त्यारा दोस, थे जनम गमाया फाक।
थाप रा एक दाप सेव नित्य साध तिण सजम दियो विराध॥
४८ तिण नै गुरु जाण न वाद काय, ता उ अनत ससारी होय।
तो थाप रा बहु दाप जाणा थे साम्यात त्यान जाण वाद्या दिन रात॥
४६ ता थे पूरा अमानी वाल, थ रलसा किता एक काल।
थापरा एक दाप रा सेवण हार तिग वाद्या वध अनत ससार॥
५० थे घणा दाप जाण्या त्या माय, त्यारा इज वाद्या नित्य नित्य पाय।
भागला वाद्या जाणे पाया जिण मारग म ठागा चलाया॥
५१ रह्या थे कूड कपट माहै झूल, हिव थारा हासी कुण सूल।
जो थे गुर माहि दाप वताया, घणा वम थ राग्या छिपाया॥
५२ तिण सेवै पिण थ इज बूडा ग्यानादिर गुण गोइ बूडा।
जो थे दाप कह्या थांम बूडा जव ता थ जावक पूरा बूडा॥
५३ थे गुरा र दिया अणहुता आल, हिव ग्सो किलाएर काल।
थे दाखू विधि यूग इण नग, मार झठ ता कयनी ग्ग॥
५४ छद्मग्थ तो या अन्याणै, थानै जावक गुठा जाण।
या थनै पहिला अवगुण नहिवाय, पछ कप्ट कर इण न्याय॥
५५ मारा वचन न गठा थान, थान पग पग झूठा थाम।'

मूल —

४६७ भिग्खु स्वाम इम रास र माय अधनीता ना इम आनगाय।
थनै बुद्धिया ग्ग ना कहै न्याय दद आन जाता गण माय॥

४६८ तीजै अविनीत पचमा पदरै माहि, नाम घाल्यो घणा दिन ताहि ।
गणपति रै मुख वदणा कीधी, माहिआवा री इम धार लीधी।।
४६९ अधिकअविनीतरै तिण सू सभोग, गण मे इण पिण धारोपरयोग।
पचम अवनीत पिण गण माय, आवा नै त्यारी अथाय।।
४७० कह्यो आप तो दिक्षा विण त्यागज लीधा, पिणसरुपचदजी न कीधा।
इणविधि गणमे आवा री धारी, जद दोप न रह्या लिगारी ।।
४७१ पिणदिक्षा विणथानै माहिनलीधा, तिणसू अवगुण अछता कीधा ।
छठो गुणठाणो कहिता घर प्रेम, वले अवगुण वोले केम ।।
४७२ इण विधि थे तो प्रत्यक्ष अन्याई, थारी वोली मे सधि न काई ।
वुद्धिवत हुवै तिके इण रीत, यानै कष्ट करै धरी प्रीत ।।
४७३ स्वाम भिक्षु वले रास रै माहि, त्यारो सगपरचो वरज्यो ताहि।
ते रासनी गाथा कहू सू सोय, ते साभलजो सहु कोय ।।

भिक्षुकृत रास :—

५६ "अवनीत अवगुण वोलै अनेक, वुद्धिवत न मानै एक ।
यानै जाणै पूरा अवनीत, यारी मूल न आणै प्रतीत ।।
५७ अवनीता रो करै विश्वास, तो हुवै वोध वीज रो नास ।
च्यार तीर्थ सू पडिया कानै, त्यारी वात अज्ञानी मानै ।।
५८ अवनीता रो करै परसग, तो साधा सू जायै मन भग ।
औ साधा नै असाधु सरधावै, झूठा-झूठा अवगुण वतावै ।।
५९ अवनीता रो जाय सुणै वखाण, तिण लोपी जिनवर आण ।
अवनीता री तहत करै कोई वाणी, आ दुरगति नी अहलाणी ।।
६० किण रै अशुभ उदै हुवै आण, ते करै अवनीता री ताण ।
त्या झूठा नै साचा दे ठैहराई, त्यारै अनत ससार री साई ।।
६१ अवनीता नै कहि वतलावै स्वामी, तिण मे पिण जाणो मोटी खामी।
अवनीता नै ऊचो करै कोइ हाथ, तिणरै निश्चै वधै कर्म सात ।।
६२ अवनीता रो जाय वखाण मडावै, वले और लोका नै वोलावै ।
जे कोइ इसडी करै दलाली, ते पिणधर्म सू होय जायै खाली।।
६३ अवनीता नै च्यारतीर्थ माहै जाणै, ते पिण पहिले गुणठांणै ।
अवनीता री कोइ करै पखपात, तिण रै आय चूको मिथ्यात ।।
६४ अवनीता सू करै आलाप सलाप, तिणरै पिण वधै चीकणा पाप।
अवनीता नै वदणा करै जोडी हाथ, तिण रै वेगो आवै मिथ्यात ।।

६५ अवनीता री भावभक्ति कर कोई, वले आदर सनमान दे साई।
तिण र मरघा न दीस साची, गुरु रा पिण प्रतीत काची॥
६६ अवनीता सू कर विनय नरमाई, तिण रै लागी मिथ्यात री साई।
घणा घणो जा या वनै जावै, ता सम्यक्त्व वगी गमाव॥
६७ अवनीत न भागल पूरा, वल आल द कूडा कूडा।
अवनीता री मान थाइ वात, त ता बूड चूका साख्यात॥
६८ कोइ भणवा रा लालच रा घाल्या त्यार कनै जाय काई चाल्यो।
ते ता गुरु री न मानै हूटका, तिण रा ता हूता दीस छ गटको॥
६९ परचा चाल सीखै त्या आगै, तिण र डक मिथ्यात रा लागै।
अवनीता रा ससता' परचा न करणा, यारो सगजावक परहरणा॥
७० सम्यक्त्व रा अतिचार सभाला, तो अवनीता न दीजो टाला।
जावो आणद श्रावक री रीत, राखै सूत्र री परतीत॥
७१ अ अवगुण बालै चिठाय चिठाय, किणही भाला रैसक पड जाय।
जो उ न कर त्यारी पखपात तिण रा काटणो मोहरो मिथ्यात॥
७२ अवनीता री गाढी भाल पसवाई ते नही छाड झूठा जाणै तोही।
ते बूडसी अवनीता र लागै त्या अ हल दीया जनम बिगाडै॥
७३ कोई लीघी टेक न म्हल, आपर मन मान ज्यू ठल।
श्री जिन धम री रीत न जाण, मूढ मूग थका यूहीं ताण॥
७४ या मन कर पासा समाई या कनै कर पच्चखाण जाई।
तिणरी पिण जाणजो मति काची, जिनमारग म न कीधा आछी॥
७५ जे अवनीता रा पखपाती, त्यारी सुण सुण बलझै छाती।
अवनीता री कर उपाड, जब पिण मूहडा दव विगाड॥
७६ जे माह गण म हुवै अवनीत तिण सू गाढी बाध प्रीत।
ते पिण अवगुण बोलावण रै काम, इसडा छै मना परिणाम॥
७७ जिणर द्वेष छ घणो [illegible] पनो, दुष्ट परिणामी जाव छ भलो।
तिण रै उदै हुव कम मिथ्यात त तुरत मान त्यारी बात॥
७८ त अवनीता री कर पखपात, तिण र आय चूको मिथ्यात।
मय' कर त्यारी करीया थाप, तिण र अशुभ उद हुआ पाप॥
७९ जाण अभिमानी अन अवनीत ताही राख त्यारी परतीत।
प्रवचन [illegible] रै पूरा अ धारो, पूछै अवनीता रै तारा॥

१ सस्ता—परिचय। २ [illegible]

८० अवगुण जिण नै गुरा रा सुहावै, ते अवनीता नै मूहडै लगावै ।
अवगुण गुरु रा त्या पास वोलावै, पछै लोका मे आप फैलावै ॥
८१ जिण तिण आगै करे जे वात, करै अवनीता री पखपात ।
अवनीता नै साचा सरधाव, गुरु मे अवगुण दरसावै ॥
८२ वदणा करै गुरु नै शीस नाम, करै अवरा रा गुण ग्राम ।
ते होय वैठा अवनोता री लारी, औरा नैं खपै करि खुवारी ॥
८३ गुरु सू लोका रा परिणाम फारै, आप विगडयो औरा नैं विगाडै ।
श्रावक एहवो विश्वासघाती, ते पिण होय चूको मिथ्याती ॥
८४ गुरु री साची वात दै ठेली, अवनीता रो होय जाय वेली ।
हर कोई अवनीत छूटै, तिण रो वेली होय ऊठै ॥
८५ साधा रा अवगुण वोलै, तिण सू वात करै दिल खोलै ।
अवनीता नै मिलै अविनीत, त्यारी तेहिज करै प्रतीत ॥
८६ गुरु सू पिण जावक नही तोडै, अवनीता सू सठ नही जोडै ।
घरपाधर रह्या छै देख, छल छिद्र जोवै छै शेप ॥
८७ जो अविनीता नै लोक न मानैं, तो आप पिण होय जाय कानै ।
अणसरतै दवीया रहै माहि, पिण लक्षण जाणे लीया ताहि ॥
८८ केइक श्रावक दोपडपीटा, ते पिण पडीया यारै सग फटा ।
जो कोइ वध निकाचित पाडै, ते पिण अनत ससार वधारै ॥
८९ श्रावक केइ भागल सास्यात, करै भागला री पक्षपात ।
जाणै चोर सू मिल गइ कुत्ती, झूठी वाता करै अणहुती ॥
९० ते भागला नै कहै उत्कृष्टो, तिण री पिण मति होय गई भृष्टो ।
तिण भागल नै भागल मिलिया, किम पूरीजै मन रग रलिया ॥
९१ असाधु टालोकर नै सरधै साध, साधा नै सरधै असाध ।
दोनू प्रकारे मूरख वूडै, ते पिण जाय वैससी तूडै ॥
९२ एहवा अभिमानी नै अविनीत, होसी चिहु गति माहि फजीत ।
यानै भूडा कह्या लोका आगै, या रा पक्षपाती रै दाह लागै ॥
९३ ए अवनीता रा कह्या अैहलाण, कोई आप म लीजो ताण ।
अवगुण एहवा छै जिण माय, ते छोडया विण सुख नही थाय ॥
९४ अविनीत तो वके घणा दिन रात, कूड कपट सहित करै वात ।
विविध पणै देवै छै आल, कर रह्या झूठी झंखाल ॥

९५ रास माहे टालाकर न ताम, इम आलखाया भिक्खु स्वाम।"

मूल —

४७४ अविक अविनीत प्रमुख चिहु ताहि बीजा चाथा सू करि निरमाई[1]।
पोतै प्राछित ले सभोग रो नाम, कीधो प्रपच र काम ॥
४७५ तीजो[2] चउथो[3] अविनीत तिवार, कर दिया तुरत विहार।
इण विधि कर जुदा कद भला, जाणै नाच कुबुद्धि खेला ॥
४७६ ए क्पट अर्थे कीया नाम सभोग, पातै दड लेई घाल्या सोग।
ते पिण ठागो विखर जासी ताम, घणी फूट फजीती पाम ॥
४७७ चोथो अविनीत जसोल थी धार, आयो गणि प 'वीठाज' वे वार।
वे कर जाड खमाव सोय, कहै आपरो सरणा मोय ॥
४७८ कालवादी प्रमुख नीकल्या ताय, गया थाडा माहि विललाय।
ओहिज शासन छ सुविसाल, रहितो दीस वहु काल ॥
४७९ आपरा अवगुण बोलू न काई वले परनै बोलण देऊ नाहा।
शासण सम्मुख हू तो छू सार, भलो वाछू शासण रो उदार ॥
४८० आप ता मौन साता उपजाई, काम काज असणादिक ताही।
मघराजजी रा पुय अति भारी, यान अडचल न हुवै लिगारी ॥
४८१ पोथी पाना हू उपाडू जेह, मघराजजी रा छ एह।
म्हा दोया सू निरमाइ वहु करी ताम, तिण सू सभाग रो कीया नाम ॥
४८२ ते पिण बीजा ने दड दिराय, किया सभाग रा नाम ताय।
जय कहै—थे निकलिया साय, नव मास पछ अवलोय ॥
४८३ छठो अवनीत निकलिया ताय, थार लेख नवी दिक्षा आय।
दाय माहि आया एक वदणा म नाम, त्यान दड दिराया ताम ॥
४८४ सो इम नाम सभाग रा करी तिवार, तुरत कीया विहु जणा विहार।
नव मास पछ निकलिया वार, तिण न दीक्षा न दीधी लिगार ॥
४८५ आ पिण थारै पूरा अधारो, थार लेग था म न विचारा।
उण न भेला राख ज्यासू किम कीज आहार मन माहै करो विचार ॥
४८६ इम कह्या सुद्ध जाव नही आयो, कहै आफेइ हुयजासी ताह्यो।
म्हामे पूज पदवी रो नाम न काई, वदणा म नाम घालणो नाही ॥

---

१ नम्रता।
२ कपूरजी।
३ सन्तोजी।

४८७ इच्छा आवै ज्यू विचरा ताही, इण मे आज्ञा रो कारण नाही ।
किण रै ई नाम प्रणामै सोय, गुरु न करावणा कोय ।।

४८८ पच महाव्रत पालै सार, ते गुरु कहिणा उदार ।
किण रै नामै दिक्षा नही देणी, ग्रन्थे चेला री बात न कहणी ।।

४८९ सगला रै मीर माहै अवलोय, दिक्षा देणी सोय ।
एक कागद मे लिखी वाता अनेक, ते शासन सन्मुख पेख ।।

४९० न्यातीला नै दर्शण देवा मेलता, तो गण बारै क्याने टलता ।
टोला बारै नीकलवा रा ताम, यारा रतो नही परिणाम ।।

४९१ पिण होणहार टलै नही कोय, कर्म तणी गति जोय ।
कोई रै न्यातीला री हुवै ताय, तो दर्शण दीजै दिराय ।।

४९२ कोई रै विचरवा री मन माय, तो जुदो दीजै विचराय ।
कोई रै आहार रो कष्ट देखीजै, तो विहार कराई दीजै ।।

४९३ इण वात सू आडदोड न आवै, इण मे आप तणो न्यू जावै ।
इत्यादिक वात कही घणी ताय, पछै आयो जिण दिशि जाय ।।

४९४ वीजै[1] अवनीत सरल पणै वहु वात, कीधी तेजसी आगै विख्यात ।
ते पिण गण सन्मुख सुखदाई, वात सुणीयाई अचर्य थाई ।।

४९५ वलि कहै या दलदरचा नै सोय, कहै चोडै निपेधो जोय ।
वदणा करवा रा पिण त्याग करावो, निसकपणै चितचावो ।।

४९६ स्वामीजी सू मिलवा रा भाव हे ताय, पिण ठञ्चो सो किम रहू जाय।
स्वामी जी मोनै पूछै कदा त्याही, यानै श्रद्धो छो काई ।।

४९७ हू कहि सू आप श्रधो जिण रीत, हू पिण श्रधू वदीत ।
वले पूछैला म्हानै श्रधो थे काई, तिण रो तो जाव देवू नाही ।।

४९८ नवी दिक्षा लेउ धर भाव, तिण रो म्हारै नही अटकाव ।
या सू पूरो पडतो दीसै न कोय, हू जाण रह्यो छू सोय ।।

४९९ ऋपि वीजराज पिण निपेद्यो विशेष, तो पिण न वरच्यो वेप ।
श्रधा रा क्षेत्रा माहि नही रहिणो, वचन उत्तरतो नही कहिणो ।।

५०० ए दोय सीख वीजराजजी दीधी, वीजै अवनीत माने लीधी ।
हीरालाल नै कही वहु वाय, ते पिण सरल जणाय ।।

५०१ ऋपि हीरालाल नै कहै सुविशेप, थारी म्हारी दृष्टि एक ।
त्यारै आहार पाणी भेलो कहै ताहि, पिण इतरो फेर माहो माहि ।।

---

१. जीवोजी ।

५०२ त पिण तिण री न करै पिछाण, घणी फूट फजीती जाण।
साधु ता याने अमावज श्रद्धै त प्रत्यम पिण नही पडद ॥
५०३ दिक्षा विण नेवा तणा पच्चखाण, ते पिण चोडै जाण।
तो पिण ए कर जोड खमावै, वनि स्वामीजी कही वोलावै ॥
५०४ वलि शासन मू अनूकूल केई, वात कहै स्वमेई।
कोई कहै प्रतिकून अधिक विनेप, इम आपम म नही एक ॥
५०५ श्रावक समनू आरै किया नाय, जव गया अधिन्म मुरझाय।
कहै चारित्र पिण म्हे लेवा अमून, करा नवी दिक्षा पिण कवूल ॥
५०६ पिण कायक तो म्हारी राखीज, पाच च्यार वाल ता छाडीज।
एहवा गहस्थ कागद म लिख्या समाचार, जव जयगणि वोल्या तिवार ॥
५०७ यम्नै लेवा अर्थ यारा कहिण मू जाण इक पिण वाल छाडण रा पच्चखाण।
नवी दिक्षा ल आव गण माहि, पोता म सजम सरध्या नाहि ॥
५०८ पाता म चारित्र सरधै जो एह ता नवी दिक्षा किम लेह।
मान वडाई न काज अयाण करै वाल छाडावण री ताण ॥
५०९ दूजी वार सुण्या वोल छोडा जा एक ता म्ह नवी दिक्षा ल्या विशेष।
नवी दिक्षा पिण कर अगीकार, पिण यारा मिटिया नही अहकार॥
५१० मान अहकार पिण थाथा अथाय, त ता विवक विकल कहिवाय।
किण ही चार नै महिपति प्रमिद्धो, सूली तणा हुकम दीधो।
५११ चोर कहै सूली पिण अगीकार, पिण नवी पाग वधावा अवार।
मूली चढवो अगीकार करै छ वले थाथा अहकार धरै छ ॥
५१२ तिण सरिखा अ पिण मूरख धार नवी दिक्षा कर अगीकार।
जाण वाल छाडाया म्हारा रहै मान, इण लख विकल समान ॥
५१३ नवी दिक्षा लेणी धारी पिछाण जव गल गया जावक मान।
वले कर वोल छाडावण री वात, तिण लख मूरख साक्षात ॥
५१४ अधिक अविनीत दाय वार टलाया नीकल-नीकल वाल्यो अलीया।
वीजो अविनीत टल्यो चिहु वेला, नीकल नीकल कीधा हला ॥
५१५ तीजा अविनीत टल्या वार तीन, नीकल-नीकल वोल्या मलीन।
चाथा अवनीत टल्यो वार तीन, नीकल-नीकल न हुओ दीन ॥
५१६ पचम अवनीत टलिया वार च्यार नीकल-नीकल हुआ खुवार।
छठो अवनीत टल्यो दाय वार, नीकल-नीकल वाल्या विकार ॥
५१७ इमडा अनत हुआ न हामी परभव माहमा विरला जासी।
वलि आरा आजूणा माहि म्ह पिण दख लिया छ ताहि ॥

५१८ ए भाव कह्या केई मुनि पै गुणीया, केइ मुहटी थुणीया।
गृहस्थ पाम केइ समाचार, शासन जोड्या विचार ॥
५१९ केइ देसी आगरो उनमान, कोइक मुद्दो पिछान।
अधिको ओछो विरुध आयो हुं कोय, तो मिच्छामि दुक्कड मोय ॥
५२० कही भिक्षु नी जोड तणी गाथा केई, बाकी जय जश जोड करेही।
उगणीसै इकवीसै उदार, वैशाख सुदि चोथ शनिवार ॥
५२१ निन्हव भागला रो अधिकार, जोड्यो मरुधर देश मझार।

५२२ सवत उगणीसै बाइसै री बात, चोमासो उत्तरीया विख्यात।
बालोतरा कनै 'बीठोजो' गाम, त्या थी दोय जणा चाल्या ताम ॥
५२३ चोथो छठो मन करी विचार, आया मेडता सैहर मझार।
ईडवै गणपति पासै ताय, आवण हुवै अधिकाय ॥
५२४ एक गृहस्थ बोल्यो इमवाय, थे टल टल फिर गण आय।
थानै लेसी कै न लैसी माय, कह्या इत्यादिक वाय ॥
५२५ इम सुण छठा रा फिरियापरिणाम, वचन परिसह पांम।
ईडवै गणपति पासै सोय, तीन कोस रह्या आया दोय ॥
५२६ पछै छठो न आयो नै चोथो आयो, हरष घणो मन माह्यो।
गणपति शासण री परतीत, धारी रुडी रीत ॥
५२७ माह विद बीज वहु जन माहि, नवी दिख्या लीधी ताहि।
छेदोपस्थापनीक ग्रह्यो ताह्यो, पिण ते तो समझ्यो नाह्यो ॥
५२८ चोथो आयो गणिपति पास उदार, छठो कीयो दूजी दिश विहार।
गणपति विहार करी सुखदाया, देघाणै[1] होय बाजोली आया ॥
५२९ ग्राम ग्राम रा बहुजन आया, दर्शण करण ऊम्हाया।
जनव्रद अधिक हुवा तिहा भेला, च्यार तीर्थ रा मेला ॥
५३० छठो नव कोस रो करी विहार, आय गयो तिण वार।
अधिक हरष आणी मन माय, पगा पडियो छै आय ॥
५३१ सरधा आचार सर्व वात सीधी, पक्की आसता धार लीधी।
च्यार तीर्थ देखता प्रसिधी, माह विद अष्टम दिक्षा दीधी ॥
५३२ निज आतम ना अवगुण गावै, वारंवार अपराध खमावै।
कर्म जोग करि गण सू टलीया, अवगुण बोल्या अलीया ॥

१ डेगाणे ग्राम।

५३३ भाग्य दिशा अधिकेरी कहाय, तिण सू आया शासण माय।
तसु न्यारा थका अवगुण बोलता, हिव निज आतम निंदता ।।
५३४ आप तीर्थकर देव समान, गुण इत्यादिक प्रधान।
आग छोटा हुता त्या सता नै जान, कर नमस्कार तज मान ।।
५३५ शासण री सहु रीत प्रसिधी, अगीकार सहु कीधी।
वडे मोती ऋप चैत्र मास र माहि कह्यो अधिक अवनीत नै ताहि ।।
५३६ ये कुलवत जातिवत धार, किम निकलिया गण बार।
जद कहै मन मे जाणी हुती काई, और री और हुय गई त्याही ।।
५३७ गण वार मै रहिसा याही, आ सुपनैई जाणी नाही।
माती ऋप कह्यो अबैई विचारा, आतम भणी सुधारो ।।
५३८ अधिक अविनीत बोल्या इम वाय, अब ता धार लीधी मन माय।
भीखणजी स्वामी नै श्रद्धा स्यू जाणा, जद कह्या तीर्थंकर समाणा ।।
५३९ भिक्षु भारीमाल ऋपिराय आराधू, म्हा निकलिया पहिला सऊ साधू।
चत्र मास म ए हुइ वात, मोती ऋपि सू साख्यात ।।
५४० अधिक अविनीत नै पचम अविनीत, जद दोनू भेला कुपीत।
थोड दिवस तूटण हुइ प्रसिद्धो, अधिक अविनीत नै छाडी दीधो ।।
५४१ पचम अविनीत तिहा थी सीधी, गणपति नी दिशि लीधी।
घणा कोसा थी आया चलाय, गणपति पास ताय ।।
५४२ गणपति पूछ्या उत्तर दियो एम, साभलजा धर प्रेम।
अढी द्वीपना तस्कर घोर त्या सू टालोकर अधिका चोर।।
५४३ हू पिण अढी द्वीपना चोर, ज्यासू अधिको घोर।
इम कहीन नवी दिख्या लीधी, छेदोपस्थापनीक प्रसिधी ।।
५४४ वैशाख विद सातम लीधी दिख्या, घणा सत देखता सु सिख्या।
अधिक अविनीत री बहु कपटाई, तिण सू जाणी दियो छिटकाई ।।
५४५ ऊपर सू तो मीठो बोलतो, पिण मन मे छल खेलतो।
वलि मुझ कहितो वच एम, धार म्हारै ए प्रेम ।।
५४६ जाणक पूव भवनो रागो, तिण सू मिल्यो ए सागो।
वलि कहितो थे बाजाट ऊपर बसो नाहि, ता हू पिण न बैसू ताहि ।।
५४७ थे मोन बतलावो नही किणवारा, जब घणा दोहरो रहै जीव म्हारो।
तिण सू थे मुझन बतलावो, मान कदे मति छिटकावो ।।

५४८ इत्यादिक अधिक वरताई, ते देखी घणी कपटाई ।
म्हानै पाना में अक्षर लिख दीधा, ते पिण लोप्या प्रसिद्धा ।।
५४९ त्याग कीया ते पिण दीधा भाग, गहला देख्या साग ।
मायावियां धूर्त जाण्यां कूडा, तिण सूं छोड आया आप हजूरा ।।
५५० तिण री संगत सूं हुआं खराब, गई लोका मांहि आब ।
हिवै हूं आप तणी सरणै आयो, चरण अमोलक पायो ।।
५५१ शेष रह्या जे तीन गण बारै, कदा मांहि आवण री धारै ।
आर्जियानै वंदणा किया विण तांहि, गण मांहि लैणा नांहि ।।
५५२ जय गणी त्याग किया इम ताम, पाडण थारो माम ।
इतरै पश्चिम थली सूं आया समाचार, तीजा अवनीत ना तिणवार ।।
५५३ ते पिण कहै छै हूं पिण लेउ दिख्या, धारु सतगुरु नी शिख्या ।
अवगुण वाद न बोलै दाम, गावै सासण रा गुण ग्राम ।।
५५४ इण विधि भाया लिख्यो तिण वार, कागद में समाचार ।
जोधाण सैहर तणो चउमास, तेजसी नै भलायो सुवास ।।
५५५ साधा नै भेला करी सुखदाय जय गणपति कहै वाय ।
दोया नै दिख्या देवा री न आणा, राखजे याद सयाणा ।।
५५६ तेजसी नै इम वचन कह्यो तामो, करायो जोधाण चोमासो ।
चोमासा मांहि भायो इक आय, कहै गणपति नै वाय ।।
५५७ बीजै अवनीत मोनै कह्यो ताम, म्हारै दिख्या लेवा रा परिणाम ।
स्वामीजी आज्ञा देवै सुखदाय, तूं कीजै अर्ज अधिकाय ।।
५५८ ए गुण थारो भूलसूं नाय, चरण माहज्य सुखदाय ।
इत्यादिक विविध अर्ज तिण कीधी, जब जय गणी आज्ञा दीधी ।।
५५९ चउमासो उत्तरिया वर खंत, तेजसी आदि दे संत ।
पश्चिम थली कानी विचरी तिवार, कियो पाली सैहर कानी विहार ।।
५६० बीजो तीजो बिहुं अवनीत नाहि, मिलिया गाम दूदाडा माहि ।
बीजै अवनीत कह्यो तिणवार, मोनै दीजै संजम भार ।।
५६१ दोय दिवस बहु कीधी अर्ज, इण री चारित्र लेवा री गरज ।
परभव री इण रै चिंता प्रसिद्धी, तिण सूं आतमा सूधी कीधी ।।
५६२ अजिया नै भाव सूं वे कर जोड, वंदणा कीधी मान मोड ।
नरमाई विनय भक्ति बहु कीधी, तब तेजसी दिक्षा दीधी ।।
५६३ नरक निगोद ना दुख सूं धडक्यो, तिण सूं चारित्र लेई हरख्यो ।
संवत उगणीसै तेवीसै वास, माह सुद बीज उजास ।।

५६८ इम तीजे अवनीत नवी दिख्या लीधी, तेजसी कन प्रसिद्धो।
पछै विहार करी आया गणपति पाया, दग थली रे माह्या॥
५६५ तीजा अविनीत पिण साथै आयो, गणपति पासै ताह्यो।
बीजो अविनीत आत्म निज निंद, पूव पाप निकंदै॥
५६६ मइकडा लाक सुणता ताम, कर शासण रा गुण ग्राम।
गण माहि वहु विधि दाप बताया, मोह कम उलझाया॥
५६७ गण वार नीकल डूवण रा पथ लीधो, माटा अकाय कीधा।
म्है गण वार निकलिया ताह्यो, पिण हू सजम सरधत नाह्या॥
५६८ टालोकर म नहीं चरण रो खरो, इम वालै वचन सुमेरो।
भाग्य जागै मोन तेजसी मिलिया, तिण सू मन रा मनोरथ फलियो॥

अन्य भाग नी गाथा—

[1]हरिदास न हरि मिल्या र, आड रसत आय।
खावण दीधी माठ बाजरी, दूध पीवण न गाय॥
लजा हर राख लहो॥
ज्यू तेज रूपी मुभन मिल्या र, आड गल आय।
मुट मांग्या पासा ढल्याजी चरण दीया चित ल्याय॥
चरण जुग गणपति नाजी हूता वादू व कर जोड॥

५६९ इम विविध प्रकार शासणन दिढाव, वहु लाक सुणी हुलसावै।
तीजा अवनीत भणी इम ताह्या, जय गणि वाल्या वाया॥
५७० तू अधिक अविनीत तणी दिल धार, जा तिण दिस किया विहार।
ता शासण माहि लवा रा जाण, जावजीव पच्चखाण॥
५७१ मुभ पट्ट ए मघराज महा भाग्य, जावजीव तिण र पिण त्याग।
गिंवार न जिम चरण न देवा, तिम तान पिण माहि न लेवा॥
५७२ जब तीज अविनीत होया खींचतोनी, गाठ अभ्यतर खाली।
विद पग चत तग्म दिन सारा, वोल्या गणपति न तिण वारा॥
५७३ आजियान यक्षणा करी मान माड वाल्या गणपति न कर जाड।
चरण अमानक मगरी गिन्या, दीज मान दिक्षा॥

---

१ लय—दलाली लानन वा।
२ लय—पुण्यवती जाव पाटन नव

५७४ गणपति पूछी श्रद्धा अमूल, आप कहो ते सर्व कबूल ।
आज्ञा बारै त्यानै जाणू महा पापी, स्थिर चित एहवी स्थापी ॥

५७५ गणि कहै अढी द्वीपना चोरो, तिण सू टालोकर अधिकेरो घोरो ।
जब ओ कहै आप श्रधो ते सोय, तेहिज श्रद्धा मोय ॥

५७६ जब छेदोपस्थापनीक चरण दीधो, सफल जमारो कीधो ।
सर्व सता रै आगै मान मोड, वादै बे कर जोड ॥

५७७ गुण गणपति ना गावै तज मान, कहै आप तीर्थंकर समान ।
षट जणा निकलिया तिण वार, अधिक अविनीत रह्यो गण बार ॥

५७८ पच जणा इम गण मे आय, नवो चरण लियो चित ल्याय ।
गण बारै थका तो अवगुण बोलता, हिव गण रा गुण गावता ॥

५७९ अन्यमती स्वमती आगै अगाध, बहु बोलता अवर्णवाद ।
हिव सईकडा लोका मे शासण दिढावै, निज अपराध खमावै ॥

५८० कहै—टालोकर गधा समान, त्या मे चरण रो खेरो म जान ।
गधा रै मुहपति बाधै कोय, तो चारित्र कदेय न होय ॥

५८१ तिम गण बार टालोकर ताहि, त्यामे पिण चारित्र नाहि ।
इह विधि टालोकरा नै निषेधै, कर्म पूर्व कृत भेदै ॥

५८२ उगणीसै तेवीसै वर्स उदारु, सुदि वैशाख अष्टम चारु ।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय पसायो, जय जश जोड सुहायो ॥

टालोकरों की ढाल

दूहा

१ भीखण जी स्वामी भला, करिवा जग उद्धार।
भवि जीवा रा भाग सू, अवतरिया इण आर ॥

२ सिख सिखणी करणा सहु, इक गणपति रै नाम।
सवत अठार वतीस मे, धुर मर्यादा ताम ॥

३ कम जोग इक दोय तिण, नीकल गण थी वार।
तीरथ मे गिणवा न तसु, ए भिक्खू वच सार ॥

४ कह्य पतालीसै लिखत, गण माहे वा जाण।
निकल्या अवगुण अस ही, वोलण रा पचखाण ॥

५ गण थी निकल्या अन्य प्रति, ले जावणा नही साथ।
ए पिण तसु पचखाण छ, इम भिक्षू आख्यात ॥

६ कह्यौ गुणसठ लिखत फुन, कम जोग गण वार।
निक्लै तास न सरधवु तीरथ च्यार मझार ॥

७ कदा सव साधु भणी, असाधु सरधावा ताहि।
फेर दीक्षा ल तेह नै, साधु सरधवू नाहि ॥

८ कर्म उदय गण थी टल्या, हुता अणहुता जाण।
अवगुणवाद ज अस ही, वोलण रा पचखाण ॥

९ किण ही मुनि अज्जा तणी, सक पड ज्यू सोय।
वोलण रा पचखाण छै, ए भिक्षू वच जोय ॥

१० [कदा] त्याग भाग विटल हुवै, हलुकर्मी न मान ताहि।
मान उण सरीखो विटल ते लेखा मे नाहि ॥

११ श्रद्धा रा क्षेत्रा मझे रहिवा रा पचखाण।
इक भाई वाई हुव, त्या पिण त्याग सुजाण ॥

१२ वाटै वहिता एक निशि, रहै कारणै जाण।
ते पाच विगै न सूखडी, खावण रा पचखाण ॥

१३ गण मे जाच फुन लिख, जो निकल गण वार।
सार्थै ले जावण तणा, तसु पचखाण विचार ॥

१४ इत्यादिक भिक्षू भली, बाधी वर मर्याद।
हलुकर्मी हरखै सुणी, पामै अति अल्हाद॥
१५ भारी कर्मां जीवडा, साभल धरता द्वेप।
ऊधा अर्थ करै तिकै ज्या रे, काली कर्म कुरेख॥

ढाल १

१६ [1]कर्म उदय गण थी नीकल नै, साधा रा अवगुण गावै रे।
विविध प्रकारै दोप परुपै, मन मानै ज्यू गोला चलावै रे।
निंदक टालोकर रो सग न कीजै॥
१७ स्वाम भीखण जी री मर्यादा भागी, अवगुण वोलण लागो।
वलि साधुपणा रो नाम धरावै, करै विविध प्रकारै ठागो॥
१८ कह्यो लिखत पैंतालीस अवर भणी जे, साथै ले जावण रो त्यागो।
ते पिण भिक्षु री मर्यादा भागी, कुल नै लगायो दागो॥
१९ हुता अणहुता अवगुण अ श पिण, वोलण रा पचखाणो।
ए लिखत गुणसठै भिक्षु मर्यादा, ते पिण भागी मूढ अयाणो॥
२० इण सरधा रा क्षेत्रा विपै रहिवा रा, त्याग कह्या भिक्षु स्वामी।
ए पिण वचन उथाप्यो अज्ञानी, क्षेत्रा मे रहिवा लागो हरामी॥
२१ गण माहे पत्र लिखै फुन जाचै, ते पिण साथै ले जावणा नाहि।
ए पिण भिक्षु नी मर्यादा भागी, कुमति हिया मे वसाइ॥
२२ अनत सिद्धा री साख करी नै, नित्य प्रति हाजरी माह्यो।
अवगुण वोलण रा त्याग करतौ थो, ते पिण दिया उडायो॥
२३ वलि मुख सू हु तो भीखण जी नै, सरधु ववहार मे साधो।
त्यां रा वचन उथापै अज्ञानी, तिण रै किण विधि होसी समाधो॥
२४ दोष अनेक वतावै टोला मे, तिण नै पूछा करै कोई।
थे दोषीला भेला घणा वर्ष रहि नै, आतमा काय विगोई॥
२५ थे घणा वर्पा लग दोपण सेवी, साधुपणा रो नाम धरायो।
एहवो कपट करी नै लोका नै डवोया, थारो छूटकौ किण विधि थायो॥
२६ वलि टालोकरै किण ही पूछा कीधी, थे गण थी नीकल ताह्यो।
फेर दीक्षा लीधी कै नहि लीधी, जव औ कै दीक्षा लीधी नाह्यो॥

---

१ लय—चतुर विचार करी नै देखो...

२७ म्है इतरा वप रह्या दोपोला भेला, तिण रो चिहु मास नो दड लीधो।
फेर दीक्षा म्हान नही आवै, इह विधि उत्तर दीघो॥

२८ रिमिराय थका इक गण थी नीकलीयो, ते नदी उतरया कहिता पापो।
साधु मात्रा परठया पिण पाप सरघतो, कीडी पूज्या पिण पाप री थापो॥

२९ तिण रा श्रावक साधा रा घेप रा घाल्या, आवा लागा है इण रै पासो।
पिण ओ तो नदी उतरीया धम सरधै, त्यानै इतरो विवेक न तासो॥

३० उण टालोकर रा श्रावक इण नै पूछ, थे उण न साधु सरधो क नाह्या।
जब कहै पाल्या है ता ते साधु छै, म्है ता दख्या नही ताह्यो॥

३१ गण माहिल एक माघु तसु पूछ्यो, थे सरधो भिक्षु नै काइ।
जब कहै चोखा साधु सरघू छू, इम सुद्ध बोल्यो त्या ही॥

३२ नदी उतरया पाप सरघता तिण रो, नाम लइ पूछा कीधी।
जद कह्यो तिण न हु असाधु सरघू छू, वात कही इम सीधी॥

३३ जब टालोकर नै तिण साधु कह्यौ वलि थे मन म ता असाधु जाणो।
लोक न कहै पाल्या है तो साधु छ, इसडी क्यू कह्यौ कपट थी वाणो।

३४ जब कहै द्रव्य क्षेत्र काल भाव देखो न वालणी वायो।
जब साधु जाण्यौ ओ ता कपट कर नै, नाका न न्हाखै फदा माह्यो॥

३५ जो नदी उतरया पाप सरघता तिण रा, श्रावका र मूहडे कहै असाघो।
तो उण रा श्रावक इण नै नही मानै, तिण सू करता कपट विवादो॥

३६ नदी उतरया पाप सरधता तिण रा, श्रावका नैं कहै अवघारी।
किण नै कहै उवे हुता आचारी, किण नै कहै क्रियावत भारी॥

३७ वलि किण नै कहै उवे तो उत्तम पुरुष छा, किण न कहै कहा साघो।
किण नै कहै उणा रा वोल देखता, साघु कहा निरावाघो॥

३८ किण न कहै या रा पाथी पाना, ए दस लेवा म्हार पासो।
किण नै कहै माया कहै ज्यू पाला, साघु कहा छा तासो॥

३९ इम झूठ कपट कर विविध प्रकारै, मायाविया डाकोत ज्यू चाल।
तिण नैं पर भव रो चिन्ता नही दीस, मोह कम वशि झाल॥

४० जे टालोकर नदी उतरया पाप सरघता, तिण न मन म सो असाध जाण।
पिण चोडै असाधु परपता सक तिण रा श्रावका कन उण न वखाणै॥

४१ स्वाम भिग्यु कह्यो महाजन विण जे, अवर नै दीक्षा म दीजै।
दुषम काल प्रभाव है तिण सू, चरण पालणो दुक्कर कहीजै॥

४२ ते पिण भिक्षु री वचन लोपी नै, दीधी अवर नै दीख्या ।
मोह कर्म मदमस्त पणै रे, छोड दीधी वर भिख्या ॥
४३ गण थी नीकल्या जाभा तीन वर्ष थया, सिरदारगढ थी ताह्यो ।
नदी उतरया पाप सरधतो तिण रो, श्रावक सुजाणगढ आयो ॥
४४ जयाचार्य तिण नै पूछया कीधी, थे इण नै सरधो छो कांई ।
जव कह्यो म्है तो साधु सरधा छा, इम दीयो उत्तर त्याही ॥
४५ नदी उतरीया पाप सरधतो, वलै तिण री पूछा कीधी ताह्यो ।
जव कह्यो त्या ने इ साधु सरधा छा, जव जयाचार्य कही वायो ॥
४६ उ वे तो म्हानै असाध सरधता, ए इता वर्ष रह्या म्हा माही ।
उणा रै लेखै तो या माहै, पिण साधुपणो थो नाही ॥
४७ थारे लेखे तो साधुपणो न हुतो, नीकलीया पछै दीक्षा न लीधी ।
हिवै साधुपणो या मे किण विधि आयो, आ देख लेवो वात सीधी ॥
४८ थे ससार मे करो लाखा रा लेखा, थानै इतरी समझ पडै नाह्यो ।
जव इण कह्यो दीक्षा नवी तो नही लीधी, नवी लेणी तो चाहीजै ताह्यो ॥
४९ पछै ते सिरदारगढ मे जइ नै तिणनै, नवी दीक्षा, दिवरावी ।
दीक्षा न लेवै तो श्रावक न मानै, तिण रै मोटी विपति पडी आवी ॥
५० महाजन विण पहिला दीक्षा दीधी थी, तिण नै पिण पाछी दीक्षा दीवी ।
श्रावक श्राविका रे अर्थे अज्ञानी, एहवी कपटाइ कीधी ॥
५१ जद सिरदारगढ मे आर्यावा हुती, त्या नै तिण श्रावक कह्य आयो ।
या नै तो म्है सुद्ध कर दीधी छै, इम नवो साधुपणो दिवराव्यो ॥
५२ साधुपणो ते नवो अवै लीधो, गण थी नीकल इता वर्ष ताह्यो ।
असाधु थका साधु नाम धरायो, एहवो मोटो ठागो चलायो ॥
५३ गण माहे तो वहु दोष वतावता, मुख सू कहता म्है साचो ।
लोका नै समाई मे वदणा कराई, डवोया वहु जन नै वाचो ॥
५४ पोता नै वहिराया मे धर्म परुपता, जव तो देता अन्न पाणी ।
पेट रै काजै वहु लोक डवोया, आ दुर्गति नी नीसाणी ॥
५५ साधुपणो तो अवै लीधो छै, इतरा वर्ष तो ठागो चलायो ।
या ठगठग लोका रा माल खाधा, या रो छूटको किण विधि थायो ॥
५६ इतरा वर्ष ठागो करता नही संक्या, साधु वाजता ते मूसावायो ।
वलै गण रा साधा मे दोष वतावै, या री प्रतीत किण विधि आयो ॥
५७ इतरा वर्ष ठागा सू काम चलावता, डरिया नही मन माह्यो ।
तो गण माहै दोष अणहुता वतावता, ए किण विध डरसी ताह्यो ॥

५८ ते साधा मे दोष कहै त मन मे, दोष न जाणता होसी ताह्यो।
एक ओ पिण ठागो चलावता होसी, या री प्रतीत किण विधि आयो॥
५९ जद कहै म्हानै तो खवर पडी नही, तिण सू पहिला लियो छँदो।
खवर पडचा पछै नवो साधुपणो, लीधो है आण उमेदो॥
६० जो खवर पडी नही तो गण थी नीकल, किम वहु दोष वताया।
ते पिण जाभ्का तीन वप लग, दोष कही वहु जन भरमाया॥
६१ वलि लोका नै कहता सूत्र मे तो, वरज्यो ए दोष सेव छ विशेषो।
वलि कहै म्हानै तो खवर पडी नही, ए प्रत्यक्ष भूठाबोला देखो॥
६२ साधा र स्थानक आया नै वेसणो, वर्ज्यो कहैता सूत्र माही।
वलि कहै मो न तो खवर पडी नही, या झूठा नै किम होसी मोखो॥
६३ ते पिण जाभ्का तीन वप लग, खवर पडी नही केमो।
ते पिण भोला लोका न ठगवा काजै, झूठ वोलै छ एमो॥
६४ कोइ राजसभा मे आयो धुतारो, एक मिनका न साथ लेइ।
कहै लाख रुपया कोइ देवो मोन, तो देवू मिनका एही॥
६५ जद किण ही पूछचो इण मे स्यू गुण एहवो, जद कहै वार कोस रे माही।
इण री वास थकी नही आव उ दर, एहवो वोल्यो झूठ वणाई॥
६६ उण मिनका रो कान कटचो देखी तिण नै, किण ही बुद्धिवत पूछयो ताह्यो।
था रे इण मिनका रो कान कटचो किम, ते कारण मोय वतायो॥
६७ जव कहै इक दिन नीद मे सूता, कान कुरट्यो उ दर आवी सीधो।
तू कहतो वारै कोस मे नही रहै मूसो, इण रा ठागा रो उघाड कीधो॥
६८ तिम जाभ्का तीन वप लग दोप कह्या वहु, सूत्र रो नाम लेइ अजाणो।
वलि कहै खवर पडी नही मौने, ए पत्यक्ष ठागो पिछाणो॥
६९ कहै वारै कोस मे नही उदर, कान कुरटचारी खवर न पाइ।
ज्यू गण माहे थाप रा दाप केहतो वहु, वलि कहै खवर पडी नाही॥
७० सिरदारगढ वाला नै लेखे, जो साधु वतावता नाही।
तो घणा वर्पा लग त्यारै लेखे, ए ठागो चलावतो दीसै त्याही॥
७१ त्याय माग लेखे तो गण सू टलिया, तेहिज दिन सू ठागो।
नवी दीक्षा लीधी ते पिण ठागो, गण थी नीकल लगायो दागो॥
७२ वलै कहै टालोकर भीखणजी न, सरधू ववहार में साधो।
वल त्या रा वोला मे दोप परुपै, करै घणो विखवादो॥
७३ स्वाम भिक्षु छता साधा रे स्थानक, अज्जा वेसती आयो।
तिण मे सूत्र ना अथ री समभ्क पडचा विण, अणहुतो दोप वतायो॥

७४ कियो प्रथम चौमासो तिण ग्रामे, वलि द्वितिय वर्ष अवधारो।
तिण ग्राम चौमासो करै वडा लारे, इम दोष कहै अविचारयो ॥
७५ वर्ष सत्तावनै भिक्षु रै साथै, हेम कीधो पुर चउमासो।
हेम दीक्षा वडा वेणीराम जी साथै, पुर कियो अठावनै वासो ॥
७६ ए पिण स्वाम भिक्षु रो वाच्यो, सुद्ध जीत ववहारो।
तिण माहे मूर्ख दोष वतावै, कर कर ताण गिमारो ॥
७७ आसरै वर्ष पचासै टलिया, रूपचद अखेरामो।
त्यां दोढ सै आसरै, दोष वताया, स्वाम भिक्षु मे तामो ॥
७८ तिहा पहिले दिवससाधाघरफरस्या छै, दिन वीजै नवा आया पासो ॥
आगला साधा अर्थे घर फर्शावता, स्वाम भिक्षु सुविमासो ॥
७९ साधा रे स्थानक वेसे साघविया, ए भिक्षु छता रीत ताह्यो।
वलि छोटो किमाडयो खोलाय वहिरता, असणादिक मुनिरायो ॥
८० ए पिण भिक्षु मे दोष वतायो, रूपचद अखेरामो।
तेहिज दोष हिवै ए भाषै, सुद्ध ववहार मे तामो ॥
८१ वोल इत्यादिक भिक्षु छता रा, तिण मे कहै निश्चै दोषो।
सुद्ध जीत ववहार उथाप्यो अज्ञानी, तै किणविधि जासी मोखो ॥
८२ छोटो किमाडयो खोलाइ अनादिक, भिक्षु छता लेता ताह्यो।
निश्चै दोष कहै छै तिण माहै, कुडा कुहेत लगायो ॥
८३ ते टालोकर झूठी हुडी वणाइ, छोटी मोटी लुगाइ री जाणो।
किमाड नै किमाड़ीया ऊपर, दृष्टात दीधो अयाणो ॥
८४ किमाड नै किमाडीया ऊपर, छोटा मोटा गर्भ रो दृष्टातो।
स्वाम भिक्षु दियो तेह उथापी, कर रह्यो खेच अत्यतो ॥
८५ कहै छोटी लुगाई सरीषो किमाड्यो, मोटी वाई सरीषो किमाडो।
छोटी मोटी रौ सघटो साधु नै न करणो, तिम विहु खोलाइ न लेणो आहारो ॥
८६ वावीस टोला तणा भेषधारी, भिक्षु स्वाम छता तेहो।
किमाड अनै किमाडीया उपर, दृष्टात देता एहो ॥
८७ टालोकर पिण तेहीज दृष्टात, देवा लागो मूढ वालो।
वले कहै भिक्षु नै साधु सरधु छु, इण रे आयो अभ्यतर जालो ॥
८८ वलै किमाडीयो निषेद काजै, मोटी छोटी लुगाई रौ दृष्टात देवै।
या दोया रौ साधु नै सघटो नही करणो, ज्यू किमाडीयो इ आहार न लेवै ॥
कुगुरु चिरत सुणो भव जीवा ॥

८६ संवत अठारै वर्ष ततीसै, जेठ सुदि बारस मंगलवार।
ए कुगुरु तणा चरित्र प्रकट कीधा, सैहर पीपाड तिण रै मंझार ॥

६० छोटी लुगाई ज्यूं कहै किमाड्यो, वले कहै भीखण जी सा साधो।
आप री भाषा रो आप अजाण, तिण रे मोटी मिथ्यात री व्याधो ॥

६१ छोटी लुगाई सरीखो किमाडयो केहतो, मूर्ख मूल न लाजै।
वलै कहै भीखण जी नै साधु सरधु छू, तिण रा अपजस बाजा बाजे ॥

६२ छोटी लुगाई सरीखो किमाडयो थाप्यो, दी उपमा अति भुंडी।
एहवो अजोग तिण दष्टांत दीधो, तिण री प्रत्यक्ष खोटी हुंडी ॥

६३ छोटी लुगाई सरीखो किमाडया थाप्या, ते तो असुभ कर्म प्रतापो।
अधिक ताण करी दोष बतावै, तिण रै प्रगटया पूर्व पापो ॥

६४ अनेक टालोकर आगै हुआ था, केइ कह्यो किमाडया में दोखो।
पिण इसडो दिष्टांत दीधो नहीं सुणिया, इण ओ दष्टांत दे घाली तोखो ॥

६५ भिक्षु संथारो सीझो ते वर्ष तणे दिन करै टालोकर उपवासा।
उपवास न करै तो विगय छ टाले वले साधु कहै गुण रासो ॥

६६ ते भिक्षु तो किमाडयो खोलाए वहिरता, तिण उपर भेषधारी।
छोटी मोटी लुगाई री दष्टांत देता, ओ पिण कहिवा लागो अविचारी ॥

६७ भेषधारी तो भिक्षु नै साधु न सरधै, तिण सू लुगाई रा दष्टांत दवे।
पिण ओ तो साध सरधे दष्टांत देइ इतरी पिण मूढ न वेवै ॥

६८ ते टालोकर नै कांई पूछा करै इम, कोइ छोटी लुगाई रा तेहो।
जाणी संघटो करै ते साधु क असाधु जव कहै असाधु छ जेहो ॥

६६ तू छोटी लुगाई सरीखा कहै छ किमाड्यो, ते किमाडया खोलाए आहारो।
स्वाम भीखणजी लेता जिणा ने, तू किम सरधै अणगारो ॥

१०० जव कहै ते तो किमाडया रो लेता, जाणी नै सुद्ध ववहारो।
त्यां तो दोष जाणी नहीं सव्यो, तिण सू त सुद्ध अणगारो ॥

१०१ तिण न वहिणा त्यां दोष न जाणो, जा त्यांन दोष नहीं लागे।
तो हिवडा पिण साधु दोष न जाणे त्या रा व्रत किम भागे ॥

१०२ तिण टाणे तो रूपचंद टालोकर किमाडया मे दोष बतायो।
स्वाम भिक्षु तो निर्दोष जाण्यो, तिण सू त्यां न दोष नहीं थायो ॥

१०३ ज्यू हिवडा टाल्नोकर किमाडिया मे, दोप कहे छै सोयो।
पिण वर्तमान गणी दोप न जाणे, तो त्या नै दोप किम हांयो ॥
१०४ इम पहिले दिन घर फरस्या, दूजे दिन नवा साधा पासो।
और साधा अर्थे घर फरस्यावता, स्वाम भिक्षु सुविमासो ॥
१०५ वोल इत्यादिक भिक्षु सेवता, निरदोप जाणी सोयो।
ते स्वाम भिखणजी नै दोप नै लागो, तो हिवडा दोप किम हांयो ॥
१०६ इम पूछ्या थका सुद्ध जाव न आवै, जव अकल-विकल मुख वोले।
न्याय री वात कह्या वक ऊठै, मोह कर्म वस झोले ॥
१०७ शतक अष्टम अष्टमुदेशे भगवती, वली सूत्र ववहार मझारो।
वलि पचमै ठाणा रे द्वितिय उदेशे, प्रभु कह्या पच ववहारो ॥
पच ववहार सुणो भव जीवा।
१०८ आगम सूत्र आज्ञा नै धारणा, पचमो जीत पिछाणो ॥
ए पच ववहार प्रवर्त्ततो साधु, आज्ञा नो आराधक जाणो ॥

पांच ववहार—

१०९ केवल—अवधी - ज्ञानी२ मन—पज्जव' चउद' पूर्व दस सारो।
नव पूर्व धर ए पट विधि, है धुर आगम व्यवहारो।
आगम ववहार सुणो भव जीवा ॥
११० जघन्य थकी जे सूत्र निशीथज, तास जाण सुविचार।
आठ पूर्व धर उत्कृष्ट कहियै, द्वितिय सूत्र व्यवहार ॥
१११ देशातर जे रह्या गीतार्थ, तेह नै पासे ताम।
जेह अगीतार्थ साधू नै मूकी जै, तिण ठाम ॥
११२ मूढै अर्थ पद करि दूसण नो, प्रायश्चित पूछावै।
तास आज्ञा थी दीयै प्रायश्चित, ते आज्ञा ववहार कहावै ॥
११३ स्थविरादिक नै पास धारयो, जे प्राय श्चित पिछाणी।
तेह धारणा व्यवहार चउथो, धारणा थी करै जाणी ॥
तुर्य धारणा व्यवहार कह्यु ए ॥
११४ पक्षपात रहीत स्थापै आचार्य, ते पंचम जीत ववहारो।
द्रव्य क्षेत्र काल भाव देखी नैं, वलै सघयणादि विचारो ॥

सोरठा—

११५ ठाणाग पचम ठाण रे, द्वितिय उद्देशक वृत्ति मे।
जीत व्यवहार सुजाण रे, आख्यौ इम कहिये तिको ॥

११६ जे बहुश्रुत बहु वार रे, प्रवर्त्यौ वर्ज्यौ नथी।
वर्ते वत्या लार र, काय ह्वै ए जीत करी॥

११७ एं पच व्यवहार प्रवतता साधु आज्ञा नो आराधक होयो।
एहवो श्री जिन राज कह्यौ छै, पाठ विपै अवलोया॥

११८ सूत्र ववहार नी टीका विप कह्या, धुर च्यारु ववहारा।
तीथ अत ताई नही रहसी, जीत तीथ लग सारो॥

११९ पच व्यवहारपणें प्रवततो आज्ञा, ना आराधक आख्यो।
इण लेखे धुर व्यवहार आगम छै, एहवा जीत प्रभु दाख्यो॥

१२० नवकार ना पद पच परुप्या, पाचू इ छ वदनीको।
तिमहीज ए ववहार पच है, तत न्याय तहतीको॥

१२१ साधु साधवी रे लावी पिछेवडी, सूत्र विपै कही नाहि।
लावी पच हाथ नी थापी, जीत ववहार थी त्याहीं॥

१२२ चौथे ठाणे आर्यांवा न, पछैवडी च्यार कही जग तारो।
एक पिछेवडी बे कर चौडी, एक चोडी त्र र च्यारो॥

१२३ दोय पिछेवडी तीन हाथ नी, सूत्र विप वच एहो।
जीत ववहार थी च्यारु पिछेवडी, चौडी तीन हाथ नी करेहो॥

१२४ बावन अणाचार कह्या सूत्र मे, अजन घाल्या अणाचारो।
कारण अकारण रो नाम न खोल्या, समचै वर्ज्यो जग तारा॥

१२५ कारण पडिया अजन घालै साधु नै दाप न लागै।
ए पिण जीत ववहार थी जाणा, साधु रो व्रत न भागै॥

१२६ सुगध सूघ्या अणाचार कह्यौ प्रभु, वलि लिया अणाचारा।
त जीत ववहार थी कारण सेवें, दोप नही छ लिगारो॥

१२७ गला हेठला जे केश उपाडै, तो सूत्र म कह्या अणाचारा।
त जीत ववहार थी कारण पडचा थी, उपाडचा नही दाप लिगारो॥

१२८ दत धोया अणाचार कह्यौ प्रभु ते कारण पडिया सायो।
जीत ववहार थी दात धोव, तो दाप नही छै कोयो॥

१२९ आरीसादिक म मुख देख तो, अणाचार अवलोया।
जीत ववहार थी कारण पडिया, मुख दख्या दोप न जोयो॥

---

१ सप—चतुर विचार करी न देखो।

१३० नित्य पिंड लिया अणाचार कह्यो प्रभु, ते जीत ववहार थी जाणो।
कारण पडिया नितपिंड लेवै, दोप न कहियै तासो ॥
१३१ सूत्र मे तो समचै नित्यपिंड वर्ज्यो, कारण पडिया लेणो कह्यो नाहि।
जीत ववहार थी स्वाम भिखणजी, लेणो कह्यो कारणे त्याही ॥
१३२ इमहिज नवा आया मुनि पासै, पहिलै दिन फरस्या घर फरसावै।
इमहिज अन्य क्षेत्रे लियै नित्य पिंड, ए जीत ववहार कहावै ॥
१३३ इमहिज चौमासा उपर चौमासो, करै वडा रै लारै।
ए पिण जीत ववहार भिक्षु रो, वुधवत न्याय विचारै ॥
१३४ छोटो किमाडचो खोलाइ वहिरै, असणादिक चिहु आहारो।
ए पिण जीत ववहार वाध्यो छै, स्वामी भीखणजी सारो ॥
१३५ सवा हाथ रे आसरै वारी खोली, नै सैहर काकरोली माह्यो।
स्वाम भिक्षु निशि दिशा पधारचा, दोप कह्यो नही ताह्यो ॥
१३६ आर्यावा विहार करी नै आवै, उतरै खोली किमाडो।
अथवा तालो खोली नै उतरै, ए भिक्षु वांध्यो जीत ववहारो ॥
१३७ सोजत सैहर मे सात ठाणा सु, अज्जा वरजूजी आया।
स्वाम भीखन जी किमाड खोलाए, साथै आय उतराया ॥
१३८ शेपै काल सोल हाथ खडियो, चौमासा मे अणगारो।
वीस हाथ खडियो राखै, ए भिक्षु वाध्यो जीत ववहारो ॥
१३९ शेपै काल वीस हाथ खडियो, चौमासै कर पणवीसो।
अज्जा राखै ते भिक्षु नो वाध्यो, जीत ववहार जगीसो ॥
१४० हाथ रा पना जें नव हाथ नो, नवो विछावणो जाणी।
साधु साधविया राखै ते पिण जीत, ववहार पिछाणी ॥
१४१ खंडिया रा कल्प रो करै, विछावणो नै पडला दोयो।
तिण पेटै चौथी पिछेवडी चवदै हाथ नी, जीत ववहार थी जोयो ॥
१४२ अधिक उपधि ग्यारै थिवर रै, कह्या ववहार आठमे वाणो।
तेह विपै राखणो भाख्यो, पिण न कह्यो तास प्रमाणो ॥
१४३ जीत ववहार थी जोगपटो ए, साढा सात हाथ उनमानो।
तेह थकी शिर वा पग वाधै, अथवा पहिरै ओढै जानो ॥
१४४ आचारगादिक कालिक सूत्र नी, दिवस रात्रि नी ताह्यो।
प्रथम चरम पैहर सज्झाय करणी, विचलै पहर करणी नाह्यो ॥

१४५ जीतववहारथी विचलै पहर पिण, सूत्र अथ विहु सोयो।
वाचै सुणावै तो दोष नही छै, निकेवल पाठ गुणवु न कीयो॥
१४६ साधा रै चोलपटो प्रभु भाख्यो, पिण तास प्रमाण 'न' निरणो।
जील ववहार थी लावो पच कर, चौडो देह प्रमाणै करणो॥
१४७ इमहिज आयावा रै साडी सूत्र मे, नही कह्यो प्रमाणा।
जीत ववहार थी लावी आठ कर, चोडी देह प्रमाण पिछाणो॥
१४८ कह्यौ उदक हाया मू लेणो, घुर अगै ते जीतववहार थी वेणो।
सूखडी अय विगय नही लेणो, उपधि कारणे सू लेणो॥
१४९ द्वितीयआचारग द्वितीय अध्ययन, दूजा उद्देशा मझारा।
मास खमण रहि पाछौ आवै तौ दुगणा दिन काढणा वारो॥
१५० जीत ववहार थी दुगणा दिन जे, विण काढचा आवै ताह्यो।
तो एक दोय रात्रि रहै साधु जी, दाष नही तिण माह्यो॥
१५१ आवश्यक चौथे भड उपधि विहु टक, कह्या पडिलेहणा सारो।
विण वावरचा उपधि पोय्या, इकटकए पडिलेहै जीत ववहारा॥

भिक्षु कृत

१५२ राख रत पाथी आखो थान कपडा रो, विण वावरचो थान उपधिछ माहि।
ते पिण एक वार तो अवस्य पडिलेहै, विण पडिलेह्या न राखै काइ।
झूठा वोला रो सग न कीजै॥
१५३ वेहरी आया पछै आगली वस्तु, वलि वेंहरै जइ वहु वारा।
ए पिण स्वाम भीखणजी बाध्यो, निरदापण जीत ववहारा॥
१५४ शिर धोवा रो उदक ढालादिक रा, जल गोवरकारखाना रो पाणी।
पछै नीपनो ते पिण वेहरै, जीत ववहार थी जाणी॥
१५५ चौलपटा रो मुहढो सीवै, सूत्र विषै नही वायो।
जीत ववहार थकी ए जाणो, दोष नही तिण माह्यो॥
१५६ मुहपातीया तौ कही सूत्र मे, पिण नही कह्या पुड तासो।
जीत ववहार थी डोरो आठ पुड, वाउकाय नी जयणा विमासो॥
१५७ पाटी पटड्या टोपसी प्रमुख, त्या रग रोगान लगावै।
ते पिण जीत ववहार थी जाणो, तिण रो कुण दाप वतावै॥
१५८ ताव प्रमुख नै मूर्च्छा मिटावण, राति रा राख लगावै।
ए पिण जीत ववहार थी जाणो, बुद्धिवत न्याय मिलावै॥

१५९ धुरपोहरतमाखू वहिरी पाडियारी, वलै ओपदवहिरयो पाडियारो।
दुजैपोहरआज्ञा ले चौथे पोहरभोगवै, ए पिण जीत ववहारो।
१६० इमहीजपाडिया रा ओपधि तमाखू री, धणी री दोय कोस रैं माह्यो ॥
आज्ञा लेवै कोस उपरत भोगवे, ए पिण जीत ववहार कह्यो ॥
१६१ ओपधिरौ धणी जो और ग्रहस्थनै, कहै तू आज्ञा दे दीजै ॥
तौ तिण री आज्ञा दूजै पोहर लियै मुनि, ते पिण जीत ववहार कहीजै।
१६२ ओपधि रौ धणी जो कहै साधा नै, आप दूजा पोहर रे माह्यो।
अन्य ग्रहस्थ री आज्ञा ले लीजो, ओपधिरी तो आज्ञा लेइ भोगवणो नाह्यो ॥
१६३ तडकौ सीत टालण दिन रात्रि, पिछेवडी वाधैहो।
वलै पाट वाजोटादिक आडा मेलै, जीत ववहार थी एहो ॥
१६४ शेषै कालचौमासो उतरिया वेहरी, सेज्भातर नो आहारो।
पछै जागा भौलावै ते पिण, जीत ववहार विचारो।
१६५ सेज्भातरनौ वहरी व्यारकियोमुनि, पाछा आया जइ गाम वारौ ॥
नवी आज्ञा लेड तेह जागा भोगवै, ए पिण जीत ववहारो ॥
१६६ केइ साधु घरफर्सी नै विहार कियो छै, थयो असूभतो घर जेहो।
पाछै साधु रह्या त्या नै जे कल्पै, जीत ववहार थी एहो ॥
१६७ स्याही दिशा अर्थे जलनित्य पिंडल्यावै, वलै खडया धौवा नै काजो।
मुहपति प्रमुख धौवा नै अर्थे, ए जीत ववहार समाजो ॥
१६८ मेण रोगान नै राते राखै, वलै लेइ लगायो पानो।
स्याही वणावै ते आली रहै निशि, ए जीत ववहार थी जानो ॥
१६९ खडिया रा कलप रौ कपडो धोवै, ते धोयो ओढे पहिरै रातो।
मुहपति पडला रस्तानादि धोवै, ए जीत ववहार विख्यातो ॥
१७० पात्रादिक रंग उतारण काजै, गोवर राख लगावै।
साजी लगावै ते आली रहै निशि, ए जीत ववहार मे आवै ॥
१७१ तन गूवड़ा रे आटादिक लगावै, तै पिण रहै छै रातो।
तावादिकारण ततू अधिक ओढै, ए जीत ववहार कहातो ॥
१७२ अमल सूठादि सिर रे लगाया, रहै निशिजू आदि रक्षा काजो।
इमहिज ततू रे साजी गुगलादिक, ए जीत ववहार समाजो ॥
१७३ इत्यादिक जीत ववहार तणा जे, कहि कहि किता कहू वोलो।
तिण माहि दोष कहो किम कहिये, आख अभितर खोलो ॥

१७४ अतीत अद्धा अथवा वत्तमानज, अथवा अनागत कालो।
जीत ववहार थी वाधै आचाय, ते अगीकार करणा न्हालो॥
१७५ अतीत आचाय जीत वाध्या मे, पछला आचाय ताही।
दोप देखै ता तुरत छोड देणो, ए तसु आना सदाइ॥
१७६ निरदोप जाण नै सेव्यो आचाय, त्या नै तो दोप न होई।
पछला पिण निर्दोप जाण सेवे तो, त्या नै पिण दोप न काई॥
१७७ काइ कहै जै सूत्र मे वर्ज्यो, तेहनो जीत ववहारो।
आचाय वाधै ते किण विधि मानणो, हिव तसु उत्तर सारो॥
१७८ नित्यपिड अ जणसुगध झाड मे, सूत्र विपै अणाचारो।
कारणपडिया आज्ञा दीधी आचाय, ते किम मानो जीत ववहारो॥
१७९ उद्देसिक रात्रि भाजन सिय्यातर न पिण कह्यो अणाचारो।
कारणपडचा पिण सेवणो नही छ बुद्धिवत न्याय विचारो॥
१८० पक्षपात रहित नीत वाला ज गणपति महागुणवानो।
ते जीत ववहार असुद्ध किम थापै समझा चतुर सुजानो॥
१८१ ते माटे भिग्खु वाध्यो जीत ववहार, जं किमाडियादिक वोला।
तिण नै छाटी लुगाई रो दृष्टात देवै, तिण नै जाणजा फूटो ढालो॥
१८२ असम्यक पिण सम्यक् जाणी सेवै, ते मुनि नै सम्यक आख्यो।
आचारागे' पचम झयणे, पचम उद्देसे दाख्या॥
१८३ आधा कर्मी निणय कर लीघु, भोगवै निर्दोपण जाणी।
सुगडाग इकसम अध्येयन, पाप न भाख्या नाणी॥
१८४ आचाय कहै ज्यू करणो, त्या रो वचन उलघणो नाही।
दसवकालिक नवमे अध्ययने, दुजा उद्देशा माहि॥
१८५ उत्तराध्येन र चौथे अध्ययनै निज छादो रुध्या कही मोखा।
तो जीतववहारवाध्या जे गणपति, तिण माहै क्यू कहो दोपा॥
१८६ आचारग रे पचमे अझयण, चौथे उद्देशा पिछाणा।
आचाय नी दष्ट प्रमाणै, प्रवर्त्ते मुनि गुणखाणो॥

१८७ सव काय मे आचाय न, आगल करी विचरणो।
ए आना तीर्थंकर के री, तिणहिज ठामे निरणा॥

आयारो १५।९६

१८८ आचार्य रा ज्ञान प्रमाणै, वर्त्तै मुनि गुणमालो।
पिण आपणी मति करि नही प्रवर्त्ते, तिणहिज ठाम निहालो ॥

१८९ इत्यादिक वहु सूत्र विषै कह्यु, गणपति जें गुणवानो।
तेह तणा अभिप्राय प्रमाणै, प्रवर्त्तेवु सुविधानो ॥

१९० ते माटै स्वाम भीखणजी उजागर, आचार्य गुणवारो।
निरदोष जाणी जीत त्या वाध्यो, जोय लो हृदय विचारो ॥

१९१ किमाडियादिक जीत है त्या रो, तिण नै क्यू दो खोटा दृष्टतो।
छोटी लुगाई रो सरीपो कह्यो ते, प्रत्यक्ष दुर्गति पथो ॥

१९२ जीत ववहार वाध्यो, तिण री आज्ञा दीधी जिनरायो।
जिण जीत ववहार भणी नही मान्यो, तिण प्रभु वच मान्या नाह्यो ॥

१९३ इम साभल उत्तम नर नारी, प्रभु कह्या पच ववहारो।
तेह विषै कोइ दोष म थापो, थे अ तर आख उघाडो ॥

१९४ कदाचित् कोइ हीयै न वेसै, तो केवलिया नै भलावो।
पिण किमाडिया मे दोष थापी, मति कोइ झूठ लगावो ॥

१९५ असाता वेदनी वाधणी सोहरी, भोगवणी अति दोहरी।
ने माटै मति सवली राखो, छोड देवो झकझोड़ी ॥

१९६ एक दिवस तो निश्चै करि नै, परभव माहि जाणो।
ते माटै ऊची ताण न करणी, थे दुख तणो डर आणो ॥

१९७ सवत् उगणीसैं वर्ष तेतीसैं, सुदि वीज चैत मास जाणो।
भिक्षु भारीमाल ऋपराय प्रशादै, जय जश हर्ष कल्याणो ॥

परिशिष्ट

स० १८३२ रो लिखत

(युवराज-पद अरपण रो)

१ [पृष्ठ ३ स सम्बन्धित]

अप भीखन सव साधा न पूछ न सव साध साधविया री मरजादा वाधी। ते साधा नैं पूछ नै साधा कना थी कहवाय नैं, ते लिखीये छ—

१ सव साधु साधवी भारमल जी री आना माहै चालणो।

२ विहार चामासो करणा ते भारमल जी री आना सू करणो।

३ दिख्या देणी ते भारमल जी रा नाम दिख्या दणी।

मर्यादा निर्माण का उद्देश्य

चेला री कपडा री साताकारिया खेतर री आदि दइ न ममता कर कर नैं अनता जीव चरित्र गमाय नैं नरक निगाद माहै गया छ। तिण सू शिपादिक री ममता मिटावण रो न चारित्र चाखो पालण रो उपाय कीधा छ। विनय मूल धम न न्याय माग चालण रा उपाय कीधो छै। भेखधारी विकला नैं मूड भेला कर, ते शिपा रा भूखा एक एक रा अवण वाद बोले फारा तोटो करै कजिया राड करै एहवा चरित देख न साधा र मर्यादा वाधी। शिप सापा रा सताप कराय न सुखे सजम पालण रा उपाय कीधो।

समयन

साधा पिण इमहिज कह्यो—१ भारमल जी री आज्ञा म चालणो।

२ शिष्य करणा ते भारमल जी रे करणा।

३ भारमल जी घणा रजावध हाय नैं ओर साध न चेला सूप ता करणा, बीजू करण रो अटकाव कीधो छ।

४ भारमल जी पिण आप रे चेलो कर ते पिण तिलाकचद जी चदरभाण जी आदि बुधवान साध कहै—ओ साधपणा लायक छ बीजा साधा न परतीत आव तहवो करणा, परतीत नही आवै तो नही करणा।

कीधा पछ कोइ अजोग हुवै तो पिण तिलोक चद चदरभाण जी आदि बुधवान साधा रा कह्या सू छोड देणो माहै राखणा नही।

५ नव पदार्थ ओलखाय नै दिख्या देणी ।

६ आचार पाला छा तिण रीते चोखो पालणो, एहवी रीत परपरा वाधी छै ।

७ भारमल जी री इच्छा आवै गुर भाइ चेलादिक नै टोला रो भार सूपै ते पिण कवूल छै । ते पिण रीत परपरा छै, सर्व साध साधविया एकण री आज्ञा माहै चालणो एहवी रीत वाधी छै ।

८ कोइ टोला मा सू फारा तोरो कर नै एक दोय आदि नीकले, घणी धुरताइ करै, बुगलध्यानी हुवै, त्या नै साधु सरधणा नही । च्यार तीर्थ माहै गिणवा नही, या नै चतुरविध सघ रा निंदक जाणवा । एहवा नै वादै पूजै तके पिण आज्ञा वारै छै ।

९. चरचा बोल किण नै छोडणो, मेलणो, तिलोक चद जी चदरभाणजी आदि वुधवान नै पूछ नै करणो, सरधा रो वोल इत्यादिक पिण तिमहीज जाणवो ।

१० वलै कोइ याद आवै ते पिण लिखणो ते पिण सर्व कवूल कर लेणो ।

ए सर्व साधा रा परिणाम जोय नै रजावध कर नै या कना सू पिण जुदो-जुदो कहवाड नै मरजादा वाधी छै । जिण रा परिणाम माहिला चोखा हुवै ते मतो घालज्यो, कोइ सरमासरमी रो काम छै नही । मूढै और ने मन मे और इम तो साधु नै करवो छै नही इण लिखत मे खूचणो काढणो नही । पछै कोइ और रो और बोलणो नही, अनता सिद्धा री साख सू पचखाण छै ।

सवत् १८३२ मृगसिर विद ७ लिखतू ऋष भीखन रो छै ।
साख १ थिरपाल री छै ।
लिखतु वीरभाण जी उपर लिख्यो सही ।
लिखतू हरनाथ उपर लिख्यो सही ।
लिखतू ऋष सुखराम उपर लिख्यो सही ।
लिखतू ऋष तिलोकचद उपर लिख्यो सही ।
लिखतू चदरभाण उपर लिख्यो सही ।
लिखतू अखेराम उपर लिख्यो सही ।
लिखतू अणदा उपर लिख्यो सही ।

स० १८३४ रो लिखत

(साधवियां री)

२ [पृष्ठ ६ मे सम्बन्धित]

आर्य्या सव र एक लिखत कीधो —

१ माहो माहि आय्या आर्य्या नै तूकारा द तिण न पाच दिन पाचू विग रा त्याग छै।

२ जितरा तूकारा काढ जितरा पाच पाच दिन रा विगै रा त्याग।

३ तू झूठा बोली छै एहवा वचन काट जितरा पाच पाच दिन विगै रा त्याग।

४ प्रायछित आयो तिण रो मासा वाले जितरा पाच पाच दिन रा त्याग।

५ ग्रहस्थ आगै टोला रा साघ आर्यां री निंद्या करै तिण नै घणी अजोग जाणणी। तिण नै एक मास पाचू विग रा त्याग। जितरी वार करै जितरा मास पाचू विगै रा त्याग।

६ आर्यां री माहो माहि री वाता कराय नै उणरा परता वचन उण कन कहै उण रो मन भाग जिसो कहि नै, मन भागै तो १५ दिन पाचू विगै रा त्याग।

७ माहा माहि कहै तू सूसा री भागल छै एहवो कहै तिण रे १५ दिन रा त्याग छ। जितरी वार कहै जितरा १५ दिना रा त्याग छै।

आसू काढै जितरी वार १० दिन विगै रा त्याग छ, कै पनरे दिन माहे वेलो करणा। इत्यादिक करडो काठा वचन कहै तिण नै यथा जोग प्रायछित छै।

स्पष्टीकरण

ए विग रा त्याग छै त उण री इच्छा आवै जद साधा सू भेला हुवा पहिलो टालणा। जो नही टाल सो वीजो आया यू कहिण पाव नही तू टालइज। साधा नै कहि देणो। साधा री इच्छा आव ता द्रव्य क्षत्र काल भाव जाण न और दण्ड देसी, अन साधा री इच्छा आवसी तो विगै रा त्याग घणा करावसी।

८ वलै आर्यां रे माहा माहि साध साधविया न न कल्पै न शोभे तका लोका नै अणगमती लाग उण री जातादिक रा सूचणा काढणो, जिण भापा रो पिण साधा री इच्छा आव जितरा दिन विग रा त्याग देव त कबूल करणा छ।

९ जिण आर्य्यां ने और आर्य्या साथै मेल्या ना न कहिणो । साथे जाणो । न जावै तो पाचू विगै खावा रा त्याग,न जाय जितरा दिन । वलै और प्रायछित जठा वारै ।

१० साधा रा मेलीया विना आर्या ओर री और साथै जावै तो जितरा दिन रहे जितरा पाचू विगै रा त्याग, वलै और भारी प्रायछित जठा वारै ।

११ जिण आर्य्यां साथै मेल्या तिण आर्य्यां भेली रहै, अथवा माहि माहि सेखे काल भेली रहै, अथवा चोमामे भेली रहै, त्या रा दोप ह्वै तो साधा सू भेला हुवा कहि देणो, न कहै तो उतरो ही प्रायछित उण नै छै । पछै घणा दिन आडा घाल नै कहै तो साचो कहै तो झूठो कहै तो उवा जाणै, के केवली जाणे, पिण छदमस्थ रा व्यवहार मे तो घणा दिन री वात उदेरे राग द्वेप रे वस, आप रै स्वार्थ न उदीरे, स्वार्थ न पूगा उदीरे, तिण री प्रतीत मानणी नही आवै । ग्रहस्था माहे आमना जणाय नै माहो माहि एक एक री आसता उतारै, तिण मे तो अवगुण घणाइज छै । वलै फतूजी नै माहै लीधा तिको लिखत सगली आर्य्या रे कवूल छै ।

वलै अनेक अनेक वोला री करली मर्यादा वाधै ते पिण कवूल छै । ना कहिण रा त्याग छै । हिवे कर्म जोगे किण सू इ आचार गोचार न पलै, माहो मा स्वभाव न मिलै, तिण नै साध टोला वारै काढै अथवा क्रोध वस टोला थी अलगी परै तका तो कर्म वस अनेक झूठ वोलै कूडा कूडा आल दे अथवा के इ भेपधारचा माहे जाए तिण तो अनत ससार आरै कीधो ते तो अनेक विविध प्रकार रो झूठ वोलेइज, काइ नही पिण वोलै, एहवी भेप भडा री वात भेप धारी भारी कर्मा मानै, पिण उत्तम जीव न मानै । टोला सू छूट-न्यारी हुवा री वात मानै, त्या नै मूर्ख कहीजै, त्या नै चोर कहीजे अनेक अनेक आल दे, सूस करण नै त्यारी हुवै, तो ही उत्तम जीव "न" माने इत्यादिक आगुण घणा ज छै । एतावता टोला माहि सू पिण टल्या पछै इ टोला रा आगुण वोलण रा अनता सिद्धा री साख सू पचखाण छै ।

ए लिखत सगली आर्य्या नै वचाय नै, पहिला कहिवाय नै, मरजादा वाधी छै ।

ए लिखत प्रमाणै सगली आर्य्यां नै चालणो, अनता सिद्धा री साख सू सगला रे पचखाण छै । जिण रा परिणाम चोखा हुवै लिखत प्रमाणै चालै ते मतो घालजो । सरमासरमी रो काम छै नही । जावजीव रो काम छै ।

सवत् १८३४ जेठ सुदी ९

१ लिखतू सुजाण २ लिखतू मटु ३ लिखतू कुसाला
४. लिखतू कसूभा ५ लिखतू जीउ ६ लिखतू नदू
७ लिखतू गुमाना ८ लिखतू फतु ९ लिखतू अखु
१० लिखतू अजवा ११ लिखतू चदू

स० १८४१ रो लिखत

(साधुवा रै पारस्परिक व्यवहार रो)

३ [पष्ठ ११ से सम्बंधित]

साध-साघ र मरजादा री विध लिखिये छै—

साध साघ माहा माहि भेला रहै, तिहा किण ही साध न दोष लागै तो धणी नै सताव सु कहि देणो अवसर देखने। पिण दोप भेला करणा नही। धणी नें कह्या थका प्राछित लेवे ता पिण गुरा न कहि देणो।

२ जा प्राछित न ले तो प्राछित रा घणी नै आर कराय न जे जे बोल, लिखने उण न सूप देणो।

इण बाल रो प्राछित थाने गुरु देव तो प्राछित ले जो, जा इण रो प्राछित न हुवै तो ही कहीजो। थे गाला गालो कीजा मती। जा थे न कह्या तो म्हारा कहिण रा भाव छ। म्ह थारा दापा रा आगो काढसू नही। सका सहित दोप भास ता सका सहित कहिसू, निसकपणे दोप जाणू छू ते निसक पणे कहिसू। नही तो अज ही पाधरा चालो, इम कहिणा, पिण दोप भेला करणा नही। जा उ आर न हुव तो ग्रहस्थ पका भाइ हुवै, त्या नै जणावणा उण वेठा इज कहिणो, पिण छान न कहिणा।

ए तो चामासा वधीयो काल हुव जव छ। शेप काल हुवै तो किण ही न कहिणो नही, गुर हुव जठे आवणा। पिण गुर कन आय न वदा घालणा नही। गुर किण नै साचा करै नै किण न झूठो कर। गुरु तो इण वात माहैं नहा। एनाणा सू कदाच एकण नै झूठो जाणे, एकण नै साचा जाणे तो पिण निश्चै नही ते किणविघ प्राछित दव, आलोया विना। पछै तो गुरु न द्रव्य क्षेत्र काल भाव जाण न ्याय करणाइज छ। पिण उण न तो एक थी दोय दाप भेला करणा नहीं। घणा दोप भेला कर न आवसी ता उ ता हाथा सू झूठो परसी।

पछै तो केवली जाणे, छदमस्थ रा ववहार माहे ता 'दाप' भेला कर तिण माहे अवगुण नो भडार छ।

लिग्वतू ऋप भीखन रा छ।
सवत १८४१ चेत विद १३
लिग्वतू ऋप हरनाथ ऊपर लिख्यो सही।

लिखतू ऋष भारमल उपर लिख्यो सही ।
लिखतू अखेराम उपर लिख्यो ते सही ।
लिखतू सामजी उपर लिख्यो सही ।
लिखतू ऋष खेतसी उपर लिख्यो सही ।
लिखतू ऋष रामजी उपरलो लिख्यो सही ।
लिखतू सघजी उपर लिख्यो सही ।
लिखत ऋष नानजी

स० १८४५ रो लिखत

(सेवा व्यवस्था रो)

४ [पृष्ठ १० स सम्बंधित]

सव साधा रे एक मयादा वाधी ते कहै छ—

१ जो कोइ साध कारणीक हुवै, आखियादिक गरढा गिलाण हुवै, जद और साध उण री अगिलाण पणै वियावच करणी।

२ उण न सलेखणा री ताकीद देणी नही। उण नै वैराग वधै ज्यू करणा।

३ उण रे विहार करण री रीत— निजर काची हुव ता उणरै भरोस निजर राखणी नही, उण नै घणी खप कर नै चलावणो।

४ रोगीयो हुव तो उण रो काज उपारणा। उण रा घणा परिणाम चढता रहै ज्यू करणो। पिण उण मे साधपणा हुव ता उण नै छेह देणा नही।

५ उ राजी दाव वराग सु सलेखणा कर ता पिण उण री वियावच करणी। कदा एक जणो करता उछट हुवै ता सगला नै रीत प्रमाणे करणी। नही कर तो नषेध न करावणी। जो उ न कर, तो उण न बीजा आगा सू करावणी किण लेख।

६ कारणीक नै—रागिया न रीत प्रमाणे आहार सगला भला होय न कहै त दणा।

७ वल किण ही रा सभाव अजोग हुव, तिण न काइ टाला माहे वटण वाला नही, साथ ल जाव नही, जद उण न पला न घणी परतीत उपजावणी। घणा नरमाई कर न हाथ जाड न कहिणा, थे मन निभावा यू रहि न साथ जाणा। आगला चलाव ज्यू चालणा। जवा काम भलाव त करणा। उण न घणा रीझाय न रहिणा। जा अतरो आमग विना नरमाइ करण री न हुव ता सलखणा मडणा। वगा कारज सुधारणा। जा दाया वाला माहिना एक वाल पिण आग न हुव ता उण सू कलग कर-कर न कुण जमारो काढसी। उण न साधु किम जाणीय—जा एकला वण रा सरधा हुव इसरी सरधा धार न टाला माहे वेठा रहै छ—म्हारी इच्छा आवसी ता माहे रहिसु म्हारी इच्छा आवसी जद एकलो हुसू, इसरी सरधा सु टाला माहे रहै त ता निश्च असाध छ। साधपणा सरध ता पहिला गुणठाणा रा धणा छ। दगाबाजा ठागा सू माहे रहै, तिण न माहे राख जाण नै, त्या न पिण महादाष छ। कपट टाला माहे दाख जाण ता टाला माहे रहिणा नही। एकला हाव न सलेखणा करणा। वगा आत्मा रा सुधारा हुव ज्य करणा। आ सरधा हुव ता टाला माहे राखणा गाढा गाला कर न रहै ता

राखणो नही, उत्तर देणो वारै काढ देणो, पछै इ आल दे नीकलै तो किसा काम रो।

८ टोला माहै कदाच कर्म जोगे टोला सू परै तो टोला रा साध साधविया रा असमात्र आगुण वोलण रा त्याग छै।

६ या री अस मातर सका पडै ज्यू, आसता उतरै ज्यू, वोलण रा त्याग छै।

१० टोला मा सु फार नै साथै ले जावण रा त्याग छै। उ आवै तो ही ले जावण रा त्याग छै।

११ टोला माहै थी वारै नीकल्या पिण ओगुण वोलण रा त्याग छै। माहो मा मन फटै ज्यू वोलण रा त्याग छै।

१२ जे कोइ आचार रो, सरधा रो, सूत्तर रो अथवा कल्प रा वोल री समझ न परै तो गुर तथा भणणहार साध कहै ते मान लेणो नही तो केवलो नै भलावणो। पिण और साधा रे सका घाल नै मन भागणो नही।

टोला माहै पिण साधा रा मन भाग नै आप आप रे जिलै करै ते तो महाभारी कर्मो जाणवो। विसवासघाती जाणवो। इसरी घात-पावडी करै ते तो अनत ससार री साइ छै। इण मरजाद प्रमाणै चालणी नावै, तिण नै सलेखणा मडणो सिरै छै।

धनै अणगार तो नव मास माहै आत्मा रो किल्याण कीधो, ज्यू इण नै पिण आत्मा रो सुधारो करणो। पिण अप्रतीत कारियो काम करणो न छै, रोगिया विचै तो सभाव रा अजोग नै माहै राख्यो भूण्डो छै।

चेतावनी

ए पचखाण पालण रा परिणाम हुवै ते आरै हुयजो। विनय मारग चालण रा परिणाम हुवै, गुरु नै रीझावणा हुवै, साधपणो पालण रा परिणाम हुवै, ते आरै हुयजो। ठागा सू टोला माहै रहणो न छै जिण रा परिणाम चोखा हुवै ते आरै हुयजो

आगै साधा रे समचै आचार री मर्यादा वाधी ते कबूल छै।

वलै कोइ आचार्य मर्यादा वाधै तो याद आवै ते पिण कबूल छै।

लिखतू ऋष भीखन रो छै। सवत् १८४५ रा जेठ सुदि १

१ ए मरजादा ऋष भारमल हरख सू अगीकार कीधी

२ मर्यादा ऋष सुखराम अगीकार कीधी

३ ए मर्यादा ऋष अखेराम अगीकार कीधी

४ ए मर्यादा ऋष सामजी अगीकार कीधी।

५ ए मर्यादा ऋष खेतसी अगीकार कीधी

६ ए मर्यादा ऋष राम जी अगीकार कीधी।

७ ए मर्यादा ऋष नान जी अगीकार कीधी।

८ ए मर्यादा ऋष नेमे अगीकार कीधी।

६ ए मर्यादा ऋष वेणे अगीकार कीधी छै।

स० १८५० रो लिखत

(साधुवा री मरजादा रो)

५ [पृष्ठ १९ से सम्बन्धित]

सव साधा न सुध आचार पालणो नै माहो मा गाढो हेत राखणो, तिण ऊपर मरजादा वाधी—

१ कोइ टोला रा साध साधविया मे साधपणा सरधो आप माहै साधपणो सरधो तका टोला माहै रहिजा।

कोइ कपट दगा स साधा भेलो रहै, तिण न अनता सिद्धारी आण छ। पाचू पदा री आण छ।

साध नाव धराय न असाधा भेलो रह्या अनत ससार वध छ।

२ जिण रा चोखा परिणाम हुवै ते इतरी परतीत उपजावो। किण ही साध साधविया रा ओगण वोल न किण ही नै फार नै मन भाग नै खोटा सरधावण रा त्याग छै। किण सू इ साधपणा पलतो दीसै नही, अथवा सभाव किण सू इ मिलतो दिसै नही, अथवा कपाय घेठा जाण नै कोइ कने न राखै अथवा खेत्र आछो न वताया, अथवा कपडादिक रे कारण अथवा अजोग जाण न और सानु गण मु दूरो करै अथवा आपन गण सू दूर करतो जाण न, इत्यादिक अनेक कारण उपन टाला सू न्यारा पर ता किण ही साध साधविया रा आगुण बोलण राङ्ग तो अणहूतो खूचणो काढण रा त्याग छै। रहिसे रहिसे लाका रे सका घाल नै आसता उतारण रा त्याग छै।

३ कदा कम जागे अथवा क्रोध वस साधा नै साधविया न सव टाला न असाध सरध, आप मे पिण असाधपणा सरघे, न फर साधपणा लेव ता ही पिण अठीरा साध साधविया री सका घालण रा त्याग छ। खाटा कहिण रा त्याग छ ज्यू रा ज्यू पालण छै। पछ यू कहिण रा पिण त्याग छै - 'म्हें ता फर साधपणा लीधा अबे म्हार आगला मूस रो अटकाव कोइ नहीं यू कहिण रा पिण त्याग छ।

४ किण ही साध आय्या न पिण साध आर्य्यां री आसता उतर, साध आय्या री सका पडै ज्यू, असाधपणा सरध ज्य वालण रा त्याग छ।

५ किण ही साध आय्या म दोप दख ता ततकाल धणी न कहिणा अथवा गुरा न कहिणा, पिण ओरा न न कहिणो। घणा दिन आडा घाल नै दाप बताव ता प्राछित रा

धणी उ हीज छै। प्राछित रा धणो नै याद आवै तो प्राछित उण नै पिण लेणो, नही लेवै तो उण नै मुसकल छै।

६ कोइ सरधा रो आचार रो नवो बोल नीकलै तो वडा सू चरचणो पिण औरा सू चरचणो नही। ओरा सू चरचनै ओरा रै सका घालणी नही। वडा जाव देवै आप रे हीये वैसे तो मान लेणो नही वैसे तो केवलिया ने भलावणो, पिण टोला माहै भेद पारणो नही।

७ माहो मा जिलो वाधणो नही मिल-मिल नै। आप रो मन टोला सू उचक्यो, अथवा साधपणो पलै नही, तो किण ही नै साथे ले जावण रा अनता सिद्धा री साख कर नै पचखाण छै।

८ कोइ दिख्या लेतो देख नै, अथवा जाण नै आप न्यारो हुवै नै, चेलो कर नै, नवो मारग काढ नै, आप रो मत जमावण रा त्याग छै। आ सरधा नै ओ आचार चोखो पालणो छै। किण ही रा परिणाम न्यारा होण रा हुवै, जद ग्रहस्थ आगै पैलारी परती करण रा त्याग छै।

९ जिण रो मन रजावध हुवै चोखी तरे साधपणो पलतो जाणो तो टोला माहै रहिणो। आप मे अथवा पैला मे साधपणो जाण ने रहिणो। ठागा सू माहि रहिवा रा अनता सिद्धा री साख सू पचखाण छै।

१० टोला माहै रहि नै पाना लिखे, अथवा लिखावै, अथवा कोइ देवै ते लेवे, ते टोला माहै रहै जठा ताइ तो उण रा छै। टोला सू न्यारो हुवै जद पाना टोला रा साधा रा छै। साथै ले जावण रा त्याग छै।

११ परत पाना जाचै ते पिण वडा री, टोला री, नेश्राय जाचणा, आप री नेश्राय जाचण रा त्याग छै। जो कोइ अजाण पणै जाचणी आवै, तो पिण परत पाना वडा रा छै, टोला रा छै, या नै पिण साथे ले जावण रा त्याग छै। पातरो लोट जाचै टोला माहै थका, ते पिण वडा री नेश्राय जाचणो। वडा देवै ते लेणो। ते पिण टौला माहै छै जठा ताइ। टोला वारै जाय तो साथै ले जावण रा त्याग छै। कपडो नवो हुवै ते पिण टोला वारै ले जावण रा त्याग छै।

१२ दिख्या देणी ते पिण वडा रे नाव देणी, आप आप रै चेलो करवा रा त्याग छै।

चेतावनी

आगै पानो लिखीयो छै, तिण मे साधा रै मर्यादा वाधी छै, तिण प्रमाणै सगला रै त्याग छै। उवा मर्याद पिण उलघण रा त्याग छै। जो किण ही साध मरजादा उलघवो कीधी, अथवा आगन्या माहे नही चालीया, अथवा किण ही नै अथिर परिणामी देख्यो, अथवा टोला माहै टिकतो न देख्यो, तो ग्रहस्थ नै जणावण रा भाव छै।

१६ आप किण ही नै परत पाना उपगरण देवै, ते तो आगाइज देणा, पिण न्यारो हुवैं जद पाछा मागण रा त्याग छै। जिण री आसग हुवै ते देजो।

१७ आर्य्यां सू देवो लेवो लिगार मातर करणो नही, वडा री आग्या विना आगैं आर्य्यां हुवै जठै जाणो नही। जावै तो एक रात्रि रहिणो, पिण अधिको रहिणो नहो। कारण पडिया रहै तो गोचरी ना घर वाट लेणा, पिण नित रो नित पूछणो नही। कनै वैंसण देणी नहो। उभी रहिण देणो नही। चरचा वात करणो नही। वडा गुरवादिक रा कह्या थी कारण पड्या री वात न्यारी छैं।

१८ सरस आहारादिक मिलै, तिहा पिण आज्ञा विना रहिणो नही। वलै काइ करली मरजादा वाधा, तिण मैं ना कहिणो नही।

१९ आचार री सका पड्या थी वाधा वलै कोइ याद आवै ते लिखा, ते पिण सर्व कवूल है।

ए मरजादा लोपण रा अनता सिद्धा री साख कर नै पचखाण छै। जिण रा परिणाम चोखा हुवै, सूस पालण रा परिणाम हुवै, ते आरै होय जो। सरमासरमी रो काम छै नही।

सवत् १८५० रा माह विद १० लिखतु ऋष भीखन रो छै।

सं० १८५२ रो लिखत

(साधवियां री मरजादा रो)

६ [पृष्ठ २५ से सम्बंधित]

सब साधवियां रे मर्यादा बांधी छै आचार ती चोखा पालणा ने माहो मा गाढा हेत राखणो। तिण उपर मर्यादा बांधी —

१ टोला रा साध साधवियां में साधपणा सरधो, आप माहे साधपणा सरधो तिको टोला माहे रहिजो। कोइ कपट दगा सूं साधवीयां भली रहै तिण ने अनंता सिद्धां री आण छै। पांच पदां री आण छै। साधवीं नाम धराय ने असाधवियां भेली रह्यां अनंत संसार वधै छै। जिण रा चोखा परिणाम हुवे ते इतरी प्रतीत उपजाओ।

२ किण ही साध साधवियां रा अवगुण बोल ने मन भांग ने फारण रा त्याग छै। गाढा मरजाय ने फारण रा त्याग छै। किण ही सूं साधुपणा पलता दीसे नहीं अथवा किण हो सूं सभाव मिलतो दीसे नहीं अथवा कषायण घठापणा जाण नैं कोइ वचन न राग, तिण ने अजगो कर, अथवा सत्र आछा न बताया अथवा कपटादिक रे कारण अजाग जाण ने टोला सूं दूर करती जाण इत्यादिक अनेक कारण ऊपनैं टोला सूं न्यारी पड़ तो किण ही साध साधवियां रा अवगुण बोलण रा त्याग छै।

३ हुंता अणहुंता गृंचणा काढण रा त्याग छै।

४ रहिन रहिस लोकां नैं सका घाल ने आसता उतारण रा त्याग छै।

५ सदा कम जागे तथा कषाय रे वस सब टोला रा साध साधवियां ने असाध सरध, आप में पिण असाधुपणा सरधे टोला सूं न्यारी पर अथवा सपधारयां माहे जाए तो पिण अठीरा साध साधवियां रा अवगुण बोलण रा त्याग छै।

६ किण ही साध आव्यां माहे दोष दखे तो ततकाल धणी नैं कहिणा के गुरां नैं कहिणा, पिण ओरां ने कहिणा नहीं।

७ किण ही ने टोला सूं न्यारा होण रा परिणाम हुवे जद किण आगै री परती कहिण रा त्याग छै।

८ आप में टोला रा साध साधवियां मैं साधपणा सरध्या तरां टोला माहि रहिणा। टोला सूं माहे रहिण रा अनंता सिद्धां री साख कर ने पचखाण छै।

९ टोला माहै पाना लिखै वलै कोइ साधु साधवियां देवै अथवा ग्रहस्थ आगै जाचै ते टोला सू छूटै न्यारी हुवै ते साथै लै जावण रा त्याग। परत पाना साधा नै सूप देणा। पाना साधा रा छै, साथै ले जावणा नही।

१०. पातरा लोट टोला माहै करै, जाचै ते पिण साथै ले जावणा नही टोला री नेश्राय छै, टोला माहै छै, त्या लगै उण रा छै।

११ कपडो ऊजलो वावरीयो नही छै, नवो छै, ते पिण साथ लै जावणो नही, टोला री नेश्राय छै।

१२ परत पाना जाचणा ते वडा री नेश्राय जाचणा आप री नेश्राय जाचणानही।

१३ कर्म रे जोगे टोला वारै नीकलै अथवा वारै काढै तो टोला माहे उपगरण कीधा ते टोला री नेश्राय छै ते वारै ले जावण रा त्याग छै। वडा नै सूप देणा।

१४ आगै कागद माहै आर्य्यां रे मर्यादा वाधी छै ते सर्व त्याग पालणा छै।

१५ किण ही नै खेत्र आछो वताया, रागधेप कर नै वात चलावण रा त्याग छै।

१६ खेत्र आश्री कपडा आश्री आहारपाणी आश्री ओपदादिक आश्री वात चलावण रा त्याग छै।

१७ चोमासो कहै तिहा चोमासो करणो, सेखे काल वडा कहै तिहा विचरणो,

१८ कपडा जाचै ते वडा री आज्ञा विना वावरणो नही। कदा वडा अलगा हुवै कपडो जरूर चाहीजे तो ठलको-ठलको तो वावरणो मही-मही परियो राखणो।

१९ किण ही नै मही मोटो दीधा री वात चलावणी नही।

२० गुरा री आज्ञा विना साधा भेली रहिणो नही, कनै वेसणो नही, उभी पिण रहिणो नही।

२१ उपगरण रो देवो लेवो करणो नही, साधा नै साभलै तिण गाम मे जाणो नही।

कदाच जाण्या विना जाए अथवा मारग माहै गाम हुवै तो एक रात्रि सू अधिको रहिणो नही। कारण परे जाए तो गोचरी रा घर वाट लेणा, पिण नित रो नित गोचरी पूछणी नही।

२२ वदणा करण जाए तो अलगा थका वदणा कर नै सताब सू पाछो वलणो, ऊभो रहिणो नही।

२३ कोइ साधा रा समाचार पूछणा हुवे तो अलगा थी पूछ नै सताव सू पाछो वल जाणो, पिण उभो रहिणो नही। गुरा रा कह्या थी, कारण पड्या री वात न्यारी।

२४ किण ही साधवी मे दोप हुवै तो दोष री धणियाणी नै कहिणो, कै गुरा

आगै कहिणो, पिण और किण ही आग कहिणो नही। रहिस रहिमै और भूडी जाण ज्यू करणो नही।

२५ किण ही आय्या दाप जाण न सेंव्या हुवे ते पाना म लिखिया विना विग तरकारी खाणी नही। कदाच कारण पडघा न लिखे ता और आय्या न कहिणा, सायद कर नै पछ पिण वगो लिखणा, पिण विना लिख्या रहिणा नही। आय न गुरा नै मूढा सू कहिणो नही, माहो मा अजाग भापा वालणी नही।

२६ काइ साघ साधविया रा आगुण काढै ता साभलण रा त्याग छ। इतरा कहिणा—'स्वामी जी न कहिज्या। जिण रा परिणाम टाला माहै रहिण रा हुव त रहिजो। पिण टोला वार हुवा पछ माव साधविया रा आगुण वोलण रा अनत सिद्धा री साख कर न त्याग छै। काइ टाला वार नीकली री वात उण लखणा हासी त मान, भेपधारी भागल जिन घम रा द्वपी हामी ते मानसी, पिण उत्तम जीव ता न मान।

२७ वल काइ याद आव ते पिण लिखणा, वल करली-करली मयादा वाध त्या मे पिण अनता सिद्धा री साख कर न ना कहिण रा त्याग छ।

चेतावनी

ए मयादा पालण रा परिणाम हुवै ते आगै हायजा काइ सरमासरमी रा काम छै नही।

किण ही आर्यां आज पछ अजागाइ कोधी ता प्रायछित ता देणा, पिण उण न च्यार तीथ माहै हलणी निंदणी परसी, पछै कहोला मन माड छ म्हारो फितूरा कर छ, तिण सू पहिलाज सावधान रहिजा। सावधान नहीं रही तो लाका म भूडी दीसाला, पछ कहोला म्हान कह्या नही।

लिखतू ऋप भीखन स० १८५२ फागुण सुध १४

किण ही आर्या न माहो मा सका पर जाण कारण पड्या विना कारण रो नाम लेनै और आय्या आगा मू काम कराव छ, कारण रा नाम लेनै ओपध सूठादिक उन्हा आहारादिक ल्याव छ, इत्यादिक सका पर त सका मेटण रा उपाय मयादा वाधी छ—

१ जितरे गोचरी आप न उठ तिण सू विवणा ऊळणा।

२ विहार मैं वाझ उपडाव, जितरा दिन विग रा त्याग छै। वल उण रा वाझ पाछा विवणा उपारणा, आछो आहार लेव ता पाछा विवणा[1] टाल देणो।

३ किण रा इ वहर न माग नै आणै ता पिण विवणा टाल दणा तह्नो विगत लिखिय छ—

(१) पाच नूग स्वाय ता एक दिन विग टालणा। टका भर आप री पाती आव जद इम वीजा वाल लिखै छ—त्या रा पिण—

१ दुगुना।

(२) अवेला भर सूठ रो

(३) अवेला भर अजमा रो

(४) खाड सू विवणो घी

(५) निवात[1] मू चौगुणो घी

(६) गूल मू विवणो गुल के वरोवर घी

(७) दूध दही सू विवणो दूध दही के अध मेर दूध दही रो एक दिन घी

(८) पैला आगै उपगरण उपरात्वै तो एक दिन घी

(९) आथण रो उन्हो आणै, (१०) आख्या माहै काजल,

(११) पीपलामूल टाक रो, (१२) आन्ख्या माहै ओपध रो

(१३) तीन वार दिसा जाये जव वीजै दिन एकासणो नै लूखो खाणो।

(१४) रातै दिसा जाय, तिण रे दोय दिन लूखो।

(१५) गूतो[2] पीए तिण रे पनरै दिन विगै रा त्याग छै।

जिण रो उघाडो कारण जाणै, अथवा उण नै घेठी न जाणै, अथवा उण नै सरल जाणै, तिण नै अथवा गुर कहै तिण री वात न्यारी छै।

१ लिखत आर्या मेणा २ लिखत आर्या मइपा ३ लिखत आर्या वरजू ४ लिखत आर्या वीजा ५ लिखत आर्या वना ६ लिखत आर्या वनु ७ लिखत आर्या सदा ८ लिखत वना ९. अजवा।

---

१ मिश्री। २ तत्कालप्रसवा गाय के फट दूध से बना पदार्थ।

स० १८५९ रो लिखत

(सामूहिक मरजादा)

७ [पृष्ठ ३३ से सम्बन्धित]

ऋष भीखन सर्व साधा रे मरजादा बाधी, स० १८३२ रे वरस, ते ता सर्व कबूल छ। तिण मर्यादा मा सू वीरभाण तिलोकचंद चंदरभाण ए मरजादा लोपनै मागल हुवा, ते ता जिण माग मू टलिया, त्या नै दसमा प्राछित दिया विना माहि लेवा रा त्याग सर्व साधा रे छै।

हिव आगली मरजादा न कायम कर नवी मरजादा बाधी छ ते लिखिय छै। सर्व साध साधविया न पूछी न या कन मू कहिवाय न मरजादा बाधी छै त लिखिय छ—

सर्व साध साधवी भारमल जी री आगन्या माह चालणा।

सेखा काल विहार चोमासा करणा ते भारमल जी री आगन्या सू करणो। आगन्या लोप न विना आगन्या कठ इ रहिणा नही।

दीक्षा देणी ते पिण भारमल जी रे नामै देणी। दीख्या दन आण सूपणा।

उद्देश्य—

चेला री कपडा री साताकारिया खेत्रा री इत्यादिक अनक बोला री ममता कर-कर न अनता जीव चारित्र गमाय नै नरक निगोद माहै गया छ। वल भेषधारया रा एहवा चहन देख्या तिण मु शिषादिक री ममता मिटावण रा न चारित्र चोखा पालण रो उपाय कीधा छ विनयमूल धर्म न न्याय मारग चालण रो उपाय कीधा छ। भेष-धारी विकला न मूड, भला कर त शिषा रा भूखा एक एक रा अवणवाद बोल, फारा तोरा कर, माहा मा कजिया राड झगडा कर एहवा चिरत देख न साधा र मरजादा बाधी छ। शिष्य साखा रा संताप कराय न सुख संजम पालण रा उपाय कीधा छ।

समर्थन—

साध साधव्या पिण इमहीज कह्या—

१ भारमल जी री आगन्या माहै चालणा।

२ शिष्य करणा त सर्व भारमल जी रे करणा

३ औरा र चेला करण रा त्याग छ। जाव जीव लग।

४ भारमल जी पिण चेलो करै ते पिण वुद्धिवत साव कहै—ओ साधपणा लायक छै, वीजा साधा नै प्रतीत आवै तेहवो करणो वीजा साधा नै प्रतीत नही आवै तो नही करणो कीधा पछै कोइ अजोग हुवै तो पिण वुद्धिवत साधा रा कह्या सु छोड देणो किण ही धेपी रा कह्या सु छोडणो नही।

५ नव पदार्थ ओलखाय दिख्या देणी।

६ आचार पाला छा तिण रीते चोखो पालणो। इण आचार माहै खामी जाणो तो अवारु कहि देणो। पछै माहो मा ताण करणी नही। किण ही नै दोष भास जाय तो वुधवत साध री परतीत, कर लेणी पिण खाच करणी नही।

७ भारमल जी री इच्छा आवै जद गुर भाइ अथवा चेला नै टोला रो भार सूपे जद सर्व साध साधव्या नै उण री आगन्या माहै चालणो एहवी रीत परपरा वाधी छै। सर्व साध- साधवी एकण री आगन्या माहै चालणो। एहवी रीत वाधी छै साध-साधव्या रो मार्ग चालै जठा ताइ।

८ कदा कोइ असुभ कर्म रे जोग टोला मा सू फारा तोडो करै नै एक दोय तीन आदि नीकलै घणी धुरताइ करै वुगलघ्यानी हुवै त्या नै साध सरधणा नही। च्यार तीर्थ माहै गिणवा नही। त्या नै चतुरविध तीर्थ रा निंदक जाणवा, एहवा नै वादै ते जिण आग्या वारै छै।

९ कदा कोइ फेर दिख्या लै, ओरा सावा नै असाव सरवायवा नै तो पिण उण नै साघ सरघणो नही। उण नै छेरविया तो उ आल दे काढै। तिण री एक वात मानणी नही, उण तो अनत ससार आरै कीधो दीसै छै।

१० कदा कर्म धको दीधा टोला रा साध साधव्या रा असमात्र हुता अणहुता अवर्णवाद वोलवा रा अनता सिद्धा री नै पाचू इ पदा री आण छै पाचू इ पदा री साख सू पचखाण छै।

११ किण ही साव साधव्या री सका पडै ज्यू वोलण रा पचखाण।

साधारण नीति

कदा उ विटल होय सूस भागै तो हलुकर्मी न्यायवादी तो न मानै उण सरीखो विटल कोइ मानै, तो लेखा मे नही।

१२ हिवै किण ही नै छोडणो मेलणो परै, किण ही चरचा वोल रो काम परै तो वुधवान साध विचार नै करणो। वलै सरधा रो वोल पिण वुधवत हुवै ते विचार नै सचै वैसाणणो। कोइ वोल न वैसे तो ताण करणी नही केवलिया ने भलावणो। पिण खाच असमात्र करणी नही।

१३ वीस कोप चालीस अथवा अलगो दूर चोमासो उतरिया अथवा सेखाकाल कपडो जाचिया हुव ता आप र मते फाग ताड न वैट बट नै पहरणा नही । कदा जरर रो काम पड तो जाडो जाडो ता वाट लेणो । मही तो आचाय नी आगया विना वाटणो नही । मही तो आचाय आगै आण नै मेलणो । आचाय जथा जोग इच्छा आवै ज्यू दे, ते लेणो पिण तिण गी पाछी वात चलावणी नहीं । इण नै मही दीधो, इण न मोटो दीधा, इम कहिणो नही ।

१४ किण न कम धको दवै ते टोना सू न्यारो परै, अथवा आपहीज टोला सु न्यारा हुव, तो इण सरधा रा भाइ वाइ हुवै तिहा रहिणा नही । एक वाइ भाइ हुवै तिहा रहिणो नही । वाट वहिता एक रात कारण परिया रहै तो पाचू विगै न सूखरी खावा रा त्याग छै अनता सिद्धा री साख करनै छ ।

१५ वलै टोला माहै उपगरण कर ते पाना परत लिखै ते टाला माहि थका परत पाना पातरादिक सव वस्तु जाच ते साथै ले जावण रा त्याग छ । एक वादा चोलपटा, मुहपती, एक वादी पिछेवरी, खडिया उपरत वादा रजोहरणा उपरत साथ ले जावणा नहो उपगरण सव टाला री नेश्राय रा साधा रा छ और असमात्र साथै ले जावण रा पचखाण छ अनता सिद्धा री साख करन छ ।

धारा १४ वीं का स्पष्टीकरण

कोइ पूछे या मेतरा मे रहिण रा सूस क्यू कराया तिण नै यू कहिणो—रागा धेखा वधतो जाण न कनग वधता जाण न, उपगार घग्ता जाण न इत्यादिक अनेक कारण जाण नै कराया छ ।

१६ तिलाक्चद चदरभाण न दशमा प्रायछित दीया विण माहै लेवण रा त्याग छ । माहै लेवा जाग नही छ ।

१७ वल काइ याद आव ते लिखणा तिण रो पिण ना कहिण रा त्याग छै । सव कवूल छै ।

चेतावनी

सव साधा रा परिणाम जोय न रजावध कर या कना सू जूदा जूदो कहिवाय न मरजादा वाधी छ । जिण रा परिणाम चोखा हुव ते आ मयादा न ए सूस आरै होय जा, कोइ सरमासरमी रो काम छ नही । मूडे और न मन म ओर इम तो साधु नै करणो छै नही इण लिखत मे कोइ खूचणो काढणा नही, पछै कोइ आर रो ओर वालणा नही । अनता सिद्धा री साख कर न मारा र पचखाण छै, ए पचखाण भागण रा अनता सिद्धा री साख सू पचखाण छ । किण ही टोला माहै अनरा किण ही माहै जावा रा पचखाण छै । मर खपणो, पिण सूस न भागणा । ओ एहवा लिखत लिखतू ऋप भीखन रो छ ।

संवत् १८५९ रा माह सुदि ७ वार शनीसर

१ लिखतू ऋष सुखराम ऊपर लिख्यो ते सही

२ लिखतू ऋष अखेराम ऊपर लिख्यो ते सही।

३ लिखतू ऋष खेतसी ऊपरलो लिख्यो ते सही

४ लिखतू ऋष नान जी ऊपरलो लिख्यो सही

५ लिखतू ऋष सुखा ऊपरलो लिख्यो सही

६ लिखतू ऋष उदैराम ऊपरलो लिख्यो सही

७ लिखतू ऋष कुसाल ऊपरलो लिख्यो सही छै

८ लिखतू ऋष ओटे उपर लिखियो सही कर मान्यो छै

९ लिखतू ऋष रायचन्द उपरलो लिख्यो सही

१० लिखतू ऋष डूगरसी उपरलो लिख्यो सही

११ लिखत ऋष भघा उपर लिख्यो ते सही।

स० १८५६ रो दूसरो लिखत

(विगय आदिक री मर्यादा रो)

८ [पृष्ठ ४२ स सम्बन्धित]

१ एक दिन म दोय पइसा भर घी लेणा।

२ च्यार पइसा भर मिष्ठान—खाड, गुल, पतासा, मिश्री बुरो, आला का लाड

३ अध मर दूध, दही, खीर अवमर आसर घनागरा

४ खाजा, माकुनी पापरोयादिक पाव सीरा, लाफसी चूरमादिक भेली पावरी या माहिली थाडी-थोडी आव ता पाव रा उनमान लेखव लेणा।

५ उपवास रे पारणे च्यार पइसा भर घी बीजा वाल उतराइज।

६ वेला तेला चाला र पारणे घी छ पइसा भर वीजा उतराइज।

७ पाच उपवास आदि माटो तपसा र पारण ८ पइसा भर घी वीजा उतराइज।

स्पष्टीकरण

कदाच टका भर मु अधिकरा खाय ता वीजा दिन घी न खाणा।

और दूध दही मुखरीयादिक नी मर्यादा उपरत अधिका खावै जद वीज दिन जे जे वस्तु भागवण रा त्याग छ।

कदाचित दाय तीन दिन विच विग न खाधो हुव नो घी च्यार पइसा भर रो आगार छ।

कदाच वाटता-वाटता अवेला पइसा भर वधै तो एकण न द काढणा। तिण नै उतरा परो दणा दूज दिन पछै देण रो दावा नही।

कदाच आहार अणमिलिया आटादिक रो जोग मिलिया थी खाड गुलादिक अधिका लेवे तो अटकाव नहीं।

आचाय कन साधु-साधवी शेष काल अथवा चोमासे रहै त्या रे विग पाच नै सूखरीयादिक री मयाद न सूस नहीं छै।

साध साधवी घणा हुव थाडा हुवै कदेइ आहार थोडा आव कदै घणा आवै। तिण रा ता आचाय अवमर देख लेसी त्या रो काइ बीजा साध नाम लेण पाव नहा।

८ आगन्या विना शेषे काल चौमासे रहै तिण र जितरा दिन रहै जितरा दिन पाचूइ विगै न मूखडी रा त्याग छ। ए सूस जाव-जीव ताइ छ।

९ कोइ टाला मा मू टलै अथवा वारै काढ तो पिण ए सूस जावजाव रा छ। यू कहिणा नही—"म्हार ता या भेला थका सूस था पछ म्हार सूस काइ नही" यू कहिण रा त्याग छ।

१० कदाच कोइ लालपी थका खावा र वास्ते वारै नीकल तिण र पिण ए सूस छ।

सं० १८२६ रो लिखत

(अखेराम जी रो)

९ [पृष्ठ ४५ से सम्बन्धित]

अखेराम जी रा टोला माहै आवण रा परिणाम साधपणो पालण रा परिणाम दीठा, पिण अप्रतीत घणी ऊपनी तिण स एतली परतीत पूरी उपजावै अनता सिद्धारी साखे। तो माहै लेणो।

१ सभाव आपरो फेरणो

२ वडा रे छादे चालणो।

३ आचार चोखो पालणो। साधा रो आचार दीठोईज छै।

४ ए टोला सू न्यारा थाय तो च्यार आहार ना पचखाण करै तो माहे ल्या।

५ खूचणो काढ नै अलगा ह्वैण रा पचखाण करै तो ल्या।

६ साधा री इच्छा आवे तो सलेखणा संथारो करावै जद करणो, ना कहण रा पचखाण करै तो ल्या।

७ सभाव मे धेठापणो देखे अथवा अवनीतपणो देखे, अथवा साधा रे चित न वेसै, इत्यादिक अनेक बोल सू छोडे तो च्यार आहार मुख माहै घालण रा पचखाण करै तो ल्या।

८ टोला माहै पाना लिखे ते साधा रा।

९ साध साधवी श्रावक श्रावका—त्या नै खूचणो,दोष, हूतो अथवा अणहूतो पेला नै भास जाए तो पेला रा कह्या थी प्राछित लेणो, ना कहण रा पचखाण करै तो ल्या।

१० जिण साध साथै मेलिया तिण रा हुकम प्रमाण चालणो, आगन्या लोपणी नही।

११ जे कोइ साध साथे ले जावै घणो रजावध (करणो विश्वास) उपजै ज्यू चालणो, अस मात्र ओलभो आवै ज्यू न करणो। आ प्रतीत पूरी उपजावणी।

१२. आज पाचमा आरा माहै भारीकर्मा जीव घणा छै, त्या सू पोते आचार न पलै, सभाव न फिरै, पछै कर्म उदै एहवी भाषा वोले, एकला वैण रा परिणाम हुवै तरै वोले—'टोला माहै साधपणो दीसै नही, हू किम माहै रहू,' इम कही अनेक उपद्रव करै, अनेक अवर्णवाद वोले छै, तिम करण रा पचखाण करै तो ल्या।

१३. माहो माहे सरधा मे किण ही बोल रो फैर पडे तो और वुधवत साधा री परतीत सू मान लेणो, ना कहण रा पचखाण करै तो ल्यां।

१४ ए आचार पाला छा, जिण सू विरुद्ध चालणा नही, जे कोइ चूक मे पडे तो आरा साधा न कहिणा, पिण ताण कर न तोरण रा त्याग कर तो ल्या।

१५ ओरा साघा री इच्छा आवे ज्यू करणा पाछा ओरो उत्तर करवा रा त्याग करे तो ल्या।

१६ अथवा एतावता टाला सू न्यारो होणा नही एकलो अथवा दोया तीना आदि देइ नै पिण अलगो वैणो नही, एहवा पचखाण करे ता ल्या।

१७ सब शरीर साधा रे कारजपणे, पला नै अणहुता आप रा मन सू ढीला जाण ता च्यार तीन आहार त्याग करणा, पिण किण स मिल न टाला माहे भेद पाड नै अलगो न हुणा, ए पचखाण करे ता ल्या।

१८ सभाय तवन सूत्र वखाण रो कहे तो छती सक्त ना कहण रा पचखाण करे तो ल्या।

१९ असमाध्र वेठापणो तुरग खिण रग खिण विरग न करणा।

२० इत्यादिक अनक वात वलै याद आव ता वलै लिख लेणो नेहना ना कहवा रा पचखाण करे तो ल्या एहवी पूरी परतीत उपजावै ता सगला नै परतीत उपजै।

२१ सवत १८२९ रा फागुण सुदी १२ वार बहस्पत लिखतु ऋष भीखन गाव बूसी मध्ये।

२२ ए लिखत श्री थिरपाल जी फतेचद जी हरनाथ जी भारमल जी तिलाक चद जी न पिण सुणाया छै।

२३ ए पाछ कह्या लिख्या ते सगलाइ वाल अमेराम सुण नै अगीकार कीधा।

२४ चारित्र मधाते पचखाण कर न साधा नै परतीत उपजाइ लिखत अखेराम। ऊपर लिख्या सही

सं० १८३३ रो लिखत

(आर्या फतूजी आदि रो)

१० [पृष्ठ ४८ से सम्बन्धित]

आर्य्या फतूजी आदि च्यारू जणीया नै दिख्या दीवा पैहली सीखामण आचार गोचार वतावण री विध लिखिये छै। ते चारित्र सघाते त्याग।

१ ऊभी नै कोडी न सूझे जद सलेखणा मडणो।

२ विहार करण री सगत नही, जद सलेखणा मडणो।

३. आर्य्या रा विजोग पडया न कल्पे जद सलेखणा मडणो।

४. साध कहे जठे चोमासो करणो

५ साव कहै जठै सेखा काल रहिणो

६ चेली करणी ते साधा रा कह्या सू करणी आज्ञा विना करणी नही।

७ शिष्यणी कीधा पछै पिण कोइ साघपणा लायक न हुवे साधा रे चित्त न वेसै तो साधा रा कह्या सू दूर करणी।

८ साधा री इच्छा आवै जुदो विहार करावण री ओर आर्य्या सार्थे जुदी मेले तो ना कहिणो नही।

६ साध साधविया रो कोइ खूचणो दोष प्रकृतादिक रो ओगुण हुवै तो गुरा नै कहिणो पिण ग्रहस्थादिक आगै कहिणो नही।

१० आहारपाणी कपडादिक मे साधा नै लोलपणा नी सका उपजै तो साधा नै परतीत उपजै ज्यू करणो।

११. अमल तम्वाखू आदि रोगादिक रे कारण पडचा लेणो पिण विस्न रूप लेणो नही लीयाइज सझै ज्यू करणो नही।

१२ वलै सर्व साध-साधविया ने आचार गोचार माहै ढीला पडता देखे अथवा सका पडती जाणै जद समचै सर्व साव-साधविया री करली मर्यादा बाधै तो पिण ना कहिणो नही। इत्यादिक सीखामण चारित्र सघाते अगीकार कर लेणी ते जाव-जीव रा पचखाण छै।

१३ सवत् १८३३ मिगसर विद २ वार बुध ए लिखत वचाय अगीकार करायो नै सामायक चारित्र अगीकार करीयो छै। वलै फेर छेदोपस्थापनी चारित्र दीधो जद पिण लिखत वचाय नै अगीकार कीधो छै हरप सू च्यार इ आर्य्यां।

११ [पृष्ठ ६३ टिप्पण ३ से सम्बन्धित]

मर्यादा पत्र

[परिषद् में वाचन के लिए आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्राचीन मर्यादा पत्र के आधार पर संगृहीत]

सब साधु साध्वियां पांच महाव्रत, पांच समिति और तीन गुप्ति की अखण्ड आराधना करें। ईर्या, भाषा, एषणा में विशेष सावधान रहें। चलते समय बात न करें। सावद्य भाषा न बोलें। आहार पानी पूरी जांच करके लें। शुद्ध आहार भी दाता का अभिप्राय देखकर हठ मनुहार से लें। वस्त्र पात्र आदि लेते व रखते समय तथा 'पूजने' व 'परठने' में पूर्ण सावधानी बरतें। प्रतिलेखन व प्रतिक्रमण करते हुए बात न करें।

भिक्षु स्वामी ने सूत्र सिद्धान्त देखकर सम्यक् श्रद्धा और आचार की प्ररूपणा की। त्याग धर्म, भोग अधर्म, व्रत धर्म, अव्रत अधर्म, आज्ञा धर्म, अनाज्ञा अधर्म, असंयति के जीने की वांछा करना राग, मरने की वाञ्छा करना द्वेष और संसार समुद्र से उस के तरने की वाञ्छा करना वीतराग देव का धर्म है।

भिक्षु स्वामी ने न्याय, संविभाग और समभाव की वृद्धि के लिए तथा पारस्परिक प्रेम, कलह निवारण और संघ की सुव्यवस्था के लिए अनेक प्रकार की मर्यादाएं की। उन्होंने लिखा—

१ सब साधु साध्वियां एक आचार्य की आज्ञा में रहें।

२ विहार, चातुर्मास आचार्य की आज्ञा से करें।

३ अपना-अपना शिष्य (शिष्याएं) न बनाएं।

४ आचार्य भी योग्य व्यक्ति को दीक्षित करें। दीक्षित करने पर भी कोई अयोग्य निकले तो उसे गण से अलग कर दें।

५ आचार्य अपने गुरु, भाई या शिष्य को अपना उत्तराधिकारी चुनें, उसे सब साधु साध्वियां सहर्ष स्वीकार करें।

गण की एकता के लिए यह आवश्यक है कि उस के साधु साध्वियों में सिद्धान्त या प्ररूपणा का कोई मत भेद न हो। इसीलिए भिक्षु स्वामी ने कहा है—'कोई सरधा, आचार, कल्प या सूत्र का कोई विषय अपनी समझ में न आए अथवा कोई नया प्रश्न उठे वह आचार्य व बहुश्रुत से पूछा जाए, किन्तु दूसरों से चर्चा कर उन्हें शंकाशील न

वनाया जाये। आचार्य व वहुश्रुत साधु जो उत्तर दे, वह अपने मन मे जचे तो मान ले, न जचे तो उसे 'केवली' गम्य कर दे, किन्तु गण मे भेद न डाले, परस्पर दलवन्दी न करे ।"

गण की अखण्डता के लिए यह आवश्यक है कि कोई साधु-साध्वी आपस मे दल वन्दी न करे। इसीलिए भिक्षु स्वामी ने पैतालिस के लिखत मे कहा है "जो गण मे रहते हुए साधु-साध्वियो को फटाकर दलवन्दी करता है, वह विश्वासघाती और वहुल-कर्मी है। स्वामी जी ने स्थान-स्थान पर दल वन्दी पर प्रहार किया है। पचास के लिखत मे उन्होने लिखा है—"कोई साधु साध्वीगण मे भेद न डाले और दलवन्दी न करे।" स्वामी जी ने चन्द्रभाणजी और तिलोक चन्द्र जी को इसलिए गण से अलग किया कि वे जो साधु-आचार्य से सम्मुख थे, उन्हे विमुख करते थे। छिपे-छिपे गण के साधु-साध्वियो को फोड-फोड कर अपना वना रहे थे, दल वन्दी कर रहे थे। हमारा यह प्रसिद्ध सूत्र है "जिल्लोते सयम ने टिल्लो"। गण मे भेद डालने वाले के लिए भगवान ने दसवें प्राय-श्चित का विधान किया है। तथा भिक्षु स्वामी ने कहा—"जो गण के साधु-साध्वियो मे साधु-पन सरधे, अपने आप मे साध-पन सरधे, वह गण मे रहे। छल कपट पूर्वक गण मे न रहे।" पचास के लिखित मे उन्होने कहा—"जिस का मन साक्षी दे, भली भाति साधुपन पलता जाने, गण मे तथा आप मे साधुपन माने तो गण मे रहे, किन्तु वचना-पूर्वक गण मे रहने का त्याग है।

गण मे जो साधु-साध्विया हो, उन मे परस्पर सौहार्द रहे। कोई परस्पर कलह न करे तथा उपशान्त कलह की उदीरणा न करे। इसीलिए भिक्षु स्वामी ने कहा—"गण के किसी साधु-साध्वी के प्रति अनास्था उपजे, शका उपजे वैसी वात करने का त्याग है। किसी मे दोष देखे तो तत्काल उसे जता दे तथा आचार्य को जता दे किन्तु उस का प्रचार न करें। दोषो को चुन-चुन कर इकट्ठा न करे। जो जान पडे उसे अवसर देख कर तुरत जता दे। वह प्रायश्चित का भागी है जो वहुत समय वाद दोष वताए। विनीत अवनीत की चौपाई मे उन्होने कहा है—

"दोष देखे किण ही साध मे, तो कह देणो तिण नै एकन्त।
जो मानै नही तो कहणो गुरू कने, ते श्रावक छै वुद्धिवन्त ॥
सुविनीत श्रावक एहवा ॥१॥

प्रायश्चित दराय नै सुद्ध करै, पिण न कहै अवरां पास।
ते श्रावक गिरवा गम्भीर छै, वीर वखाण्या तास ॥
दोष रा धणी नै तो कहे नही, उण रा गुरू नै पिण न कहै जाय।
और लोका आगे वकतो फिरै, तिणरी प्रतीत किण विध आय ॥
अविनीत श्रावक एहवा ॥ २ ॥

तथा किसी साध-साध्वी को जाति आदि को लेकर ओछी जवान न कहे। आपस म मन मुटाव हो, वसा शब्द न वाले, एक दूसरे मे सन्देह उत्पन्न न करे।

तथा गण और गणी की गुण रूप वाता करे। कोई गण तथा गणी की उतरती वात कर, उस टोक दे और वह जो कहे उसे आचाय को जता द। कोई उतरती वात करता है और कोई उसे सुनता है, वह दोना अविनीत है, विनीत वह होता है जो आज्ञा का सर्वोपरि माने—

जिन शासन मे आना वडी, आतो वाधी रे भगवता पाल।
सहु सज्जन असज्जन भला रह, छान्दा रूधे रे प्रभु वचन सम्भाल॥
बुद्धिवन्ता एकल सगत न कीजिये।

छान्दो रूध्या विण सजम नोपजै, ता कुण चाल र पर री आना माय।
सहु आप मते हुव एकला, खिण भेला रे खिण विखर जाय।

भगवान न कहा है—"चइज्ज देह न हु धम्म सासण' मुनि शरीर का छाड दे, किन्तु धम–शासन को न छाडे। जयाचाय ने उस पुष्ट करते हुए लिखा है—

नन्दन वन भिक्षु गण मे वसारी, ह जी प्राण जाये ता पग म खिसोरी १
गण माहे नान घ्यान शाभ री, ह जी दीपक मन्दिर माहे जिसारी २
टालाकर ना भणवो न शाभे री, हे जी नाक विना ओ ता मुखडा जिसोरी ३
भाग्य वले भिक्षु गण पायारी, हे जी रतन चिन्तामणी पिण न इसारी ४
गण पति कोप्या ही गाढा रहोरी, ह जी समचित शासण माहे लसोरी ५

किन्तु कोई साधु-साध्वी क्रोधादिवश आना और अनुशासन का पालन नही कर सकने पर अथवा अन्य किसी कारण से गण से अलग हो जाये अथवा किसी का अलग किया जावे ता किसी साधु साध्वी का मन भग कर अपने साथ ले जाने का त्याग है। कोई जाना चाहे तो भी उस साथ ले जान का त्याग है। गण के साधु-साध्विया की उतरती वात करन का त्याग है। अशमात्र भी अवणवाद वालन का त्याग है और छिप छिप लागा का शकाशील वना गण के प्रति अनास्था उपजान का त्याग है तथा वस्त्र, पात्र, पुस्तक-पन्ने आदि गण के होते हैं इसलिए उन्हें अपन साथ ले जाने का त्याग है।

गण से वहिष्कृत या वहिर्भूत व्यक्तिया के प्रति हमारा क्या दृष्टिकाण होना चाहिए, उसे स्पष्ट करते हुए भिक्षु स्वामी ने लिखा है— गण स वहिष्कृत या वहिर्भूत व्यक्ति का साधु न सरधा जाय, चार तीर्थ म न गिना जाय, साधु मान वदना न की जाय। श्रावक श्राविकाए भी इन मर्यादाओ के पालन म सजग रहे।

भिक्षु स्वामी न गण की सुव्यवस्था के लिए, मर्यादा का और उन्हें दीर्घ दृष्टि म देखा कि भविष्य म वतमान मर्यादाओ म परिवतन या सशोधन आवश्यक हो सकता है इसीलिए उन्होंने लिखा कि आग जब कभी भी आचाय आवश्यक समझें तो वे इन मर्या

करना है और सब लोगो की दृष्टि मे वह पूज्य होता है। तथा जो उनका सम्यग पालन नही करता, वह न आचाय की आराधना करता है और न लोको की दृष्टि मे पूज्य होता है।

आयरिए आराहेइ, समण यावि तारिसा।
गिहत्था वि ण पूयति, जेण जाणति तारिस ॥
आयरिए नाराहेइ, समणे आवि तारिसो।
गिहत्था वि ण गरिहति, जेण जाणति तारिस ॥

इसीलिए विनीत साधु साध्विया आना, मयादा, आचाय, गण और धम की सम्यक आराधना करें और धम शासन की गौरव वद्धि करें।

आण सम्म आराहइस्सामि।	आण सरण गच्छामि।
मेर सम्म पालस्सामि ॥	मेर सरण गच्छामि।
आयरिय सम्म आराहइस्सामि।	आयरिय सरण गच्छामि।
गण सम्म अणुगमिस्सामि।	गण सरण गच्छामि।
धम्म न कयावि जहिस्सामि ॥	धम्म सरण गच्छामि ॥

१२. [पृष्ठ ६३ टिप्पण ४ से सम्बन्धित]

लेखपत्र

मैं सविनय वध्दाजलि प्रार्थना करता हू कि श्री भिक्षु, भारीमाल आदि पूर्वज आचार्य तथा वर्तमान आचार्य श्री तुलसीगणी द्वारा रचित सर्व मर्यादाएं मुझे मान्य है। आजीवन उन्हे लोपने का त्याग है। गुरुदेव! आप सघ के प्राण है, श्रमण परम्परा के अविनेता है, आप पर मुझ पूर्ण श्रद्धा है। आपकी आज्ञा मे चलने वाले साधु-साध्वियो को भगवान महावीर के साधु-साध्वियो के समान शुद्ध साधु मानता हू। अपने आपको भी शुद्ध साधु मानता हूँ। आपकी आज्ञा लोपने वालो को सयम मार्ग के प्रतिकूल मानता हूँ।

(१) मैं आपकी, आज्ञा का उल्लघन नही करूगा।
(२) प्रत्येक कार्य आपके आदेश पूर्वक करूगा।
(३) विहार चातुर्मास आदि आपके आदेशानुसार करूगा।
(४) शिष्य नही करूगा।
(५) दलवन्दी नही करूगा।
(६) आपके कार्य मे हस्तक्षेप नही करूगा।
(७) आपके तथा साधु-साध्वियो के अशमात्र भी अवर्णवाद नही बोलूगा।
(८) किसी भी साधु-साध्वी मे दोप जान पडे तो उसका अन्यत्र प्रचार किये विना स्वय उसे या आचार्य को जताऊगा।
(९) सिद्धान्त मर्यादा या परम्परा के किसी भी विवादास्पद विषय मे आप द्वारा किये गये निर्णय को श्रद्धापूर्वक स्वीकार करू गा।
(१०) गण से वहिष्कृत या वहिर्भूत व्यक्ति से सस्तव नही रखूगा।
(११) गण के पुस्तक पन्नो आदि पर अपना अधिकार नही करू गा।
(१२) पद के लिए उम्मीद्वार नही वनूगा।
(१३) आप के उत्तराधिकारी की आज्ञा सहर्ष शिरोधार्य करू गा।

पाच पदो की साक्षी से मै इन सवके उल्लघन का प्रत्याख्यान करता हू। मैने यह लेख-पक्ष आत्मा-श्रद्धा व विवेकपर्वक स्वीकार किया है। सकोच, आवेश या प्रभाव-वश नही।

स्वीकर्ता...... .. ..

सवत् " मास .. तिथि .

टहुका

शेख अब्दुल मुफ्त रो साथी

१३ [पृष्ठ १९१ स सम्बन्धित]

एक शहर के बाहर धर्मशाला के पास कुछ भटियारिनें रहती थी। राहगीर उनसे भोजन पकवाते थे। वहा पर शेख अब्दुल नामक मुफ्तखोर रहता था। ज्यों ही यात्री भटियारिनो से रसाई बनवा कर भोजन के लिए बैठने त्यो ही वह बिना बुलाये जा धमकता और भोजन को चट कर जाता। यात्रियो के बचा खुचा हाथ आता। अच्छे गहन कपड देखकर उस कोई कहन का भी साहस नही करता था। यह उसका राज का धधा था। इस कारण वह 'शेख अब्दुल मुफ्त के नाम से प्रसिद्ध हो गया। भटियारिनें यात्रियो को पहले से ही जता कर एक व्यक्ति का अधिक भोजन बनवाने के लिए कह देती थी।

एक दिन एक पठान आया। भटियारिना ने जब शेख के लिए भाजन बनान का पूछा—तो उसने कहा—वह मरे क्या लगता है ? अगर जबरदस्ती करेगा ता मैं उस दख लूगा। तुम भाजन परासा। सुरक्षा के लिए पास मे अपने नय जूते रखकर बठ गया।

इधर दिन भर का भूखा शेख चक्कर लगा ही रहा था ज्यो ही भाजन की थाली आई कि उचक कर आ बठा और दबादब भोजन करने लगा। क्रोधित पठान न आव देखा न ताव जूते हाथ म लेकर मरम्मत करनी शुरू कर दी। पर शेख का ता इसकी परवाह ही नही थी। पूरा भाजन करके हाथ धोते हुए बाला—आज तबियत खुश भाजन हुआ है। पठान—यह कसे ? शेख—मैं बचपन म भाजन नही करता तब मुझे मरे माता पिता जते मार मार कर भाजन करवाते थे। आपने आज मुझ वैसा ही भोजन करवाया। यह सुनकर, पठान ने साचा—यह ता महा निलज्ज है और दूसरा आटा मगवा कर रोटिया बना कर खाई।

—००—

रूपचंदजी अखेरामजी द्वारा आचार्य भिक्षु मे निकाले गये १४४ दोषो की विगत :—

१ रजूहरण सू माखी उडावणी नही ।
२ सूर्य उगा विण पडिलेहण करणी नही ।
३ पाणी मोरो चुकावणो नही ।
४ गोचरी नीकल्या पछै ठिकाण आया पेहिला कठेइ वैसणो नही ।
५ वाया ने थानक मे वेसण देणी नही ।
६ वाया सू चरचा वात करणी नही ।
७ वाया साह्मो जोवणो नही ।
८ वाया ने वैसाणे ते आछो खावा रे अर्थे ।
९ आर्यां ने थानक मे वेसाणणी नही ।
१० आर्यां सू चरचा वात करणी नही ।
११ आर्यां ने सूतर री वाचणी देणी नही ।
१२ आर्यां साह्मो जोवणो नही।
१३ कारण विना आर्यां नें आहार देणो नही ।
१४ वेतकल्प मे जावक आर्या ने साधा रे थानक वरज्या छै, १७ वोल इम साधु नैं पिण १७ वोल आर्या रै थानक वरज्या।
१५ रातरी आर्यां नें नेरी उतारे ।
१६ रातरी वाया ने थानक मे वैसारे नाथ दुवारे
१७ गृहस्थ साथे विहार करै ।
१८ गृहस्थ साथे गोचरी जाए ।
१९ गृहस्थ जागा जोवै ।
२० गृहस्थ आय ने जागा वतावै ।
२१ गृहस्थ आय ने कहै अमकडियै घर अनादिक छै ।
२२ रोगिया नें नितपिंड न लेणो ।
२३ खेतसी जी रे आथण रा तीन च्यार दिस दाल ने जाता ।
२४ रोगी रै वासते आण्यो ते वधै तो वीजा नै खाणो नही ।

२५ छते पाणी रोगिया रे खातर नितपिंड ल्यावै ।

२६ इदरगढ रा थानक असुध भोगव्या ।

२७ पातरा रगणा नहीं ।

२८ रागान लगावणो नहीं ।

२९ सुगध रो दुगध करणा नही ।

३० सुवण रा दुवण करणो नही ।

३१ हीगलू धोवणो नही ।

३२ आर्यां नें मेलो पछेवरी देणो नही ।

३३ काली धारी वाला लूकार राखणो नही ।

३४ पडला र वदल कपडा राख ।

३५ स्याही उघाडी सुकावै ।

३६ सुधिया पडिलेहणकर ।

३७ सुधिया पडिकमणो कर ।

३८ पडिलेहण कर जठा ताइ जावक वोलणो नही ।

३९ गोचरी सू आया पछै सभाय करणो ।

४० पाहर २ री च्यार काल रो सभाय करणो ।

४१ पाहर सू इधिकी नीद लेणो नही इधकी लेव ता अठारै पाप रो सेवण हार छ। माठा माठा सुपना आव पाच वरी जाग छै ।

४२ सभाय विना यूही वेठो रहै तिण रा जोग सावज्ज छै । माठी लेस्या नें माठो ध्यान छै ।इत्यादिक चारित रा धका छ ।

४३ कारण पडिया नित आहर पाणीयादिक आण ता छ काय रा मारण हार छै।

४४ खडिया धोवण नें नित पाणी ल्यावै ।

४५ स्याही रै खातर पाणी ल्याव वधै ते पीयै ते नित (नितपिंड)

४६ आथण रो पाणी घणो २ पीय ।

४७ आथण रा पाणी घणो परठै ।

४८ आथण रा पाणी मारा चुकाव ।

४९ सरस आहर घणो करै ।

५० पातरो कपडा कारण पडिया पिण दोढ मास सु इधिको राखणो नही ।

५१ कोइ नवो दिम्ग्या ल तिणर वास्ते पिण न राग्वणो ।

५२ नव चाकीया जोवा गया ।

५३ एक एक रा आगुण दूजा आगे चाल ।

५४ केलूरी जायगा म चौमासा कर

५५ दिख्या ले तिण रो रोगान हीगलू वधै तो लेणो नही, इधिको लवै छै।

५६ जिण मे जाणपणो थोडो तिण ने दिख्या दे।

५७ अजोग ने दिख्या दे छै, सुरतो, विगतो।

५८ धारवा जोग कपडो परठै।

५९ वे लूकार जैपुर माहे परठ्या।

६० उपगरण विखरीया राखै।

६१ थान आखौ राखै।

६२ विना फारचा राखै।

६३ चिलमिलि राखै।

६४ पाणी ठारै।

६५ ऊची जायगा रहै।

६६ सेज्यातर भोगवै।

६७ दोय रोटी परूपै।

६८ दोय वार दिसा जायै।

६९ टोला रा आया छै ए।

७० काना फार-२ दिया।

७१ तीन पाव सपी खाए।

७२ वायरा मे चालै।

७३ कसूदल कपडो धोयो।

७४ आर्यां वेठा मात्रो करै।

७५ गेलें खेतसी जी सूए।

७६ माथो ढाक ने चालै।

७७ भारी पाट उपारै।

७८ पुर माहे परठै जठै।

७९ शरीर न पूजै।

८० वीयावच घणी करावै।

८१ राजनगर रा मैल जोया।

८२ दूजी वार धोवण ल्यावै।

८३ कवाडी रो आहार लै।

८४ विना पूज्या उटीगण लै।

८५ विना पूज्या खाज खणै।

८६ सेवडी उतारै, भारमल।

८७ सुतर अडड वडड छै ।

८८ मेह वरसना रह्या तुरत उठ ।

८९ फुहरा (परठ)

९० गुठली आवारी आवली री परठ ।

९१ पडिक्कमणो आछी तर करै नही ।

९२ आमना जणावै समाचार री ।

९३ अजणा प्रमुख निषेधता त कहै ।

९४ रामचरित निषेधता ते जावे छ ।

९५ किण हीन प्राछित थोडा द किण नें घणा ।

९६ घणा साघ साधवी भेला रहै ।

९७ चिणा रा होला नै सेक्या मक्किया रा कण ल ।

९८ नाथदुवारा रा आहार मासखमण रह्या पछ खाधो ।

९९ गाधूदा म आपद रा लकरी वासी राखो ।

१०० चालता वालै ।

१०१ आधाकर्मी पाणी वहरे कवरजी प्रमुख रे ।

१०२ पाछली रात रा पग मात्रा सू छाट चोपड ।

१०३ डावडा पटना आमना जणाइ नतमीजी ।

१०४ गहस्थ री हाट माहै उपगरण पात्र मल्या पुर माहै ।

१०५ हाट म उतरे कुणका उठाव ।

१०६ लिखत करावणो नही ।

१०७ काठारचा म पाणी रा ठाव माह चव्यो तिहा राते रह्या ।

१०८ पाणी रा ठाम म्हालो आपणी उरो ले न मेलणो ठहरायो ।

१०९ कपडा विना पडिलह्या न वैहरणा ।

११० कपडा रात रो ओढणो जब पू जणा ।

१११ विना जाया हाथ घालणा नहीं ।

११२ आया र कपडो कह्या ज्यू पना राखणो इत्यादिक घणा कह्या ।

११३ खजूर वहरघा ।

११४ रगा चगा न डीला सनूरा रहै ।

११५ घी री मरजादा नही ।

११६ आहार कित्ती वार री मरजादा नही ।

११७ आहार न घी सू चर तो सवाद आवै ।

११८ कारी रोटी न भाव तो तरकारी ल्यावै ।

११९ दूध सू रोटी मसलणी नही।

१२० किवाड जडे जठै रहै।

१२१ बोलता जयणा नही करै।

१२२ थानक मे कुणका उठावै।

१२३ देव गाम मे आहार न ल्याया पिण मन मे तो भाव।

१२४ दोय साधा ने न रहिणो चौमासा माहै।

१२५ तीन आर्या ने न रहिणो चोमासा माहै।

१२६ आर्या ने आडो न जडणो कवाड।

१२७ आथण रा उचार पासवण री तीन जागा जोवणी।

१२८ आहार करै तरै जगा जोवणी।

१२९ विना वचाया सुतर वाचै।

१३० नसीत वाच्या विना चोमासो करै।

१३१ सुतर अनुक्रमं वाचणा।

१३२ जोरी दावै हाथ जोड़ावै।

१३३ आर्या रे गुरणी नही।

१३४ गाम मे धोवण पाणी वहिर ने विहार कीधो पाछो आवै तो त्यारो वेहरणो नही।

१३५ ईर्या जोवतो वहरावण आयो पाछो जातो अजणा करे तो वहिरणो नही।

१३६ सुखजी आश्री रूपचद सोगाणी निषेध्या।

१३७ भारमल जी ने नषेध्या वाया आश्री।

१३८ भारमल जी ने वेणोजी नेडा वैठा त्या निषेध्या नेणवा माहे।

१३९ लाडीजी न अजोग दिष्टत सीखाया।

१४० माधोपुर मे पाणी री जोड कीधी।

१४१ गुजरमल फेर व्रत भाग्या।

१४२ रोछाड मे आहार कीधो छाटा आइ।

१४३ कोठारियारी नदी रो पाणी धोवण दाखल कह्यो।

१४४ विरधमानजी रूपचदजी री लोका मे घणी आसता उतारी लोगा आगै।

१४५ दिख्या दीधी तरे ओर पछे ओर।

१४६ वोल घणा पूछा तो कोइ जाव न दे अठी उठो उतार दै।

१४७ वोल पूछा तरे खेध घणो करता।

१४८ काकरोली मे कुण का उठावण री चरचा कीधी तरे घणो हुवो।

१४९ पुर मे आर्या ने वोल पूछचा जाव नाया।

१५० वूदी मे मणाजी न परमाद आश्री चरचा पूछी जाव नाया।

१५१ रावलिया म च्यार गावा री आधाकर्मी ल्यावता।

१५२ म्हन घणो घास पावता जको म्हारी आस्या रो तेज हीण परचो।

१५३ टाला रा आया री परतीत कोई नहीं यू कह्यो।

१५४ खेतसीजी रे आहार थोरो तेवरावै म्हन खवर नहीं, जिण सू म्ह घणो तेवरा, कपटाइ कर कर दूध घणो पाव, चोखा आहार वधै ते मनभाव नहीं, तर खेतसीजी नें देता। पछ म्हे पिण यारो कपट जाण न वरावर तेवरता।